हो सकता है मैं आपके विचारों से सहमत न हो पाऊं फिर भी विचार प्रकट करने के आपके अधिकारों की रक्षा करूंगा। –वाल्तेयर

शुभ नवरात्र

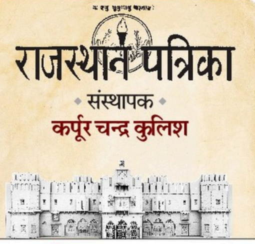

अहिंसक आंदोलन का हिंसक होना चिंताजनक

लद्दाख में पूर्ण राज्य का दर्जा और संविधान की छठी अनुसूची में शामिल किए जाने की मांग को लेकर चल रहे अहिंसक आंदोलन का हिंसक उपद्रव में बदल जाना गहरी चिंता का विषय है। सरकार और आंदोलनकारियों के बीच वार्ता से ठीक पहले इस तरह का उपद्रव बताता है कि कोई पक्ष ऐसा भी है जो समाधान नहीं चाहता। भाजपा कार्यालय, मुख्य चुनाव आयुक्त का दफ्तर व सीआरपीएफ की गाड़ी को जलाए जाने जैसी घटनाएं इस बात का संकेत हैं कि इसमें बाहरी या निहित स्वार्थी तत्त्व सक्रिय हो सकते हैं। हिंसा में चार लोगों की मौत ने इस घटना की गंभीरता को और बढ़ा दिया है। आंदोलन की अगुवाई करने वाले सोनम वांगचुक की छवि अब तक गांधीवादी पर्यावरण कार्यकर्ता की रही है। उनका यह कहना महत्त्वपूर्ण है कि हिंसा पर उतरे लोग इससे पहले कभी आंदोलन का हिस्सा नहीं थे। यदि यह सच है, तो पता लगाना जरूरी है कि वे कौन थे व किसके इशारे पर आए।

दूसरी ओर, केंद्र सरकार का आरोप है कि वांगचुक के कुछ बयानों ने हालात को भड़काया। उन्होंने 'अरब स्प्रिंग' और पड़ोसी देशों के 'जेन-जी' आंदोलनों का हवाला देकर उकसाया। सरकार को संदेह है कि वांगचुक की संस्था को विदेशों से अवैध धन मिल रहा है। इस संदेह की जांच जरूर होनी चाहिए। केंद्रीय जांच एजेंसी इसकी जांच शुरू कर चुकी है।

किसी भी देश के लिए सीमावर्ती प्रदेशों का प्रबंधन हमेशा चुनौतीपूर्ण रहा है। भारत सरकार को भी पंजाब, उत्तर-पूर्व और जम्मू-कश्मीर में लंबे समय तक असंतोष और हिंसा से जूझना पड़ा है। हालांकि, पिछले दशकों में इन इलाकों में काफी हद तक शांति स्थापित हुई है। 2019 में अनुच्छेद 370 हटाकर जम्मू-कश्मीर को दो हिस्सों में बांटा गया और लद्दाख को अलग केंद्र शासित प्रदेश बनाया गया। इस फैसले से लद्दाख के लोग खुश थे क्योंकि वे लंबे समय से जम्मू-कश्मीर से अलग होने की मांग कर रहे थे। केंद्र सरकार ने वादा किया था कि लद्दाख को ऐसा केंद्र शासित प्रदेश बनाया जाएगा जिसके पास विधानसभा हो। पांच साल बाद भी विधानसभा गठित न होने से राजनीतिक प्रतिनिधित्व की कमी खलने लगी है। यही कारण है कि लेह के बौद्ध और करगिल के मुस्लिम, जो अक्सर किसी मुद्दे पर साथ नहीं आते, इस बार एकजुट दिखाई दे रहे हैं।

सरकार को चाहिए कि वह आंदोलनकारियों से तुरंत संवाद करे, उनके राजनीतिक प्रतिनिधित्व की कमी को दूर करने के ठोस उपाय सुझाए और हिंसा की घटनाओं की पारदर्शी जांच करवाए। लोकतंत्र का रास्ता संवाद से ही निकलता है। आंदोलनकारियों को भी यह समझना होगा कि हिंसा से उनकी मांगों की विश्वसनीयता कमजोर होती है और समस्या और उलझती है। सरकार को भी यह संदेश देना होगा कि वह केवल सुरक्षा दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि लद्दाख के लोगों की भावनाओं को समझते हुए समाधान खोजने के लिए प्रतिबद्ध है। लद्दाख के घटनाक्रम में यदि कोई विदेशी हस्तक्षेप हो भी उसे नाकाम करने का यही सबसे असरदार तरीका है।

न्यूक्लियर पावर: शक्ति का आकलन संख्या से नहीं, उस प्रणाली से जो प्रभावी उपयोग को सुनिश्चित करे

परमाणु संतुलन के लिए सटीकता व तकनीक जरूरी

विनय कौड़ा
अंतरराष्ट्रीय मामलों के जानकार
@patrika.com

भारत की परमाणु रणनीति का सार है न्यूनतम विश्वसनीय निवारण। इसका लक्ष्य हथियारों की दौड़ में आक्रामक विस्तार करना नहीं, बल्कि अवश्यम्भावी प्रतिक्रिया का भरोसा जगाना है। परमाणु नीति का आधार संयम व जिम्मेदारी है, किंतु संयम तभी सार्थक दिखाई देगा जब उसके पीछे प्रौद्योगिकी की ठोस शक्ति खड़ी होगी।

सितंबर की शुरुआत में चीन द्वारा अपनी परमाणु त्रयी और अत्याधुनिक हथियारों का प्रदर्शन किया गया, जिसके उत्तर में इस सप्ताह अमरीका ने अटलांटिक महासागर में पनडुब्बी से चार परमाणु-सक्षम मिसाइलों का परीक्षण कर वैश्विक शक्ति संतुलन की गंभीरता को उजागर किया। परमाणु हथियारों को लेकर अब तक धारणा यही रही कि जिसके पास अधिक वारहेड होंगे, उसकी सामरिक शक्ति उतनी ही मानी जाएगी। किंतु इक्कीसवीं सदी के जटिल भू-राजनीतिक और तकनीकी परिदृश्य ने इस सोच को पलट दिया है। अब शक्ति का आकलन मात्र संख्या से नहीं, बल्कि उस प्रणाली से होता है, जो परमाणु हथियारों के प्रभावी उपयोग को सुनिश्चित करे।

यदि किसी राष्ट्र के पास सैकड़ों बम हों, परंतु उन्हें दागने के साधन अविश्वसनीय हों या प्रथम हमले में ही निष्क्रिय हो जाएं, तो वह शक्ति केवल भ्रमजाल बनकर रह जाती है। इसी सोच से 'परमाणु त्रयी' की अवधारणा जन्म लेती है- भूमि, वायु और समुद्र आधारित वह प्रणाली, जो सुनिश्चित करती है कि कोई भी राष्ट्र प्रथम परमाणु हमले के बाद भी जवाब देने में सक्षम रहे। भारत ने भी इस दिशा में उल्लेखनीय प्रगति की है। अग्नि मिसाइल श्रृंखला, विशेषकर अग्नि-5, भारत की भूमि आधारित निवारण क्षमता की रीढ़ बन चुकी है, जिसने उसे क्षेत्रीय शक्ति संतुलन का सशक्त आधार प्रदान किया है। वायु आधारित क्षमता में मिराज 2000, सुखोई-30 एमकेआइ, जगुआर, राफेल जैसे विमानों के साथ ब्रह्मोस एयर-लॉन्च्ड मिसाइलों का युग आया है, जो हमारी वायुसेना को आवश्यक लचीलापन प्रदान करता है। हालांकि पूरे विश्व में यह पक्ष आज भी कमजोर माना जाता है क्योंकि विमान प्रथम हमले झेलने में सबसे नाजुक होते हैं। स्वदेशी परमाणु चालित पनडुब्बी आइएनएस अरिहंत की नौसेना में तैनाती भारत के लिए एक ऐतिहासिक पड़ाव था, जिससे न केवल तकनीकी आत्मनिर्भरता मिली, बल्कि समुद्र से प्रतिकार की क्षमता भी सुनिश्चित हुई। यह पनडुब्बी के-15 सागरिका (700 किमी) और के-4 एसएलबीएम (3,500 किमी) मिसाइलों से लैस है। इस दिशा में अगला कदम पिछले साल आइएनएस अरिघाट के रूप में सामने आया, जो भारत की दूसरी स्वदेशी परमाणु बैलिस्टिक मिसाइल पनडुब्बी है।

लेकिन उपलब्धियां ही अंतिम लक्ष्य नहीं हो सकतीं। यदि भारत सच में सुनिश्चित 'सेकंड स्ट्राइक' चाहता है तो अरिहंत और अरिघाट पर्याप्त नहीं हैं। रणनीतिक विशेषज्ञ मानते हैं कि कम से कम चार पनडुब्बियां हमेशा सक्रिय रहनी चाहिए, ताकि यदि प्रथम वार में एक नष्ट भी हो जाए तो अन्य तुरंत जवाब देने में सक्षम हों। इसी रणनीतिक आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए आइएनएस अरिधमन, जो भारत की तीसरी स्वदेशी परमाणु चालित बैलिस्टिक मिसाइल पनडुब्बी है, को जल्द ही नौसेना में शामिल किया जाएगा।

दुनिया की तकनीकी दौड़ इतनी तेज हो चुकी है कि पुराने पैमानों से शक्ति का आकलन करना निरर्थक है। चीन हाइपरसोनिक प्रक्षेपास्त्रों को लगातार आगे बढ़ा रहा है, जिनसे किसी भी पारंपरिक मिसाइल रक्षा को अप्रभावी ठहराया जा सकता है। पाकिस्तान ने ऐसे सामरिक हथियारों पर भरोसा दिखाया है, जिन्हें गंभीर रणनीति की बजाय युद्धक अव्यवस्था का हिस्सा कहना अधिक उचित होगा। इन चुनौतियों के बीच यदि भारत यह विश्वास उत्पन्न नहीं करता कि कोई भी प्रथम हमला उसकी डिलीवरी प्रणालियों को निष्क्रिय नहीं कर पाएगा तो हमारी 'नो फर्स्ट यूज' नीति की नैतिक आधारशिला पर सवाल उठाए जाएंगे। मिसाइलों की सटीकता और क्षमता को और बढ़ाने पर ध्यान देना अनिवार्य है। अग्नि-5 ने भारत को गंभीर विकल्प जरूर उपलब्ध कराए हैं, लेकिन अब हमें मल्टीपल इंडिपेंडेंटली टार्गेटेबल री-एंट्री व्हीकल यानी 'एमआइआरवी' तकनीक तथा हाइपरसोनिक प्रणालियों की ओर निर्णायक प्रगति करनी ही होगी। इससे हमारी क्षमता केवल आक्रामक ही नहीं, बल्कि संतुलनकारी बनेगी। साथ ही परमाणु कमांड और कंट्रोल प्रणाली को साइबर हमलों से सुरक्षित बनाना भी उतना ही आवश्यक है। अगर कमांड सिस्टम मजबूत और स्वतंत्र नहीं हो, तो हथियारों पर हमेशा खतरा मंडराता रहता है। इसी वजह से भारत का अपना नेविगेशन सिस्टम 'नैविक' बहुत जरूरी है, क्योंकि आज की मिसाइलों को सही दिशा देने के लिए सैटेलाइट की मदद जरूरी होती है। वायु आधारित क्षेत्र में भी केवल मौजूदा विमानों पर निर्भर न रहकर दीर्घकालीन रणनीति में स्टील्थ बॉम्बर्स और अत्याधुनिक एयर-लॉन्च्ड क्रूज मिसाइलों को स्थान देना होगा।

भारत की परमाणु रणनीति का सार है न्यूनतम विश्वसनीय निवारण। इसका लक्ष्य हथियारों की दौड़ में आक्रामक विस्तार करना नहीं, बल्कि अवश्यम्भावी प्रतिक्रिया का भरोसा जगाना है। परमाणु नीति का आधार संयम और जिम्मेदारी है, किंतु यह संयम तभी सार्थक दिखाई देगा जब उसके पीछे प्रौद्योगिकी की ठोस शक्ति खड़ी होगी। परमाणु हथियारों की असली ताकत उनकी संख्या में नहीं, बल्कि इस भरोसे में होती है कि जरूरत पड़ने पर उनका इस्तेमाल जरूर होगा। यदि भारत अपनी परमाणु त्रयी को समयानुकूल, आधुनिक और गतिशील बनाए रखता है, तो उसकी 'नो फर्स्ट यूज' की नीति सिर्फ एक आदर्श नहीं, बल्कि दुश्मन के लिए डर और संतुलन का संदेश बनेगी।

फैक्ट फ्रंट

मैनाकिन

दक्षिण अमरीका के घने जंगलों में पाया जाने वाला मैनाकिन पक्षी प्रकृति का एक अनोखा डांसर है। यह छोटा-सा रंगबिरंगा पक्षी अपने अनूठे कोर्टशिप डांस के लिए प्रसिद्ध है।

नर मैनाकिन का नाच इतना स्टाइलिश और लयबद्ध होता है कि इसे देखकर लोग हैरान रह जाते हैं। इसकी चपलता और नृत्य के कारण इसे नेचर का डांस मास्टर कहा जाता है। मैनाकिन पक्षी की खास बात है इसका मूनवॉक जैसा स्टेप। कुछ प्रजातियां जैसे रेड-कैप्ड मैनाकिन अपने पैरों को इतनी तेजी और चतुराई से हिलाते हैं कि वे सचमुच पीछे की ओर फिसलते हुए प्रतीत होते है।

यह पक्षी अपने पंखों से संगीत जैसी ध्वनियां भी उत्पन्न करता है। मैनाकिन कभी-कभी सामूहिक नृत्य भी करते हैं। नर मैनाकिन पक्षियों के पंख बेहद चमकीले और आकर्षक होते हैं। इनमें लाल, पीले, नीले और काले रंग का अनोखा मेल देखने को मिलता है। इस पक्षी की 50 से ज्यादा प्रजातियां हैं, जैसे रेड-कैप्ड, ब्लू-बैक्ड और गोल्डन-हेडेड मैनाकिन जिनके नृत्य और रंग अलग-अलग होते हैं। वैज्ञानिक मानते हैं कि यह याद रखने की क्षमता के मामले में सबसे आगे है।

दृष्टिकोण

प्रकृति को बचाएं तभी पर्यटन बचेगा

सतत पर्यटन को नीति व जमीनी दोनों स्तर पर लागू किया जाना चाहिए

हाल में सुप्रीम कोर्ट ने हिमालयी राज्यों में इंसानी दखल और बेतहाशा पर्यटन से उपजी आपदाओं पर चिंता जताई। अदालत ने साफ कहा कि भूस्खलन, मकानों का गिरना और सड़कों का टूटना प्राकृतिक घटनाएं नहीं, बल्कि मानवीय हस्तक्षेप का नतीजा है। यह चेतावनी केवल हिमालय तक सीमित नहीं है- यह पूरे भारत, खासकर पर्यटन प्रधान राज्यों के लिए भी एक बड़ा सबक है। भारत के पर्वतीय और ऐतिहासिक स्थल पर्यटन से चमकते हैं, लेकिन यही पर्यटन अगर जिम्मेदार न हो तो पर्यावरण के लिए बोझ बन जाता है।

प्रो. हेमन्त पारीक
जनरल सेक्रेटरी, इंटरनेशनल सोसायटी फॉर लाइफ साइंसेज
@patrika.com

हिमालयी राज्यों में इस साल 100 से अधिक प्राकृतिक आपदाएं दर्ज हुईं। केवल जुलाई 2025 तक 626 लोगों की मौत बेतरतीब विकास और आपदाओं से हो चुकी है यानी प्रकृति कह रही है कि यदि सीमा लांघोगे, तो परिणाम भुगतोगे। देश के कई राज्य भले ही हिमालय जैसे संवेदनशील न हो, लेकिन यहां भी खतरे कम नहीं। कई जगहों पर हवा विश्व स्वास्थ्य संगठन मानकों से कई गुणा प्रदूषित हो चुकी है। झीलें सीवेज और गंदगी से जूझ रही हैं। प्लास्टिक कचरा बढ़ता जा रहा है। राजस्थान की ही बात लें तो आज पर्यटन से यहां हर साल 60,000 करोड़ रुपए से अधिक का आर्थिक लाभ होता है। लेकिन अगर पर्यावरण की अनदेखी जारी रही तो यही पर्यटन भविष्य में बोझ बन सकता है। सतत पर्यटन को नीति और जमीनी स्तर दोनों पर लागू करना चाहिए। पर्यटन कर का एक निश्चित हिस्सा स्वच्छता और पर्यावरण सुधार पर खर्च करना चाहिए। हर पर्यटक से ग्रीन टैक्स लेकर उसका योगदान पर्यावरण संरक्षण में लगाना चाहिए। विश्व पर्यावरण स्वास्थ्य दिवस(26 सितंबर) और विश्व पर्यटन दिवस (27 सितंबर) का साझा संदेश यही है कि प्रकृति को बचाओ, तभी पर्यटन बचेगा। सुप्रीम कोर्ट की चेतावनी हमें याद दिलाती है कि अगर हमने अब भी आंखें मूंदकर रखीं तो धरोहरें और जीवन- सब संकट में पड़ जाएंगे। पर्यटन को सौंदर्य और लाभ का साधन ही नहीं, बल्कि जिम्मेदारी और संतुलन का मार्ग भी बनाएं।

व्हेल वैली: धरती पर समुद्री जीवन के विकास को समझने की खुली पाठशाला

मिस्र के पश्चिमी रेगिस्तान में बसा 'वाडी अल-हितान', जिसे व्हेल वैली के नाम से जाना जाता है। प्रकृति और इतिहास का अद्भुत संगम है। यह स्थल यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल है और इसे पृथ्वी पर समुद्री जीवन के विकास की कहानी को समझने के लिए एक खुली पाठशाला माना जाता है। यहां पर खोजे गए जीवाश्म लगभग 3.7 करोड़ वर्ष पुराने हैं, जो यह प्रमाणित करते हैं कि कभी यह विशाल रेगिस्तान समुद्र की गहराइयों का हिस्सा हुआ करता था। सबसे उल्लेखनीय खोजों में से एक है 65 फीट लंबा प्राचीन व्हेल का कंकाल, जो अपने विशाल आकार और संरचना के कारण वैज्ञानिकों और पर्यटकों दोनों को विस्मित करता है।

प्रसंगवश

जंगल सफारी का मोटा किराया, वन विभाग मौन

वन विभाग गहरी नींद से जागे, सक्रियता दिखाए और कठोर कार्रवाई करे

राजस्थान में जंगल सफारी के नाम पर पर्यटकों से की जा रही खुली लूट किसी एक एजेंट या वेबसाइट की कारगुजारी नहीं, बल्कि सिस्टम की लापरवाही का नतीजा है। झालाना, रणथम्भौर, सरिस्का और हाथीगांव जैसे लोकप्रिय स्थलों के लिए फर्जी वेबसाइट्स सक्रिय हैं, जो सरकारी नामों से मिलती-जुलती पहचान बनाकर पर्यटकों को ठग रही हैं। हाथी सफारी के नाम पर तो पांच से दस गुना तक किराया वसूला जा रहा है। यह सब वन विभाग के सामने हो रहा है, लेकिन विभाग की प्रतिक्रिया बेहद ढीली और गैर-जिम्मेदाराना है। जब शिकायत मिलेगी तब कार्रवाई करेंगे... यह तर्क नहीं, बल्कि लापरवाही का प्रमाण है।

क्या विभाग को नहीं पता कि पर्यटन सीजन शुरू हो गया है और हजारों पर्यटक जंगल सफारी के लिए ऑनलाइन टिकट बुक कर रहे हैं? क्या यह विभाग की जिम्मेदारी नहीं बनती कि वह पहले से सतर्कता बरते, फर्जी वेबसाइट्स की पहचान करे और साइबर सेल के साथ मिलकर कार्रवाई करे? रणथम्भौर में पर्यटकों को फर्जी लेटरहेड पर टिकट थमाकर सफारी से कुछ देर पहले निरस्त कर देना, केवल ट्रिप खराब करना नहीं, बल्कि राजस्थान की पर्यटन छवि को नुकसान पहुंचाना है। हाथीगांव के हाथी मालिकों की शिकायतें महीनों से लंबित हैं, लेकिन वन विभाग, पुलिस और साइबर सेल विभाग सब मौन हैं। यह मौन संदेह पैदा करता है कि क्या विभाग की निष्क्रियता किसी मिलीभगत का संकेत है? पर्यटन राजस्थान की अर्थव्यवस्था का अहम हिस्सा है। यदि विभाग इसी तरह आंख मूंदे बैठा रहा तो आने वाले समय में पर्यटकों के विश्वास को खो देंगे और इसका खमियाजा पूरे राज्य को भुगतना पड़ेगा। अब वक्त है कि वन विभाग गहरी नींद से जागे, सक्रियता दिखाए और फर्जीवाड़े पर कठोर कार्रवाई करे। वरना यह लापरवाही सिर्फ पर्यटकों को नहीं, पूरे पर्यटन तंत्र को नुकसान पहुंचाएगी। साथ ही राज्य की ब्रांडिंग, रोजगार और स्थानीय व्यवसायों पर भी इसका सीधा असर पड़ेगा, जिसे नजरअंदाज करना आत्मघाती होगा। जिम्मेदारों को अब जवाबदेह बनना होगा। - **नरोत्तम शर्मा**

narottam.sharma@in.patrika.com

देव आनंद जन्मदिवस विशेष गाइड के राजू में देखी जा सकती उनके व्यक्तित्व की झलक

सिनेमा का राही, जो सफर को ही मंजिल मान गया

विनोद अनुपम
राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार प्राप्त कला समीक्षक
@patrika.com

वर्ष 1966 में पर्ल एस. बक फिल्म निर्माण के क्षेत्र में इंडो-अमरीकन सहयोग की संभावना तलाश करती है। कथानक के लिए 'द गाइड' का चुनाव किया जाता है और भारतीय सहयोगी के रूप में उन्हें मिलते हैं, देव आनंद, युवा-अतिसक्रिय अभिनेता और अपनी प्रोडक्शन कंपनी 'नवकेतन' को नक्षत्रों के बीच स्थान दिलाने को आतुर महत्त्वाकांक्षी, स्वप्नदर्शी फिल्मकार। हिन्दी-अंग्रेजी दोनों भाषाओं में एक साथ फिल्म की शुरुआत होती है।

अंग्रेजी वर्जन का निर्देशन टेड डेनुसलस्की करते हैं, पर्ल बक की पटकथा के बावजूद 'द गाइड' की भारतीयता का मर्म वे महसूस नहीं कर पाते और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर फिल्म नकार दी जाती है। हिन्दी में निर्देशन का दायित्व देव आनंद के छोटे भाई विजय आनंद उठाते हैं, वे हिन्दी मानसिकता से पटकथा का पुनर्लेखन करते हैं, पूरी फिल्म उन्हीं लोकेशनों पर दोबारा शूट की जाती है और हिन्दी में यह फिल्म सर्वकालिक सफल ही नहीं होती, हिन्दी की श्रेष्ठतम फिल्मों में भी शुमार की जाती है। एक फिल्मकार, एक अभिनेता के रूप में देव आनंद को अमर बनाने के लिए 'गाइड' का ही स्मरण काफी है, जिसके बारे में लेखक आर. के. नारायण ने लिखा था, 'देव आनंद के अन्तिम कुछ दृश्य तो वाकई काफी हृदयस्पर्शी और भावविभोर कर देने वाले हैं।' वास्तव में गाइड के राजू में कहीं न कहीं देव आनंद के संपूर्ण व्यक्तित्व की झलक देखी जा सकती है। जो बाहर से जितना खिलंदड़ दिखता हो, अंदर से उतना ही ईमानदार और प्रतिबद्ध।

वर्ष 1945 में प्रभात स्टूडियो, पुणे के पार्टनर बाबू राव पइ के मुंबई ऑफिस में देव आनंद के कदम रखने साथ ही हिन्दी सिनेमा के इस लीजेंड के जीवन की शुरुआत होती है। फिल्म 'जिद्दी' की अपार सफलता उन्हें देखते-देखते हिन्दी सिनेमा का स्टार बना देती है। फिल्म 'टैक्सी ड्राइवर' की अपार सफलता ने देव आनंद की हेयरस्टाइल, हंसी, अदाओं और वस्त्रविन्यास को भी युवाओं के बीच अनुकरणीय बना दिया। हिन्दी सिनेमा में सहृदय एंटी हीरो की शुरुआत भी यही मानी जाती है। क्राइम थ्रिलर देव आनंद की कमजोरी रही है। शायद यह 'बाजी' और 'टैक्सी ड्राइवर' की सफलता का भी प्रभाव हो। लगातार सफलता के प्रति आत्मविश्वास से दिप्त देव आनंद 1970 में नवकेतन की अगली फिल्म 'प्रेम पुजारी' खुद निर्देशित करने का निर्णय लेते हैं। निर्देशित ही नहीं लिखने का भी। 1965 के भारत-पाक युद्ध की पृष्ठभूमि पर बनी यह प्रेमकथा बेहतर संगीत के लिए आज भी याद की जाती है।

'गाइड' के राजू की तरह देव आनंद के लिए भी सफलता-विफलता कभी महत्त्वपूर्ण नहीं रही। उनके बेचैन कलाकार मन को शायद कलात्मक हस्तक्षेप का संतोष होता। देस-परदेस के बाद के दिनों में जब उनकी फिल्में लगातार विफल होने लगी थीं, इसके बावजूद हर वर्ष किसी समकालीन विषय पर वे फिल्म बना रहे होते तो किसी ने पूछा, आप तो खाली हाथ हो जाएंगे, इस तरह से। उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा था, इंडस्ट्री में मैं आया भी खाली हाथ था। सिनेमा का कमाया, सिनेमा को देकर जाऊंगा, इसमें क्या बड़ी बात है।

आपकी बात

रेडियम बैंड बांधे जाने चाहिए

निराश्रित पशुओं से सड़क पर होने वाले हादसों को रोकने के लिए ऊंची दीवार या डिवाइडर निर्मित किए जाने चाहिए। पशुओं के गले में चमकीले रेडियम के पट्टे/बैंड बांधे जाने चाहिए। जहां पर भी सड़क मार्ग निर्मित किए गए हैं यह रास्ते गोवंश के विचरण के रास्ते थे। इन निराश्रित पशुओं के लिए गोचर भूमियों को अतिक्रमण से मुक्त करना चाहिए।

- **कैलाश सामोता**, राजसमंद

मुहिम चलाए जाने की आवश्यकता

सड़कों पर घूमने वाले निराश्रित पशुओं को समय-समय पर पकड़ने के लिए स्थानीय प्रशासन के जरिए मुहिम चलानी चाहिए। इन निराश्रित पशुओं के सड़कों के बीचोंबीच बैठने से आए दिन दुर्घटनाएं भी हो रही हैं, जो कई बार जानलेवा बन जाती हैं। पशुपालक अपने पालतू पशुओं को घरों में ही बांधकर रखें तो ऐसी स्थिति से बचा जा सकता है।

- **नरेश कानूनगो**, देवास, म.प्र.

patrika.com पर पढ़ें

पाठकों की अन्य प्रतिक्रियाएं

इसे स्कैन करें

पत्रिकायन का सवाल था, 'निराश्रित पशुओं से सड़क पर होने वाले हादसों को रोकने के लिए क्या प्रयास किए जा सकते हैं?' ऑनलाइन भी देखें।

https://shorturl.at/Nwupl

मेंटल हेल्थ सबसे कठिन बातचीत है आत्मघाती विचारों पर संवाद करना

जब जिंदगी बोझ लगने लगे तो अपनी खामोशी को तोड़ें

अपर्णा पीरामल राजे
'केमिकल खिचड़ी: हाउ आइ हैक्ड माय मेंटल हेल्थ' पुस्तक की लेखिका
@patrika.com

अक्टूबर 2001 का एक शांत सप्ताहांत था। मैं बोस्टन में अपने साझा अपार्टमेंट की रसोई की खिड़की से बाहर देख रही थी। अकेलापन और उदासी ने मन घेरा हुआ था। अचानक एक डर उपजा- मैंने सोचा, अगर मैंने अपनी कलाई काट ली तो क्या होगा? धीरे-धीरे खून बहने से शायद मरने में बहुत समय लगेगा? मन को भटकाने के लिए मैंने सहज रूप से एक उपन्यास उठा लिया। किताब ने मुझे पूरी तरह अपने भीतर खींच लिया। बाद में मैंने एक करीबी मित्र से कहा कि शुरुआत तो बहुत खराब थी, लेकिन किताब की वजह से सप्ताहांत अंत में अच्छा निकल गया। किसी और से मैंने इन बातों का जिक्र नहीं किया।

वर्ष 2013 की गर्मी की एक दोपहर। मुंबई में अपने अपार्टमेंट की छत पर खड़े होकर मैंने नीचे देखा- हमारा मकान सिर्फ चार मंजिला था। मैंने सोचा, कूदी तो शायद मरने के बजाय व्हीलचेयर में पहुंच जाऊंगी। इस प्रकार सोचने पर मैं खुद पर खीजी और लगभग सिहरती हुई फ्लैट में वापस चली आई। इस घटना के बारे में भी मैंने किसी से बात नहीं की। आज मैं ये व्यक्तिगत अनुभव इसीलिए बांट रही हूं, ताकि दिखा सकूं कि आत्महत्या पर बात करना आज भी कितना कठिन है। यह भी बताना चाहती हूं कि जब कोई प्रियजन यह बताए कि वह आत्मघाती विचारों से जूझ रहा है, तब परिवार और मित्र कैसे प्रतिक्रिया दें। उन घड़ियों में मेरी सबसे बड़ी कमी यह थी कि मेरे पास कोई ऐसा भरोसेमंद व्यक्ति नहीं था, जिससे मैं बिना निर्णय के डर के अपनी बात कह सकूं। इसलिए, यह जानना कि प्रतिक्रिया कैसे देनी चाहिए, अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

मैं पिछले पच्चीस वर्षों से बाइपोलर डिसऑर्डर के साथ जी रही हूं और इन वर्षों में मैंने अनौपचारिक तौर पर कई लोगों को परामर्श भी दिया है। इस अनुभव के साथ-साथ मैंने दो प्रशिक्षित मानसिक स्वास्थ्य पेशेवरों– तनुजा बब्रे और मेघा सेकसरिया से भी चर्चा की। दोनों अक्सर आत्मघाती विचारों वाले रोगियों से मिलती हैं। इनके अनुभव और मेरे निजी अनुभव से कुछ स्पष्ट, व्यावहारिक सलाह बनती है- कब क्या बोलना चाहिए और किस बात से बचना चाहिए।

सबसे पहले क्या न कहें पर चर्चा कर लें। दोषारोपण और तत्काल प्रतिक्रिया से बचें। जैसे कह देना, 'तुम ऐसा कैसे सोच सकती हो?' या 'क्या तुमने सोचा कि इससे मेरी जिंदगी पर क्या असर पड़ेगा?' ऐसी टिप्पणियां भय और शर्म पैदा कर देती हैं और व्यक्ति को खुलकर बोलने से रोकती हैं। अक्सर लोग इसलिए अपने विचार किसी से साझा नहीं करते, क्योंकि वे दूसरों को डराना या परेशान करना नहीं चाहते। ऐसे क्षणों में श्रोता का सबसे बड़ा तोहफा शांत और गैर-आलोचनात्मक मौजूदगी होती हैं। दूसरी गलती अत्यधिक तारीफ या आश्चर्य जताना- 'मैंने तुम्हें हमेशा मजबूत माना है।' ऐसा कहने से वह व्यक्ति और अधिक दबाव में आ सकता है और सोचने लगेगा कि 'मुझे बेहतर ढंग से सामना करना चाहिए था'- जो कि मदद के बजाय नुकसान कर सकता है।

सहानुभूति और मान्यता जरूरी है। सीधे और सरल तरीके से कहें- 'यह वाकई बहुत भारी महसूस होता होगा। मैं खुश हूं कि तुमने मेरे साथ यह शेयर किया। मैं सुन रहा हूं- यह आसान नहीं रहा होगा।' इस तरह के शब्द खुलने के लिए जगह देते हैं और शब्दों के बाद आने वाली चुप्पी भी मददगार हो सकती है। सुनना और प्रतिबिंबित करना दोनों ही उपयोगी हैं। उदाहरण के लिए, आप कह सकते हैं- 'मैं सुन रहा हूं, क्या तुम और बताना चाहोगे?' या 'क्या अभी तुम्हें कोई खास चीज बहुत परेशान कर रही है?' संवाद का एक उद्देश्य यह भी है कि समस्या के लिए व्यावहारिक समर्थन जुटाया जाए। साथ मिलकर सोचें कि किस तरह का सहयोग उपलब्ध कराया जा सकता है- क्या तत्काल किसी भरोसेमंद व्यक्ति को साथ लाना संभव है, क्या काउंसलर, चिकित्सक की पेशेवर मदद चाहिए या क्या कुछ ऐसी परिस्थितियां हैं, जिन्हें बदलने की आवश्यकता है। इस बात का आश्वासन दें कि 'हम मिलकर इसका रास्ता निकालेंगे।' स्पष्ट रूप से पूछें कि 'हम कैसे सुनिश्चित करें कि तुम आज सुरक्षित हो?' यदि फोन पर हैं तो पूछें- क्या आसपास कोई भरोसेमंद वयस्क है, जिसे वह तुरंत बुला सकें? किन-किन साधनों से वह तत्काल खुद को नुकसान पहुंचा सकते हैं- उन पर विचार करना और जरूरी हो तो उन्हें अस्थायी रूप से दूर करना व्यावहारिक कदम हो सकता है। यदि आपको संदेह है कि कोई आत्मघाती विचार कर रहा है तो इसे छिपाएं नहीं। टालना विचारों को रोकता नहीं, परंतु बात उठाने से यह स्पष्ट हो जाता है कि आप उनकी भलाई की परवाह करते हैं और वह अकेले नहीं हैं।

आत्महत्या अक्सर किसी निर्णायक बिंदु नहीं, बल्कि कई नकारात्मक घटनाओं का परिणाम होती है- निराशा, असहायता, आत्म-घृणा या पेशेवर-व्यक्तिगत विफलताओं का भार। ऐसे भावनात्मक और परिस्थितिजन्य कारणों पर काम करके थेरेपी, आत्मावलोकन, व्यावहारिक रणनीतियों से लंबे समय में राहत मिल सकती है। मैं स्वयं यह जानकर कह सकती हूं कि 'पर्याप्त नहीं होने' की भावना पर काम करके जीवन में सुधार संभव है, मैं आज खुश और फल-फूल रही हूं- फिर भी बाइपोलर विकार के साथ जी रही हूं। *(मुंबई मिरर में प्रकाशित लेख, विशेष अनुमति से पत्रिका पाठकों के लिए)*

समसामयिक विषयों पर पाठकों के विचार आमंत्रित हैं। चुनिंदा विचार प्रकाशित किए जाएंगे।

ईमेल करें: edit@epatrika.com

प्रेरणा

आपके अंदर अभी इसी वक्त वो सब कुछ है जो इस दुनिया का सामना करने के लिए चाहिए।- **ब्रायन ट्रेसी**

संपादकीय

छात्रों के लिए पर्सनलाइज्ड शिक्षक का विचार बेहतर

शिक्षा मंत्री ने मंगलवार को बताया कि देश की साक्षरता दर 12 वर्षों में 74% से बढ़कर 2023-24 में 80.9% हो गई है। ताजा रिपोर्ट है कि हिमाचल पूर्ण साक्षरता वाला पांचवां राज्य बन गया है। लेकिन 'प्रथम' की 2024 की रिपोर्ट के अनुसार कक्षा-5 का हर दूसरा बच्चा कक्षा-2 का सामान्य पाठ नहीं पढ़ सकता। देश में पहली बार आंध्र प्रदेश ने 1200 सरकारी स्कूलों में एआई-आधारित 'पाल' (पर्सनलाइज्ड अडॉप्टिव लर्निंग) लागू किया। 2023 से 2025 तक इस नई तकनीक के लाभ के अध्ययन में पता चला कि आम छात्रों के मुकाबले इन स्कूलों के छात्रों की लर्निंग 2.3 गुना बढ़ गई है यानी एक कक्षा 6 का छात्र (छात्राओं का लर्निंग प्रतिशत ज्यादा है) एक साल में इस तकनीक से सामान्य स्कूल के छात्र के मुकाबले 2.3 साल आगे का ज्ञान पाता है। नोबेल विजेता अर्थशास्त्री माइकेल क्रेमर इस अध्ययन के बाद मान रहे हैं कि इस तकनीक को भारत के पूरे एजुकेशन सिस्टम में लागू करना चाहिए। हर छात्र की विषय पर समझ पहचानकर 'पाल' उसे अगले चरण की ओर ले जाता है। हर छात्र के पास अपना एआई-टीचर होता है। कक्षा के टीचर का काम सिर्फ यह देखना है कि छात्र इस तकनीक को इस्तेमाल करने में टैबलेट के बटन को ठीक से दबा रहा है या नहीं। शिक्षार्थियों के बीच लर्निंग गैप बड़ी समस्या है। ऐसे में नई युक्तियां जरूरी हैं।

जीने की राह

पं. विजयशंकर मेहता

humarehanuman@gmail.com

एकांत में उतरें तो शक्ति का सदुपयोग कर पाएंगे

कहते हैं सपने टूटते ही नहीं, मर भी जाते हैं। सपनों की लाशों को जलाने या दफनाने की जल्दी मत करिएगा। सपनों के शव को फिर जीवित किया जा सकता है। हम सफल, सुखी लोगों को देखते हैं तो बाहर से पता नहीं लगता, लेकिन भीतर से इनके सपने भी टूटे होंगे या मृत होंगे। आज तो शायद ही कोई हृदय होगा, जिसे घावों ने घेरा न हो। उजले मुखड़ों के पीछे भी गहरी पीड़ा होगी। यदि हमारे साथ ऐसा हो जाए कि हमारा कोई सपना मरने की स्थिति में हो तो सबसे पहला काम करें- एकांत साधें। एकांत में हम ईश्वर के साथ होते हैं। एकांत, विश्राम से अलग है। यदि हम एकांत साधें- जिसका माध्यम है ध्यान- तो पाएंगे कि हम उन सपनों को पुनर्जीवित कर सकते हैं। क्योंकि एकांत से ऐसी ऊर्जा हमको मिलती है, जो शक्ति बनकर हमारे सारे काम निपटा देती है। नवरात्र में एकांत का प्रयोग बहुत परिणाम देने वाला होगा। जितना हम लोगों से घिरे रहते हैं, उतने विचलित होंगे। जितना एकांत में उतरेंगे, शक्ति का उतना ही सदुपयोग कर जाएंगे।

• Facebook:Pt. Vijayshankar Mehta

टु द पीपुल • साहित्य का भविष्य महिलाओं के हाथों में है

आइए, लिखने और पढ़ने वाली महिलाओं के बारे में बातें करें

लिट्रेचर

डेरेक ओ ब्रायन

राज्यसभा में टीएमसी के नेता

office@derek.in

एक दोस्त ने मुझसे कहा था कि साहित्यिक रॉक स्टार महिलाओं के बारे में लिखने का क्या फायदा, जिन्हें पहले ही मीडिया का बहुत अटेंशन मिल रहा हो।

'महिलाएं पुरुषों से ज्यादा क्यों पढ़ती हैं' शीर्षक से अपने एक लेख में एरिक वेइनर लिखते हैं, 'कुछ साल पहले ब्रिटिश लेखक इयान मैकइवान ने एक प्रयोग किया। वे और उनका बेटा लंदन के एक पार्क में दोपहर के भोजन के समय भीड़ में घुस गए और मुफ्त किताबें बांटने लगे। कुछ ही मिनटों में उन्होंने 30 उपन्यास वितरित कर दिए। इन्हें लेने वाली लगभग सभी महिलाएं थीं, जो मुफ्त की इस भेंट के लिए 'उत्सुक और आभारी' थीं, जबकि पुरुष संशय या अरुचि से नाक-भौं सिकोड़ रहे थे। मैकइवान ने निष्कर्ष निकाला कि अगर महिलाएं पढ़ना बंद कर दें, तो उपन्यास विधा की मृत्यु हो जाएगी।' तो मैं यहां इस विषय पर लिख रहा हूं कि महिलाएं कैसे पढ़ती हैं। और हम उन महिलाओं के बारे में पर्याप्त बातें क्यों नहीं करते, जो लिखती भी हैं?

2025 के साल ने कुछ असाधारण भारतीय लेखिकाओं को सुर्खियों में ला दिया है। बानू मुश्ताक और दीपा भस्ती ने 'हार्ट लैम्प' के लिए अंतरराष्ट्रीय बुकर पुरस्कार जीता था। यह लघु कथाओं का संग्रह मुख्यतः कर्नाटक की मुस्लिम महिलाओं के जीवन पर केंद्रित है। इन जमीनी और ईमानदार कहानियों को अब तक अकेले भारत में ही एक लाख से ज्यादा पाठक पढ़ चुके हैं। बानू और दीपा को इसके लिए देश-विदेश में उचित ही सम्मानित किया गया है। 'हार्ट लैम्प' की लेखिका एक एक्टिविस्ट, वकील और इतिहासकार के रूप में उन महिलाओं के जीवन को गहराई से जानती हैं, जिनके बारे में उन्होंने लिखा है। वहीं अनुवादिका ने स्थानीय बोली-बानी की तमाम बारीकियों को पकड़ा है।

वहीं कर्नाटक से दूर, न्यूयॉर्क के क्वींस में रहने वाली किरन देसाई ने बुकर पुरस्कार जीतने के बाद अपनी अगली किताब लिखने में 20 साल लगा दिए। एक आधुनिक प्रेम की कहानी, जो भारत से दूर रहने वाले भारतीयों की है। लेकिन किरन ने जो भी लिखा है, उसे समर्पित होकर वर्षों की मेहनत से निखारा है। उनके नए उपन्यास 'द लोनलीनेस ऑफ सोनिया एंड सनी' के बुकर पुरस्कार के लिए सूचीबद्ध होने के कुछ घंटों बाद मैंने उनसे पूछा, 'बीस सालों तक एक ही किताब पर काम करने के लिए आपने किस अनुशासन का पालन किया?' उन्होंने मुझे बताया : 'मैं एक ऐसे अनुशासन का पालन करती हूं, जो मुझे लगता है कि इतने सालों की मेहनत के बाद अब मुझमें गहराई से समाया हुआ है। हर सुबह मैं सीधे अपनी मेज पर जाती हूं। मैं इसे एक आध्यात्मिक अनुशासन, संयम की एक आचार-संहिता मानती हूं। मैं इसका पालन करती हूं, ताकि अच्छे से काम कर सकूं। मैं हर दिन काम करती हूं, किसी चींटी, मधुमक्खी या केंचुए की तरह। मैं वास्तविक जीवन के एक छोटे-से कतरे को कलात्मक रूप में ढालती हूं, बिना यह जाने कि मैं किस दिशा में काम कर रही हूं। जैसे किसी चींटी को पता नहीं चलता कि क्षितिज के परे क्या है फिर भी वह काम करती रहती है, उसी तरह मैं भी बीते कई सालों से काम कर रही हूं।'

किरन की मां अनीता देसाई की किताब 'रोसारिता' बराक ओबामा की 2025 की समर-रीड्स की सूची में शामिल थी। अगर अनीता देसाई 88 की उम्र में भी ऐसा लिख सकती हैं, तो हम सभी को उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए। और बुकर विजेताओं की बात करें तो उस महिला के बारे में क्या कहें, जिन्होंने यह सब शुरू किया- अरुंधति रॉय। उनकी नई किताब 'मदर मैरी कम्स टु मी' एक असामान्य बचपन का वृत्तांत है, जो हमें बताता है कि कैसे एक महिला को हमेशा एक आदर्श मां या बेटी के रूप में चिह्नित नहीं किया जा सकता। शायद यह एक लेखिका के रूप में अरुंधति के व्यक्तित्व के निर्माण के बारे में भी है।

आज देश के कई शहरों में महिलाओं द्वारा शुरू किए बुकस्टोर्स और लाइब्रेरियां खुल रही हैं। वे किताबों को पाठकों तक पहुंचाना चाहती हैं। अमेजन के एल्गोरिदम से परे आज ज्यादा से ज्यादा महिलाएं किताबें खरीदने वालों से संवाद कर रही हैं।

लेकिन अगर हम लिखने वाली महिलाओं की बात कर रहे हैं, तो क्यों न इस अंतर को पाटकर उन महिलाओं की भी बात करें, जो पाठकों तक किताबों को पहुंचाती हैं? आज देश भर के कई शहरों में महिलाओं द्वारा शुरू किए गए इंडिपेंडेंट बुकस्टोर्स और लाइब्रेरियां खुल रही हैं। वे किताबों को पाठकों तक पहुंचाना चाहती हैं। अमेजन के एल्गोरिदम से परे आज ज्यादा से ज्यादा महिलाएं किताबें खरीदने वाले युवा और बुजुर्ग पाठकों से बात कर रही हैं और जादुई किताबें उनके हाथों में थमा रही हैं। तो क्या पढ़ने, लिखने और किताबों के सृजन का भविष्य महिलाओं के हाथों में है? पता नहीं। लेकिन अगर ऐसा है, तो एक प्राथमिक विद्यालय की शिक्षिका के बेटे और खूब पढ़ने वाली एक महिला के पति के रूप में मुझे यकीन है कि किताबें एआई के आक्रमण के बावजूद एक लम्बी उम्र तक जीवित रहेंगी।

(ये लेखक के अपने विचार हैं।)

दूरदृष्टि • भारत के लिए यह अच्छा संकेत नहीं

दक्षिण एशिया में नई नीति पर विचार कर रहे हैं ट्रम्प?

भू-राजनीति

मनोज जोशी

विदेशी मामलों के जानकार

manoj1951@gmail.com

डोनाल्ड ट्रम्प प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से अपनी दोस्ती को जाहिर करने में कभी पीछे नहीं रहते। भारत पर थोपे गए टैरिफ की बात करते हुए भी ट्रम्प ने मोदी को 'ग्रेट प्राइम मिनिस्टर' और 'ग्रेट फ्रेंड' कहा था। जन्मदिन पर भी मोदी को बधाई देते हुए ट्रम्प ने कहा था कि 'आप शानदार काम कर रहे हो।'

लेकिन जब भारत को लेकर अमेरिकी नीति की बात आई तो उनकी सरकार ने रुख सख्त कर लिया। बीते 25 सालों में भारत-अमेरिका की दोस्ती और सैन्य साझेदारी तेजी से बढ़ी थी। 2016 में तो भारत को महत्वपूर्ण रक्षा सहयोगी तक का दर्जा दिया गया। ट्रम्प के पहले कार्यकाल में भारत ने चार बुनियादी सैन्य समझौतों पर हस्ताक्षर किए थे। बाइडेन शासन में दोनों देशों ने अत्याधुनिक सैन्य तकनीकों के सहयोग का नया चरण शुरू किया था।

इस बारे में बहुत-सी उम्मीदें थी कि ट्रम्प के दूसरे कार्यकाल में ये संबंध कैसे रहेंगे। लेकिन बेहतरी के उलट अब दोनों देशों के बीच दूरी बढ़ रही है। आज भारत 50% टैरिफ झेल रहा है। इसमें से 25 प्रतिशत रूस से तेल खरीद के कारण थोपा गया है। यकीनन, अमेरिका और पाकिस्तान का बढ़ता रिश्ता भी एक मुद्दा है, जो ट्रम्प द्वारा असीम मुनीर को लंच पर बुलाने से जाहिर हो गया। ट्रम्प ने दावा किया कि उन्होंने भारत-पाकिस्तान तनाव कम करने में भूमिका निभाई। इसके अलावा ट्रम्प ने ईरान के मुद्दे में भी न केवल दखल दिया, उस पर बमबारी भी की।

अमेरिका की सेंट्रल कमांड के प्रमुख जनरल माइकल कुरिल्ला ने हाल ही में पाकिस्तान को आतंकवाद विरोधी अभियान में अपना 'शानदार साझेदार' बताया था। अपने रक्षा हितों के चलते अमेरिका भी पाकिस्तान से अच्छे रिश्ते चाहता है। मुनीर और पाकिस्तानी एयरफोर्स प्रमुख जहीर अहमद बाबर की अमेरिका यात्रा दोनों देशों के रक्षा संबंधों में आई गर्मजोशी का संकेत है। अमेरिका इस संबंध को क्षेत्रीय स्थिरता और भारत से तनाव कम करने की रणनीति में भी उपयोगी मानता है। अब ट्रम्प फिर से शहबाज शरीफ और मुनीर से अमेरिका में मिलने की तैयारी कर रहे हैं।

2018 में अपने पहले कार्यकाल में ट्रम्प ने ईरान पर प्रतिबंध लगाए थे, लेकिन भारत को उसके चाबहार प्रोजेक्ट के लिए छूट दी थी। इससे भारत को अफगानिस्तान तथा मध्य एशिया में गतिविधियां आगे बढ़ाने में मदद मिली। लेकिन हाल ही में अमेरिका ने यह छूट भी रद्द कर दी। इससे वहां कार्यरत भारतीय कंपनियां भी प्रतिबंधों के दायरे में आ जाएंगी।

अब अमेरिका ने नए एच-1बी वीसा धारकों से एक लाख डॉलर का शुल्क वसूलने का निर्णय किया है। इन वीसा धारकों में 72 प्रतिशत भारतीय होते हैं और यह बढ़ी हुई वार्षिक शुल्क राशि टीसीएस, इंफोसिस और विप्रो जैसी भारतीय कंपनियों के औसत वेतन से भी अधिक है। ये कंपनियां अपने हजारों कर्मचारियों को एच-1 बी वीसा पर अमेरिका भेजती हैं। इस निर्णय का असर उन पर भी पड़ेगा। वीसा की अतिरिक्त लागत के कारण अमेरिकी कंपनियां भी भारतीयों को काम देने से हिचकेंगी। यही 'मागा' समर्थकों की मंशा भी है।

नए घटनाक्रम में ट्रम्प ने कहा है कि अमेरिका को अफगानिस्तान के बगराम एयरबेस को वापस लेना चाहिए। अमेरिका ने तालिबान के खिलाफ युद्ध में इसी बेस का उपयोग किया था। ट्रम्प का दावा है कि बेस के पास ही चीन परमाणु हथियार बनाने की कोशिश कर रहा है। हालांकि इसका कोई प्रमाण नहीं है। इधर, तालिबान ने भी साफ कर दिया है कि अमेरिका को फिर से बेस इस्तेमाल करने देने का सवाल ही नहीं उठता।

अगर भारत को अलग-थलग करके अमेरिका ने दक्षिण एशिया में नई नीति बनाई तो 'क्वाड' और हिंद-प्रशांत क्षेत्र का क्या होगा? यही तो भारत-अमेरिका रिश्तों का मूलभाव है, जो चीन पर लगाम रखने के दोनों के साझा हितों पर टिका है।

इन सभी प्रकरणों से सवाल उठता है कि क्या ट्रम्प दक्षिण एशिया में एक नई अमेरिकी नीति पर विचार कर रहे हैं? ऐसी नीति, जो पाकिस्तान और अफगानिस्तान से रिश्ते बढ़ाती है, भले ही इसके लिए भारत को अलग-थलग करना पड़े। ध्यान दें कि भारत में अमेरिकी राजदूत सर्जियो गोर को दक्षिण और मध्य एशिया के लिए विशेष दूत भी नियुक्त किया गया है। लेकिन ऐसा हुआ तो फिर 'क्वाड' और हिंद-प्रशांत क्षेत्र का क्या होगा? यही तो भारत-अमेरिका रिश्तों का मूलभाव है, जो चीन पर लगाम रखने के दोनों देशों के साझा हितों पर आधारित है। लेकिन लगता है अब अमेरिका अपने रुख पर पुनर्विचार कर रहा है। ट्रम्प अक्टूबर में शी जिनपिंग से मिलने की योजना बना रहे हैं। यह भारत-अमेरिका तालमेल की नींव को कमजोर करेगा। लेकिन शायद ट्रम्प को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।

(ये लेखक के अपने विचार हैं।)

ब्रांड से सबक | जनरल मोटर्स gm | अमेरिकी कार निर्माता कंपनी

2008 में दिवालिया होने से बची थी जनरल मोटर्स आज 100 से ज्यादा देशों में कर रही कारोबार

7 नवंबर 2008, जीएम मोटर्स के सीईओ रिक वागोनर बोर्ड मीटिंग ले रहे थे। तभी उन्होंने कहा 'हमारे पास सिर्फ 6 महीने का कैश बचा है, अगर तत्काल सरकारी सहायता नहीं मिलती तो कंपनी केवल 2009 के मध्य तक ही चल पाएगी।' कंपनी की स्थिति इतनी खराब हो चुकी थी कि उसके कुछ दिनों तक संचालन पर ही सवाल खड़े हो गए। तब जनरल मोटर्स के संचालकों ने अमेरिकी सरकार से करीब 2500 करोड़ डॉलर की मदद मांगी, लेकिन सरकार ने मना कर दिया। इसके बाद 1 जून 2009 को कंपनी ने खुद को दिवालिया घोषित करने की प्रक्रिया शुरू कर दी। बिना योजना के विस्तार, आर्थिक कुप्रबंधन और गुणवत्ता से समझौता जैसी गलतियों ने अमेरिका की शीर्ष ऑटो कंपनी को घुटनों पर ला दिया था। टोयोटा जैसी कार कंपनियों ने उसे पछाड़ दिया। हालांकि अमेरिकी सरकार की आर्थिक मदद और नीतियों में बदलाव के बाद कंपनी दोबारा उठ खड़ी हुई। जनरल मोटर्स आज भी अमेरिका की शीर्ष मोटरकार कंपनियों में से एक है। 2025 के आंकड़ों के अनुसार दुनिया की छठी बड़ी कार निर्माता कंपनी है, लेकिन शीर्ष पर रहने का उसका दबदबा छिन गया। ब्रांड से सबक में आज पढ़िए जनरल मोटर्स के उतार-चढ़ाव की उस कहानी को जो गिर कर दोबारा खड़े होने का सबक देती है।

सबक क्यों- 70 के दशक में सबसे बड़ी ऑटोमोबाइल कंपनी थी, भारी कर्ज में डूबी, आज फिर 4.5 लाख करोड़ रुपए की कंपनी।

6वीं रैंक है कार ग्रुप्स में जनरल मोटर्स की 2025 के ताजा आंकड़ों के आधार पर दुनिया में।

17% के करीब हिस्सेदारी थी अमेरिकी कार बाजार में जनरल मोटर्स की 2023 में बिक्री के आधार पर।

जनरल मोटर्स के संस्थापक विलियम सी. ड्यूरांट कंपनी की शुरुआती गाड़ियों में से एक के साथ। उनका सपना था कि नामी मोटरकार कंपनियों को एक साथ होना चाहिए।

ऐसे पिछड़ी थी जीएम मोटर्स

1. **क्वालिटी से समझौता-** कंपनी ने लंबे समय तक कारों की संख्या बढ़ाने पर ध्यान दिया, लेकिन क्वालिटी में पिछड़ गई। 1970 और 80 के दशक में जापानी कंपनियों ने बेहतर माइलेज वाली टिकाऊ कारें उतारीं। ग्राहक धीरे-धीरे इससे दूर होते चले गए।
2. **जटिल पोर्टफोलियो-** कंपनी के पास शेव्रोले, कैडिलैक, ब्यूक जैसे दर्जनों ब्रांड थे। इससे फोकस बंट गया। संसाधनों का सही इस्तेमाल नहीं हुआ। वहीं प्रतिद्वंद्वी सीमित ब्रांड्स पर पूरी ताकत लगा रहे थे।
3. **आर्थिक संकट-** 2008 की वैश्विक मंदी में उपभोक्ता मांग गिरी, क्रेडिट कमजोर हुआ और कंपनी को भारी घाटा उठाना पड़ा। इससे नकदी संकट आया। कंपनी दिवालिया होने की कगार पर पहुंच गई।
4. **भारी खर्च-** कंपनी ने कर्मचारियों और रिटायर्ड स्टाफ को स्वास्थ्य और पेंशन के भारी फायदे दिए। जब बिक्री घटी तो यह बोझ बन गया।

इस तरह की वापसी

1. **सरकारी मदद-** एक बार मना करने के बाद 2009 में अमेरिकी सरकार ने करीब 5000 करोड़ डॉलर का निवेश कर कंपनी को दिवालिया होने से बचाया। कंपनी ने कई अनुत्पादक इकाइयों को बंद किया, जिससे उसे नया प्लेटफॉर्म मिला।
2. **कमजोर ब्रांड बंद किए-** कंपनी ने पोंटिएक, सैटर्न, ओपेल जैसे ब्रांड या तो बंद किए या बेच दिए। शेव्रोले और कैडिलेक पर फोकस किया, जिससे संसाधनों का बेहतर उपयोग हुआ।
3. **उभरते बाजारों पर फोकस-** कंपनी ने चीन, ब्राजील और भारत जैसे देशों में निवेश बढ़ाया। खासकर चीन में कंपनी की गाड़ियां बेस्ट सेलर बनीं। इससे कंपनी को स्थिरता और मुनाफा मिला।
4. **वित्तीय प्रबंधन-** रीस्ट्रक्चरिंग के बाद कंपनी ने लागत नियंत्रित की। बैलेंस शीट को सुधारा, जिससे कंपनी का मुनाफा बढ़ा।

वर्तमान स्थिति

सालाना 60 लाख से ज्यादा गाड़ियां बेचती है

आज जनरल मोटर्स (जीएम) दुनिया की सबसे बड़ी कार कंपनियों में शामिल है। इसका मार्केट कैप वर्तमान में करीब 4.5 लाख करोड़ रुपए है। कंपनी 100 से ज्यादा देशों में कारोबार करती है और सालाना लगभग 60 लाख से अधिक गाड़ियां बेचती है। जनरल मोटर्स अब इलेक्ट्रिक और ऑटोमैटिक वाहनों में बड़ा निवेश कर रही है। कंपनी ने 2035 तक केवल इलेक्ट्रिक वाहन बनाने का लक्ष्य रखा है। क्रूज और अल्टियम प्लेटफॉर्म पर इसके भविष्य के दांव हैं।

कई कंपनियों के एक साथ आने पर नाम पड़ा था जनरल मोटर्स

शुरुआत : विलियम सी. ड्यूरांट ने रखी थी जीएम मोटर्स की नींव

जनरल मोटर्स की शुरुआत 1908 में ब्यूक मोटर कंपनी के संस्थापक विलियम सी. ड्यूरांट ने की थी। उन्होंने शेव्रोले, कैडिलेक और ओल्ड्समोबाइल जैसी कार कंपनियों को मिलाकर जनरल मोटर्स का गठन किया। वे चाहते थे कि एक कंपनी अनेक वाहन ब्रांडों को कवर करे। इस तरह शेव्रोले, ब्यूक, कैडिलेक जैसी कंपनियां उनके अधीन आ गईं।

गिरावट : दिवालिया होने की कगार पर ले गई 2008 की मंदी

जीएम मोटर्स में गिरावट 1970–80 के दशक से शुरू हुई, जब विदेशी कार कंपनियों ने प्रतिस्पर्धी गुणवत्ता और अधिक माइलेज देने वाली गाड़ियां बनानी शुरू कर दीं, लेकिन असली संकट 2008–2009 की वैश्विक आर्थिक मंदी में आया। जनरल मोटर्स को भारी झटका लगा और कंपनी दिवालिया होने की कगार पर पहुंच गई।

ऐसे पड़ा नाम : जनरल मोटर्स नाम इसलिए रखा गया क्योंकि कंपनी ने विभिन्न मोटर कंपनियों को एक छत के नीचे लाने का उद्देश्य रखा था।

सबसे बड़े प्रतिद्वंद्वी : इसके प्रमुख प्रतिद्वंद्वी फोर्ड, टोयोटा, फॉक्सवैगन, होंडा और हुंडई हैं। खासकर टोयाटा और फॉक्सवैगन ने इसे कई बार चुनौती दी।

पीपुल भास्कर | सोनम वांगचुक | इंजीनियर और पर्यावरणविद्

9 की उम्र तक स्कूल नहीं गए, 9 भाषाओं के जानकार सोनम के स्कूल में फेल हुए बच्चे को पहले दाखिला

2009, बॉलीवुड में एक फिल्म आई 'थ्री इडियट्स'। इसमें एक कैरेक्टर था फुंसुख वांगड़ू। यह किरदार अभिनेता आमिर खान ने निभाया था, जो अपने इनोवेशन, नई सोच और पर्यावरण से लगाव के लिए खूब मशहूर हुआ। दरअसल यह कैरेक्टर प्रेरित था लद्दाखी शिक्षाविद् एवं पर्यावरणविद् सोनम वांगचुक से, जो ठीक उसी तरह इनोवेशन, पर्यावरण और शिक्षा में सुधार के लिए किए गए अपने कामों को लेकर जाने जाते हैं।

फिलहाल सोनम वांगचुक चर्चा में हैं क्योंकि उनके नेतृत्व में लेह में लंबे समय से लद्दाख को पूर्ण राज्य का दर्जा देने का आंदोलन चल रहा था, जो बुधवार को हिंसक हो गया।

प्रकृति और पर्यावरण में गहरी रुचि रखने वाले सोनम वांगचुक बेहद साधारण जीवनशैली अपनाते हैं। उन्होंने अपने घर को बनाने में स्थानीय मिट्टी, पत्थर और लकड़ी का इस्तेमाल किया है ताकि निर्माण की लागत कम हो सके और पर्यावरण पर न्यूनतम असर हो। उन्होंने अपने घर पर सोलर हीटिंग सिस्टम और इंसुलेटेड मिट्टी-पत्थर का इस तरह उपयोग किया है कि माइनस 30 डिग्री सेल्सियस में भी उनका घर गर्म बना रहता है। उन्होंने घर के बगीचे को ही छोटे वर्कशॉप, सौर ऊर्जा और वाटर मैनेजमेंट के प्रोजेक्ट को लाइव डेमो के रूप में दिखाने के तौर पर विकसित कर रखा है। एक साक्षात्कार में सोनम वांगचुक बताते हैं कि बचपन में अन्य भाषाओं की जानकारी न होने के कारण बाद में उन्हें विभिन्न भाषाएं सीखने का जुनून हो गया और उन्होंने 9 भाषाएं सीख लीं, जिन्हें अच्छी तरह समझ और बोल सकते हैं।

चर्चा में क्यों- लद्दाख को पूर्ण राज्य का दर्जा देने की मांग को लेकर किए जा रहे उनके आंदोलन ने बुधवार को हिंसक रूप ले लिया।

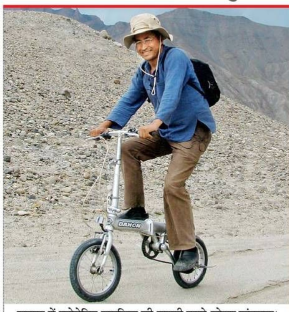

लद्दाख में इनोवेटिव साइकिल की सवारी करते सोनम वांगचुक।

सोनम वांगचुक ने विज्ञान, गणित जैसे विषय भी लद्दाखी भाषा में पढ़ाने की मुहिम शुरू की है।

जन्म : 1 सितंबर 1966 (59 वर्ष), लेह, लद्दाख

शिक्षा : एनआईटी श्रीनगर से इंजीनियरिंग में डिग्री।

परिवार : पत्नी- गीतांजलि जे. आंगमो

संपत्ति : करीब 80 लाख रुपए

(विभिन्न मीडिया रिपोर्ट्स)

शुरुआत
पिता राजनेता थे, राज्य सरकार में मंत्री रहे

सोनम वांगचुक का जन्म लद्दाख के उलेयटोकपो गांव में सोनम वांग्याल और तेजरिंग वांगमो के घर हुआ था। पिता सोनम वांग्याल राजनेता थे, जो बाद में राज्य सरकार में मंत्री भी रहे। सोनम के जन्म के समय गांव में कोई स्कूल नहीं था। ऐसे में 9 साल की उम्र तक मां ने लद्दाखी भाषा में सिखाया-पढ़ाया। बाद में एनआईटी श्रीनगर से इंजीनियरिंग की।

जीवनसाथी
गीतांजलि जे. आंगमो से किया है विवाह

सोनम वांगचुक ने गीतांजलि जे. आंगमो से विवाह किया है। वे आंत्रप्रेन्योर और शिक्षाविद् हैं। उन्हें लोग प्यार से गीतांजलि जेबी भी कहते हैं। उन्होंने करियर की शुरुआत इंटरनेशनल डेवलपमेंट एंड सस्टेनेबल लिविंग के क्षेत्र में की थी। दोनों ने मिलकर लद्दाख में हिमालयन इंस्टीट्यूट ऑफ अल्टरनेटिव्स (एचआईएएल) की स्थापना की है।

करियर
शिक्षा में सुधार का न्यू-होप अभियान चलाया

इंजीनियरिंग के दौरान वे बच्चों को पढ़ाने लगे तो उन्हें सरकारी शिक्षा की खामियों का पता चला। इसके बाद सरकारी स्कूलों में शिक्षा सुधार के लिए ऑपरेशन न्यू-होप शुरू किया। 1988 में भाई और 5 अन्य लोगों के साथ शैक्षिक-सांस्कृतिक आंदोलन एसईसीएमओएल शुरू किया। पर्वतीय क्षेत्रों में पर्यावरण के अनुकूल घर डिजाइन किए।

रोचक : उनके द्वारा डिजाइन किए गए आइस स्तूप में माइनस तापमान में भी महीनों पानी रहता है

खास : फार्मस्टेज लद्दाख योजना शुरू की है

- उनके स्कूल एसईसीएमओएल में उन बच्चों को दाखिले में प्राथमिकता मिलती है, जो सरकारी स्कूल में फेल हुए हों।
- 2016 में 'फार्मस्टेज लद्दाख' नाम की एक परियोजना शुरू की, जो पर्यटकों को लद्दाख के स्थानीय परिवार के साथ रहने का अवसर प्रदान करती है। इसका संचालन महिलाएं करती हैं।

उपलब्धि : 2018 में मिल चुका है रेमन मैग्सेसे सम्मान

- भीषण सर्दियों में पानी की उपलब्धता के लिए करीब 30 फीट ऊंचे आइस स्तूप नाम की संरचनाएं विकसित की हैं। इनमें माइनस तापमान में भी कई महीनों तक पानी उपलब्ध रहता है, जो खेती के काम आता है।
- 2018 में महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय सम्मान रेमन मैग्सेसे मिल चुका है।

विवाद भी : परियोजना के लिए प्लास्टिक का उपयोग

- एक रिपोर्ट के अनुसार आइस स्तूप प्रोजेक्ट के लिए प्लास्टिक पाइप और नेट का इस्तेमाल हुआ है, जिसे कुछ लोग पर्यावरण की दृष्टि से ठीक नहीं मानते हैं।
- हाल ही में लद्दाख प्रशासन ने एचआईएएल का पट्टा निरस्त कर दिया है। भूमि आवंटन को लेकर भी विवाद हुआ है।

बिज़नेस स्टैंडर्ड
वर्ष 18 अंक 189

सक्षम प्रशासन

हाल के हफ्तों में वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) ढांचे में काफी सुधार दिखे हैं। सबसे पहले तो कर दरें सरल बनाकर जीएसटी व्यवस्था को एक नया रूप दिया गया। अब जीएसटी व्यवस्था में मुख्य रूप से केवल दो दरें रह गई हैं और कुछ अहितकर वस्तुओं पर ऊंचे कर का प्रावधान किया गया है। इस कदम से जीएसटी की संरचना काफी सरल हो गई है। बुधवार को वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने जीएसटी अपील पंचाट (जीएसटीएटी) की शुरुआत की जिसे एक और बड़ा सुधार माना जा रहा है। जीएसटी संरचना में इस इकाई की कमी महसूस हो रही थी। कानून में इस इकाई का जिक्र है मगर कुछ चुनौतियों के कारण इसकी स्थापना में विलंब हो गया। इसका नतीजा अब यह होगा कि जीएसटीएटी 4,80,000 अपील के शुरुआती बोझ के साथ अपना काम शुरू करेगा।

इस पंचाट का मुख्य पीठ राष्ट्रीय राजधानी में होगा और अगले वित्त वर्ष से यह अग्रिम निर्णय के लिए राष्ट्रीय अपील प्राधिकरण के रूप में कार्य करेगा। इस तरह यह कर प्रशासन में स्पष्टता लाने में मदद करेगा। इस पंचाट में 31 राज्य पीठ होंगे और प्रत्येक में दो न्यायिक सदस्य और केंद्र और राज्य दोनों से एक तकनीकी सदस्य होंगे। शुरू में राज्य पीठों, जिनमें एक न्यायिक सदस्य का प्रावधान था, को चुनौती दी गई थी। कानून के अंतर्गत जीएसटी में त्रि-स्तरीय अपील संरचना का प्रावधान है जिनमें सबसे पहले अपील प्राधिकरण, उसके बाद अपील न्यायाधिकरण या पंचाट और अंत में उच्च न्यायालय एवं उच्चतम न्यायालय हैं। अब अपील पंचाट की शुरुआत के साथ जीएसटी प्रशासन में अधिक पारदर्शिता और तेजी आनी चाहिए।

अब इस पंचाट की स्थापना हो चुकी है और यह अपील पर सुनवाई शुरू कर देगा, इसलिए कुछ पहलुओं पर पैनी नजर रखने की जरूरत होगी। सबसे पहले पीठों में पर्याप्त बुनियादी सुविधाएं एवं मानव संसाधन होने चाहिए। बड़ी तादाद में मामले धूल फांक रहे हैं जिन पर जल्द से जल्द सुनवाई करनी होगी। पंचाट में क्षमतागत चुनौतियों से इसका हाल भी वृहद न्यायिक प्रणाली की तरह हो सकता है। इस बिंदु पर विचार करना जरूरी है कि संस्थानों के पास पर्याप्त संसाधन एवं सुविधाएं नहीं होने से दुरुस्त सोच एवं उद्देश्य वाले कानून भी औसत नतीजे ही दे पाते हैं। ऋण शोधन अक्षमता एवं दिवाला संहिता का हाल हम देख ही चुके हैं। असाधारण देरी, जिसके लिए आंशिक रूप से क्षमतागत बाधाएं भी जिम्मेदार हैं, से नतीजों पर गंभीर असर हो रहा है। हमें यह बात अवश्य समझनी होगी कि व्यावसायिक मामलों में समाधान में देरी होने से कारोबार करने पर लागत खासी बढ़ जाती है। पर्याप्त क्षमता के अभाव से उत्पन्न चुनौतियों के कारण निर्णयों की गुणवत्ता पर भी असर होता है जिससे न्यायपालिका में ऊंचे स्तरों पर बोझ काफी बढ़ जाता है।

कर अधिकारियों को कारोबारों के खिलाफ कदम उठाने से पहले अधिक सावधानी बरतने की जरूरत है। कर की अत्यधिक मांग से प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनों तरह के करों के मामलों में विवाद काफी बढ़ जाते हैं जिन्हें दूर करना जरूरी है। यह कोई नहीं कह रहा कि कर चोरी करने वालों के खिलाफ कार्रवाई नहीं होनी चाहिए मगर इस बात का भी ख्याल रखा जाना चाहिए कि सही एवं ईमानदार कारोबारियों को बेवजह प्रताड़ित नहीं होना पड़े। इसके अलावा, जीएसटी प्रणाली में कर श्रेणियां कम होने से यह अप्रत्यक्ष कर व्यवस्था सरल हो जाएगी मगर प्रक्रियाओं को और सरल बनाए जाने की जरूरत है। प्रक्रिया सरल होने विवाद स्वयं ही कम हो जाएंगे। जो भी हो, देरी के बावजूद अपील पंचाट की स्थापना के बाद जीएसटी तंत्र की कार्य व्यवस्था में सुधार होना चाहिए। विचाराधीन अपीलों का समाधान होने से संबंधित पक्षों के लिए स्थिति स्पष्ट हो जाएगी और संभवतः भविष्य में कानूनी विवाद भी कम हो जाएंगे। इन बातों के बावजूद जीएसटीएटी के अंतर्गत निकट भविष्य में होने वाली प्रगति पर करीबी नजर रखनी होगी।

सरकार की नीति में बदलाव और असर

मांग को बढ़ावा देने के लिए कर लाभों का सहारा लेना यह दिखाता है कि सरकार नया रास्ता अपना रही है लेकिन यह कई नई चुनौतियों से रूबरू करा सकता है। बता रहे हैं एके भट्टाचार्य

रविवार को राष्ट्र के नाम प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के संबोधन से एक प्रमुख निष्कर्ष यह निकल कर आया कि सरकार ने आर्थिक वृद्धि पटरी पर लाने और उसे निरंतर गति देने के लिए अपनी नीति में थोड़ी तब्दीली की है। बेशक, उनके संबोधन का मुख्य उद्देश्य वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) परिषद द्वारा जीएसटी दरों में संशोधन और 450 से अधिक वस्तुओं एवं सेवाओं पर दरों में कटौती के निर्णय के संभावित प्रभाव से राष्ट्र को अवगत कराना था। तथाकथित 'बचत का उत्सव,' जो प्रधानमंत्री की नजर में जीएसटी दर में कटौती से शुरू होने वाला था, घोषित लक्ष्य था। लेकिन उस लक्ष्य के पीछे उनकी सरकार की आर्थिक नीति में बदलाव स्पष्ट दिखाई दे रहा था।

कोविड महामारी के बाद के वर्षों में मोदी सरकार ने आर्थिक वृद्धि पटरी पर लाने के लिए दोआयामी दृष्टिकोण अपनाया। एक तरफ केंद्र सरकार ने अपने राजकोषीय घाटे में लगातार कमी लानी शुरू कर दी जो 2020-21 में सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के 9.2 फीसदी से अधिक था और 2024-25 में कम होकर 4.77 फीसदी तक सिमट गया। दूसरी तरफ, सरकार ने बेहतर व्यय मिश्रण के माध्यम से राजकोषीय मजबूती हासिल करने की कोशिश की। इस अवधि के दौरान पूंजीगत व्यय में लगातार वृद्धि होने के बावजूद राजस्व व्यय में कमी आई।

केंद्र सरकार का राजस्व व्यय वर्ष 2020-21 में जीडीपी के 15.5 फीसदी से घटकर 2024-25 में 10.9 फीसदी रह गया जबकि उक्त अवधि में ही उसका पूंजीगत व्यय जीडीपी के 2.15 फीसदी से बढ़कर 3.18 फीसदी हो गया। बेशक राजस्व में तेजी से काफी मदद मिली और इससे पिछले कुछ दशकों में केंद्र सरकार के राजस्व घाटे में सर्वाधिक तेजी से कमी आई। यह 2020-21 में जीडीपी के 7.3 फीसदी से कम होकर 2024-25 में 1.71 फीसदी रह गया। इस तरह, कोविड महामारी के बाद के वर्षों में सरकार की नीति राजकोषीय घाटा नियंत्रित रखने, अपना राजस्व व्यय कम करने और निजी क्षेत्र की हिचकिचाहट के बीच बुनियादी ढांचे के निर्माण पर अधिक खर्च करने पर केंद्रित थी।

अगर प्रधानमंत्री के राष्ट्र के नाम संबोधन को कोई संकेत माना जाए तो ऐसा लगता है कि वह नीति अब बदल रही है। 'बचत का उत्सव' आर्थिक वृद्धि को दोबारा धार देने और इसे निरंतर बरकरार रखने के लिए एक नया नीतिगत जरिया प्रतीत हो रहा है। प्रधानमंत्री ने जीएसटी दर के युक्तिकरण को उपभोक्ताओं के हाथों में अधिक खर्च योग्य रकम डालने के माध्यम के रूप में देखा। उम्मीद तो अब यही की जा रही है कि उपभोक्ता कर कटौती से बची रकम बचत की झोली में डालने के बजाय खर्च करेंगे। अगर उपभोक्ता उस रकम का इस्तेमाल वस्तु एवं सेवाओं की खरीदारी के लिए खर्च करते हैं तो इससे मांग में नई जान फूंकने, क्षमता इस्तेमाल बढ़ाने और निजी क्षेत्र को निवेश बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करने में मदद मिलेगी।

पीएम मोदी ने यहां तक कहा कि जीएसटी दर में कटौती और वित्त वर्ष 2025-26 के बजट में दी गई आयकर राहत यानी 12 लाख रुपये तक की सालाना आय पर कर दर शून्य करने से लोगों की कुल मिलाकर लगभग 2.5 लाख करोड़ रुपये सालाना बचत होनी चाहिए। यह रकम जीडीपी के लगभग 0.75 फीसदी के बराबर है, जो दूसरे शब्दों में अर्थव्यवस्था में मांग प्रोत्साहित करने में मददगार साबित होगी।

प्रधानमंत्री के संबोधन में राजनीतिक संदेश भी साफ दिखाई दे रहा था। उन्होंने उम्मीद जताई कि उद्योग उपभोक्ताओं के लिए कीमतें घटा कर दर में कटौती का लाभ देने में संकोच नहीं करेंगे। यह केवल एक आग्रह माना जा सकता था, क्योंकि जीएसटी व्यवस्था में अब मुनाफाखोरी-रोधी नियम नहीं हैं जिन्हें उन उद्योगों पर लागू किया जा सके जो दर में कटौती का लाभ नहीं देते हैं। फिलहाल तो यही लग रहा है कि उद्योग जीएसटी दर के युक्तिकरण का उपयोग अपनी बिक्री बढ़ाने के लिए कर रहा है। देश की सबसे बड़ी वाहन निर्माता कंपनी ने अपने वाहनों की कीमतों में निचले स्तर पर इतनी कटौती की है कि यह जीएसटी कटौती से मिलने वाले लाभ से कहीं अधिक है। इससे पता चलता है कि कंपनी बिक्री और बाजार हिस्सेदारी बढ़ाने के लिए दर में कटौती का पूरा लाभ उठाना चाहती है।

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों से भी जीएसटी दरें कम होने के बाद घरेलू विनिर्माण बढ़ाने की अपील की गई है। स्वदेशी या आर्थिक आत्मनिर्भरता के विचार का प्रधानमंत्री ने एक बार फिर समर्थन किया है। यहां तक कि उपभोक्ताओं से भी आग्रह किया गया है कि वे विदेश से आयातित वस्तुओं की जगह देश के भीतर उत्पादित वस्तुओं को अधिक वरीयता दें। जीएसटी दरों में एक महत्त्वपूर्ण कटौती की पृष्ठभूमि में स्वदेशी के एक नए रूप का संयोजन एक नया दृष्टिकोण है जिसकी वकालत प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन के माध्यम से की है। यहां तक कि राज्यों को भी वस्तुओं के घरेलू विनिर्माण को प्रोत्साहित करने के लिए कहा गया है।

कर सुधार को स्वदेशी और देश के आर्थिक कायाकल्प से जोड़ने से जरूरी आर्थिक लाभ मिलेंगे या नहीं यह तो समय ही बताएगा। क्या इस प्रकार के स्वदेशी अभियान का मतलब यह है कि घरेलू स्तर पर उत्पादित वस्तुओं के लिए अधिक संरक्षण दिया जाएगा? इससे भी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि स्वदेशी के आह्वान के साथ-साथ घरेलू उत्पादकों की प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने और कारोबार करने में आसानी बढ़ाने के लिए सरकारी प्रक्रियाओं में सुधार के लिए एक बड़ा नीतिगत प्रयास किया जाएगा या नहीं, यह अभी भी स्पष्ट नहीं है।

लेकिन आर्थिक वृद्धि को बढ़ावा देने के लिए मांग प्रोत्साहन तैयार करने की दिशा में बदलाव निश्चित रूप से कई सवाल उठाएगा कि सरकार आने वाले महीनों में राजकोषीय मजबूती को कैसे आगे बढ़ाना चाहती है। ध्यान दें कि मोदी सरकार ने कोविड महामारी के तत्काल बाद मांग प्रोत्साहन से जान-बूझकर परहेज किया था और इसके बजाय बुनियादी ढांचे के निर्माण और अर्थव्यवस्था को गतिशील बनाने के लिए स्वयं अपने स्तर पर निवेश बढ़ाकर आपूर्ति पक्ष दुरुस्त करने पर ध्यान दिया था। कई अर्थशास्त्रियों ने तब कर कटौती के माध्यम से मांग प्रोत्साहन नहीं बढ़ाने के लिए सरकार की आलोचना की थी। लेकिन अब कोविड महामारी के चार साल बाद सरकार कर रियायतों के माध्यम से मांग बढ़ाकर आर्थिक वृद्धि बढ़ाने के लिए उस दृष्टिकोण को अपनाती हुई दिख रही है।

यह हो सकता है कि यह नीतिगत बदलाव नीति निर्धारकों के इस अनुभव का नतीजा हो कि सरकार के पूंजीगत व्यय में लगातार वृद्धि के चार साल बाद केवल ऊंचे निवेश पर ध्यान केंद्रित करने से अपेक्षित परिणाम नहीं मिला है। वर्ष2024-25 में आर्थिक वृद्धि घटकर 6.5 फीसदी रह गई और शायद वृद्धि दर को गति देने और इसे बनाए रखने की तत्काल जरूरत ने सरकार को उपभोक्ताओं पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष करों का बोझ कम करने के लिए प्रेरित किया होगा।

ये रियायतें कर को तर्कसंगत बनाने की एक बड़ी योजना का हिस्सा हैं। लेकिन रणनीति में इस तरह के बदलाव से कुछ अल्पकालिक जोखिम और चुनौतियां सामने आएंगी। वित्त वर्ष 2025-26 के बजट में संकेत दिया जा चुका है कि पिछले चार वर्षों में अपनाए गए उपायों में कुछ संशोधन किए जाएंगे। राजकोषीय घाटा जीडीपी के 4.4 फीसदी तक समेटने का लक्ष्य है लेकिन कोविड महामारी के बाद पहली बार जीडीपी के प्रतिशत के रूप में राजस्व व्यय बढ़ रहा है और पूंजीगत व्यय वृद्धि में थोड़ी गिरावट आने वाली है।

जीएसटी दर के युक्तिकरण से राजस्व में कमी आने की आशंका है जिससे निर्यात उद्योगों और रक्षा परियोजनाओं को सहयोग देने के उपायों पर अधिक व्यय करने की मांग बढ़ सकती है। इन सबके बीच प्रस्तावित राजकोषीय मजबूती का लक्ष्य प्राप्त करने की राह में नई चुनौतियां खड़ी हो सकती हैं, खासकर ऐसे समय में जब कम मुद्रास्फीति 2025-26 के लिए नॉमिनल जीडीपी वृद्धि दर 10.1 फीसदी से नीचे ला सकती है। लिहाजा, आर्थिक वृद्धि पटरी पर लाने के लिए इस महत्त्वपूर्ण नीतिगत बदलाव को महसूस करने और बाजार सहित सभी को उन संभावित चुनौतियों के लिए तैयार करने का समय है जिनका सामना सरकार को अपने राजकोषीय समेकन कार्यक्रम का पालन करने में करना पड़ सकता है।

बाजार पहुंच बनाने में सूत्रधार बनी सीसीआईएल

बैंकिंग साख
तमाल बंद्योपाध्याय

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के गवर्नर संजय मल्होत्रा ने हाल ही में क्लियरिंग कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (सीसीआईएल) को एक खास कार्य के लिए आमंत्रित किया। उन्होंने सीसीआई को अमेरिकी डॉलर-भारतीय रुपये के अलावा रुपये के साथ अन्य मुद्राओं में ट्रेडिंग और निपटान को सुविधाजनक बनाने के लिए आवश्यक बुनियादी ढांचा बनाने की संभावना तलाशने के लिए आमंत्रित किया। यह कदम रुपये के अंतरराष्ट्रीकरण के व्यापक उद्देश्य के अनुरूप है।

अब यह देखना लाजिमी है कि सीसीआईएल इस रास्ते पर कैसे आगे बढ़ती है। फिलहाल, हम बाजारों को आम लोगों तक पहुंचाने में सीसीआईएल के 25 साल के सफर पर नजर डालते हैं। मैं यहां केवल शेयर बाजारों की बात नहीं कर रहा हूं। नैशनल स्टॉक एक्सचेंज ऑफ इंडिया लिमिटेड (एनएसई) और बीएसई लिमिटेड का शेयर बाजार में जो महत्त्व है, उस लिहाज से सरकार के बॉन्ड, विदेशी मुद्रा और ओवर-द-काउंटर (ओटीसी) डेरिवेटिव्स बाजारों के लिए सीसीआईएल का कहीं ज्यादा महत्त्व है।

सीसीआईएल ने फोन पर सौदे करने की पुरानी व्यवस्था, लेनदेन के लिए कागज की पर्ची तैयार करने, फोन या फैक्स पर लेनदेन की पुष्टि करने और फिर बहुत धीमी गति से उसे निपटाने वाली प्रणाली को अब माउस के एक क्लिक से बदल दिया है। यह भारतीय वित्तीय बाजारों को वैश्विक रुझानों के साथ और कभी-कभी उनसे आगे भी बनाए रखने के लिए लगातार नवाचार पर जोर दे रही है।

एक तरह से, सीसीआईएल 1997 के पूर्वी एशियाई वित्तीय संकट की प्रतिक्रिया के तौर पर बनी थी। इस संकट के बाद भारत को निपटान प्रणाली की जरूरतें पूरी करने के लिए एक संस्था की आवश्यकता पड़ी। लेकिन सीसीआईएल की शुरुआत के तार को और भी पहले 1994 में आरबीआई द्वारा भारत के विदेशी मुद्रा बाजार का विकास करने और उसका दायरा बढ़ाने के लिए गठित सोढानी समिति से जोड़ा जा सकता है।

इस समिति की मुख्य सिफारिशें जून 1995 में सौंपी गईं जिनमें विदेशी मुद्रा परिचालन में बैंकों के लिए अधिक लचीलापन, कंपनियों को विदेशी मुद्रा खाते रखने की छूट और डेरिवेटिव्स उत्पादों जैसे नए जोखिम प्रबंधन उपकरणों को पेश करना शामिल था। इसके बाद, कम से कम दो और समितियों ने भुगतान और निपटान प्रणालियों की जांच की, जब तक कि आरबीआई के तत्कालीन डिप्टी गवर्नर वाईवी रेड्डी ने इस सदी के शुरुआती हिस्से में उद्योग संघों के साथ मिलकर एक क्लियरिंग कॉरपोरेशन की स्थापना की प्रक्रिया का पता लगाना शुरू नहीं किया। सीसीआईएल अप्रैल 2001 में अस्तित्व में आई और भारतीय स्टेट बैंक, भारतीय जीवन बीमा निगम, बैंक ऑफ बड़ौदा, भारतीय औद्योगिक विकास बैंक (आईडीबीआई), एचडीएफसी बैंक लिमिटेड और आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड को इसके मुख्य प्रवर्तकों के रूप में शामिल किया गया था।

सीसीआईएल के पहले चेयरमैन एनएसई के संस्थापक आरएच पाटिल थे। उन्होंने, अन्य कई चीजों के अलावा, ओटीसी मंच बनाने की मुहिम का नेतृत्व किया और शुरुआती वर्षों के दौरान बाजार की जटिलताओं के बीच सीसीआईएल का मार्गदर्शन भी किया। फरवरी 2002 में अपने बजट भाषण में तत्कालीन वित्त मंत्री यशवंत सिन्हा ने वित्तीय निपटान क्षेत्र में इस नए खिलाड़ी का जिक्र करते हुए कहा था, 'सरकारी प्रतिभूतियों का प्राथमिक निर्गम अब एक इलेक्ट्रॉनिक नेगोशिएटेड डीलिंग सिस्टम (एनडीएस) द्वारा सुविधाजनक बनाया जा रहा है और सरकारी प्रतिभूतियों में ट्रेडिंग की दक्षता नए क्लियरिंग कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया द्वारा बढ़ाई जा रही है।

शुरुआत में, सीसीआईएल सरकारी प्रतिभूतियों और रीपो में होने वाले सौदे का निपटान करती थी। ये सौदे आरबीआई के पब्लिक डेट ऑफिस (पीडीओ)-एनडीएस मंच पर दर्ज होते थे। साथ ही यह रुपया-अमेरिकी डॉलर के विदेशी मुद्रा हाजिर और वायदा सौदों का भी निपटान करती थी।

पीडीओ-एनडीएस मंच, एक एकीकृत परियोजना है, जो सार्वजनिक ऋण कार्यालयों के कंप्यूटरीकरण को सरकारी प्रतिभूतियों और मुद्रा बाजार के उपकरणों के व्यापार के लिए एक इलेक्ट्रॉनिक डीलिंग सिस्टम के साथ जोड़ता है। यह नीलामी में इलेक्ट्रॉनिक बोली लगाने और कारोबारी सत्र के दौरान ट्रेडिंग के लिए एक ऑनलाइन मंच है। वैश्विक मानकों के हिसाब से भी, सीसीआईएल एक अनोखा प्रयोग है। यह एक सेंट्रल काउंटर पार्टी (सीसीपी) है जो मुद्रा, सरकारी बॉन्ड, और विदेशी मुद्रा लेनदेन में ओटीसी नकद और डेरिवेटिव्स बाजारों में गारंटी के साथ निपटान करता है। भुगतान प्रणाली में सीसीपी एक वित्तीय संस्था है जो एक मध्यस्थ के रूप में कार्य करती है और यह किसी भी लेनदेन में प्रत्येक विक्रेता के लिए खरीदार और प्रत्येक खरीदार के लिए विक्रेता होती है।

वैश्विक वित्तीय संकट 2008 से काफी पहले, सीसीआईएल ने 2007 में आरबीआई के आदेश के तहत ओटीसी डेरिवेटिव्स लेनदेन की रिपोर्टिंग की सुविधा दी थी। इसने भारतीय वित्तीय बाजारों पर संकट के प्रभाव को काफी हद तक कम करने में मदद की।

यह 2005 से सीएलएस, या निरंतर जुड़े निपटान सेवाएं भी दे रही है। यह एक अनूठी व्यवस्था है जिसके तहत एक तीसरे पक्ष की व्यवस्था के माध्यम से सीमा पार निपटान किया जा रहा है। 'डिलीवरी-बनाम-भुगतान' नाम की यह प्रणाली.संभावित भुगतान और नकदी के मुद्दों पर नियंत्रण रखती है। फिलहाल, सीसीआईएल 14 पात्र मुद्राओं के लिए यह सेवा देती है। यह एनडीएस-ऑर्डर मैचिंग (ओएम) प्लेटफॉर्म का प्रबंधन करती है, जो सरकारी बॉन्ड में लेनदेन के लिए सबसे व्यापक रूप से इस्तेमाल किया जाने वाला मंच है। इस पर बाजार प्रतिभागी या तो सीधे व्यापार कर सकते हैं या द्विपक्षीय, ऑफ-प्लेटफॉर्म लेनदेन की रिपोर्ट कर सकते हैं। सभी सरकारी बॉन्ड लेनदेन का लगभग 75 फीसदी सीधे इस मंच पर किया जाता है और बाकी को अपनी रिपोर्ट इसे देनी होती है। सीधे शब्दों में कहें, सभी सरकारी बॉन्ड लेनदेन डेटा एक ही प्लेटफॉर्म पर होता है और इसे सीसीआईएल के माध्यम से निपटाया जाता है। एनडीएस-ओएम प्लेटफॉर्म अंतरराष्ट्रीय निवेशकों को भारतीय बॉन्ड बाजार तक पहुंच की सुविधा के लिए वैश्विक बॉन्ड प्लेटफॉर्म को भी जोड़ता है। वर्ष 2003 में स्थापित, क्लियरकॉर्प डीलिंग सिस्टम्स (इंडिया) लिमिटेड, इलेक्ट्रॉनिक ट्रेडिंग मंच का प्रबंधन करती है जो सरकारी बॉन्ड, मुद्रा, विदेशी मुद्रा और ओटीसी डेरिवेटिव्स बाजारों में ट्रेडिंग की सुविधा देती है। यह खुदरा ग्राहकों जिसमें कोई व्यक्ति और सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम शामिल हैं, उन्हें विदेशी मुद्रा खरीदने/बेचने के लिए एफएक्स-रिटेल प्लेटफॉर्म लॉन्च करने में सहायक रही है। यह प्लेटफॉर्म खुदरा ग्राहकों के लिए पारदर्शिता और बेहतर मूल्य निर्धारण करता है।

अब सवाल यह है कि इन वर्षों में सीसीआईएल कैसे बढ़ रही है? वित्त वर्ष 2002-03 में, इसने 0.4 लाख करोड़ डॉलर मूल्य के विदेशी मुद्रा लेनदेन देखे थे। वित्त वर्ष 2025 तक, विदेशी मुद्रा लेनदेन की मात्रा बढ़कर 12 लाख करोड़ डॉलर हो गई। इस अवधि के दौरान, रीपो लेनदेन 9 लाख करोड़ रुपये से बढ़कर 779 लाख करोड़ रुपये हो गया और साधारण सरकारी बॉन्ड लेनदेन, 11 लाख करोड़ रुपये से बढ़कर 161 लाख करोड़ रुपये हो गया। अपनी तीन सहायक कंपनियों के साथ, सीसीआईएल ने देश के वित्तीय बाजारों के लिए एक मजबूत पारिस्थितिकी तंत्र बनाया है जो एकीकृत समाधान देता है और जो व्यापार जीवनचक्र के हर चरण का प्रबंधन करता है। इस तरह से कहें तो मुद्रा बाजार भुगतान प्रणाली में सीसीआईएल की भूमिका काफी अहम है।

आपका पक्ष

संयुक्त राष्ट्र में ट्रंप के भाषण की गंभीरता

इस समाचार पत्र में प्रकाशित संपादकीय 'संयुक्त राष्ट्र में ट्रंप' अमेरिका के राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप के भाषण के विभिन्न पहलुओं को सामने रखता है। भारत सहित विश्व के सभी बड़े देशों में अवैध अप्रवासियों की समस्या गंभीर है। राष्ट्रपति ट्रंप अपनी आव्रजक नीति कठोर कर रहे हैं। भारत और अमेरिका सहित यूरोप, ऑस्ट्रेलिया जैसे विभिन्न देश काफी समय से अवैध घुसपैठियों की समस्या से काफी परेशान हैं। उनके भाषण का दूसरा पक्ष संयुक्त राष्ट्र की विफलता को लेकर है जिसका मूल कारण फंडिंग नहीं है। विश्व भर में नाटो, यूरोपियन संघ, क्वाड, ब्रिक्स, आसियान जैसे समानांतर क्षेत्रीय संगठनों ने संयुक्त राष्ट्र को निरर्थक बना कर रख दिया है। विश्व व्यापार संगठन की अवहेलना अमेरिका और चीन सहित सभी बड़े देश करते हैं। विश्व में व्यापार कुछ शक्तिशाली और समृद्ध देशों के द्वारा संचालित है और आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (ओईसीडी) के नियमों की बाध्यता है परंतु इस संबंध में संयुक्त राष्ट्र का भी यूएन मॉडल है जिसको उन्हीं देशों ने नकार रखा है। फिर संयुक्त राष्ट्र की विफलता की शिकायत किससे है? अमेरिका के राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप वास्तविक विषयों पर अतिरेक प्रतिक्रिया करके आलोचना का केंद्र बन जाते हैं।

विनोद जौहरी, दिल्ली

अमेरिका के राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने मंगलवार को संयुक्त राष्ट्र महासभा को संबोधित किया था

पाकिस्तान और सऊदी अरब के बीच समझौता

पाकिस्तान ने हाल में सऊदी अरब के साथ रणनीतिक पारस्परिक रक्षा समझौते पर हस्ताक्षर कर यह संदेश देने की कोशिश की है कि वह मुस्लिम जगत में अपनी भूमिका और महत्त्व को पुनः स्थापित करना चाहता है। इस समझौते की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि अगर किसी एक देश पर हमला होता है, तो उसे दोनों देशों पर आक्रमण माना जाएगा। इसकी प्रकृति को देखते हुए इसे नाटो जैसे सामरिक गठबंधन की श्रेणी में रखा जा सकता है। सऊदी अरब की चिंता खाड़ी देशों की सुरक्षा और इजरायल से उत्पन्न संभावित खतरे से जुड़ी है, जबकि पाकिस्तान का दृष्टिकोण परंपरागत रूप से भारत केंद्रित रहता है। ऑपरेशन सिंदूर के बाद पाकिस्तान अपने नए समीकरण गढ़ने की कोशिश में है और यह समझौता उसी रणनीति का हिस्सा प्रतीत होता है। दूसरी ओर, भारत ने हाल के वर्षों में सऊदी अरब के साथ रिश्तों को गहराई देने में पर्याप्त निवेश किया है। ऐसे में यह समझौता भारत की कूटनीतिक चुनौतियों को बढ़ा सकता है। सऊदी-पाकिस्तान संबंधों का इतिहास काफी पुराना है। पाकिस्तान निर्माण से पहले ही प्रिंस फैसल ने संयुक्त राष्ट्र में मुस्लिम लीग की पाकिस्तान योजना का समर्थन किया था। सऊदी अरब पाकिस्तान को मान्यता देने वाला शुरुआती देश रहा है। मौजूदा समय में पाकिस्तान के लिए यह समझौता आर्थिक दृष्टि से भी राहत भरा है क्योंकि वह गंभीर वित्तीय संकट से गुजर रहा है और सऊदी से मिलने वाली आर्थिक मदद उसके लिए संजीवनी का काम करेगी। भारत के लिए इसका सीधा संदेश यह है कि उसे अपनी विदेश नीति को और अधिक बहुआयामी बनाना होगा।

सुभाष बुड़ावन वाला, रतलाम

पाठक अपनी राय हमें इस पते पर भेज सकते हैं : संपादक, बिज़नेस स्टैंडर्ड, 4, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली 110002. आप हमें ईमेल भी कर सकते हैं : lettershindi@bsmail.in
पत्र/ईमेल में अपना डाक पता और टेलीफोन नंबर अवश्य लिखें।

देश-दुनिया

फोटो - पीटीआई

डीआरडीओ ने रेल आधारित मोबाइल प्रक्षेपण प्रणाली से अग्नि-प्राइम मिसाइल का सफल परीक्षण किया। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि अगली पीढ़ी की यह मिसाइल 2,000 किलोमीटर तक की दूरी तक मार करने के लिए तैयार की गई है और विभिन्न उन्नत सुविधाओं से लैस है।

CCI NG 3.7 Product: NBTDelhiBS PubDate: 26-09-2025 Zone: MahanagarBook2 Edition: 1 Page: PP2NBMA2 User: dilip.lal Time: 09-25-2025 15:18 Color:

नवभारत टाइम्स • विचार

नवभारत टाइम्स । नई दिल्ली । शुक्रवार, 26 सितंबर 2025

यदि हम प्रकृति की देखभाल करेंगे, तो प्रकृति हमारी देखभाल करेगी।
- डेविड एटनबरो

सबक देता मॉनसून

इस साल देश के हिमालयी राज्यों से मॉनसून में कई बुरी खबरें आईं। जम्मू-कश्मीर से लेकर उत्तराखंड तक, बादल फटने, फ्लैश फ्लड और भूस्खलन की वजह से बड़े पैमाने पर जन-धन की हानि हुई है।

सामान्य से ज्यादा । IMD के मुताबिक, इस साल अभी तक हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड और जम्मू-कश्मीर में भारी से लेकर बहुत भारी बारिश की 765 घटनाएं दर्ज की जा चुकी हैं। पिछले 5 साल का यह सबसे बड़ा आंकड़ा है। पिछले साल ऐसी घटनाएं 505 हुई थीं। इस बार सामान्य से ज्यादा वेस्टर्न डिस्टर्बेंस भी रहा, खासकर अगस्त के दूसरे हिस्से में इसने अधिक असर डाला।

IMD का डेटा जारी

प्रकृति में दखल । वैज्ञानिक भी मान रहे हैं कि जिस तरह लगातार और भारी बारिश पूरे पहाड़ों पर हुई है, वैसा बहुत कम होता है। लेकिन, असल चिंता है इस बारिश की वजह से होने वाली तबाही। पहाड़ों पर बादल फटने और कई दिनों तक बारिश होने की घटनाएं पहले भी होती रही हैं। उत्तराखंड के चमोली और उत्तरकाशी जैसे इलाके तो खासकर संवेदनशील हैं इस मामले में, पर इस साल नुकसान अधिक हुआ।

संतुलित विकास । पर्यावरणविद् और सामाजिक कार्यकर्ता लगातार चेता रहे हैं कि पहाड़ों पर विकास के मामले में संतुलित नजरिया अपनाने की जरूरत है। कोई भी प्रॉजेक्ट स्थानीय जलवायु, वहां की संवेदनशीलता और पर्यावरण को ध्यान में रखकर तैयार किया जाए। नदी-गदेरों के रास्तों पर निर्माण और पेड़ों की कटाई का नतीजा है कि सामान्य से थोड़ी भी बारिश ज्यादा होती है, तो उसका असर कई गुना बढ़ जाता है।

देहरादून का उदाहरण । हालांकि ऐसा लग रहा है कि इन तबाहियों से भी सीख नहीं ली गई। अभी एक रोड प्रॉजेक्ट को लेकर देहरादून में विरोध-प्रदर्शन हो रहा है। उत्तराखंड सरकार शहर की दो नदियों के ऊपर 26 किमी लंबा एलिवेटेड रोड कॉरिडोर बनाना चाहती है। स्थानीय लोगों और जियोलॉजिस्ट का कहना है कि इससे घाटी के पर्यावरण पर बुरा असर पड़ेगा। PWD के मुताबिक उसने प्रॉजेक्ट के लिए जरूरी स्टडी कर ली है, पर पर्यावरण से जुड़ी चिंताओं का समाधान भी होना चाहिए।

बदलाव की जरूरत । क्लाइमेट चेंज पूरी दुनिया के लिए हकीकत बन चुका है। देश के पहाड़, ग्लेशियर, जंगल भी इसकी चपेट में आ रहे हैं। यह मॉनसून सीख देकर जा रहा है कि हिमालय के प्रति नीतियों में बदलाव की जरूरत है, ताकि क्लाइमेट चेंज के असर को थोड़ा कम किया जा सके।

तिराहा

AI हमारी नक़ल है!

प्रेम शंकर मिश्र

सुधर्मा लंच टाइम में ही दफ्तर से लौट आई थीं। चेहरा मलिन था। यह देख सुखनंदन व्यग्र हो उठे। सुखनंदन बड़े अफसर हैं। उनका मानना है कि परिवेश जितना ही पारिवारिक होगा, कार्य उतना ही अच्छा होगा। इसीलिए उन्होंने बेटे-बेटी संग सुधर्मा को भी कंसल्टेंट बनवा दिया था। सुधर्मा जब घर से ऊब जाती हैं तो दफ्तर हो आती हैं।

आपदा विभाग की बैठक कर रहे सुखनंदन ने उससे उपजे अवसरों को स्थगित करते हुए घरेलू तात्कालिकता पर ध्यान केंद्रित किया। पहले उन्होंने सुधर्मा के दफ्तर में फोन कर वस्तुस्थिति जानी। स्वर की तल्खी के आधार पर उनके सहायक ने संभावित दोषियों के लिए आरोप पत्र टाइप करना भी शुरू दिया। हालांकि, जैसे-जैसे उनका सुर संयत होता गया, सहायक की नोटिस के लिफाफे के बदले आने वाले लिफाफे की उम्मीद भी धूमिल हो गई।

आंखें चार होते ही सुधर्मा फट पड़ीं, 'अब ये AI क्या बला है? अब यह मेरा काम करेगी?' सुखनंदन सुधर्मा की आशंका व क्रोध दोनों साधते हुए बोले, 'प्रिये! नौकरी के अलावा मैंने तुम्हें कुछ आर्टिफिशल दिया है। यह तो मेरे इंटेलिजेंस पर संदेह है! AI कुछ नहीं, मेरी ही नकल, मेरा विस्तार है, जिस पर तुम्हारा पूरा अधिकार है।' मीठे बोल व 'ब्लैक वॉटर' ने सुधर्मा के क्रोध को जिज्ञासा में बदल दिया था, 'आपकी नकल?'

'AI कई काम एक साथ कर सकता है, वह हम भी करते हैं। मैं आपदा समिति का भी अध्यक्ष हूं, अवसर समिति का भी। मद्य प्रसार का भी दायित्व है, मद्य निषेध का भी। AI से बेहतर परिणाम के लिए सही कमांड चाहिए। हम भी 'कमांड' को परख कार्य व परिणाम तय करते हैं।

'पर, AI तो समाधान देता है और आप?' सुधर्मा के मुंह से निकल पड़ा। जवाब भी उतना ही त्वरित था, 'बस यहीं नकल, असल के सामने फेल हो गया। मशीन विचार शून्य होती है और वैचारिकी ही व्यवस्था का आधार है। सोचो! समस्या ही नहीं होगी तो समाधान किसका होगा? कार्य योजना किसकी बनेगी? तंत्र और लोकतंत्र दोनों समाप्त हो जाएंगे। क्या हमारा अध्ययन, मसूरी की वादियों में प्रशिक्षण इन दिनों के लिए हुआ है? हम एक समस्या प्रधान देश हैं, और देश हमारे लिए सर्वोपरि।' सुखनंदन की कार्यप्रियता पर सुधर्मा की आंखें सजल हो गईं।

एकदा

संकलन : **ललित गर्ग**

ज्ञान की प्यास

माइकल फैराडे (1791–1867) का जन्म साउथ लंदन के बेहद साधारण परिवार में हुआ। उनके पिता लोहार थे और परिवार की आर्थिक स्थिति इतनी खराब थी कि उन्हें नियमित शिक्षा तक नहीं मिल पाई। बचपन में ही उन्होंने परिवार की मदद के लिए बुक बाइंडिंग वाले की दुकान में काम करना शुरू कर दिया। लेकिन यही काम उनके लिए ज्ञान का स्रोत बन गया। वहां जो किताबें आतीं, उनसे उन्होंने विज्ञान में गहरी रुचि विकसित की। फैराडे का मानना था कि सपनों के आगे गरीबी और कठिनाइयां कुछ भी नहीं। उनकी मेहनत और जिज्ञासा को पहला बड़ा अवसर तब मिला, जब उन्होंने प्रसिद्ध वैज्ञानिक हंपी डेवी का व्याख्यान सुना। उन्होंने नोट्स तैयार करके डेवी को भेजे। डेवी ने उनकी लगन देखकर उन्हें अपनी प्रयोगशाला में सहायक बना लिया। प्रयोगशाला में काम करते हुए फैराडे ने विद्युत और चुंबकत्व के बीच संबंध खोजा, जिससे बिजली और चुंबकत्व पर आधारित आधुनिक यंत्र संभव हुए। फैराडे की कहानी यह सिखाती है कि जिज्ञासा, मेहनत और ज्ञान की प्यास किसी भी साधारण इंसान को असाधारण बना सकती है। अवसर का सही उपयोग हर जीवन बदल सकता है।

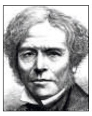

PM ने भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम को वैश्विक संसाधन के रूप में निरूपित किया है

स्पेस प्रोग्राम में वसुधैव कुटुंबकम

एस. सोमनाथ

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत की अंतरिक्ष यात्रा शानदार मिशनों की श्रृंखला से कहीं आगे बढ़ गई है। यह यात्रा एक राष्ट्रीय धड़कन और दैनिक जीवन की प्रेरणा बन गई है। जब ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला ने अगस्त 2025 में अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर तिरंगा फहराया और हमारे प्रधानमंत्री से बात की, तो वह हर भारतीय के लिए गर्व का क्षण था। प्रधानमंत्री ने इसे 'अमृत काल का निर्णायक अध्याय' कहा और कई लोगों के लिए तो वह क्षण कुछ ऐसा था मानो भारत का उत्थान उनकी अपनी धड़कन का हिस्सा हो।

भारत चांद पर । कुछ इसी किस्म की भावना की गूंज 23 अगस्त 2023 को भी सुनाई दी थी, जब चंद्रयान-3 की बदौलत भारत चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के पास उतरने वाला पहला देश बना। पीएम मोदी ने 'शिव शक्ति पॉइंट' के नाम की घोषणा करते हुए कहा था 'भारत अब चांद पर है'। यह उद्घोषणा कक्षाओं, गांवों और आम लोगों के घरों में समान रूप से गूंज उठी थी। भारत का चंद्रमा से जुड़ा अन्वेषण कार्यक्रम सही मायनों में पथप्रदर्शक रहा है - चंद्रयान-1 (2008) ने पानी के अणुओं की उपस्थिति की पुष्टि की; चंद्रयान-2 (2019) ने उच्च परिशुद्धता के साथ चंद्रमा का मानचित्रण किया और चंद्रयान-3 (2023) के लिए जमीन तैयार की, जिसने दक्षिणी ध्रुव के पास दुनिया की पहली सॉफ्ट लैंडिंग की उपलब्धि हासिल की।

विश्वसनीय वैश्विक साझेदार । भारत अंतरिक्ष के क्षेत्र में एक विश्वसनीय वैश्विक साझेदार बन चुका है। भारतीय रॉकेटों के जरिए 400 से अधिक विदेशी उपग्रह प्रक्षेपित किए जा चुके हैं। वर्ष 2014 में, भारत मंगल ग्रह की कक्षा में पहुंचने वाला एशिया का पहला और दुनिया का चौथा देश बना। बहु-संस्थागत सहयोग से निर्मित आदित्य-एल1 मिशन (2023), सूर्य के कोरोना और अंतरिक्ष के मौसम पर उसके प्रभाव के बारे में अभूतपूर्व जानकारियां प्रदान कर रहा है। एक्सपोसैट (2024) जहां ब्लैक होल की स्टडी कर रहा है, वहीं स्पेडेक्स (2024) ने भविष्य के अंतरिक्ष स्टेशनों और चंद्र मिशनों के लिए कक्षा में डॉकिंग का प्रदर्शन किया है।

कदम-दर-कदम
- चांद पर पहली बार बना 'शिव शक्ति' पॉइंट
- भारतीय रॉकेट से 400 विदेशी उपग्रह प्रक्षेपित
- ब्लैकहोल और सूर्य के कोरोना की अहम स्टडी

साहसिक रोडमैप । ये उपलब्धियां उस बड़ी कहानी का हिस्सा हैं, जिसकी पटकथा प्रधानमंत्री मोदी 2014 से नीति, संस्कृति और आकांक्षाओं को नया कलेवर प्रदान करते हुए लिख रहे हैं। उनका रोडमैप साहसिक है: मानवयुक्त अंतरिक्ष उड़ान के लिए गगनयान कार्यक्रम को जारी रखना, चंद्रमा के गहन अन्वेषण के लिए चंद्रयान- 4 और 5 को भेजना, 2035 तक एक भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन (बीएएस) स्थापित करना और 2040 तक चंद्रमा पर किसी भारतीय को उतारना। ये कोरी कल्पनाएं नहीं अमृतकाल की भावनाओं के अनुरूप निर्धारित राष्ट्रीय लक्ष्य हैं।

निजी क्षेत्र का योगदान । प्रधानमंत्री मोदी ने इस क्षेत्र को निजी कंपनियों के लिए खोल दिया है। इससे उपग्रह, प्रक्षेपण यान और जमीनी स्तर की प्रणालियां बनाने वाले 350 से अधिक स्टार्टअप का एक फलता-फूलता इकोसिस्टम तैयार हुआ है। अंतरिक्ष से संबंधित बजट लगभग तिगुना हो गया है। भारत की अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था, जो अभी 8 बिलियन अमेरिकी डॉलर की है, आने वाले वर्षों में इसके बढ़कर 44 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो जाने का अनुमान है। इससे इस क्षेत्र के इर्द-गिर्द रोजगार, उद्योग और नवाचार पैदा होंगे।

केंद्र में युवा । इस दृष्टिकोण के केंद्र में युवा हैं। इस वर्ष भारत में आयोजित खगोल विज्ञान (एस्ट्रोनॉमी) और खगोल भौतिकी (एस्ट्रोफिजिक्स) से संबंधित अंतरराष्ट्रीय ओलिंपियाड में 60 से अधिक देशों के लगभग 300 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिसमें भारतीय विद्यार्थियों ने पदक जीते। इसरो रोबोटिक्स चैलेंज और इंडियन स्पेस हैकाथॉन जैसी पहलें स्कूल व कॉलेज के विद्यार्थियों को रोवर्स, उपग्रहों और रॉकेटों के सीधे संपर्क में ला रही हैं। इससे उनमें यह आत्मविश्वास पैदा हो रहा है कि भविष्य के लॉन्चपैड उनके अपने हैं।

वसुधैव कुटुंबकम का मंत्र । प्रधानमंत्री ने अंतरिक्ष को साझा वैश्विक संसाधन के रूप में निरूपित किया है। दक्षिण एशिया उपग्रह ने पड़ोसियों को संचार क्षमता प्रदान की, जबकि जी-20 में भारत ने जलवायु और पर्यावरण निगरानी के लिए एक 'जी-20 उपग्रह' की घोषणा की, जिसके आंकड़े सभी देशों के साथ साझा किए जाएंगे। नासा के साथ निसार, सीएनईएस के साथ तृष्णा, जाक्सा के साथ लूपेक्स और इएसके के प्रोबा-3 में भारत की भागीदारी जैसे सहयोगात्मक मिशन 'वसुधैव कुटुंबकम' के मूल्यों द्वारा निर्देशित एक वैश्विक भागीदार के रूप में भारत के उदय को दर्शाते हैं। यह एक ऐसे राष्ट्र की कहानी है जो खुद को देखने के नए तरीके खोज रहा है।

क्षितिज हमारा भी है । इस अमृत काल में, भारत न सिर्फ अंतरिक्ष युग में भाग ले रहा है बल्कि उसे आकार भी दे रहा है। महत्वाकांक्षा, आत्मविश्वास और उद्देश्यों से लैस भारत तारों की ओर यह जानते हुए देखता है कि क्षितिज हमारा भी है।

(लेखक इसरो के पूर्व अध्यक्ष हैं)

AC की गैस रिफिलिंग बन रही है बड़ी प्रॉब्लम

चंद्रभूषण

एयर-कंडीशनर और फ्रिज में भरने वाली गैस से बना ओजोन होल भर रहा है। वैज्ञानिकों का कहना है कि 2066 तक ओजोन परत पूरी तरह ठीक हो जाएगी, लाखों लोग स्किन कैंसर से बच जाएंगे। लेकिन अब दूसरा संकट बढ़ रहा है। इस बार वजह है इन्हीं AC और फ्रिज में लगने वाला कूलेंट। भारत में हम इन्हें अपने रूम एयर-कंडीशनरों (RACs) से बेधड़क लीक कर रहे हैं।

ठंडक का उफान । RACs की बिक्री 2020 से हर साल 15–20% की दर से बढ़ रही है। इस समय भारत में तकरीबन 7 करोड़ RACs हैं। iFOREST के हालिया राष्ट्रीय घरेलू सर्वे के मुताबिक AC अब सिर्फ़ अमीरों तक सीमित नहीं है। यह मिडल और लोअर इनकम घरों में भी पहुंच चुका है। सर्वे में दिखा कि अधिकतर भारतीय अपने AC में 22–26C तापमान चुनते हैं, न कि बेहद कम।

कड़वी सचाई । AC की गैस रिफिलिंग हमारी जेब को भी नुकसान पहुंचा रही है। 5 साल से पुराने तकरीबन 80% AC हर साल रिफिल होते हैं। भारत के लगभग 40% AC हर साल रिफिल होते हैं। AC को सिर्फ 5 साल में एक बार रिफिल कराने की जगह भारत में यह हर 2–3 साल में हो रहा है। सिर्फ 2024 में भारत के ACs ने 3.2 करोड़ किलो गैस लील ली। यही सिलसिला चलता रहा तो 2035 तक रिफिल का खर्च बढ़कर 27,500 करोड़ रुपये हो जाएगा।

सांस का सवाल । भारत में सबसे ज्यादा इस्तेमाल होने वाला HFC-32, C से 675 गुना अधिक ताकतवर है। 2024 में AC से लीक हुए गैस से ग्रीनहाउस गैस (GHG) उत्सर्जन 5.2 करोड़ टन CO के बराबर हुआ। 2035 तक यह 8.4 करोड़ टन हो जाएगा। 2035 तक ACs से कुल उत्सर्जन दोगुना होकर 32.9 करोड़ टन हो जाएगा, और वो भारत का सबसे बड़ा GHG छोड़ने वाला घरेलू उपकरण बन जाएगा।

कॉमनरूम

AI Image

दंतहीन नीतियां । इंडिया कूलिंग एक्शन प्लान का मकसद 2037–38 तक गैस की मांग 25–30% कम करना है, लेकिन इसके लिए मजबूत नियम नहीं हैं। संशोधित ई-वेस्ट (मैनेजमेंट) नियम, 2023 में प्रावधान तो है, लेकिन इसका लागू होना बेहद कमजोर है। नतीजा यह है कि सर्विसिंग के दौरान लीक रोकने का कोई सिस्टम नहीं, रिफिल की निगरानी नहीं और पुराने AC के निपटान की कोई जवाबदेही नहीं।

हल मुमकिन । गैस लीक का संकट बेहद गंभीर है, लेकिन यह सुलझाया जा सकता है। भारत को एक व्यापक लाइफ साइकल गैस मैनेजमेंट (LRM) नियम बनाना होगा, जिसमें गैस की भराई से लेकर सर्विसिंग और निपटान तक सब शामिल हो। AC बनाने वाली कंपनियों को EPR ढांचे में जिम्मेदार बनाना होगा ताकि वे गैस को वापस लें, रीसाइकल करें और सुरक्षित रूप से नष्ट करें।

(लेखक iForest के CEO हैं)

कांटे की बात

ली जे म्यांग, दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति

देवदासियों को फिर से इंसान बना रहे बसवप्रभु

समाज की शख्सियत

*उनको कम उम्र में ही देवताओं को समर्पित कर दिया जाता। इसके बाद उनकी जिम्मेदारी होती मंदिरों की देखभाल की। कर्नाटक की इन देवदासियों को शुरू में खूब सम्मान मिला, लेकिन फिर यह प्रथा वेश्यावृत्ति की वजह बन गई। **बसवप्रभु लखमगौड़ा पाटिल** इसी के खिलाफ लड़ रहे हैं।*

एक कार्यक्रम ने राह बदली

कर्नाटक के बेलगावी के अथानी में 17वीं सदी के आखिरी में मुगल-मराठा युद्ध का एक हिस्सा लड़ा गया था। अब उसके निशान नहीं मिलते, पर देवदासी प्रथा के खिलाफ दशकों से शुरू जंग अब भी जारी है। बसवप्रभु अब 77 साल के हैं और करीब चार दशकों से देवदासियों और उनके बच्चों के पुनर्वास में लगे हैं। एक कार्यक्रम में उन्हें मुंबई के रेड लाइट एरिया में बड़ी संख्या में अथानी की महिलाओं के होने का पता चला था। इसके बाद उनके जीवन में बदलाव आया।

देवदासियों की शादी

सरकार ने देवदासी प्रथा पर रोक के लिए कानून बनाया है, लेकिन कर्नाटक समेत कई राज्यों के कुछ इलाकों में यह अब भी जारी है। बसवप्रभु ने एक संस्था बनाई, लोग जागरूक हुए और देवदासियों की समाज में वापसी की राह आसान हो गई। उन्हीं के प्रयासों से कर्नाटक में एक नए कानून को मंजूरी मिली।

बिहार में क्या रंग दिखाएगा PK फैक्टर

नरेन्द्र नाथ

बिहार में इस बार प्रशांत किशोर ने सियासी समीकरण बदल दिए हैं। वह अपनी पार्टी जन सुराज के साथ चुनाव को I.N.D.I.A. और NDA के बीच त्रिकोणीय बनाने उतरे हैं। चुनाव में उनका असर कितना होगा वह तो परिणाम में पता चलेगा, लेकिन फिलहाल नैरेटिव बनाने में उन्हें प्रारंभिक सफलता जरूर मिली है।

पीके के गंभीर तीर

प्रशांत किशोर ने बिहार के डेप्युटी सीएम और BJP नेता सम्राट चौधरी, BJP के प्रदेश अध्यक्ष दिलीप जायसवाल और JDU के सीनियर नेता और मंत्री अशोक कुमार चौधरी पर करप्शन के आरोप लगाए। इसके बाद इनकी ओर से बचाव तो किया गया, लेकिन माना गया कि उतने पुख्ता तरीके से इनके दलों ने बचाव नहीं किया। इन आरोपों की सचाई अपनी जगह, पर इन्होंने नैरेटिव स्तर पर NDA को जरूर प्रभावित किया। NDA खासकर RJD को उनके पुराने करप्शन के लिए ही घेरता रहा है। लेकिन इस बार खुद BJP-JDU इसी आरोप का शिकार हो गए। जिस तरह प्रशांत किशोर ने सामने आकर करोड़ों के घोटाले के संगीन आरोप लगाए, उससे उन्हें बैकफुट पर जाना पड़ा।

विशुद्ध राजनीति
कसौटी

पिछले कई सालों में पहली बार नीतीश सरकार के मंत्रियों और NDA नेताओं पर करप्शन के सार्वजनिक आरोप लगे हैं। प्रशांत किशोर न सिर्फ आगे और खुलासा करने का दावा कर रहे हैं, बल्कि उसे जनता के बीच भी ले जा रहे हैं। बिहार में विकास के मुद्दे पर पहले ही प्रशांत किशोर समानांतर नैरेटिव स्थापित करने में सफल रहे थे। ऐसे में NDA को अचानक उन्हें काउंटर करने में दिक्कत आने लगी है। हालांकि पीके उतनी ही मजबूती से तेजस्वी यादव पर भी हमला कर रहे हैं और एक तरह से जनता के बीच खुद को नए विकल्प की तरह पेश कर रहे हैं। उन्हें लगता है कि बिहार की जनता उनके इस दावे को वैसे ही स्वीकार करेगी, जैसे 2013 में दिल्ली विधानसभा चुनाव में अरविंद केजरीवाल ने अपना रास्ता बना लिया था।

RJD का नफा-नुकसान

प्रशांत किशोर के इन सब दावों से RJD को लगता है कि इसका लाभ उन्हें होगा। हालांकि यह भी तथ्य है कि बीस सालों के दौरान अधिकतर समय सत्ता में रहने वाली NDA सरकार के खिलाफ RJD कभी ऐसा हमलावर नहीं रहा। जानकारों के अनुसार लालू प्रसाद पर पूर्व में लगे करप्शन के आरोप और कोर्ट के फैसले के कारण पार्टी कहीं न कहीं मनोवैज्ञानिक दबाव में रहती है, जिससे वह इन मुद्दों को लोगों तक ले जाने में प्रभावी नहीं रही है।

2015 में जब नीतीश कुमार ने RJD के साथ सरकार बनाई थी, तब नीतीश ने तेजस्वी पर करप्शन के आरोप लगने के तुरंत बाद इस्तीफा मांग लिया था। बाद में 2017 में महागठबंधन का साथ छोड़ वह दोबारा NDA में शामिल हो गए थे। अब प्रशांत किशोर के खुलासे के बाद RJD ऐसा ही दबाव नीतीश कुमार पर बना रही है। पार्टी को लगता है कि इन आरोपों के बीच कहीं न कहीं NDA के आरोप कमजोर होंगे, और अंत में इसका लाभ उन्हें ही मिलेगा। कुल मिलाकर बिहार की राजनीति में पीके फैक्टर का असर अब सभी दलों पर साफ देखा जा रहा है।

THE SPEAKING TREE
और पढ़ने के लिए देखें
www.speakingtree.nbt.in

महान लोगों के पास क्षण भर ही टिक पाता है क्रोध

मुनि जयकुमार

मनुष्य का जीवन प्रतिक्रियाओं से भरा होता है। जब किसी परिस्थिति में हमारी इच्छा पूरी नहीं होती या हमारे अहंकार को ठेस पहुंचती है, तब प्रतिक्रिया क्रोध का रूप ले लेती है। यह क्रोध कभी-कभी इतना तीव्र हो जाता है कि व्यक्ति अपना संतुलन खो बैठता है और ऐसे कार्य कर डालता है जिनके परिणाम भयंकर होते हैं। क्रोध में व्यक्ति अपनी बुद्धि को खो देता है, सही-गलत का भेद नहीं कर पाता और गंभीर अपराध तक कर बैठता है।

क्रोध को समझने के लिए हमें इसके परिणामों पर विचार करना चाहिए। अनावश्यक क्रोध करने वाले लोग अपने जीवन को तो अशांत करते ही हैं, दूसरों की शांति भी नष्ट कर देते हैं। यह स्थिति दुख का कारण बनती है और व्यक्ति को मानसिक व शारीरिक रूप से कमजोर कर देती है। वास्तव में क्रोध बुद्धि का भोजन है। जैसे ही यह मन में आता है, बुद्धि स्वस्थ नहीं रह पाती।

AI Image

विभिन्न स्तरों पर बताया गया है कि क्रोध कहां कितनी देर तक टिकता है। उत्तम पुरुष का क्रोध क्षणभर का ही होता है, मध्यम पुरुष का क्रोध कुछ घंटों तक रहता है, अधम पुरुष का क्रोध एक दिन तक बना रहता है और अधमाधम पुरुष जीवनभर क्रोध की अग्नि में जलते रहते हैं। यही कारण है कि बुद्धिमान व्यक्ति क्रोध के क्षण में तुरंत आत्मचिंतन करता है। यदि सामने वाला सच कह रहा है, तो क्रोध व्यर्थ है, और यदि झूठ कह रहा है, तो भी क्रोध का कोई अर्थ नहीं। यह विचार क्रोध को तुरंत शांत कर सकता है।

क्रोध न केवल हमारी आत्मा को पतित करता है, प्रेम को नष्ट करता है, वाणी को कटु बना देता है और रिश्तों में दरार डाल देता है। स्वास्थ्य की दृष्टि से भी क्रोध हानिकारक है क्योंकि यह हमारे शरीर, मन और मस्तिष्क को समान रूप से प्रभावित करता है। क्रोध पर नियंत्रण पाने के लिए साधारण उपाय किए जा सकते हैं, जैसे गहरी श्वास लेना और श्वास की गति पर नियंत्रण करना, या ललाट पर श्वेत प्रकाश का ध्यान करना। ये उपाय तुरंत शांति का अनुभव कराते हैं। जब हम क्रोध पर विजय पाते हैं, तो न केवल आत्मिक सुख मिलता है बल्कि व्यवहारिक जीवन भी मधुर और सफल बनता है।

इसलिए यदि हम सच्ची सफलता और विकास चाहते हैं, तो हमें क्रोध पर नियंत्रण करना होगा। यह नियंत्रण जीवन को स्वर्ग जैसा बना देता है, जहां शांति, प्रेम और सद्भाव का वातावरण होता है।

मीम बहार

पूरी दुनिया ट्रंप के रोज-रोज बोले जाने वाले झूठ से मजे ले रही है। अब ट्रंप चाहे जितने झूठ बोलें, उनके हर झूठ के लिए यही मीम हर दिन हो सकता है इस्तेमाल। बार-बार, हर झूठ की तरह लगातार!

रीडर्स मेल
www.edit.nbt.in

स्थायी समाधान हो

25 सितंबर का संपादकीय 'बात न बिगड़े' लद्दाख में पूर्ण राज्य का दर्जा और छठी अनुसूची की मांग से जुड़ा है। लोग अपनी संस्कृति और संसाधनों की सुरक्षा चाहते हैं। लेकिन हिंसा किसी भी समस्या का हल नहीं। सोनम वांगचुक का शांतिपूर्ण तरीका ही आगे का रास्ता दिखाता है। सरकार को संवेदनशीलता और पारदर्शिता से बातचीत करनी चाहिए, वहीं युवाओं को धैर्य बनाए रखना होगा। विश्वास बहाली और आपसी संवाद से ही लद्दाख की समस्याओं का स्थायी और न्यायपूर्ण समाधान संभव है।

रोहित श्रीवास्तव, इंदिरापुरापुरम

nbtedit@timesofindia.com पर अपनी राय नाम-पते के साथ मेल करें।

आर.एन.आई. नं. 510/57 © सर्वाधिकार सुरक्षित। लिखित अनुमति के बिना संपूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित। स्वत्वाधिकारी बैनेट, कोलमैन एण्ड कम्पनी लिमिटेड के लिए राजीव यादव द्वारा, 7 बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित तथा **टाइम्स ऑफ इंडिया प्रेस, साइट IV, औद्योगिक क्षेत्र साहिबाबाद** और प्लॉट नंबर 7-8, सेक्टर M-11, ट्रांसपोर्ट हब, इंडस्ट्रियल मॉडल टाउनशिप, मानेसर, हरियाणा से मुद्रित। फोन : 23302000 फैक्सः 23492047, पंजीकृत कार्यालय : दादाभाई नौरोजी रोड, मुंबई-400001। विमान सेवा शुल्क : 1 रु. प्रति कॉपी। नेपाल में कुल मूल्य : सोमवार से शनिवार : नेपाली 5 रु.; रविवार : नेपाली 6 रु.
संपादक (दिल्ली मार्केट) : आशीष पांडे (इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी)

Machine Translated by Google

लद्दाख में अविश्वास

लोगों की वैध आकांक्षाओं को ध्यान में रखा जाना चाहिए

टी केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख में 24 सितंबर को भड़की अशांति हिंसक हो गई, जिसके परिणामस्वरूप चार लोगों की मौत हो गई और कई अन्य घायल हो गए। केंद्र की नज़र में, प्रदर्शनकारी नेताओं ने द्वेषपूर्ण व्यवहार किया, जबकि उनकी लंबे समय से चली आ रही मांगों को पूरा करने के प्रयास जारी थे। ये मांगें हैं लद्दाख को राज्य का दर्जा, संविधान की छठी अनुसूची (जो आदिवासी क्षेत्रों को स्वायत्तता प्रदान करती है) में शामिल करना, स्थानीय लोगों के लिए नौकरियों में आरक्षण और अधिक राजनीतिक प्रतिनिधित्व। हालाँकि, आंदोलन में सबसे आगे रहने वाले नेताओं और संगठनों ने कहा है कि आगजनी और हिंसा उनके नियंत्रण से बाहर के लोगों द्वारा की गई थी। प्रदर्शनकारियों और केंद्र ने लद्दाख के युवाओं से शांत रहने की अपील की है।

लद्दाख में विरोध प्रदर्शन दो प्रमुख नागरिक समाज गठबंधनों द्वारा समर्थित हैं—लेह एपेक्स बॉडी (एलएबी), जो बौद्ध बहुल लेह का प्रतिनिधित्व करती है, और कारगिल डेमोक्रेटिक अलायंस (केडीए), जो मुस्लिम बहुल कारगिल का प्रतिनिधित्व करती है। हालाँकि इन समूहों में कई मतभेद हैं, फिर भी वे संवैधानिक सुरक्षा उपायों और क्षेत्र के लिए अधिक राजनीतिक स्वायत्तता के चार-सूत्रीय एजेंडे पर एकजुट हैं। बुधवार को, एलएबी की युवा शाखा द्वारा आहूत बंद लेह में हिंसक हो गया, जिसमें भारतीय जनता पार्टी के कार्यालय को जलाना और लद्दाख स्वायत्त पर्वतीय विकास परिषद (एलएएचडीसी) के मुख्यालय में तोड़फोड़ शामिल थी।

केंद्र और ये राज्य मई 2025 में एक समझौते पर पहुँचे थे, जिसने स्थानीय लोगों (एसटी और ईडब्ल्यूएस सहित) के लिए नौकरियों में 95% आरक्षण, पर्वतीय विकास परिषद में महिलाओं के लिए 33% आरक्षण, सख्त अधिवास मानदंड और भोटी, पुर्गी, बाल्टी और शिना जैसी स्थानीय भाषाओं को मान्यता जैसे उपायों के माध्यम से मुख्य चिंताओं को संबोधित किया। हालांकि, 23 सितंबर को, दो बुजुर्ग प्रदर्शनकारियों के अस्पताल में भर्ती होने से, जो जलवायु कार्यकर्ता सोनम वांगचुक के साथ भूख हड़ताल पर थे, ने युवाओं के नेतृत्व में सार्वजनिक विरोध का एक नया दौर शुरू कर दिया। केंद्र अब आरोप लगाता है कि श्री वांगचुक हिंसा भड़का रहे हैं जबकि सभी मांगों का समाधान किया जा रहा है। केंद्र ने विदेशी तत्वों की भागीदारी का भी संकेत दिया है। स्पष्ट रूप से प्रदर्शनकारियों और केंद्र की धारणाओं के बीच दोनों मुद्दों और आगे के रास्ते पर एक अंतर है। इससे यह और भी महत्वपूर्ण हो जाता है कि उपद्रवियों को नियंत्रित करते हुए क्षेत्र के लोगों का विश्वास भी लिया जाए। भारत की सुरक्षा आवश्यकताओं से समझौता किए बिना लोगों की जायज़ आकांक्षाओं को पूरा किया जा सकता है।

गरम हवा

जलवायु परिवर्तन विज्ञान के खिलाफ डोनाल्ड ट्रम्प का बड़बोलापन किसी की मदद नहीं कर रहा है

पी अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने संयुक्त राष्ट्र महासभा (यूएन-जीए) में जो भाषण दिया, वह तथ्यों से परे था।

जलवायु परिवर्तन को "दुनिया पर किया गया सबसे बड़ा धोखा" बताते हुए, उन्होंने कहा कि यूरोप द्वारा दशकों से अपने कार्बन फुटप्रिंट में की जा रही कटौती बंद कारखानों और नौकरियों के नुकसान की कीमत पर हुई है। जलवायु परिवर्तन की कार्यप्रणाली की अपनी लुडाइट अवधारणा में, 20वीं सदी के पूर्वार्ध में वैज्ञानिकों ने कहा था कि वैश्विक शीतलन "दुनिया को मार देगा" और जब ऐसा नहीं हुआ तो उन्होंने कहा कि ग्लोबल वार्मिंग करेगी। और क्योंकि दुनिया का अंत नहीं हुआ, उनका मानना है, बेईमान वैज्ञानिक अब इसे 'जलवायु परिवर्तन' के रूप में संदर्भित करते हैं, चाहे परिणाम कुछ भी हो। इस तथ्य की परवाह न करें कि 0.1°C (1945-70 से) का औसत वैश्विक तापमान में गिरावट यह तो भूल ही जाइए कि जलवायु परिवर्तन पर एक अंतर-सरकारी पैनल है, जिसने 1990 के दशक से हज़ारों वैज्ञानिकों को जलवायु में प्राकृतिक बदलावों और मानव-जनित बदलावों के प्रभावों के बीच अंतर समझने का एक मंच प्रदान किया है। यह तो भूल ही जाइए कि जलवायु परिवर्तन — शब्द — का अर्थ ठीक यही है कि ग्लोबल वार्मिंग का मतलब हर जगह गर्म मौसम नहीं, बल्कि समुद्री धाराओं के संचलन में बड़ा व्यवधान और इसलिए, तेज़ी से अनियमित होती मौसम-

है।

श्री ट्रम्प की झुंझलाहट जलवायु की सूक्ष्मताओं को लेकर कम और जीवाश्म ईंधन उद्योग के लिए इसके महत्व को लेकर ज़्यादा है। उनके लिए, सौर और पवन ऊर्जा का बढ़ता उपयोग इस बात का प्रमाण है कि देश "हरित एजेंडे" पर चलने के कारण "विनाश के कगार" पर हैं। एक ऐसे देश का राष्ट्रपति, जिसने कभी मानवजनित तापमान वृद्धि की सूक्ष्मताओं को समझने के विज्ञान का नेतृत्व किया था, एक दिन दुनिया के सबसे प्रतिष्ठित मंचों में से एक पर खड़े होकर इसकी आलोचना करेगा, यह दर्शाता है कि वैज्ञानिक ज्ञान के प्रति सम्मान अब अतीत की बात हो गई है। जलवायु कार्रवाई का मार्गदर्शन करने, उपचारात्मक कार्रवाई में न्याय और समता निर्धारित करने और यह तय करने के लिए मौजूद बहुपक्षीय प्रक्रिया की, कि क्या जलवायु संकट के प्रभाव को, यहाँ तक कि उसके समर्थकों द्वारा भी, व्यापार संरक्षणवाद के शून्य-योग छल-कपट के अधीन बनाकर, कमज़ोर किया जा रहा है, जायज़ आलोचनाएँ हैं। इन पर दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के नेता का दृष्टिकोण मूल्यवान होता। मौसम परिवर्तनों की जटिलता का अर्थ है कि जलवायु परिवर्तन की प्रक्रिया को लेकर उलझन में पड़ना वाजिब है। इसे माया सभ्यता के सर्वनाश का अग्रदूत बताना भी मददगार नहीं रहा है। फिर भी, यह स्पष्ट है कि ठोस प्रमाणों, मिथ्या अनुमानों और नपे-तुले पूर्वानुमानों के धीमे-धीमे संचय के कारण, वैज्ञानिक प्रक्रिया ठीक उसी तरह काम कर रही है जैसी उसे करनी चाहिए। अपनी अक्षमताओं के बावजूद, जलवायु परिवर्तन की प्रक्रिया ने दुनिया को जीवाश्म ईंधन के बाद के भविष्य की ओर अग्रसर किया है।

कोई भी बड़बड़ाहट इसे बदल नहीं सकती।

अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं वाले आठ राज्य, निर्यात का 0.13%

सांगमुआन हैंगसिंग
एक शोधकर्ता और पूर्व छात्र हैं
कौटिल्य स्कूल ऑफ पब्लिक पॉलिसी

में जब अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अगस्त 2025 में व्यापार घाटे, रूसी कच्चे तेल की खरीद और जवाबी कार्रवाई का हवाला देते हुए भारत से आयात पर 25% अतिरिक्त शुल्क लगाने पर हस्ताक्षर किए, तो नई दिल्ली ने अपनी चिरपरिचित मुद्रा में जवाब दिया—नपी-तुली भाषा, बंद कमरे में कूटनीति और कोई सार्वजनिक जवाबी कार्रवाई नहीं। यह नृत्य-रचना जानी-पहचानी थी। वाशिंगटन ने वार किया, भारत ने उसे आत्मसात कर लिया। सामाजिक आख्यानों ने इसे द्विपक्षीय अशांति के एक और प्रकरण के रूप में प्रस्तुत किया। लेकिन ये शुल्क केवल दो राजधानियों के बीच ही नहीं, बल्कि देश के भीतर भी मौजूद दरारों को काटते हैं। ये केवल व्यापार असंतुलन ही नहीं, बल्कि एक गहरे स्थानिक असंतुलन को भी उजागर करते हैं, जिसे नई दिल्ली लंबे समय से नज़रअंदाज़ करती रही है।

भारत की निर्यात अर्थव्यवस्था अत्यधिक केन्द्रीकृत है। गुजरात, महाराष्ट्र, तमिलनाडु और कर्नाटक, इन चार राज्यों का कुल वस्तु निर्यात में 70% से ज़्यादा हिस्सा है। अकेले गुजरात में यह 33% से ज़्यादा है। यह संकेन्द्रण कोई संयोग नहीं है।

इन क्षेत्रों में दशकों से बुनियादी ढाँचे, प्रोत्साहनों और राजनीतिक निरंतरता का समन्वय रहा है। इस बीच, भारत के सबसे अधिक आबादी वाले राज्य, उत्तर प्रदेश, बिहार और मध्य प्रदेश, हाशिये पर बने हुए हैं, जिनके बीच देश के कुल व्यापार का बमुश्किल 5% ही होता है।

पूर्वोत्तर का हाशिये पर होना फिर पूर्वोत्तर है, जिसका स्थान भारत की निर्यात अर्थव्यवस्था में जानबूझकर हाशिये पर है।

5,400 किलोमीटर से ज़्यादा लंबी अंतरराष्ट्रीय सीमाओं वाले आठ राज्यों का राष्ट्रीय निर्यात में सिर्फ़ 0.13% हिस्सा है। इन्हें विदेशी बाज़ारों से जोड़ने वाला कोई चालू व्यापार गलियारा नहीं है। और, नीति निर्माण में मात्रा या भूमिका को सहारा देने के लिए कोई लॉजिस्टिक बुनियादी ढाँचा भी नहीं है। इसके बजाय, जो मौजूद है वह एक सुरक्षा तंत्र है जिसे आतंकवाद-रोधी और निगरानी के लिए तैयार किया गया है। व्यापार कभी भी इस अधिदेश का हिस्सा नहीं रहा।

भारत के आर्थिक भविष्य को आकार देने वाली संस्थाओं में पूर्वोत्तर का संरचनात्मक रूप से प्रतिनिधित्व नहीं है। प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद का एक भी सदस्य इस क्षेत्र से नहीं है। भारत की निर्यात रणनीति को दिशा देने वाले व्यापार बोर्ड में मिज़ोरम, त्रिपुरा या अरुणाचल प्रदेश का कोई ठोस प्रतिनिधित्व नहीं है। निर्यातित उत्पादों पर शुल्कों और करों में छूट (RoDTEP) और उत्पादन-आधारित प्रोत्साहन (PLI) जैसी योजनाएँ गुजरात से तमिलनाडु तक फैले औद्योगिक क्षेत्रों में धूमधाम से लागू की जाती हैं। लेकिन पूर्वोत्तर के पहाड़ी और घाटियों को बिना किसी बुनियादी ढाँचे, बिना किसी रसद और बिना किसी संस्थागत लाभ के वैश्विक बाज़ारों में अपनी पैठ बनाने के लिए छोड़ दिया जाता है। यह केवल नौकरशाही की लापरवाही नहीं है।

यह एक बेतुका अनुमान है कि इस क्षेत्र को प्रतीकात्मक रूप से अपनाया जा सकता है, लेकिन आर्थिक रूप से अनाथ बना दिया जा सकता है। हाल ही में 2024 में, विदेश व्यापार महानिदेशालय की रणनीतिक निर्यात योजना में 87 पृष्ठ ऐसे थे जिनमें पूर्वोत्तर के गलियारों पर एक भी खंड नहीं था। इस चूक का विरोध नहीं किया गया। यह बस मान लिया गया था।

असम में चाय की अर्थव्यवस्था चरमरा रही है। कीमतें स्थिर हैं, मज़दूरों की कमी बनी हुई है, और बागानों में बहुत ज़्यादा खर्च हो गया है। प्रमुख पश्चिमी बाज़ारों में टैरिफ़ में 25% की बढ़ोतरी से मुनाफ़े के व्यवहार्यता से नीचे जाने का ख़तरा है। डिब्रूगढ़ के एक बागान मालिक, जो 500 से ज़्यादा मज़दूरों की देखरेख करते हैं, ने कहा, "हम मुश्किल से ही काम चला रहे हैं। अगर अमेरिका और यूरोपीय संघ के खरीदार ऑर्डर कम करते हैं, तो हमें तुरंत काम कम करना होगा।"

इस क्षेत्र में भारत के कुल चाय उत्पादन का आधे से ज़्यादा उत्पादन होता है, लेकिन उच्च-मूल्य वाली पैकेजिंग या ब्रांडिंग लगभग न के बराबर है। ज़्यादातर चाय अभी भी सीटीसी ग्रेड की होती है, नीलामी में बेची जाती है और बाज़ार के हर उतार-चढ़ाव के संपर्क में रहती है। खरीदार पुनर्मूल्यांकन के दौर में हैं और ऊपरी असम क्षेत्र और दुआर्स में लागत में कटौती शुरू हो गई है। मज़दूरी कम हो रही है। उत्पादन कम हो रहा है। अगली कमी नौकरियाँ होंगी।

नुमालीगढ़ में, यह रिन्यूएरी असम की ऊर्जा रीढ़ की हड्डी में एक तंत्रिका धमनी की तरह बहती है। इसका अधिकांश कच्चा तेल अभी भी ऑयल इंडिया और ऑयल एंड नेचुरल गैस कॉर्पोरेशन लिमिटेड के आस-पास के क्षेत्रों से आता है, लेकिन अब यह स्थिति बदल रही है। नौ मिलियन मीट्रिक टन प्रति वर्ष तक विस्तार का मतलब है कि इसे पारादीप की ओर, और धीरे-धीरे, रियायती रूसी कार्गो की ओर देखना होगा।

यहीं से ख़तरा पैदा होता है। वाशिंगटन का टैरिफ़, जो आंशिक रूप से भारत के रूस के साथ गठबंधन की प्रतिक्रिया के रूप में गढ़ा गया है, यहाँ एक लंबी छाया डालता है। अगर प्रतिबंधों का अगला दौर कड़ा होता है या शिपिंग लेन कड़ी होती हैं, तो इसका असर मुंबई की बैलेंस शीट पर नहीं दिखेगा। गोलाघाट ही काँपेगा।

म्यांमार, आसियान के साथ एक खामोश सीमा नेपीडॉ में 2021 के तख्तापलट के बाद से, भारत-म्यांमार सीमा पर व्यापार कम हो गया है।

कभी क्षेत्रीय एकीकरण की धमनियों के रूप में देखे जाने वाले राजमार्ग अब चौकियों, जाम की स्थिति और नौकरशाही के कोहरे में खो गए हैं। कभी झरझरा और आदान-प्रदान से जीवंत, सीमा अब खामोशी से बोलती है।

म्यांमार के लिए भारत के दो प्रमुख प्रवेश द्वार, मिज़ोरम में ज़ोखावथर और मणिपुर में मोरेह, अब जर्जर चौकियों में तब्दील हो चुके हैं। कभी एक्ट ईस्ट के सपनों के केंद्र रहे ये रास्ते अब व्यापार केंद्रों से ज़्यादा सुरक्षा अवरोधों की तरह काम करते हैं।

बुनियादी ढाँचा अब भी दिखावटी बना हुआ है—सड़कें कागज़ों पर हैं, सीमा शुल्क अधिकारी कमज़ोर हैं, और कोल्ड-चेन सुविधाएँ कहीं नज़र नहीं आतीं। 2024 में मुक्त आवागमन व्यवस्था को ख़त्म करना एक बड़ा झटका था, जिसने न सिर्फ़ व्यापार, बल्कि रिश्तेदारी, रोज़मर्रा की ज़िंदगी और पहाड़ों की आपस में जुड़ी अर्थव्यवस्थाओं को भी तहस-नहस कर दिया।

वाणिज्य की जगह निगरानी ने ले ली। ये अब व्यापार के गलियारे नहीं, बल्कि नियंत्रण ग्रिड हैं, जो बाज़ार की माँग के बजाय आतंकवाद-रोधी तर्क से बने हैं। जहाँ सामान नहीं चलता, वहाँ सैनिक चलते हैं। और जैसे-जैसे बुनियादी ढाँचा कमज़ोर होता जाता है, ये शहर आर्थिक रूप से प्रासंगिकता खोकर रणनीतिक शून्यता में पहुँचते जाते हैं, जिनका मानचित्रण कनेक्टिविटी के लिए नहीं, बल्कि नियंत्रण के लिए किया जाता है। सीमा केवल बंद करने के विचार के लिए खुली है।

भारत वैश्विक व्यापार पर बातचीत करते हुए पूर्वोत्तर जैसे प्रमुख भौगोलिक क्षेत्रों की अनदेखी कर रहा है, जो एक सामंजस्यपूर्ण संबंध का आधार बन सकते हैं।

पूर्वोत्तर को कभी भारत के रणनीतिक क्षेत्र, दक्षिण पूर्व एशियाई राष्ट्र संघ के लिए एक सेतु के रूप में देखा जाता था। यह सेतु कभी भी योजना से बाहर नहीं निकला। नीतिगत हलकों में, व्यापार लचीलेपन का अर्थ अब एक उत्पाद श्रेणी से दूसरी श्रेणी में बदलाव है।

अर्थव्यवस्था

दूसरा, इलेक्ट्रॉनिक्स से लेकर सेमीकंडक्टर, कपड़ा से लेकर फार्मा तक। भूगोल इस समीकरण का हिस्सा नहीं है। यह धारणा तय है - व्यापार उन्हीं गलियारों से होकर गुजरता है जिनसे औपनिवेशिक बंदरगाहों और आज़ादी के बाद के औद्योगिक समूहों को सेवा मिलती थी।

पूर्वोत्तर उस दायरे से बाहर बना हुआ है, किसी अनदेखी के कारण नहीं, बल्कि जानबूझकर।

एशिया की चालें, भारत की निष्क्रियता जैसे-जैसे चीन बुनियादी ढाँचे में निवेश, मिलिशिया गठबंधनों और बढ़ती खुफिया गतिविधियों के ज़रिए उत्तरी म्यांमार पर अपनी पकड़ मज़बूत कर रहा है, भारत अपने ही संसाधनों का दुरुपयोग कर रहा है। मोरेह से शुरू होने वाला भारत-म्यांमार-थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग अब जंगल में लुप्त हो रहा है। वाणिज्य नहीं, बल्कि निगरानी भारत के सीमांत रुख को परिभाषित करती है। जहाँ माल नहीं जाता, वहाँ सीमा बल जाते हैं। और जब आवाजाही गश्त तक सीमित हो जाती है, तो सीमावर्ती इलाके स्थिर नहीं रहते; वे अव्यवस्था की ओर बढ़ते हैं।

ज़रूरत पुनर्निर्माण की नहीं, बल्कि बुनियादी सरकारी कामकाज की है। व्यापार सड़कों पर चलता है, बयानबाज़ी से नहीं।
यह श्वेत पत्रों के माध्यम से नहीं, बल्कि गोदामों के माध्यम से चलता है।
पूर्वोत्तर में ये धमनियां गायब हैं।
बुनियादी ढाँचा छिटपुट है, और नीतिगत उपस्थिति और भी कम है। नई दिल्ली लंदन के साथ मुक्त व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर कर सकती है और वाशिंगटन में संयुक्त बयान जारी कर सकती है, लेकिन उन समझौतों का सार शायद ही कभी सिलीगुड़ी कॉरिडोर से आगे बढ़ता है। पूर्वोत्तर डिज़ाइन और वितरण, दोनों ही मामलों में असंबद्ध बना हुआ है। भारत वैश्विक व्यापार पर प्रभावी ढंग से बातचीत करता है, जबकि उन भौगोलिक क्षेत्रों की अनदेखी करता है जो इसे आधार प्रदान कर सकते हैं।

श्री ट्रम्प के कदमों को क्षणिक परेशानी मानकर, भारत गहरी संरचनात्मक खामी को नज़रअंदाज़ कर रहा है—इसकी व्यापारिक अर्थव्यवस्था स्थानिक रूप से असंतुलित है। गुजरात में बाढ़ या तमिलनाडु में मज़दूरों की हड़ताल राष्ट्रीय पाइपलाइन को जाम करने के लिए काफ़ी है। यह फैलाव नहीं, बल्कि निर्भरता है। वैश्विक बिसात बदल गई है। आपूर्ति श्रृंखलाएँ गतिमान हैं। चीन पूँजी का पुनःस्थापन कर रहा है। दक्षिण-पूर्व एशिया वैकल्पिक गलियारे बना रहा है। भारत हिंद-प्रशांत समीकरण में अपनी भूमिका का दावा करता है, लेकिन उसका निर्यात ढाँचा अभी भी कुछ तटीय परिक्षेत्रों पर टिका हुआ है।

जब पूर्वी सीमांत क्षेत्र वाणिज्य मानचित्र से कटा हुआ रहता है तो रणनीतिक बातें खोखली लगती हैं।

कोई राज्य क्षेत्रीय ताकत का दावा नहीं कर सकता जब तक उसका पूर्वी किनारा आर्थिक रूप से कमज़ोर बना रहे। पूर्वोत्तर ने कभी नारों की माँग नहीं की। इसके लिए शासन-कौशल का न्यूनतम व्याकरण ज़रूरी है: बाज़ारों तक पहुँचने वाली सड़कें, भूगोल को समझने वाली नीतियाँ, और चुनावी गणित से परे देखने वाला शासन।

दशकों से, इस क्षेत्र को विद्रोहों, युद्धविरामों और खोखली नीतियों के बीच इंतज़ार करने के लिए कहा जाता रहा है। लेकिन दुनिया आगे बढ़ रही है। व्यापार में व्यवधान ज़्यादा बार आ रहे हैं। गलियारे बदल रहे हैं। और अब देरी एक योजना की तरह लग रही है।

कोई भी एक लक्ष्य भारत को नहीं तोड़ सकता, लेकिन बार-बार क्षेत्रीय चूक एक समेकित अर्थव्यवस्था की अवधारणा को नष्ट कर देती है। यह प्रतिशोध का आह्वान नहीं है। यह लचीलेपन को पुनर्परिभाषित करने की माँग है, शक्ति के संकेंद्रण के रूप में नहीं, बल्कि मानचित्र के हर हिस्से से आने वाले झटकों को सहने की क्षमता के रूप में। तब तक, यह अस्पष्ट बिंदु बरकरार रहेगा।

सऊदी-पाकिस्तान समझौते ने भारत की रणनीतिक सोच को उलट दिया

Kabir Taneja
उप निदेशक हैं और फेलो, रणनीतिक अध्ययन कार्यक्रम, पर्यवेक्षक अनुसंधान नींव

टी पाकिस्तान और सऊदी अरब द्वारा एक रणनीतिक पारस्परिक रक्षा समझौते पर हस्ताक्षर की घोषणा ने, जैसा कि अपेक्षित था, नई दिल्ली में बेचैनी पैदा कर दी है। बयान के मूल पाठ में, "किसी भी देश के विरुद्ध किसी भी आक्रमण को दोनों के विरुद्ध आक्रमण माना जाएगा" वाले अंश ने, विशेष रूप से भारत-सऊदी संबंधों की दिशा को लेकर, चिंताएँ और प्रश्न खड़े कर दिए हैं।

अप्रैल 2025 में जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद, जिसके परिणामस्वरूप दोनों देशों के बीच 1971 के बाद से सबसे बड़ा सैन्य आदान-प्रदान हुआ, भारत ने पाकिस्तान को अलग-थलग करने के लिए वैश्विक कूटनीतिक प्रयास शुरू कर दिए हैं। हालाँकि, पाकिस्तान को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अलग-थलग करने का लक्ष्य पूरा नहीं हो पाया है। सऊदी-पाकिस्तान समझौता तब से इस्लामाबाद की एक और उपलब्धि है।

मई में, जब पाकिस्तान के अंदर आतंकवादी शिविरों को सैन्य रूप से निशाना बनाने के लिए ऑपरेशन सिंदूर शुरू किया गया था, सऊदी अरब और ईरान के राजनयिक नई दिल्ली में थे, जबकि सीमा पार से मिसाइलें दागी जाने लगी थीं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इस दौरान एक आधिकारिक यात्रा पर रियाद में थे और आतंकवादी हमले के कारण उन्हें तुरंत भारत लौटना पड़ा था।

सऊदी अरब के विदेश राज्य मंत्री अदेल अल-जुबैर विदेश मंत्री एस. जयशंकर से मिलने के लिए जल्द ही पहुँच गए। लेकिन प्रधानमंत्री कार्यालय में अदेल अल-जुबैर की मुलाक़ात ने सभी का ध्यान खींचा, और जहाँ दोनों पक्ष चुप्पी साधे रहे, वहीं रियाद ने संभवतः बढ़ते तनाव को कम करने की कोशिश की।

दक्षिण एशिया से परे, भू-राजनीतिक बदलावों से जुड़ी ये घटनाएँ अक्टूबर 2023 में इज़राइल पर हमास द्वारा किए गए आतंकवादी हमले के बाद से पश्चिम एशिया में कई मोर्चों पर छिड़े भू-राजनीतिक उथल-पुथल की एक झलक भी हैं, जिसने व्यापक क्षेत्र में रणनीतिक गणनाओं को पुनर्निर्देशित करने पर मजबूर कर दिया है। सितंबर की बात करें तो रियाद-इस्लामाबाद समझौते को कम महत्व दिया जा रहा है, लेकिन इसकी व्यापक भू-राजनीतिक प्रतिध्वनियाँ हैं।

The Riyadh-इस्लामाबाद समझौते को कम महत्व दिया जा रहा है, लेकिन इसकी भू-राजनीतिक प्रतिक्रियाएँ व्यापक हैं।

भारतीय हित रियाद के लिए गौण हैं, लेकिन पाकिस्तान के लिए, यह समझौता एक तीर से दो निशाने साधेगा। यह सऊदी अरब के साथ उसकी खोई हुई चमक को फिर से जगाएगा और साथ ही नई दिल्ली की सुरक्षा चिंताओं को भी चुनौती देगा।

यह समझौता सऊदी अरब और इस्लामी दुनिया की एकमात्र परमाणु हथियार शक्ति पाकिस्तान के बीच तनावपूर्ण समय के लिए सामान्य स्थिति की वापसी भी है। 2015 में, तत्कालीन नवाज शरीफ सरकार ने यमन में ईरान समर्थित हूथी मिलिशिया के खिलाफ सऊदी अरब के अभियान में शामिल होने के लिए सेना भेजने से इनकार कर दिया था। दशकों से, सऊदी अरब ने पाकिस्तानी सेना को, युद्ध में अपने व्यापक वास्तविक दुनिया के अनुभव के साथ—जिसमें से अधिकांश भारत के खिलाफ आया है—अपनी घरेलू और क्षेत्रीय सुरक्षा को मजबूत करने के लिए सबसे अच्छी ताकत के रूप में देखा है। इसके अलावा, पश्चिम एशिया में संयुक्त राज्य अमेरिका को एक अविश्वसनीय सैन्य साझेदार के रूप में तेजी से देखा जा रहा है, रियाद अपने पारंपरिक क्षेत्र में वापस खरीदारी कर रहा है। इस्लामाबाद के लिए, परमाणु हथियार एक बार फिर लाभदायक साबित हो रहे हैं, हालांकि यह योजना से ज्यादा संयोग की बात है। बहरहाल, इसकी प्रभावशीलता वाशिंगटन से लेकर रियाद तक प्रदर्शित हुई है।

पश्चिमी मीडिया की रिपोर्टों से पता चलता है कि इस सौदे पर लगभग तीन साल से काम चल रहा था। भारत के विदेश मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि उसे इस बात की जानकारी थी कि दोनों देशों के बीच इस तरह के समझौते पर विचार किया जा रहा है। लंबे समय से, दुनिया का एकमात्र परमाणु संपन्न इस्लामी देश, पाकिस्तान, रियाद की संभावित परमाणु ज़रूरतों के लिए एक सुपरमार्केट के रूप में प्रचारित किया जाता रहा है। इज़राइल और ईरान के बीच "12-दिवसीय युद्ध" और दोनों द्वारा बारी-बारी से कतर पर हथियार दागने से यह दांव और भी बढ़ गया है।

बुनियादी बातें ठोस हैं , हालाँकि, सतही तौर पर सऊदी-पाकिस्तान समझौता अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में हो रहे कई बदलावों का प्रतिनिधित्व करता है। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि भारत की एक गलत समझ है।

पश्चिम एशिया में अपनी पहुँच बढ़ाने के लिए इस्लामाबाद और अरब देशों के बीच एक संस्थागत दरार डाली जा सकती है। ये द्विपक्षीय संबंध इस्लाम, विचारधारा और धार्मिक सिद्धांतों पर आधारित हैं। सऊदी और पाकिस्तान के मामले में, यह सुन्नीवाद के इर्द-गिर्द एक और मज़बूती है। इस रिश्ते की बुनियाद अटूट है। दूसरा, रियाद अब रणनीतिक स्वायत्तता, बहुध्रुवीयता और बहुसंरेखण की तलाश में है, ये सभी घोषित विदेश नीति के लक्ष्य और सिद्धांत हैं जिन्हें भारत एक प्रमुख शक्ति बनने के लिए अपने मूल सिद्धांतों के रूप में लागू करना चाहता है। यह खाका कई अन्य देशों के लिए आकांक्षापूर्ण है, और अक्सर, प्रमुख साझेदार देशों को भारतीय रणनीतिक हितों के विपरीत छोर पर खड़ा कर देगा।

भारत के लिए संदेश: 1980 के दशक के शुरुआती वर्षों में पाकिस्तानी मीडिया द्वारा गढ़े गए शब्द 'इस्लामिक बम' की केंद्रीयता के लिए सऊदी-पाकिस्तान औपचारिकता द्वारा उठाई गई चुनौती भले ही बहुत बड़ी न हो, लेकिन यह इस बात का एक ट्रेलर है कि भू-राजनीतिक बिसात कैसे बिछाई जा रही है। यह भारत के लिए भी एक मुख्य चुनौती का प्रतिनिधित्व करता है, कि सांस्कृतिक रूप से जोखिम से बचने वाला उसका रणनीतिक विचार और जिस धीमी गति से यह बदल रहा है, वह मौजूदा वास्तविकताओं से तेजी से अलग होता जा रहा है। भारतीय नेतृत्व को उन जोखिमों को समझने की जरूरत है जो सत्ता को अपनाने और जुटाने, दोनों के साथ आते हैं। अन्यथा, अगर तटस्थ रहना चुना हुआ रास्ता बना रहा और रणनीतिक विकल्पों पर 'मुख्य शांतिवादी' की भूमिका निभाने के आदर्शवादी दृष्टिकोण को अपनाया गया, तो भारत अपनी पकड़ खोने का जोखिम उठा सकता है।

दुनिया का नया स्वरूप तैयार हो रहा है और यह इंतजार नहीं करेगी भारत का मानना है कि यह “उसका समय” होने जा रहा है। सऊदी-पाकिस्तान समझौता इस्लामाबाद — और ख़ास तौर पर पाकिस्तानी सेना — के लिए वैश्विक और पश्चिमी व्यवस्था में व्यवधानों और दरारों का अपने फ़ायदे के लिए इस्तेमाल करना है। दुनिया की कार्यप्रणाली को नया आकार देने का एक और मौक़ा शायद इस सदी में दोबारा न आए।

अब समय आ गया है कि भारतीय गणना सही हो और उसे दृढ़ संकल्प के साथ कार्य करना होगा।

द टटर्सटूदएडिटर

लद्दाख हिंसा: मणिपुर और लद्दाख में हुई हिंसा में एक समानता यह है कि सरकार ने तुरंत प्रतिक्रिया नहीं दी। अगर केंद्र ने मुद्दे उठते ही बातचीत शुरू कर दी होती, तो हिंसा को शुरू में ही रोका जा सकता था। एक ईमानदार राजनीतिक संकेत और सरकार की मौजूदगी महत्वपूर्ण राजनीतिक नेता अशांति को शांत करने में मदद कर सकते थे। ऐसा लगता है कि प्रभावित लोगों की कहानियाँ सुनने का कोई तंत्र ही नहीं है। सरकार तभी जागती है जब समस्याएँ नियंत्रण से बाहर हो जाती हैं।

ए.वी. नारायणन, चेन्नई

भारतीय शेयर बाजारों में 25 सितंबर को लगातार पांचवें सत्र में गिरावट जारी रही, जिसमें सेंसेक्स 556 अंक गिरकर 81,159 पर और निफ्टी 24,900 से नीचे आ गया । लगातार विदेशी निकासी और अमेरिकी वीज़ा प्रतिबंधों का भारी असर पड़ा है। वित्तीय और आईटी काउंटर, जबकि ट्रेंट जैसे स्टॉक और पावर ग्रिड ने गिरावट को और गहरा कर दिया। सिर्फ़ धातुएँ ही वैश्विक स्तर पर तांबे की कीमतों में बढ़ोतरी से राहत मिली।
इस तरह की दीर्घकालिक कमजोरी निवेशकों का विश्वास बहाल करने के लिए नीतिगत समर्थन की आवश्यकता को रेखांकित करती है।

विवेक एम. जैन, चेन्नई

सुधार और स्पष्टीकरण रिपोर्ट का शीर्षक और पाठ,
"फोनपे ने गोपनीय आईपीओ के लिए आवेदन किया"
('बिजनेस' पेज, 25 सितंबर, 2025) में लिखा होना चाहिए था: फोनपे ने आईपीओ के लिए गोपनीय कागजात दाखिल किए हैं।
तेलंगाना का एक मानचित्र, जो “एक बार फिर, अलमट्टी पर गुस्सा” (राय पृष्ठ - 'स्टेट ऑफ प्ले', 24 सितंबर, 2025) नामक रिपोर्ट के साथ था, उसमें आंध्र प्रदेश का एक हिस्सा भी दिखाया गया था।

ईमेल:readerseditor@thehindu.co.in

letters@thehindu.co.in पर भेजे गए पत्रों में डाक पता अवश्य होना चाहिए।

राष्ट्रीय
सहारा
नई दिल्ली • शुक्रवार • 26 सितम्बर • 2025
www.rashtriyasahara.com

अनमोल वचन

दोस्त और शिष्टाचार आपको वहां ले जाएंगे जहां धन नहीं ले जा पाएगा।
-मार्गरेट वॉकर

सुलग उठा लद्दाख

केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख को पूर्ण राज्य का दर्जा देने की मांग को लेकर आंदोलनकारियों व पुलिस की झड़पों में चार लागों की मौत हो गई। हिंसा के बाद जलवायु कार्यकर्ता सोनम वांगचुक द्वारा लद्दाख को पूर्ण राज्य का दर्जा देने और छठी अनुसूची के विस्तार को लेकर पंद्रह दिनों से चली आ रही भूख हड़ताल भी खत्म कर दी। सरकार पूर्ण राज्य के दर्जे व छठी अनुसूची में शामिल करने को लेकर कुछ लोगों को दोषी ठहरा रही है, और कह रही है, वे बाधा उत्पन्न कर रहे हैं। केंद्र ने स्पष्ट किया कि इन विषयों पर बैठक अक्टूबर की बजाय इसी माह के अंत में की जा सकती है। आंदोलनकारी संगठनों से बातचीत भी की गई है। वांगचुक की निजी महत्त्वाकांक्षाओं के कारण

लद्दाख व उसके युवाओं को भारी कीमत चुकाने की चर्चा भी गृह मंत्रालय कर रहा है। इस हिंसा को साजिश का नतीजा बताया जा रहा है, और माहौल खराब करने वालों पर कड़ी कार्रवाई की जा सकती है। लद्दाख जैसी शांत जगह में इससे पहले 1989 में बड़ी हिंसा हुई थी। वांगचुक पर आरोप है कि उन्होंने अरब स्प्रिंग और नेपाल के जेन-जी प्रदर्शनों का हवाल दिया जिससे जनता गुमराह हो सकती है। हालांकि उन्होंने युवाओं से अपील की कि हिंसा बंद करें क्योंकि इससे स्थिति खराब होगी। वांगचुक ने पांच बार भूख हड़ताल का हवाला देते हुए शांति के संदेश को असफल होते देख दुख व्यक्त किया। संविधान की छठी अनुसूची पूर्वोत्तर के राज्यों त्रिपुरा, मेघालय, मिजोरम व असम की जनजातीय आबादी के लिए बनाई गई है। इसके तहत विशेषाधिकार प्राप्त होते हैं। लद्दाख के युवाओं में आरक्षण के प्रति भी आक्रोश है। अनुसूचित जनजातियों के लिए 45% से आरक्षण बढ़ा कर 84% किया गया है व महिलाओं को तिहाई आरक्षण दिया गया है। आंदोलनकारी लेह व करगिल के लिए अलग-अलग लोक सभा सीटों की भी मांग कर रहे हैं। बेशक, सरकार के किसी भी निर्णय में स्थानीय जनता की मांगों व जरूरतों को तवज्जो दी जानी चाहिए। एकतरफा फैसले जनता को उकसाने वाले साबित हो सकते हैं। शांतिपूर्ण प्रदर्शनों का अधिकार देश के हर नागरिक को है पर भीड़ के उग्र होने, आगजनी, तोड़फोड़ व उन्माद फैलाने पर अंकुश रखना सरकार के लिए जरूरी है। इस इलाके के चीन के सीमा से लगे होने के चलते कोई भी बड़ा निर्णय लेने से पूर्व चौतरफा विचार-विमर्श की जरूरत को नजरंदाज नहीं किया जा सकता।

सूखती गंगा ने बढ़ाई चिंता

चिंतित कर देने वाली बात है कि जीवन और मोक्षदायिनी गंगा की धारा तेजी से सिकुड़ती-सिमटती जा रही है। इसके जल प्रवाह के 1300 वर्ष के रुझानों के विश्लेषण पर आधारित एक अध्ययन में कहा गया है कि पिछले कुछ दशकों में नदी में जलधारा सूखने की जो प्रवृत्ति देखी गई है, वह इस नदी घाटी में जीवन बसर कर रहे लाखों लोगों पर अभूतपूर्व भीषण प्रभाव डाल सकती है। अध्ययन के निष्कर्ष राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी की पत्रिका 'प्रोसीडिंग्स' में प्रकाशित हुए हैं। इनमें कहा गया है कि जलधारा सूखने की जैसी प्रवृत्ति 1991-2020 तक देखने को मिली वैसी पिछली सहस्राब्दी से पहले देखने को नहीं मिली। अध्ययन आईआईटी, गांधीनगर और अमेरिका के

एरिजोना विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने किया है। इसलिए हल्के में नहीं लिया जा सकता। शोधकर्ताओं ने गंगा के सूखने का संबंध जून-सितम्बर के दौरान कम वर्षा से जोड़ा है। इस अवधि में दक्षिण पश्चिमी मानसून सक्रिय रहता है। शोध दल ने 1991-2020 के दौरान एकत्रित आंकड़ों के आधार पर 1,300 वर्षों (700-1990 ई.) के जल प्रवाह का मॉडल तैयार किया। इसके आधार पर निष्कर्ष निकाला गया कि गंगा नदी के प्रवाह में गंभीर कमी की प्रवृत्ति देखी जा रही है, जिससे जल और खाद्य सुरक्षा को खतरा पैदा हो रहा है। 1990 के दशक से गंगा नदी के जल प्रवाह के सूखने की प्रवृत्ति की तुलना 16वीं शताब्दी में इसी तरह जलधारा सूखने से की जा सकती है किंतु मौजूदा प्रवृत्ति पिछली प्रवृत्ति की तुलना में 76 प्रतिशत अधिक विकट है। भले ही इस वर्ष वर्षा का जो खतरनाक रूप पूरे देश में देखने को मिला है, उससे नदियों में जल की उपलब्धता को लेकर भ्रमित होने की जरूरत नहीं है। बादल फटने, भारी बारिश, बाढ़ और भूस्खलन की घटनाएं जलवायु परिवर्तन के कारण हो रही हैं। हिन्द महासागर में तेजी से बढ़ रही गर्मी तथा उपमहाद्वीप में कम होती गर्मी के कारण उत्तर भारत में मानसून कमजोर होता जा रहा है। कहीं अत्यधिक और कहीं कम वर्षा के कारण भूजल का स्तर नहीं बढ़ पा रहा है। सिंचाई के स्रोतों के तेजी से कम होते जाने के कारण गंगा के सूखने से हालात और विकट हो सकते हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण हिमनद तेजी से पिघल रहे हैं जिससे गंगा में जल प्रवाह में वृद्धि का आभास हो सकता है, लेकिन यह राहत की बजाय और बड़े संकट का ही संकेत है।

बुजुर्ग/जयदेव राठी भराण

रुखसती की टीस

हमारा समाज तेजी से बदल रहा है। नई सोच और आधुनिक तकनीकी क्रांति ने हमें बहुत कुछ दिया है। इसी दिशा ने हमें आधुनिकता की चकाचौंध में डुबो दिया है। आज के तेज-रफ्तार दौर में कृत्रिम बुद्धिमत्ता और तकनीक-पर आधारित डिजिटल साथी जैसे ग्रोक, जेमिनी चैट जीपीटी आदि हमारे जीवन का हिस्सा बन रहे हैं, हमारे बुजुर्ग जीवित पुस्तकालयों की तरह हैं, जिनमें सिर्फ हमारी सामाजिक प्रतिष्ठा ही नहीं, बल्कि दुनिया और हमारे आसपास की जानकारी भी समाहित है। यही बुजुर्ग धीरे-धीरे हमसे रुखसत होते जा रहे हैं।

बुजुर्ग जीवन सिर्फ एक मील का पत्थर नहीं, बल्कि विशाल ज्ञानकोश भी है। उनके पास जीवन की चुनौतियों का सामना करने का एक तरीका होता है। उनमें रिश्ते बनाने की बुद्धि और पीढ़ी-दर-पीढ़ी परंपराओं को संजोए रखने की क्षमता होती है। जब वे चले जाते हैं, तो सिर्फ एक व्यक्ति नहीं, बल्कि अनुभवों और भावनाओं का एक पूरा संसार चला जाता है। बुजुर्गों की आत्मनिर्भरता उनकी सबसे बड़ी ताकत होती है। वे अपने जीवन की लड़ाई चुपचाप, बिना शिकायत, बिना शोर-शराबे के लड़ते हैं। चाहे आर्थिक तंगी हो या भावनात्मक खालीपन, वे अपना स्वाभिमान कभी नहीं छोड़ते। यह आत्मनिर्भरता हमें हर परिस्थिति में सम्मान के साथ जीना सिखाती है। लेकिन आज के समय में यह सोचने और समझने लायक है। क्या हम इस आत्मनिर्भरता का सम्मान कर पा रहे हैं? हमारे बुजुर्गों ने हमेशा स्वाभिमान के साथ जीने का संदेश दिया है। चाहे खेती-बाड़ी हो, रोजमर्रा की भागदौड़ हो या पारिवारिक जिम्मेदारियां-उन्होंने अपने वजूद को कभी बोझ नहीं बनने दिया। लेकिन आज के बदलते समाज में उनका आत्म-सम्मान उपेक्षा और अकेलेपन के धुंध में लिपटा जा रहा है। नई पीढ़ी के पास समय नहीं है। इस आधुनिक और डिजिटल दुनिया का नतीजा यह है कि बुजुर्गों की आत्मनिर्भरता धीरे-धीरे खत्म होती जा रही है। इसने संवाद का स्वरूप ही बदल दिया है। हमारे बुजुर्गों की भावनाएं गहरे सागर की तरह हैं, जो ऊपर से तो शांत दिखाई देती हैं, लेकिन उनके भीतर अनगिनत अनकही कहानियां और दर्द छिपे हैं। वे वो पेड़ हैं जिनकी छांव में हमने जिंदगी के पहले कदम रखे हैं। उनके अनुभव और सलाह जरूरी हैं। लेकिन आज इस आधुनिक, डिजिटल दुनिया में, वे कहीं खो से गए हैं। उनके शब्द, हंसी और मौजूदगी धीरे-धीरे लुप्त होती जा रही है। आज समाज में बुजुर्ग अकेलेपन से जूझ रहे हैं।

महिला स्वावलंबन का दमखम

बिहार

प्रेम प्रकाश

महात्मा गांधी के चंपारण सत्याग्रह के 2017 में जब सौ वर्ष पूरे हुए तो अहिंसा के इस ऐतिहासिक प्रयोग को लेकर कई सारे किताबें आईं। लेखकों और शोधार्थियों ने तब के गांधी के अनुभवों और उस दौरान के घटनाक्रम के आधार पर कई नए तथ्यों को उजागर किया। इनमें सबसे अहम है गांधी और कस्तूरबा का यह साझा अनुभव कि बिहार की महिलाएं जागरूक हैं, और उनमें अपने बूते खड़ा होने का माद्दा है। अगर उनके आगे कोई बाधा है तो समाज और व्यवस्था का लैंगिक वह पूर्वाग्रह, जिसकी जड़ें खासी गहरी हैं।

आज की तारीख में इस बात को देखना-समझना तब बेहद अहम और दिलचस्प हो जाता है जब हम देखते हैं कि बिहार ने बीते दो दशक में देश को महिला सशक्तीकरण का एक टिकाऊ मॉडल दिया है। यह ऐसा मॉडल है जो सामुदायिकता के बूते बड़े सामाजिक बदलाव को संभव बना रहा है। बिहार की चर्चा इन दिनों होने जा रहे विधानसभा चुनाव को लेकर जरूर हो रही है पर इससे जुड़ी तमाम सियासी गहमागहमी के बीच यह बात खास तौर पर समझने की है कि आज राजनीति से लेकर समाज और आर्थिकी तक हर क्षेत्र में जेंडर इक्वलिटी या लैंगिक समानता की बात लाजिमी तौर पर होती है। वैसे भी बिहार विधानसभा चुनाव से पहले मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र विधानसभा के चुनावी नतीजों ने दिखा दिया है कि अब चुनावों का संतुलन महिलाएं साध रही हैं। यह देश में सामाजिक के साथ राजनीतिक बदलाव का बड़ा संकेत है।

बिहार में सामाजिक-आर्थिक बदलाव की नई लहर उस समय शुरू हुई जब नीतीश कुमार ने राज्य की बागडोर संभाली। वे अपनी इस समझ और विवेक में बहुत साफ रहे कि अगर समाज को सशक्त बनाना है, तो महिलाओं को सिर्फ लाभार्थी नहीं, बल्कि विकास की भागीदार बनाना होगा। इसी सोच के साथ नीतीश सरकार ने महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में अनेक योजनाएं चलाईं, जिनका उद्देश्य है महिला स्वरोजगार। चुनाव से पूर्व होने वाली अव्यावहारिक और हवाई घोषणाओं से अलग बिहार सरकार ने कैबिनेट स्तर पर इस दौरान कई अहम फैसले लिए हैं। इस क्रम में जो बड़ा फैसला राज्य सरकार ने किया है, वह है मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना। गौरतलब है कि इस निर्णय से पहले 70 हजार महिला समूहों के साथ सरकार ने महिला संवाद किया। साफ है कि सरकार ने इस योजना को प्रदेश की महिलाओं की स्थिति और जरूरत को समझते हुए न सिर्फ फ्रेम किया, बल्कि इसके शीघ्र क्रियान्वयन को लेकर भी लगातार गंभीर रही। आज जब प्रदेश की 75 लाख महिलाओं के

खाते में दस-दस हजार रुपये की राशि पहुंच रही है तो यह महिला स्वावलंबन को लेकर सरकार की दृष्टि और संकल्प शक्ति, दोनों जाहिर करती है। छह महीने बाद मूल्यांकन के बाद इन महिलाओं को दो लाख रुपये की अतिरिक्त सहायता दी जाएगी।

बात महिला सशक्तीकरण की हो रही है तो जान लेना जरूरी है नीतीश सरकार की सबसे सफल योजनाओं में जीविका विशेष स्थान रखती है। 2006 में शुरू इस योजना ने ग्रामीण महिलाओं को न केवल स्वरोजगार का अवसर दिया, बल्कि उन्हें नेतृत्व का अभ्यास भी कराया। आज राज्य में एक करोड़ 40 लाख से अधिक महिलाएं 11 लाख स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से जीविका दीदी के रूप में पहचान बना चुकी हैं। ये महिलाएं सिलाई, बुनाई, कृषि, पशुपालन, किराना दुकान, मसाला निर्माण, मधुमक्खी पालन, बकरी पालन जैसे छोटे-छोटे उद्योगों के जरिए न केवल अपनी आमदनी बढ़ा रही हैं, बल्कि दूसरों को भी रोजगार दे रही हैं। मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना जीविका के इसी मॉडल का विस्तृत और परिपक्व रूप है।

ऐसा इसलिए क्योंकि जीविका स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) से जुड़ी महिलाओं को ही इस योजना का लाभ मिल रहा है। इन महिलाओं को सरकार की आर्थिक मदद स्वरोजगार शुरू करने, छोटे-मोटे बिजनेस शुरू करने या वर्तमान व्यवसायों को बढ़ाने में सहायता के उद्देश्य से दी जा रही है। इससे बड़ी किसी योजना की सफलता और उपयोगिता क्या होगी कि इससे 1.40 लाख से अधिक महिलाओं ने समूह से जुड़ने के लिए आवेदन किया। गौरतलब है कि जीविका योजना 2006 में विश्व बैंक की मदद से शुरू किया गया था।

आज यह देश में महिला स्वरोजगार का सबसे बड़ा समूह है। 2023 की बिहार जाति जनगणना के अनुसार, बिहार की कुल आबादी 13 करोड़ 7 लाख 70 हजार के आसपास आंकी गई जिसमें महिला आबादी लगभग 6 करोड़ 40 लाख थी। बात करें 2011 की जनगणना के आंकड़ों की तो बिहार की महिला आबादी 4.96 करोड़ थी, जो राज्य की कुल जनसंख्या का लगभग 47.8 फीसद हिस्सा थी। जीविका मॉडल का विस्तार और अब इस फ्रेमवर्क के जरिए शुरू महिला रोजगार योजना इस बात को गहराई से रेखांकित कर रही है कि विकास और समृद्धि से जुड़ी कोई भी पहल सर्वसमावेशी और सर्वस्पर्शी मानकों पर तभी खरी उतरेगी जब लैंगिक आधार पर हर तरह के पूर्वाग्रह से दूर हो। इस योजना की खास बात है कि यह एक यूनिवर्सल योजना है यानी राज्य के सभी वर्ग और समुदाय की महिलाओं को इस योजना का लाभ मिलने जा रहा है।

चूंकि यह कम्यूनिटी ड्रिवेन योजना है, लिहाजा इसकी निगरानी बेहतर तरीके से हो पाएगी और पारदर्शिता व जवाबदेही जैसे मानकों पर भी यह खरी उतरेगी। बिहार ने अपनी पहचान सामाजिक-राजनीतिक बदलाव की जिस बुनियाद पर कायम की है, उसका सबसे चमकदार पक्ष प्रदेश की आधी आबादी का बढ़ा दमखम है। बिहार के लिए गर्व की बात है कि देश में पंचायतीराज व्यवस्था और नगर निकायों में महिलाओं को 50 फीसद आरक्षण सबसे पहले देने वाले इस सूबे के पास आज महिला स्वावलंबन का अपना मॉडल है। पटना से लेकर प्रदेश के तमाम शहरों और छोटे-बड़े कस्बों में बिहार सरकार अपनी इस उपलब्धि को होर्डिंग-पोस्टर के जरिए चुनाव से ऐन पहले प्रचारित भी कर रही है। राजनीतिक बयान और घटिया नुक्ताचीनी की बजाय इस तरह के रचनात्मक तथ्यों के आधार पर चुनावी समर में उतरने का राजनीतिक विवेक सराहनीय तो है ही, लोकतांत्रिक गरिमा के अनुरूप भी है।

(लेख में विचार निजी हैं)

> चंपारण सत्याग्रह के 2017 में जब सौ वर्ष पूरे हुए तो अहिंसा के इस ऐतिहासिक प्रयोग को लेकर कई सारे किताबें आईं। लेखकों और शोधार्थियों ने गांधी जी के अनुभवों और तत्कालीन घटनाक्रम के आधार पर कई तथ्य उजागर किए। इनमें सबसे अहम है गांधी और कस्तूरबा का साझा अनुभव कि बिहार की महिलाएं जागरूक हैं, और उनमें अपने बूते खड़ा होने का माद्दा है। उनके आगे बाधा है तो समाज और व्यवस्था का लैंगिक पूर्वाग्रह जिसकी जड़ें खासी गहरी हैं

खून बढ़ाने से लेकर दिल की सुरक्षा तक चुकंदर के हैं अनेक लाभ

- 'चुकंदर' ऐसी सब्जी है, जो शरीर में हीमोग्लोबिन बढ़ाने, ब्लड प्रेशर कंट्रोल करने और ताजगी बनाए रखने में मदद करती है। अमेरिकन नेशनल लाइब्रेरी ऑफ मेडिसिन के मुताबिक, चुकंदर में बेटानिन, नाइट्रेट, पॉलीफेनोल्स, फाइबर, विटामिन सी और ई समेत कई खास तत्व मौजूद होते हैं
- आयुर्वेद के अनुसार, चुकंदर के जूस, सलाद या सूप के सेवन से अधिकतम लाभ मिलते हैं। इसका नियमित सेवन त्वचा की रंगत निखारता है, और कील-मुंहासों जैसी समस्याओं से राहत दिला सकता है

(मीडिया इनपुट्स)

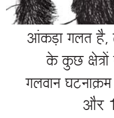

लद्दाख में 65 पेट्रोलिंग प्वॉइंट्स में से कम से कम 30 ऐसे हैं जहां भारतीय सेना की पहुंच नहीं है। रक्षा सूत्र कहते हैं कि यह आंकड़ा गलत है, लेकिन '2020 के बाद दोनों तरफ के कुछ क्षेत्रों में पेट्रोलिंग प्रभावित अवश्य हुई है।' गलवान घटनाक्रम से पहले तक इन पेट्रोलिंग प्वॉइंट्स और 19 अन्य क्षेत्रों में पेट्रोलिंग होती थी।

विजयेता सिंह, पत्रकार
@vijaita

अवसरों और चुनौतियों का युग

एआई | **रजनीश कपूर**

आज का युग तकनीकी नवाचारों का युग है, और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) इस परिवर्तन का केंद्र बिंदु बन चुकी है। स्वास्थ्य सेवा से लेकर वित्त, शिक्षा, परिवहन और मनोरंजन तक एआई ने हर क्षेत्र में अपनी छाप छोड़ी है। लेकिन इस तकनीकी क्रांति के साथ एक गंभीर चुनौती भी उभर कर सामने आई है, रोजगार का नुकसान। जैसे-जैसे मशीनें और एल्गोरिदम मानव द्वारा किए जाने वाले कार्यों को अपने कब्जे में ले रहे हैं, लाखों कर्मचारी खुद को बेरोजगार और नई आर्थिक परिस्थितियों में अनुकूलन के लिए संघर्ष करते हुए पा रहे हैं। फिर भी, यह चुनौती एक अनूठा अवसर भी प्रदान करती है।

एआई ने उद्योगों को पहले की तुलना में कहीं अधिक तेजी और सटीकता के साथ कार्य करने में सक्षम बनाया है। स्वास्थ्य सेवा में एआई-संचालित उपकरण रोगों का शीघ्र निदान कर रहे हैं, और व्यक्तिगत उपचार योजनाएं बना रहे हैं। विनिर्माण क्षेत्र में स्वचालित मशीनें और रोबोट उत्पादन प्रक्रियाओं को तेज और लागत प्रभावी बना रहे हैं। वित्तीय क्षेत्र में एआई धोखाधड़ी का पता लगाने और निवेश रणनीतियों को अनुकूलित करने में मदद कर रहा है। यहां तक कि रचनात्मक क्षेत्रों जैसे लेखन, कला और संगीत में भी एआई नये रास्ते खोल रहा है। ये प्रगतियां न केवल उत्पादकता बढ़ा रही हैं, बल्कि उपभोक्ताओं को बेहतर सेवाएं और अनुभव भी प्रदान कर रही हैं।

हालांकि, इन फायदों के साथ एक कड़वी सच्चाई भी जुड़ी है। एआई और स्वचालन ने कई पारंपरिक नौकरियों को अप्रचलित कर दिया है। डेटा प्रविष्टि, विनिर्माण, ग्राहक सेवा और यहां तक कि कुछ विश्लेषणात्मक कार्य अब मशीनों द्वारा किए जा रहे हैं। अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन (आईएलओ) के अनुसार, अगले कुछ दशकों में विश्व स्तर पर लाखों नौकरियां स्वचालन के कारण खत्म हो सकती हैं। भारत जैसे देश, जहां बड़ी आबादी कार्यबल में शामिल है, में यह चुनौती और भी गंभीर है। निम्न-कौशल और मध्यम-कौशल वाली नौकरियां सबसे अधिक जोखिम में हैं। ड्राइवर, फैक्ट्री वर्कर और कॉल सेंटर कर्मचारी जैसे पेशे तेजी से मशीनों द्वारा प्रतिस्थापित किए जा रहे हैं।

एआई के कारण होने वाला रोजगार नुकसान आर्थिक ही नहीं, बल्कि सामाजिक-मनोवैज्ञानिक चुनौती भी है।

बेरोजगारी न केवल व्यक्तियों की आय को प्रभावित करती है, बल्कि उनके आत्मसम्मान और सामाजिक स्थिति को भी ठेस पहुंचाती है। भारत जैसे विकासशील देश, जहां पहले से ही बेरोजगारी और अंडरएंप्लॉयमेंट की समस्या है, में एआई-प्रेरित नौकरी हानि को और जटिल बना सकती है। इसके अलावा, नई तकनीकों को अपनाने की गति और कौशल की कमी के बीच का अंतर बढ़ता जा रहा है। कई श्रमिकों के पास नई तकनीक सीखने के लिए आवश्यक संसाधन या अवसर नहीं हैं। परिणामस्वरूप वे आर्थिक मुख्यधारा से बाहर हो रहे हैं। इस संकट का सामना करने के लिए पुनः कौशल विकास और कौशल उन्नयन सबसे प्रभावी समाधान के रूप में उभर कर सामने आए हैं। पुनः कौशल विकास का अर्थ है श्रमिकों को पूरी तरह से नये कौशल सिखाना जो उन्हें बदलते नौकरी बाजार में प्रासंगिक बनाए रखे। कौशल उन्नयन मौजूदा कौशलों को और उन्नत करने पर केंद्रित है ताकि श्रमिक अपनी वर्तमान भूमिकाओं में अधिक प्रभावी हो सकें। एक फैक्ट्री कर्मचारी को रोबोटिक्स या डेटा विश्लेषण में प्रशिक्षित किया जा सकता है, जबकि एक ग्राहक सेवा प्रतिनिधि को एआई-संचालित चैटबॉट्स के प्रबंधन में प्रशिक्षण दिया जा सकता है। इसके लिए सरकार को नीतियां बनानी होंगी जो प्रशिक्षण कार्यक्रमों को सुलभ और सस्ता बनाएं।

भारत में, 'स्किल इंडिया' जैसे कार्यक्रम पहले से ही इस दिशा में काम कर रहे हैं, लेकिन इनकी पहुंच और प्रभाव को और बढ़ाने की आवश्यकता है। विशेष रूप से, ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किए जाने चाहिए जहां अधिकांश निम्न-कौशल श्रमिक रहते हैं। शैक्षणिक संस्थानों को भी अपनी भूमिका निभानी होगी। स्कूलों और कॉलेजों को अपने पाठ्यक्रमों को अद्यतन करना होगा ताकि वे डेटा साइंस, मशीन लर्निंग, साइबर सुरक्षा और अन्य उभरते क्षेत्रों पर ध्यान दें।

रोजगार का नुकसान ऐसी चुनौती है जिसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। हालांकि, पुनः कौशल विकास और कौशल उन्नयन के माध्यम से हम संकट को अवसर में बदल सकते हैं। भारत, जिसके पास दुनिया का सबसे अधिक युवा कार्यबल है, इस बदलाव का नेतृत्व कर सकता है बशर्ते सरकार, शैक्षणिक संस्थान और निजी क्षेत्र इसके लिए संयुक्त प्रयास करें। भारत ऐसी कार्यबल तैयार कर सकता है, जो न केवल एआई-प्रधान दुनिया में प्रासंगिक रहे, बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था में भी अग्रणी भूमिका निभाए। समय की मांग है कि हम चुनौती को स्वीकार करें और समावेशी, कौशल-प्रधान भविष्य की दिशा में कदम बढ़ाएं।

(लेख में विचार निजी हैं)

भविष्य | **श्री राम शर्मा आचार्य**

अब बात भविष्य की आती है, जिसमें प्रचलित दुष्प्रवृत्तियों का उन्मूलन, अभावों का निराकरण, सदाशयता का अभिवर्धन प्रमुख हैं। यह कार्य विज्ञान तो कदाचित कितने ही प्रयत्न कर लेने पर भी समय की मांग को पूरा न कर सकेगा। पर यह विश्वास किया जा सकता है कि चिंतन, चरित्र और व्यवहार में उत्कृष्टता का असाधारण मात्रा में अभिवर्धन होगा तो वे सभी समस्याएं अनायास ही सुलझती चलेंगी जिन्हें इन दिनों सर्वनाशी और खंड प्रलय जैसी विभीषिकाएं माना जा रहा है। चेतना में ऐसी शक्ति उभरने पर मनुष्य की भावना और क्रिया-प्रक्रिया में ऐसा आश्चर्यजनक परिवर्तन होगा कि दुरुपयोग में लगी क्षमताएं सदुपयोग की ओर मुड़ चलेंगी और ऐसे सत्परिणाम उत्पन्न करेंगी जिन्हें सतयुग की वापसी का नाम दिया जा सके। विज्ञान आगे भी अनर्थ पैदा करता रह सकेगा; ऐसी आशंकाएं किसी को भी नहीं करनी चाहिए; क्योंकि खनिज तेल, विद्युत उत्पादन जैसे स्रोत ही सूख जाएंगे, तब विज्ञान जीवित कैसे रह सकेगा? लोगों को लौट कर फिर प्राकृतिक जीवन अपनाना पड़ेगा, जिसमें विकृतियों के अभिवर्धन की कोई गुंजाइश ही नहीं है। विज्ञान जीवित रहेगा; पर उसका नाम भौतिक विज्ञान न होकर अध्यात्म विज्ञान ही हो जाएगा। उस आधार को अपनाते ही वे सभी समस्याएं सुलझ जाएंगी, जो इन दिनों अत्यंत भयावह दिख पड़ती हैं। उन आवश्यकताओं को प्रकृति ही पूरा करने लगेगी, जिनके अभाव में मनुष्य अतिशय उद्विग्न, आशंकित, आतंकित दिख पड़ता है। न अगली शताब्दी में युद्ध होंगे, न महामारियां फैलेंगी और न जनसंख्या की अभिवृद्धि से वस्तुओं में कमी पड़ने के कारण चिंतित होने की आवश्यकता पड़ेगी। जागृत नारी अनावश्यक संतानोत्पादन से स्वयं इंकार कर देगी और अपनी बर्बाद होने वाली शक्ति को उन प्रयोजनों के लिए नियोजित करेगी जो समृद्धि और सद्भावना के अभिवर्द्धन के लिए आवश्यक हैं। नारी प्रधान इक्कीसवीं शताब्दी का वातावरण ऐसा होगा जिसे सरस्वती, लक्ष्मी और दुर्गा की संयुक्त शक्ति द्वारा अपनाया गया क्रिया-कलाप कहा जा सके। इक्कीसवीं सदी का उज्ज्वल भविष्य इन्हीं आधारों को साथ लेकर अवतरित होगा।

रीडर्स मेल

फार्मासिस्टों को उचित सम्मान मिले

स्वास्थ्य सेवा में फार्मासिस्टों की भूमिका और योगदान को स्मरण करने के लिए प्रति वर्ष 25 सितम्बर को राष्ट्रीय फार्मासिस्ट दिवस मनाया जाता है। चिकित्सा व्यवस्था में डॉक्टर जहां रोग की पहचान और इलाज का मार्ग तय करते हैं वहीं फार्मासिस्ट उस उपचार को सही रूप से जन-जन तक पहुंचाने में अहम कड़ी साबित होते हैं। फार्मासिस्ट दवाइयां बेचने तक सीमित नहीं हैं, बल्कि औषधियों की गुणवत्ता, सही खुराक, दुष्प्रभावों की जानकारी तथा रोगी को सुरक्षित उपचार दिलाने की जिम्मेदारी भी निभाते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में तो फार्मासिस्ट ही अक्सर पहले स्वास्थ्य परामर्शदाता के रूप में कार्य करते हैं। महामारी जैसी परिस्थितियों में उनका योगदान और भी महत्त्वपूर्ण हो जाता है, इसलिए उन्हें स्वास्थ्य प्रहरी की संज्ञा दी गई है। फार्मासिस्टों को उचित सम्मान मिलना जरूरी है।

हिमांशु शेखर, गयाजी

लद्दाख में हिंसा चिंताजनक

लद्दाख को अलग राज्य का दर्जा दिए जाने और इस क्षेत्र को संविधान की छठी अनुसूची में शामिल करने की मांग को लेकर पिछले दिनों से पर्यावरण एवं सामाजिक कार्यकर्ता सोनम वांगचुक के साथ अन्य कार्यकर्ता भूख हड़ताल पर बैठे। इसी दौरान दो कार्यकर्ताओं की तबीयत बिगड़ी और उन्हें अस्पताल में भर्ती किया गया और इससे इस शांतिपूर्ण आंदोलन ने हिंसा का रूप ले लिया। हिंसा से चार लोगों की मौत और दर्जनों लोग व सुरक्षाकर्मी घायल हुए। आगजनी से भाजपा कार्यालय को भी क्षति पहुंची है, किसी समय लद्दाख जम्मू-कश्मीर का ही हिस्सा था और तब इसे केंद्रशासित प्रदेश बनाने की मांग उठी थी। अनुच्छेद 370 हटने के बाद यह केंद्रशासित प्रदेश बन गया तो अब अलग राज्य बनाने की मांग उठने लगी है पर इसके लिए हिंसा का रास्ता कहां तक सही है। हिंसा और भूख हड़ताल भी ऐसे समय की जा रही है जब गृह मंत्रालय लद्दाख के प्रतिनिधिमंडल के साथ आगामी 6 अक्टूबर को लद्दाख के विकास हेतु अगले दौर की बातचीत के लिए इकट्ठे हो रहे हैं। कहना न होगा कि संवेदनशील चीनी सीमा से सटे शांति प्रिय लद्दाख में हिंसा को तुरंत काबू किया जाना आवश्यक है।

संजय डागा, ई मेल से

अपनी हद में रहें ट्रंप

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की बार-बार भारत के खिलाफ बयानबाजी इस ओर इशारा कर रही है कि वो हाथ धो कर भारत के पीछे पड़ गए हैं। पहले भारत पर 50% आयात शुल्क, जिसे ट्रंप टैरिफ भी कहा गया, लगाया, फिर कहा कि भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध उन्होंने खत्म करवाया। उसके बाद उन्होंने भारत को रूस से भारी कीमतों पर तेल खरीदने के लिए जिम्मेदार ठहराया। हाल में भारत से निर्यात होने वाली पैरासिटामोल दवाइयों को गर्भवती महिलाओं के होने वाले बच्चों में ऑटिज्म के लिए जिम्मेदार ठहराया और अब भारत को रूस और यूक्रेन के बीच चल रहे युद्ध मे वित्त पोषक के रूप में फिर से कसूरवार ठहरा रहे हैं। लगता है कि अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप अपने देश की सरकार चलाने पर कम ध्यान दे रहे हैं, और भारत को नीचा दिखाने में ज्यादा लगे हैं। ट्रंप को समझ लेना चाहिए कि बेमतलब की बयानबाजी भारत बर्दाश्त नहीं करेगा और वे अपनी हद में रहें।

अभिलाषा गुप्ता, मोहाली

letter.editorsahara@gmail.com

हमें गर्व है हम भारतीय हैं

राष्ट्रीय सहारा
• राष्ट्रीयता • कर्तव्य • समर्पण
वर्ष-35, अंक 43
सहारा इण्डिया मास कम्युनिकेशन के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक जिया कादरी द्वारा सहारा इंडिया मास कम्युनिकेशन प्रेस, सी-2,3,4, सेक्टर-11, नोएडा में मुद्रित तथा 1209-1210, बारहवां तल, नवरंग हाउस, 21 के.जी. मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित। । स्थानीय संपादक - रत्नेश मिश्र* ।
दूरभाष - दिल्ली कार्यालय - 011-23352369, 011- 23352372, दूरभाष - नोएडा प्रेस 0120-2444755, 2444756 फैक्स - 2550750
आर.एन.आई. सं. 53469/91, पंजीकरण संख्या UP/BR /GZB- 38/2024-2026
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन तथा कानूनी मामलों के लिए उत्तरदायी

शान्त लद्दाख में भड़की हिंसा

चीन की सीमा से लगे इलाके लद्दाख में हिंसा का भड़कना वास्तव में चिन्ता की बात है। यह इलाका बहुत शान्त क्षेत्र समझा जाता है, जहां के बहुसंख्यक बौद्ध व जनजातीय निवासी शान्ति प्रिय माने जाते हैं। 5 अगस्त, 2019 तक जम्मू-कश्मीर राज्य का हिस्सा रहा यह इलाका ऐतिहासिक तौर पर भारतीयता के रंग में रंगा रहा है और यहां के निवासियों ने हर संकट के समय देश पर अपने प्राण न्यौछावर करने में भी अग्रणी भूमिका निभाई है। यह इलाका जम्मू-कश्मीर का हिस्सा 19वीं शताब्दी में महाराजा गुलाब सिंह के जम्मू-कश्मीर के राजा बनने के साथ ही बना। इतना ही नहीं अक्साई चिन तक महाराजा गुलाब सिंह का राज था। जब अक्तूबर 1947 में जम्मू-कश्मीर का भारतीय संघ में विलय हुआ तो लद्दाख भी भारत का अभिन्न अंग बना। मगर 5 अक्तूबर, 2019 को जब जम्मू-कश्मीर राज्य का विशेष दर्जा संसद के माध्यम से समाप्त किया गया तो इस पूरे राज्य को दो केन्द्र प्रशासित राज्यों में भी विभक्त कर दिया गया और लद्दाख को जम्मू-कश्मीर से पृथक केन्द्र प्रशासित क्षेत्र बनाया गया। एक ओर जहां जम्मू-कश्मीर में विधानसभा का प्रावधान किया गया वहीं दूसरी ओर लद्दाख को सीधे केन्द्र के नियन्त्रण में उपराज्यपाल के माध्यम से दिया गया। इसके बाद से ही लद्दाख के लोग मांग करते आ रहे हैं कि उन्हें भी राज्य का दर्जा दिया जाये और इस प्रदेश को संविधान की छठी अनुसूची में कुछ अन्य पूर्वोत्तर राज्यों की भांति शामिल किया जाये जहां कि जनजातीय या आदिवासी लोग काफी संख्या में रहते हैं।

संविधान की छठी अनुसूची जनजातीय लोगों को विशेष प्राथमिकता देती है। शुरू में केन्द्र में शासनारूढ़ भारतीय जनता पार्टी भी इस मांग के पक्ष में थी मगर बाद में इसने अपना रुख बदल लिया। भाजपा के इस बदले रुख के प्रति लद्दाख के लोगों में खिन्नता थी। इसके साथ ही लद्दाख के गांधीवादी नेता श्री सोनम वांगचुक लोगों की इस मांग को आवाज भी दे रहे थे। वह कई बार आमरण अनशन पर भी बैठे और अपनी मांग के समर्थन में दिल्ली तक की यात्रा भी की। दूसरी तरफ केन्द्र सरकार के सामने जब लोगों की मांग का दबाव बढ़ने लगा तो उसने राज्य के लोकतान्त्रिक संगठनों के साथ वार्तालाप शुरू की। मगर इस वार्तालाप में वांगचुक को शामिल नहीं किया। केन्द्र सरकार का कहना है कि राज्य के आन्दोलनकारियों के प्रतिनिधियों से सरकार की वार्ता आगे बढ़ रही थी मगर श्री वांगचुक के उत्तेजक बयानों से युवा भड़क गये और वे हिंसा पर उतारू हो गये। वांगचुक ने हालांकि आमरण अनशन का रास्ता ही अपनाया हुआ था मगर इस हिंसा के बाद उन्होंने अपना अनशन समाप्त कर दिया और अपने गांव लौट गये।

> **सरकार का कहना है कि कुछ राजनीतिक शक्तियां इस वार्तालाप की प्रगति से खुश नहीं थीं अत: उन्होंने युवाओं को भड़काने का काम किया और नेपाल जैसे जेन-जेड आन्दोलनों का सन्दर्भ दिया। लद्दाख की राजधानी लेह में कल भड़की हिंसा के दौरान पुलिस को गोली चलानी पड़ी जिसमें छह लोगों की जान गई और 50 से ज्यादा लोग जख्मी हुए। जख्मियों में कुछ पुलिसकर्मी भी शामिल हैं। हिंसा के बाद लेह में कर्फ्यू लगा दिया गया है और लोगों के इकट्ठा होने को प्रतिबन्धित कर दिया गया है।**

सरकार का कहना है कि कुछ राजनीतिक शक्तियां इस वार्तालाप की प्रगति से खुश नहीं थीं अत: उन्होंने युवाओं को भड़काने का काम किया और नेपाल जैसे जेन-जेड आन्दोलनों का सन्दर्भ दिया। लद्दाख की राजधानी लेह में कल भड़की हिंसा के दौरान पुलिस को गोली चलानी पड़ी जिसमें छह लोगों की जान गई और 50 से ज्यादा लोग जख्मी हुए। जख्मियों में कुछ पुलिसकर्मी भी शामिल हैं। हिंसा के बाद लेह में कर्फ्यू लगा दिया गया है और लोगों के इकट्ठा होने को प्रतिबन्धित कर दिया गया है। लद्दाख के उपराज्यपाल श्री कवीन्द्र गुप्ता हैं जो जम्मू-कश्मीर की महबूबा सरकार में वरिष्ठ मन्त्री रहे हैं। अत: वह लद्दाख के हालात से अच्छी तरह वाकिफ बताये जाते हैं। उनके अनुसार लेह में जो कुछ भी कल हुआ वह तुरंत प्रतिक्रिया नहीं थी, बल्कि हिंसा एक साजिश के तहत हुई है। सरकार इसका पता लगाने का प्रयास करेगी। सरकार उन लोगों को बख्शेगी नहीं जिन्होंने इस छोटे से राज्य का वातावरण खराब किया है। दूसरी तरफ केन्द्रीय गृह मन्त्रालय ने एक वक्तव्य जारी कर कहा है कि श्री वांगचुक ने विगत 10 सितम्बर को अपनी भूख हड़ताल इस मांग के समर्थन में शुरू की थी कि लद्दाख को एक पूर्ण राज्य का दर्जा दिया जाये और इसे छठी अनुसूची में शामिल किया जाये। जबकि यह सर्व विदित है कि केन्द्र सरकार लद्दाख की लोकतान्त्रिक शक्तियों व कारगिल लोकतान्त्रिक गठबन्धन के साथ इसी विषय पर वार्तालाप कर रही है। इन संस्थाओं से बातचीत के कई दौर उच्च स्तरीय समिति व उपसमिति के माध्यम से हो चुके थे। इसके साथ इसके नेताओं के साथ अनौपचारिक बातचीत का दौर भी जारी रहा था। बातचीत के इस तन्त्र के स्थापित होने के बाद सकारात्मक परिणाम आने लगे थे जिसमें लद्दाख के जनजातीय लोगों का आरक्षण 45 प्रतिशत से बढ़ाकर 64 प्रतिशत किया जाना शामिल था तथा महिलाओं को जनजातीय परिषदों में एक-तिहाई आरक्षण दिया जाना तय हो गया था। साथ ही भोटी व पुर्गी भाषाओं को आधिकारिक भाषा घोषित करने पर फैसला हो चुका था। इसके साथ ही 1800 सरकारी रिक्तियों को भरे जाने की प्रक्रिया भी शुरू हो गई थी परन्तु कुछ राजनीतिक रूप से प्रेरित तत्वों को यह रास नहीं आ रहा था और ये तत्व वार्तालाप में बाधा पहुंचाना चाहते थे। जिसकी वजह से ऐसे तत्वों द्वारा राज्य में हिंसा भड़काने के प्रयास किये गये । जबकि आगामी 6 अक्तूबर को उच्च स्तरीय वार्तातन्त्र की अगली बैठक होनी निश्चित हुई थी। मगर इससे पहले ही हिंसा भड़का दी गई।

आस्था के नाम पर...

गीता पाढा

"आस्था के नाम पर भी अब लोग खौफ खाते हैं,
नित अखबारों में पाखंडी गुरुओं के
काले कारनामे जब बाहर आते हैं,,
सच्चे गुरु तो अज्ञान से ज्ञान की ओर ले जाते हैं,
पर आज के नकली गुरुओं से लोग स्वयं को ठगा पाते हैं,,
कभी चमत्कार तो कभी मोक्ष का लालच दिखाते हैं,
लाखों की भीड़ जुटाकर भोले-भाले जनमानस को बहकाते हैं...।।"

मोदी का कोई जवाब नहीं!

कलम-दवात
कुमकुम चड्ढा

आज की तारीख में पीएम मोदी शीर्ष पर हैं और आने वाले वर्षों तक वहीं रहेंगे, जब तक कि राजनीति करवट न बदल ले और परिस्थितियां दिशा न मोड़ दें। फिलहाल, मोदी के आलोचक भी यह मानने पर मजबूर हैं कि वह भारत के लिए "सबसे बेहतर विकल्प" हैं। राजनीतिक शून्य से इतर, सचाई यही है कि मोदी और राहुल गांधी के बीच कोई मुकाबला नहीं है, न कोई टॉस-अप, न कोई तुलना। मोदी ऐसे नेता हैं जो परिपक्व हैं, देश के लिए दृष्टि रखते हैं और भारत को आगे ले जाने के बड़े विचार रखते हैं और जब देश का सवाल आता है तो उनका रुख होता है- नो कम्प्रोमाइज।

इसके बरक्स जब गांधी के उतार-चढ़ाव और अपरिपक्व बयान रखे जाते हैं तो मोदी के पक्ष में खड़े होने में किसी को देर नहीं लगती। हालांकि, यह भी सच है कि राहुल गांधी के नेतृत्व वाला विपक्ष कुछ ऐसे मुद्दे उठा चुका है जिसने लोगों के दिल छुए हैं, चाहे वह "संविधान बचाओ" हो, "वोट चोरी" अभियान या उनकी जनसंपर्क यात्राएं। आज की स्थिति में गांधी एक मज़बूत प्रधानमंत्री के सामने एक अच्छे विपक्षी नेता के रूप में उभरे हैं। इसलिए जब तक देश को मोदी के बराबर का कोई नेता नहीं मिलता, तब तक यही व्यवस्था है, जिसे भारतीयों को स्वीकार करना और जीना सीखना होगा। तुलनाओं और विकल्पों से परे, मोदी का आंकलन उनके कार्यों, उनके निर्णयों और उनके कृत्यों पर होना चाहिए। उससे भी अधिक, उनके साहस और अडिग रवैये पर। यही साहस था जब पहलगाम के बाद उन्होंने पाकिस्तान को सीधी चुनौती दी और ऐलान किया- अंत तक लड़ाई लड़ी जाएगी। युद्ध को लेकर कोई कुछ भी कहे लेकिन यह तथ्य अटल है कि भारत ने पहलगाम हत्याकांड का बदला लेने के लिए हमला किया। मोदी के उत्तेजक बयान- घर में घुसकर मारेंगे, या वहां से गोली, यहां से गोला, लोगों को रोमांचित करने के लिए पर्याप्त थे।

अमेरिका और उसके अप्रत्याशित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के दबाव के सामने भी मोदी अडिग रहे। जब ट्रंप ने भारत पर 50 प्रतिशत टैरिफ लगाया तब मोदी झुके नहीं। ब्लैकमेल के आगे नहीं गिरे। इसके बजाय उन्होंने रूस और चीन का रुख किया, यह त्रयी ट्रंप को पीछे हटाने के लिए पर्याप्त थी। मोदी पर भले ही वैश्विक मंच पर आत्म-प्रदर्शन का आरोप लगे लेकिन उनसे यह नहीं छीना जा सकता कि उन्होंने भारत को वह स्थान दिलाने की कोशिश की जहां दुनिया भारत की बात ध्यान से सुने। आज मोदी पश्चिमी दुनिया के हर घर का नाम न सही लेकिन निश्चित ही एक ऐसा नाम हैं जो कानों में गूंजता है। और इतना जोड़ लें, आज भारतीय मज़बूती से बोलते हैं और अपनी भारतीयता को गर्व से प्रदर्शित करते हैं।

देश के भीतर भी मोदी ने स्वयं को एक "डूअर" के रूप में स्थापित किया है, ऐसा नेता जो समय-सीमा तय करता है और उसे निभाता भी है। यही वजह है कि जो परियोजनाएं वर्षों से शिलान्यास के बाद ठप्प पड़ी थीं, वे पूरी हुईं। उदाहरण है- चिनाब रेल पुल, जिसका उद्घाटन इस वर्ष जून में हुआ। यह परियोजना सत्तर के दशक में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के दौर में सोची गई थी। ऐसे ही कई और प्रोजैक्ट हैं- गोवा का अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा, जिसे मंज़ूरी मिलने के 12 साल बाद तक ठंडे बस्ते में डाल दिया गया था, उत्तर प्रदेश की सरयू सिंचाई परियोजना, जिसे मोदी ने उद्घाटित किया करीब 40 साल बाद जब इसे पहली बार सोचा गया था। सूची लंबी है, इतनी लंबी कि पिछली सरकारें उसके आगे सफाई देने को मजबूर हो जाएं। जहां तक अपने कामकाज का सवाल है, प्रधानमंत्री मोदी ने कई कल्याणकारी योजनाएं शुरू कीं। महिलाओं के लिए शौचालय बनाने का विचार हो, गैस कनैक्शन उपलब्ध कराना हो या उन्हें घर की मालकिन के रूप में दर्ज करना- किसी प्रधानमंत्री ने पहले इस दिशा में सोचा तक नहीं था। दरअसल, महिलाओं को लेकर मोदी सरकार की संवेदनशीलता अनुकरणीय मानी जाती है। आलोचक इसे चुनावी हथकंडा बताने में देर नहीं लगाते। हो सकता है, लेकिन यह भी स्वीकार करना होगा कि महिला-केंद्रित योजनाओं ने जीवन स्तर को बेहतर बनाया है। जहां तक "आई डेयर" भावना का सवाल है, मोदी ने उसे बार-बार साबित किया है। मोदी के बारे में यह सर्वविदित है कि "अगर वे कहते हैं तो करके दिखाते हैं, चाहे कीमत कुछ भी हो।"

बेशक, इसका असर दोतरफ़ा हो सकता है लेकिन कल्याणकारी योजनाओं और भारतीयता को बढ़ावा देने में मोदी सरकार का कामकाज उल्लेखनीय रहा है लेकिन यही वह मोड़ है जहां ठहरना ज़रूरी है, क्योंकि मोदी का लेखा-जोखा केवल उपलब्धियों का ही है जो आगे चलकर संतुलन बना रही है। कुल मिलाकर मोदी आज एक बार फिर देश की जरूरत बनकर स्थापित हो चुके हैं तथा विपक्ष लड़ रहा है लेकिन मोदी सरकार बहुत आगे निकल चुकी है।

नाटो के हवाई क्षेत्र में रूस की दखल

- **कोपेनहेगन और ओस्लो हवाई अड्डों के हमलों के पीछे भी क्रेमलिन की भूमिका**
- **रूस यूक्रेन के लगभग 20 फीसदी क्षेत्र पर नियंत्रण कर चुका था**

बर्मिंघम, (द कन्वरसेशन): यूक्रेन में जारी जमीनी और हवाई युद्ध के बीच रूस ने कीव के सहयोगी पश्चिमी देशों पर दबाव बढ़ाना शुरू कर दिया है। 10 सितंबर को पोलैंड में रूसी ड्रोन की घुसपैठ और उसके कुछ दिन बाद रोमानिया में हुई ऐसी ही घटनाओं के बाद, 19 सितंबर को तीन रूसी लड़ाकू विमानों ने एस्टोनिया की हवाई सीमा का उल्लंघन किया। रातों-रात कोपेनहेगन और ओस्लो हवाई अड्डों को बंद करने पर मजबूर करने वाले ड्रोन हमलों के पीछे भी क्रेमलिन की भूमिका होने की अटकलें लगाई जा रही हैं।

इसे रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की रणनीतिक उकसावेबाज़ी माना जा सकता है, लेकिन विश्लेषकों का मानना है कि यह रूसी 'अवश्यंभावी जीत' की कमजोर होती कहानी को छिपाने का प्रयास भी हो सकता है।

रूस का ग्रीष्मकालीन हमला नाकाम रहा है और इसमें भारी संख्या में सैनिक हताहत हुए हैं। अनुमान है कि रूसी सैन्य हताहतों की संख्या अब 2.2 लाख के करीब पहुंच गई है, लेकिन इसके बावजूद क्षेत्रीय लाभ नगण्य रहे हैं।

फरवरी 2022 में पूर्ण पैमाने पर युद्ध की शुरुआत से अब तक रूस ने करीब 70,000 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र पर कब्ज़ा किया है। लेकिन हालिया गर्मी के अभियान में यह बढ़त केवल 2,000 वर्ग किलोमीटर से भी कम रही। एक सितंबर 2022 को रूस यूक्रेन के लगभग 20 फीसदी क्षेत्र पर नियंत्रण कर चुका था, जो अब 2025 में घटकर 19 फीसदी रह गया है। डोनबास क्षेत्र के पास पोकरोवस्क में रूस की कथित सफलता को भी यूक्रेनी जवाबी कार्रवाई के चलते कोई ठोस लाभ में नहीं बदला जा सका।

रूस की स्थिति भले ही बेहतर नहीं है, लेकिन यूक्रेन के लिए भी यह राहत की बात नहीं है। मास्को अब भी लगातार रातों को हमले करने की क्षमता रखता है, जिससे यूक्रेन की वायु रक्षा प्रणाली की कमियां उजागर होती हैं और महत्वपूर्ण ढांचे को नुकसान होता है।

नाटो की प्रतिक्रिया अब तक धीमी रही है। पोलैंड में ड्रोन घुसपैठ के बाद शुरू किए गए 'ईस्टर्न सेंट्री' ऑपरेशन का प्रभाव सीमित रहा, क्योंकि इसके बाद एस्टोनिया में फिर से रूसी घुसपैठ हुई और पोलैंड व जर्मनी के पास तटस्थ हवाई क्षेत्र में बिना घोषणा उड़ानें दर्ज की गईं। पोलैंड के प्रधानमंत्री डोनाल्ड टस्क ने चेतावनी दी कि, "हम अपनी सीमा का उल्लंघन करने वाले किसी भी उड़ने वाली वस्तु को मार गिराने के लिए तैयार हैं।" उन्होंने यह भी कहा कि "ऐसे कदम उठाने से पहले दो बार सोचने की आवश्यकता है जो संघर्ष को और अधिक तीव्र कर सकते हैं।" दूसरी ओर, अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने इस विषय में सीमित प्रतिक्रिया दी है। पोलैंड में ड्रोन घुसपैठ को उन्होंने संभावित 'ग़लती' करार देते हुए नाटो सहयोगियों की रक्षा करने की प्रतिबद्धता दोहराई, लेकिन विशेषज्ञों का मानना है कि यह रुख रूसी उकसावे के सामने स्पष्ट संदेश नहीं देता।

इस बीच, ट्रंप प्रशासन की रूस पर प्रस्तावित 'दूसरे चरण की प्रतिबंध नीति' अब नाटो और जी7 देशों की समान पहल के अधीन कर दी गई है। वहीं, अमेरिका द्वारा यूरोपीय देशों को भेजे जाने वाले हथियारों की आपूर्ति को भी घटाकर अपनी घरेलू आवश्यकताओं की पूर्ति पर केंद्रित किया गया है। बाल्टिक देशों के लिए अमेरिका का दीर्घकालिक सुरक्षा सहयोग कार्यक्रम 'बाल्टिक सिक्योरिटी इनिशिएटिव' भी बजट कटौती की संभावना के चलते संकट में है। यूरोप की सुरक्षा पर अमेरिका की प्राथमिकता कम होती दिख रही है, लेकिन यूरोपीय देशों की प्रतिक्रिया भी काफी धीमी रही है। फ्रांस, जर्मनी, पोलैंड, इटली और नीदरलैंड के संयुक्त रक्षा बजट अब भी अमेरिका के वार्षिक रक्षा खर्च का केवल एक चौथाई हैं। इसके अलावा, यूरोपीय रक्षा-उद्योग आधार भी कमजोर है। 'सिक्योरिटी एक्शन फॉर यूरोप' कार्यक्रम में ब्रिटेन और कनाडा जैसे गैर-ईयू देशों की भागीदारी को लेकर असहमति बनी हुई है। फ्रांस और जर्मनी के बीच मतभेदों के चलते 'फ्यूचर कॉम्बैट एयर सिस्टम' जैसी प्रमुख रक्षा परियोजनाएं भी प्रभावित हुई हैं। अब तक यूक्रेन ने सीमित संसाधनों और पश्चिमी सहयोग के साथ रूस का मुकाबला किया है, लेकिन भविष्य में बढ़ती रूसी आक्रामकता के लिए केवल इच्छाशक्ति काफी नहीं होगी।

चीन में गूंजा भारत का आयुर्वेदिक संदेश, 'लोगों और ग्रह के लिए आयुर्वेद'

बीजिंग, (एजैंसी): चीन की राजधानी पेइचिंग में भारतीय दूतावास ने 10वां आयुर्वेद दिवस बड़े उत्साह के साथ मनाया। यह अवसर केवल भारत की पारंपरिक चिकित्सा पद्धति को याद करने भर का नहीं था, बल्कि इसका उद्देश्य विश्व को यह संदेश देना भी था कि आयुर्वेद न केवल व्यक्तियों के स्वास्थ्य के लिए उपयोगी है, बल्कि पूरे ग्रह की भलाई के लिए भी महत्वपूर्ण है। इस वर्ष आयुर्वेद दिवस की थीम रखी गई– "लोगों और ग्रह के लिए आयुर्वेद।" आयोजन का शुभारंभ चीन में भारत के राजदूत प्रदीप कुमार रावत के स्वागत भाषण से हुआ। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि आयुर्वेद जीवन जीने का एक ऐसा दर्शन है, जो मनुष्य को केवल रोगमुक्त ही नहीं करता, बल्कि उसे प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करना भी सिखाता है। उनके शब्दों में, आयुर्वेद केवल दवाओं या उपचारों की पद्धति नहीं, बल्कि जीवनशैली और सोच का एक समग्र दृष्टिकोण है, जो आज की तेज़ रफ्तार और तनावपूर्ण जीवनशैली में पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हो गया है।

इस कार्यक्रम में आयुर्वेद विशेषज्ञ डॉ. सी.के. मोहम्मद शफ़ीक ने "आयुर्वेद फॉर वेलनेस" विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने विस्तार से बताया कि आयुर्वेदिक सिद्धांत किस प्रकार शरीर, मन और आत्मा को संतुलित रखते हैं। उनका मानना है कि प्राकृतिक औषधियों, संतुलित आहार और नियमित दिनचर्या के ज़रिए स्वास्थ्य को स्थायी और गहन रूप से बेहतर किया जा सकता है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि आधुनिक युग में जब प्रदूषण, मानसिक तनाव और असंतुलित भोजन की समस्या बढ़ रही है, तब आयुर्वेद एक व्यवहारिक और सुलभ समाधान प्रस्तुत करता है। आयुर्वेद दिवस समारोह में विभिन्न आकर्षक गतिविधियां भी आयोजित की गईं। पारंपरिक हर्बल उत्पादों की प्रदर्शनी ने लोगों का ध्यान खींचा, वहीं स्वास्थ्य परामर्श केंद्रों पर प्रतिभागियों ने अनुभवी चिकित्सकों से अपनी समस्याओं पर चर्चा की और प्राकृतिक उपचारों के बारे में सीखा। इसके अलावा, आयुर्वेदिक सिद्धांतों पर आधारित सात्विक और पौष्टिक भोजन के स्टॉल ने आगंतुकों को स्वस्थ खानपान की महत्ता का अनुभव कराया। योग और आयुर्वेद से जुड़े अन्य स्टॉलों ने भी लोगों को भारतीय परंपराओं और समग्र जीवनशैली की झलक दी। यह आयोजन केवल एक सांस्कृतिक परिचय तक सीमित नहीं था, बल्कि इसने दोनों देशों के बीच ज्ञान और परंपरा के आदान-प्रदान को भी मज़बूत किया। चीन में भारतीय दूतावास लगातार ऐसे कार्यक्रम आयोजित करता रहा है, जिनका उद्देश्य है कि चीनी जनता को भारत की परंपराओं और विशेष रूप से आयुर्वेद की गहराई से जानकारी मिल सके। इस बार भी आयोजन ने साबित किया कि आयुर्वेद केवल भारत की धरोहर नहीं है, बल्कि यह पूरी दुनिया के लिए एक उपहार है। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित लोगों ने महसूस किया कि आयुर्वेद केवल बीमारी के इलाज तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जीवन को संतुलित और सार्थक बनाने का विज्ञान है। एक ओर यह व्यक्ति को तनावमुक्त और स्वस्थ जीवन जीने का मार्ग दिखाता है, तो दूसरी ओर यह पर्यावरण संरक्षण और प्रकृति के साथ सहजीवन का संदेश देता है।

क्रिकेट में गायब हुई खेल भावना

आकाश चोपड़ा

भारत और पाकिस्तान के बीच संबंधों पर जमी बर्फ को पिघलाने के लिए कई बार क्रिकेट कूटनीति से काम लिया गया। क्रिकेट कूटनीति का गवाह जिया-उल-हक भी बने और परवेज मुशर्रफ भी। क्रिकेट कूटनीति को भारत और पाकिस्तान के बीच शांतिवार्ताओं के लिए मार्ग प्रशस्त करने के लिए माध्यम बनाया गया। कई बार बर्फ पिघली लेकिन पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद के चलते संबंध बार-बार कड़वे होते गए। तनाव के बावजूद क्रिकेट खेल में खेल भावना और जुनून सामने आता रहा है लेकिन एशिया कप क्रिकेट में जो कुछ सामने आया उसे खेल का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा।

"खिलाड़ी की भावना" से तात्पर्य उस नैतिक आचरण और मूल्यों से है जो एक खिलाड़ी खेल के दौरान दिखाता है। इसमें निष्पक्षता, शिष्टाचार, खेल के प्रति प्रेम और टीम के साथियों तथा प्रतिद्वंद्वियों का सम्मान शामिल है। अच्छी खिलाड़ी की भावना का मतलब सिर्फ जीतना नहीं, बल्कि खेल का आनंद लेना, नियमों का पालन करना और हार-जीत दोनों को गरिमा से स्वीकार करना है। खिलाड़ी की भावना के प्रमुख तत्व: प्रतिद्वंद्वियों, कोचों, अंपायरों और खेल के नियमों का सम्मान करना। किसी भी कीमत पर जीतने की कोशिश करना और खेल को ईमानदारी से खेलना। जीत या हार की स्थिति में गरिमा बनाए रखना और विरोधी टीम के सदस्यों से सम्मानपूर्वक पेश आना। अपने कार्यों की जिम्मेदारी लेना और अगर कोई गलती होती है तो उसे स्वीकार करना। खेल के प्रति प्रेम रखना और खेल के दौरान मिलने वाली खुशी और उत्साह को प्राथमिकता देना। टीम के साथियों का समर्थन करना और एकता की भावना को बढ़ावा देना। खेल भावना एक बहुआयामी अवधारणा है जो खेल जगत में नैतिक व्यवहार और मूल्यों को समाहित करती है। यह प्रतिस्पर्धा और निष्पक्ष खेल के बीच संतुलन का प्रतिनिधित्व करती है, विरोधियों, नियमों और खेल भावना के प्रति सम्मान को बढ़ावा देती है।

एशिया कप के सुपर 4 मैच के दौरान हारिस रऊफ ने भी इसी तरह का आपत्तिजनक इशारा किया था, जिसके बाद उनकी काफी आलोचना हुई थी। इसके अलावा पाकिस्तानी सलामी बल्लेबाज साहिबजादा फरहान ने भी अर्धशतक पूरा करने के बाद अपने बल्ले से 'एके47' जैसा इशारा किया था। इस घटना ने खेल जगत में एक बहस छेड़ दी है कि क्या खिलाड़ियों को अपने व्यवहार में अधिक सावधानी बरतनी चाहिए, खेल को सिर्फ खेल की तरह खेलना चाहिए और व्यक्तिगत स्तर पर नहीं गिरना चाहिए लेकिन भारत की जीत से ज्यादा ' नो हैंडशेक विवाद' चर्चा में बना हुआ है।

सूर्यकुमार यादव ने जैसे ही अपने बल्ले से विनिंग सिक्स लगाया तो उसके बाद उन्होंने अपने टीममेट शिवम दुबे से ही हाथ मिलाया। पाकिस्तानी खिलाड़ियों से भारतीय टीम ने हाथ नहीं मिलाया और वह

सीधे ड्रेसिंग रूम में चले गए। वहीं, मैदान पर पाक खिलाड़ियों ने उनका इंतजार किया लेकिन टीम इंडिया की तरफ से कोई जवाब नहीं आया। इससे नाराज होकर पाकिस्तान टीम मैनेजर नवीद अकरम चीमा ने मैच रेफरी एंडी पायकॉफ्ट के पास आधिकारिक शिकायत दर्ज कराई। ये विवाद उस समय और बढ़ गया जब पाकिस्तान कप्तान सलमान अली आगा ने पोस्ट मैच प्रेजेंटेशन में शामिल नहीं होने का फैसला किया। उन्होंने संजय मांजरेकर के साथ ब्रॉडकास्ट इंटरव्यू को भी ठुकरा दिया। पीसीबी के अनुसार, यह फैसला उन्होंने भारतीय खिलाड़ियों के व्यवहार के विरोध में लिया। पाकिस्तान को एशिया कप में दूसरी बार हराने के बाद पूछने पर भारतीय कप्तान सूर्यकुमार यादव ने सभी से आग्रह किया कि वे अब दोनों देशों के बीच के मुकाबलों को एक अर्थपूर्ण 'प्रतिद्वंद्विता' कहना बंद करें।

क्रिकेट बेहतर का हकदार है। एशिया कप में जो कुछ हुआ है, उसने हममें से कई लोगों को, जो इस खेल से प्यार करते हैं, अपना नज़रिया बदलने पर मजबूर कर दिया है। मौजूदा हालात में भारत-पाकिस्तान क्रिकेट संबंध जारी रखना क्रिकेट के लिए नुक्सानदेह होगा। पाकिस्तान की महिला क्रिकेटर नशरा संधू ने हाल ही में साउथ अफ्रीका के खिलाफ एकदिवसीय मैच में 6 विकेट लेने के बाद एक ऐसा इशारा किया जिससे विवाद खड़ा हो गया है। लाहौर के गद्दाफी स्टेडियम में खेले गए इस मैच में संधू ने 6 विकेट लिए और वह वनडे क्रिकेट में 100 विकेट लेने वाली सबसे तेज पाकिस्तानी महिला खिलाड़ी भी बन गईं। इस मैच के बाद उन्होंने सोशल मीडिया पर एक तस्वीर शेयर की है। जिसमें वह 6 उंगलियों से इशारा कर रही हैं। कहावत के अनुसार यह 'भद्रजनों का खेल' है। इसका बड़ा कारण शुरुआती समय से उच्चवर्गीय लोगों का इसे खेलना तो रहा ही, इसके साथ ही इससे जुड़ी खेल भावना और इसे निष्पक्ष तरीके से खेलने पर जोर देना भी रहा। समय के साथ राजनीति यह तय करने लगी कि कोई देश दूसरे किसी देश के साथ खेले या नहीं। इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड जैसे श्वेत राष्ट्रों ने रंगभेद के दौर में भी दक्षिण अफ्रीका के साथ क्रिकेट संबंध बनाए रखे, जबकि भारत से प्रेरित अश्वेत देशों ने ऐसा नहीं किया- जब तक कि देश की कार्यकारी राजधानी प्रिटोरिया ने बहुजातीय समानता को आधिकारिक नीति के रूप में नहीं अपना लिया। इस मुद्दे पर दुनिया भले ही बटी हुई थी लेकिन विकासशील देशों ने भारत के रुख की सराहना की। भारत ने अपने रुख पर कायम रहने के लिए 1974 में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ टेनिस के डेविस कप फाइनल की कुर्बानी भी दे दी।

अब बात भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव की। दोनों देशों के बीच आखिरी द्विपक्षीय टेस्ट सीरीज 2006-07 में और आखिरी सीमित ओवरों की सीरीज 2012-13 में हुई थी। 2014 में नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा के सत्ता में लौटने के बाद से पाकिस्तान के साथ कोई द्विपक्षीय सीरीज नहीं हुई, हालांकि सीमित ओवरों के टूर्नामेंटों में आईसीसी (अन्तर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद) की प्रतिबद्धताओं के कारण पाकिस्तान जरूर आया था। इस साल की शुरुआत में भारत द्वारा आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी के मैच पाकिस्तान में खेलने से इन्कार करने के बाद पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने आगामी आईसीसी आयोजनों के लिए भारत न आने की धमकी दी। अगर राजनीति और खेल को अलग रखना है, जिसका जवाब होगा नहीं, तो फिर हाथ न मिलाने का खेल भावना विरोधी नाटक क्यों किया जाए। पहले तो इस बात की बहस छिड़ी रही कि क्या भारत को पाकिस्तान के साथ मैच खेलना चाहिए या नहीं। इस पर लोगों की राय बटी हुई थी। भारतीय कप्तान सूर्यकुमार यादव ने अगर पाकिस्तान के खिलाड़ियों से हाथ नहीं मिलाया तो यह पहलगाम हमले में 26 लोगों की निर्मम हत्या के खिलाफ भारत के जन-जन के आक्रोश की अभिव्यक्ति थी। जो कुछ पाकिस्तान के खिलाड़ियों ने किया वह भी शर्मनाक ही था। खासकर ऐसे मैचों में जहां दो देशों के बीच तनाव पहले से ही मौजूद हो। इस तरह की घटनाएं भारत और पाकिस्तान के बीच क्रिकेट संबंधों में और तनाव बढ़ा सकती हैं।

दिल्ली आर.एन.आई. नं. 40474/83
पंजाब केसरी
दिल्ली कार्यालय :
फोन आफिस: 011-30712200, 45212200,
प्रसार विभाग: 011-30712224
विज्ञापन विभाग: 011-30712229
सम्पादकीय विभाग: 011-30712292-93
मैगजीन विभाग: 011-30712330
फैक्स : 91-11-30712290, 30712384, 011-45212383, 84
Email: Editorial@punjabkesari.com

स्वत्वाधिकारी दैनिक समाचार लिमिटेड, 2-प्रिंटिंग प्रैस कॉम्पलैक्स, नजदीक वजीरपुर डीटीसी डिपो, दिल्ली-110035 के लिए मुद्रक, प्रकाशक तथा सम्पादक अनिल शारदा द्वारा पंजाब केसरी प्रिंटिंग प्रैस, 2-प्रिंटिंग प्रैस कॉम्पलैक्स, वजीरपुर, दिल्ली से मुद्रित तथा 2, प्रिंटिंग प्रैस कॉम्पलैक्स, वजीरपुर, दिल्ली से प्रकाशित।

प्रवाह

77 साल बेमिसाल
निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना : 18 अप्रैल 1948 • आगरा

संयुक्त राष्ट्र का उद्देश्य बड़े और छोटे, सभी राष्ट्रों की आवश्यक संप्रभुता की रक्षा करना होना चाहिए। -निकिता ख्रुश्चेव

लेह में अशांति

केंद्रशासित प्रदेश लद्दाख को पूर्ण राज्य का दर्जा देने और संविधान की छठी अनुसूची में शामिल करने की मांग को लेकर लेह में चल रहे विरोध प्रदर्शन का एकाएक हिंसक रूप ले लेना दुर्भाग्यपूर्ण तो है ही, इससे कई तरह की आशंकाएं भी पैदा होती हैं। गौरतलब है कि इस तरह की हिंसा यहां दशकों पहले तब हुई थी, जब लद्दाख को केंद्रशासित प्रदेश बनाने की मांग पर विरोध प्रदर्शन हो रहे थे। जब केंद्र सरकार ने 2019 में जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद-370 हटाकर जम्मू-कश्मीर को एक अलग केंद्रशासित प्रदेश और लेह व कारगिल को मिलाकर लद्दाख को एक अलग केंद्रशासित प्रदेश बना दिया था, तो अब पिछले कुछ वर्षों से स्थानीय लोग पूर्ण राज्य व अनुच्छेद-370 के तहत मिले विशेषाधिकारों के लिए आवाज उठा रहे हैं। लेह और कारगिल दो अलग लोकसभा सीटों और सरकारी नौकरियों में स्थानीय लोगों को आरक्षण जैसी मांगें भी हैं। जाहिर है कि महत्वाकांक्षाएं बढ़ रही हैं। और, जब इसमें राजनीति भी जुड़ जाए, तो स्थितियां कभी-कभी खतरनाक मोड़ भी ले लेती हैं। लोकतंत्र में अपनी बात रखने और मांग करने का सभी को हक है, लेकिन उसका एक तरीका होता है। इन मांगों को लेकर सरकार से बात चल रही थी। लेह एपेक्स बॉडी (एलएबी) और कारगिल डेमोक्रेटिक अलायंस (केडीए) के प्रतिनिधियों की सरकार से वार्ता के लिए आगामी छह अक्तूबर की तारीख भी निर्धारित थी। यहां तक कि वार्ता की तारीख को सितंबर में रखने के अनुरोध को भी सरकार ने स्वीकार लिया था और 25-26 सितंबर को दोनों पक्षों के बीच अनौपचारिक वार्ता तय थी। इसके बावजूद जिस तरह हिंसा भड़की, उसे देखते हुए ये आशंकाएं निर्मूल नहीं हैं कि कुछ ऐसे तत्व जरूर हैं, जो इस तरह की स्थितियां पैदा करना चाहते हैं। आंदोलन का एक तरह से नेतृत्व कर रहे पर्यावरण कार्यकर्ता सोनम वांगचुक तक को कहना पड़ा कि हम शांति चाहते हैं और उन्हें अपना अनशन भी तोड़ना पड़ा। केंद्र सरकार ने अपने बजट में केंद्रीय अनुदान के तहत लद्दाख को बुनियादी ढांचे और पर्यटन

के विकास के लिए अरबों रुपये आवंटित किए हैं। इससे कम से कम यह तो पता चलता ही है कि सरकार क्षेत्र का विकास करने के लिए प्रतिबद्ध है। लेकिन, परेशानी पैदा करने वाले तत्व फिर से अव्यवस्था फैलाने की कोशिश कर सकते हैं। ऐसे में, जरूरी है कि सरकार इस मामले से पूरी सतर्कता बरतते हुए इस तरह निपटे कि क्षेत्र का विकास बाधित न हो और अराजकता फैलाने की चाह रखने वालों को दूसरा मौका भी न मिले।

संयुक्त राष्ट्र के वादे-इरादे

संयुक्त राष्ट्र अपने वर्तमान स्वरूप में आधुनिक चुनौतियों का समाधान नहीं कर सकता है। दुनिया की सबसे बड़ी आबादी वाले लोकतंत्र और चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था भारत को शामिल न करना सुरक्षा परिषद की संदिग्ध वैधता का प्रमाण है। इसे खुद को प्रासंगिक बनाने के लिए चिंतन और पुनर्रचना करनी होगी।

शंकर अय्यर
वरिष्ठ पत्रकार

सैमुअल बेकेट ने अपनी पुस्तक *वेटिंग फॉर गोदो* में अस्तित्व की निरर्थकता पर बहुत ही गहरे शब्दों में लिखा है कि 'हम हमेशा कुछ न कुछ ऐसा ढूंढ ही लेते हैं, जिससे हमें यह आभास होता है कि हम मौजूद हैं।' लगता है कि ये ज्ञानवर्धक शब्द संयुक्त राष्ट्र की बढ़ती अप्रासंगिकता को परिभाषित करने के लिए लिखे गए हो सकते हैं, जो अपनी 80वीं वर्षगांठ मना रहा है। इस वर्ष की महासभा का विषय 'बेटर टुगेदरः एट्टी ईयर्स एंड मोर फॉर पीस, डेवलपमेंट एंड ह्यूमन राइट्स' वास्तविक दुनिया में खो गए उच्च आदर्शों का मिश्रण है।

घटनाओं का यह क्रम संयुक्त राष्ट्र की विश्वसनीयता के संकट को दर्शाता है। पिछले हफ्ते मंगलवार को, संयुक्त राष्ट्र के स्वतंत्र अंतरराष्ट्रीय जांच आयोग ने कहा कि इस्राइल ने गाजा में फलस्तीनियों का नरसंहार किया है। गुरुवार को 14:1 के मत के बावजूद संयुक्त राष्ट्र मूकदर्शक बना रहा, जब अमेरिका ने 'गाजा में तत्काल, बिना शर्त और स्थायी युद्ध विराम तथा सभी बंधकों की तत्काल, सम्मानजनक और बिना शर्त रिहाई' के प्रस्ताव पर वीटो लगा दिया। गाजा में इस्राइल का युद्ध 700 दिनों से भी ज्यादा पुराना है। गाजा के ध्वस्त होने के साथ ही मानवता पर इसका बहुत ज्यादा असर पड़ा है-एक अंतहीन युद्ध में बंधकों और दस लाख फलस्तीनियों को बंधक बनाकर रखा गया है।

संयुक्त राष्ट्र में विडंबनापूर्ण घटनाएं साफ दिखाई दे रही हैं। बेल्जियम, ऑस्ट्रेलिया, पुर्तगाल, कनाडा, मोनाको, माल्टा और लक्जमबर्ग ने भी ब्रिटेन और फ्रांस के साथ फलस्तीनी राज्य को मान्यता दे दी है। हालांकि, फलस्तीनी राष्ट्र के प्रमुख महमूद अब्बास संयुक्त राष्ट्र महासभा में शामिल नहीं हो पाएंगे, क्योंकि अमेरिका ने उनका वीजा रद्द कर दिया है। शुक्रवार को संयुक्त राष्ट्र महासभा ने फलस्तीनी राष्ट्रपति को अपना आभासी भाषण देने के लिए एक प्रस्ताव पारित किया। इस बीच, सीरिया के राष्ट्रपति अहमद अल-शरा, जिन्हें कभी अमेरिका ने आतंकवादी घोषित किया था, न्यूयॉर्क में अमेरिका का मेहमान बने हैं। पश्चिम एशिया में युद्ध संयुक्त राष्ट्र की

विफलताओं का महज एक उदाहरण है। दुनिया भर में आम धारणा है कि संयुक्त राष्ट्र में संघर्ष कभी खत्म नहीं होते।

रूस-यूक्रेन युद्ध 1,300 दिनों से भी ज्यादा समय से चल रहा है। हजारों लोगों की मौत के बाद संयुक्त राष्ट्र ने कई प्रस्ताव पारित किए, जिनमें से एक प्रस्ताव सुरक्षा परिषद द्वारा फरवरी में पारित किया गया, जिसमें संघर्ष को 'शीघ्र समाप्त करने की प्रार्थना' की गई। सितंबर 2025 में, रूसी ड्रोन पोलैंड में घुस आए और उसके लड़ाकू विमान एस्टोनियाई वायुक्षेत्र में मंडराते रहे, जिससे आशंकाएं और बढ़ गईं। संयुक्त राष्ट्र चार्टर का अनुच्छेद एक इसके उद्देश्य को रेखांकित करता है-अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखना, और इसके लिए प्रभावी सामूहिक उपाय करना। युद्ध रोकने के मामले में संयुक्त राष्ट्र का रिकॉर्ड बहुत खराब रहा है। सीरिया में युद्ध 2011 में शुरू हुआ, यमन में 2014 में और लीबिया में संघर्ष 2014 से जारी है। 2025 में, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर युद्ध छिड़े हुए हैं और विभिन्न देश क्षेत्रीय सुरक्षा गुटों की मदद ले रहे हैं।

अपने उपन्यास *द प्लेग* में, अल्बर्ट कामू ने लिखा था कि लोग कहते हैं कि युद्ध मूर्खतापूर्ण है, अधिक समय तक नहीं चल सकता, लेकिन मूर्खता अपना रास्ता निकालने में माहिर होती है। संयुक्त राष्ट्र के संकोच ने दशकों से इसे पुष्ट किया है। संयुक्त राष्ट्र अपनी संरचना के कारण ही विफल है। महासभा द्वारा पारित प्रस्ताव निष्प्रभावी हैं, कायरता दर्शाते हैं, और जिस संस्था की निंदा की गई, उस पर कोई प्रभाव नहीं डालते। सुरक्षा परिषद की संरचना वैश्विक वास्तविकताओं को प्रतिबिंबित नहीं करती। दुनिया की सबसे बड़ी आबादी वाले लोकतंत्र और चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था भारत को इसमें शामिल न करना सुरक्षा परिषद की संदिग्ध वैधता का प्रमाण है। दरअसल, भारत, जर्मनी, जापान और ब्राजील दो दशकों से भी ज्यादा समय से बदलाव के लिए अभियान चला रहे हैं। अफ्रीका या दक्षिण अमेरिका का इसमें कोई प्रतिनिधित्व नहीं है।

इस बीच पी-5 के सदस्यों (अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, रूस और चीन) ने बहुपक्षवाद को खत्म करने के लिए वीटो को हथियार बना लिया है, जो गाजा और यूक्रेन में हत्याओं के रूप में स्पष्ट है।

संयुक्त राष्ट्र की विफलता केवल युद्धों को रोकने तक ही सीमित नहीं है। इसके संगठनों का समूह मुद्दों को उठाता है और ज्यादातर आक्रोश ही व्यक्त करता है। जलवायु परिवर्तन की चुनौती इसकी निष्क्रियता पर पनप रही है। जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी पैनल की स्थापना 1988 में हुई थी, फिर भी पेरिस समझौते और दो दर्जन से अधिक कॉप शिखर सम्मेलनों के बावजूद ग्लेशियर पिघल रहे हैं और वैश्विक उत्सर्जन तथा चरम मौसमी घटनाएं तबाही मचा रही हैं। विस्थापितों की गरिमा सुनिश्चित करने के लिए 1951 में स्थापित अंतरराष्ट्रीय प्रवासन संगठन वैश्विक दृष्टिकोण को प्रकट करने के लिए जूझ रहा है और यूरोप तथा अन्य जगहों पर अपनाई जा रही जबर्दस्ती की रणनीतियों का मूक दर्शक बना हुआ है।

संयुक्त राष्ट्र की वैश्विक आतंकवाद-रोधी रणनीति आतंकवाद की सार्वभौमिक परिभाषा पर आम सहमति नहीं बना पाई है। विश्व स्वास्थ्य संगठन, अपनी मंशा और क्रियान्वयन के लिए जूझ रहा है-इसने कोविड की उत्पत्ति पर अपनी रिपोर्ट में अस्पष्टता बरती, और महामारी के पांच साल बाद भी चीन से ब्योरे पाने में विफल रहा, और अब तक रोकथाम पर सार्वभौमिक दृष्टिकोण तैयार नहीं कर पाया है।

इसके महत्वाकांक्षी सहस्राब्दी विकास लक्ष्य, जो 2015 के लिए निर्धारित थे, 2030 के लक्ष्यों में बदल गए। अब तक इन लक्ष्यों की उपलब्धियों का रिकॉर्ड अधूरा है। संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद की नाकामियां भी स्पष्ट हैं। निश्चित ही एक वैश्विक निकाय जरूरी है, लेकिन संयुक्त राष्ट्र अपने वर्तमान स्वरूप में आधुनिक चुनौतियों का समाधान नहीं कर सकता है। फ्रांत्स काफ्का के *द कैसल* के हवाले से कहें, तो लगता है कि संयुक्त राष्ट्र ने केवल ताकतवर देशों के हितों की रक्षा की है। 80 वर्ष पूरे होने के बावजूद यह आशा के इतिहास में एक फुटनोट बनकर रह गया है। इसे अपने संचालन तंत्र को प्रासंगिक बनाने के लिए चिंतन और पुनर्रचना करनी होगी।

edit@amarujala.com

आर्थिकी

नई आर्थिक ताकत बनते कर सुधार

टैरिफ व एच-1बी वीजा की चुनौतियों के बावजूद वैश्विक रेटिंग एजेंसियां भारत की विकास दर बढ़ने का अनुमान लगा रही हैं, तो इसका श्रेय आर्थिक सुधारों को ही जाता है।

जयंतीलाल भंडारी

यह कोई छोटी बात नहीं है कि इन दिनों प्रकाशित हो रही वैश्विक आर्थिक-वित्तीय संगठनों की रिपोर्टों में कहा जा रहा है कि 50 फीसदी ट्रंप के टैरिफ और एच-1बी वीजा की फीस एक लाख डॉलर किए जाने के बावजूद भारत की विकास दर बढ़ रही है और क्रेडिट रेटिंग ऊंची हो रही है। हाल ही में आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (आईसीडी) ने वित्त वर्ष 2025-26 के लिए भारत की विकास दर का अनुमान बढ़ाकर 6.7 फीसदी कर दिया है। फिच ने भारत में तेजी से बढ़ती घरेलू मांग, नए कर सुधार, ब्याज दर में कमी, क्रय शक्ति बढ़ने, सर्विसेज की तेज गति और उपभोक्ता खर्च में वृद्धि के मद्देनजर विकास दर का अनुमान 6.9 फीसदी बताया है। ऐसे ही अनुमान विश्व बैंक, आईएमएफ ने भी लगाए हैं। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया की हालिया रिपोर्ट में कहा गया है कि छह महीनों में भारत में आर्थिक परिदृश्य ऊंचाई पर होगा। विशेषकर जीएसटी में की गई कटौती से खुदरा कीमतें घटेंगी और उपभोग बढ़ने से मांग में तेजी आएगी। ऐसे में इस वित्तीय वर्ष में विकास दर 6.5 फीसदी से अधिक रहने की संभावना है।

हाल ही में दुनिया की प्रसिद्ध जापान की ग्लोबल रेटिंग एजेंसी रेटिंग एंड इन्वेस्टमेंट इन्फॉर्मेशन (आरएंडआई) ने कहा कि अमेरिका द्वारा ऊंचे टैरिफ लगाने के बावजूद भारत की अर्थव्यवस्था बढ़ने की प्रवृत्ति दिखा रही है। भारत की 'सॉवरेन रेटिंग' को एक पायदान ऊपर करते हुए बीबीबी प्लस किया गया है। बीते दिनों एसएंडपी और मार्निंग स्टार डीबीआरएस जैसी वैश्विक क्रेडिट रेटिंग एजेंसियों ने भारत की क्रेडिट रेटिंग को अपग्रेड किया है। 24 सितंबर को प्रकाशित स्टैंडर्ड चार्टर्ड की 'फ्यूचर ऑफ ट्रेड रिपोर्ट' के मुताबिक, इस समय अमेरिका, ब्रिटेन, हांगकांग और चीन की 60 फीसदी से ज्यादा बड़ी कंपनियां भारत के साथ कारोबार बढ़ाना चाहती हैं। इस रिपोर्ट में उल्लेख है कि भारत दुनिया की बड़ी कंपनियों के लिए ग्लोबल सप्लाई और मैन्युफैक्चरिंग का पसंदीदा ठिकाना बन रहा है और कंपनियां भारतीय बाजार से जुड़ने की रणनीति बना रही हैं।

निश्चित रूप से कर सुधार भारत की नई आर्थिक ताकत बनते हुए दिख रहे हैं। जीएसटी और इनकम टैक्स में किए गए बदलाव को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि यह आम लोगों के जीवन में खुशहाली का डबल धमाका है। इनकम टैक्स में मिली 12 लाख तक की छूट के बाद अब जीएसटी की दरों में की गई कटौती से घरों का बजट सुधरेगा, आम लोगों की बचत बढ़ेगी और मध्यम वर्गीय लोगों की क्रयशक्ति में भी बड़ा इजाफा होगा। चूंकि, अब देश का लक्ष्य 2027 में तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था और 2047 तक देश को विकसित भारत बनाना है, इस लक्ष्य को पाने के लिए कई बातों पर रणनीतिक रूप से ध्यान देना होगा। एक, नए निर्यात बाजार में कदम रखे जाएं। दो, तेज बढ़ते घरेलू बाजार व अनुकूल आर्थिक परिदृश्य से विकास दर बढ़ाई जाए। तीन, एफटी की डगर पर तेजी से आगे बढ़ा जाए। चार, स्वदेशी अपनाएं। पांच सेवा निर्यात बढ़ाएं। अब भारत को स्वदेशी आत्मनिर्भरता के साथ घरेलू बाजार को ऊंचाई देनी होगी। अब भारत को नवाचार, प्रतिस्पर्धा, क्षमता में सुधार तथा शोध की डगर पर आगे बढ़ने की तैयारी करनी होगी। देश में तेजी से आगे बढ़ रहे छह क्षेत्रों- औषधि, रसायन, ऑटो, डिफेंस, औद्योगिक इंजीनियरिंग और खाद्य क्षेत्र की शीर्ष कंपनियों को शोध एवं नवाचार क्षेत्रों में तेजी से आगे बढ़ाना होगा। उम्मीद करें कि सरकार टैरिफ और एच-1बी वीजा फीस की चुनौती के बीच भारत में प्रतिभाओं को हर तरह से प्रोत्साहन देते हुए प्रतिभा पलायन रोकने के लिए रणनीतिपूर्वक आगे बढ़ेगी।

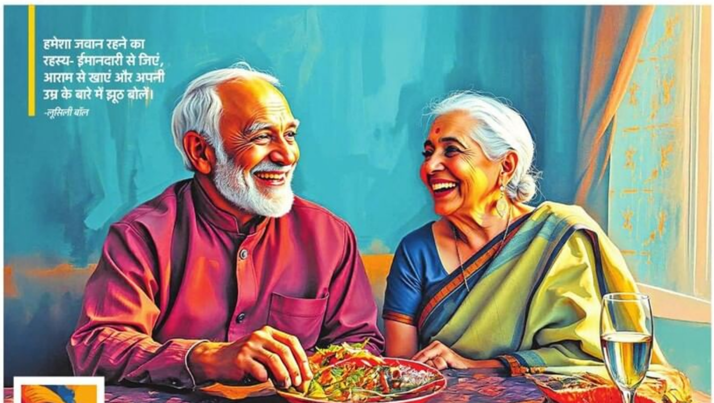

चलो, कुछ नया शुरू करें

जब दिन गुजरता है और रात आती है, तब वे तारे दिखाई देते हैं, जो दिन में नहीं दिख रहे थे। राहें तो हर स्थिति से निकलती हैं। हो सकता है कि मैं कालजयी रचना न लिख सकूं, लेकिन कुछ तो होगा, जो मैं शुरू कर सकता हूं।

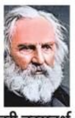

हेनरी वड्सवर्थ लॉन्गफेलो

मुड़-मुड़ के देख

हमारा दिल जब तक धड़कता है, तब तक कुछ भी देर नहीं होती। रोम के महान दार्शनिक कैटो ने अस्सी साल की उम्र में ग्रीक भाषा सीखी। जब लोग आराम की कुर्सी पर बैठकर दिन गिनते हैं, तब कैटो ने नई राह चुनी। सोफोक्लीज ने अपने जीवन के आखिरी पड़ाव में, अस्सी पार करते हुए, अपनी महान रचना 'ऑडिपस' लिखी। सिमोनाइड्स, जिसने अस्सी साल से अधिक की उम्र में भी कविता का ताज अपने नाम किया, अपने समकालीनों को पीछे छोड़ते हुए।

थियोफ्रास्टस, जिसने नब्बे साल की उम्र में इन्सान के चरित्रों को कागज पर उतारना शुरू किया। जर्मनी के वाइमार में, गोएथे ने आखिरी सांस तक मेहनत करते हुए अस्सी साल की उम्र में फॉस्ट को पूरा किया। ये लोग हमें दिखाते हैं कि हमारी युवावस्था की ऊर्जा हमारे जीवन के अंतिम क्षेत्र तक बह सकती है। कवि, वक्ता या ऋषि इसके बारे में कुछ भी कहें, वृद्धावस्था तो वृद्धावस्था ही है। यह चांद का बढ़ता हुआ हिस्सा नहीं, बल्कि घटता हुआ हिस्सा है। यह दोपहर की तेज धूप और लपटे नहीं, बल्कि शाम का धुंधलका है। यह ताकत नहीं, कमजोरी है। यह वह आग नहीं, जो सब कुछ जला दे, बल्कि वह राख है, जिसमें अभी कुछ चिंगारियां बाकी हैं। वे चिंगारियां जो गर्मी तो देती हैं, पर अब जलाने की ताकत नहीं रखतीं। तो क्या, हम चुपचाप बैठ जाएं और कहें, 'रात हो गई, अब दिन नहीं रहा'? या फिर मन में यह दोहराएं कि रात अभी नहीं आई! हमारी रोशनी पूरी तरह से बुझी नहीं है। अभी भी कुछ करने को बाकी है, कुछ हिम्मत दिखाने को बाकी है। सबसे पुराना पेड़ भी कुछ फल दे सकता है। शायद हम ऑडिपस कोलोनस जैसी रचना न लिख सकें, न ही चौसर की तरह तीर्थयात्रियों की कहानियां सुना सकें, पर कुछ तो है जो हम शुरू कर सकते हैं। वृद्धावस्था एक नया अवसर है। यह वह समय है, जब दिन का उजाला धीरे-धीरे फीका पड़ता है, और आसमान उन तारों से भर जाता है जो दिन में दिखाई नहीं देते। चाहे उम्र कितनी भी हो, अभी भी वक्त है, कुछ करने का, कुछ नया शुरू करने का।

दूसरी पारी

...ताकि संपत्ति के लिए न उलझें संतानें

अगर आप चाहते हैं कि आपकी संतानें आपके बाद संपत्ति के लिए विवाद न करें, तो ये जरूरी सलाहें आपके लिए ही हैं...

68 वर्षीय लखनऊ के महेश अचानक इस चिंता में डूब गए कि दुनिया से जाने के बाद उनकी तीनों संतानें संपत्ति के लिए आपस में विवाद तो नहीं करेंगी। अगर वह अपने जीवनकाल में ही संपत्ति के बंटवारे का सही प्रबंध कर देते हैं, तो ऐसी नौबत आएगी ही नहीं।

महेश एक दिन रात में हड़बड़ा कर उठ गए। उनको पसीने से तर देख पत्नी ने पूछा-'क्या हुआ?' महेश बोले-'ऐसा नहीं हो सकता।' पत्नी ने पूछा, 'क्या नहीं हो सकता।' वह बोले, 'मेरे बच्चे संपत्ति के लिए झगड़ नहीं सकते।' महेश 68 साल के हैं। जिंदगी भर उन्होंने ईमानदारी से मेहनत की। शहर में मकान, कुछ जमीन, म्यूचुअल फंड में निवेश और बैंक में जमा पूंजी ही उनके जीवन की कमाई थी। उनके तीनों बच्चों में बड़ा बेटा विदेश में सेटल है और आर्थिक रूप से मजबूत है। छोटा बेटा यहीं लखनऊ में प्राइवेट नौकरी करता है। बिटिया ससुराल में खुश है, लेकिन महेश के बेहद करीब है।

वह चाहते हैं कि उनके बाद बच्चे आपस में जमीन-जायदाद के लिए लड़ें नहीं। महेश के लिए यह सिर्फ एक सपना था, लेकिन लाखों परिवारों के लिए यह हकीकत है। अक्सर हम अपने आसपास संपत्ति को लेकर भाई-भाई, भाई-बहन, पिता-पुत्र, मां-बेटे में विवाद और झगड़े की खबर सुनते हैं। आइए जानते हैं कि महेश किस तरह अपनी संपत्ति का बच्चों में बंटवारा कर सकते हैं। हालांकि, इससे पहले आपको कुछ बारीक चीजों की जानकारी जरूरी है। कितनी तरह की होती है संपत्ति? संपत्ति को आम तौर पर आप चार भागों से बांट सकते हैं। चल, अचल, डिजिटल और इनटेंजिबल संपत्ति। चल संपत्ति-जिन्हें बिना किसी अहम बदलाव या क्षति के एक से दूसरे स्थान पर ले जा सकते हैं। इनमें वाहन, गहने, फर्नीचर, इलेक्ट्रॉनिक्स, नकदी समेत बैंक में जमा पैसे, डीमैट रूप में शेयर या बॉन्ड, म्यूचुअल फंड जैसी चीजें शामिल हैं। अचल संपत्ति में खेत, आवासीय व व्यावसायिक भूखंड, मकान, दुकान, कारखाना आदि आते हैं।

डिजिटल संपत्ति में ई-मेल आईडी, मोबाइल नंबर, डिजिटल पेंटिंग, डिजिटल करेंसी और डिजिटल फाइल जैसी चीजें आती हैं। इनटेंजिबल एसेट में पेटेंट, ट्रेडमार्क, कॉपीराइट, ब्रांड नेम, सॉफ्टवेयर और रॉयल्टी आते हैं।

सबसे पहले सूची बनाएं : संपत्ति बंटवारे के लिए महेश को अपनी सारी संपत्ति की सूची बनानी चाहिए। इसमें घर, जमीन, बैंक एफडी, शेयर, म्यूचुअल फंड, इंश्योरेंस, पीएफ आदि शामिल करें। डिजिटल और इनटेंजिबल एसेट हो, तो उसे भी जोड़ें। हर संपत्ति का मौजूदा बाजार मूल्य भी लिखें। संपत्ति का उचित बंटवारा करने के लिए परिवार के हर सदस्य की आर्थिक स्थिति का पता होना बहुत जरूरी है। देखें कौन आर्थिक रूप से कितना सक्षम है व किसे ज्यादा सहारे की जरूरत है। परिस्थितियों का आकलन किए बगैर संपत्ति देने से परिवार में असंतोष पैदा हो सकता है। कुछ लोगों के हालात जैसे आयु, शिक्षा, रोजगार या विशेष जरूरतें, बंटवारे में विशेष ध्यान मांगते हैं। महेश अपने बच्चों में संपत्ति को बराबर बांट सकते हैं, या फिर उनकी जरूरतों का ध्यान रखते हुए किसी को कम, तो किसी को ज्यादा संपत्ति दे सकते हैं। वह यह भी कर सकते हैं कि घर पहले पत्नी को दें और पत्नी के न रहने पर इसे आर्थिक रूप से कमजोर बेटे को दे सकते हैं, ताकि किराये की आय से वह गुजर-बसर आराम से कर सके। इस तरह का बंटवारा न केवल व्यक्तिगत न्याय सुनिश्चित करता है, बल्कि लंबे समय तक पारिवारिक रिश्तों को मजबूत बनाए रखता है। -पवन पांडेय, *द बोनस*

इन तरीकों से बांट सकते हैं संपत्ति

गिफ्ट डीड : जीवनकाल में संपत्ति या उसका कुछ हिस्सा सीधे परिवार के किसी सदस्य के नाम कर सकते हैं। गिफ्ट डीड स्वेच्छा से की जाती है। गिफ्ट डीड रजिस्ट्रेशन के लिए दोनों पक्षों को रजिस्ट्रार कार्यालय जाना होता है। इसके बाद संपत्ति का मालिकाना हक ट्रांसफर हो जाता है। लेकिन, गिफ्ट डीड में आप जीवित रहते हुए भी संपत्ति पर मालिकाना हक खो देते हैं।

वसीयत: इसमें व्यक्ति की मौत के बाद जमीन-जायदाद का बंटवारा उसके मनमाफिक होता है। वसीयत में निष्पादक (एग्जीक्यूटर) और दो गवाहों की जरूरत होती है। एक गवाह डॉक्टर हो तो अच्छा है, ताकि भविष्य में वसीयत करने वाले की मानसिक स्थिति पर सवाल न खड़े हों। जीवित रहते कितनी भी बार वसीयत बना या बदल सकते हैं। आखिरी वसीयत ही मान्य होती है।

पारिवारिक समझौता अनुबंध : इसमें परिवार के सदस्य आपसी सहमति से तय करते हैं कि किस संपत्ति पर किसका अधिकार होगा। सभी वारिसों की मौजूदगी में लिखित बंटवारा किया जाता है। यह तुरंत प्रभावी हो जाता है और आपसी सहमति होने पर इसमें प्रोबेट या अदालती हस्तक्षेप की जरूरत नहीं होती। प्रोबेट वसीयत की वैधता को पुष्ट करने की प्रक्रिया है।

प्राइवेट फैमिली ट्रस्ट

यह संपत्ति को पीढ़ियों तक ट्रांसफर करने का प्रभावी तरीका है। यह एक कानूनी व्यवस्था है, जिसमें मालिक यानी सेटलर अपनी संपत्ति को एक ट्रस्ट बनाकर उसमें ट्रांसफर कर देता है। संपत्ति को ट्रस्ट में डालने से सेटलर का सीधा मालिकाना हक खत्म हो जाता है। लेकिन, वह संपत्तियों के उपयोग और वितरण पर नियंत्रण बनाए रख सकता है। सेटलर की शर्तों के अनुरूप परिवार के सदस्य लाभार्थी हो सकते हैं। इस तरह वे संपत्ति से होने वाली आय व संपत्ति तक पहुंच हासिल कर सकते हैं। एक्सपर्टनेक्सजेन एस्टेट प्लानिंग सॉल्यूशंस के संस्थापक निदेशक डॉ. दीपक जैन बताते हैं कि संपत्ति बंटवारे का सबसे सुरक्षित तरीका प्राइवेट फैमिली ट्रस्ट है। जीवित रहने तक आप इसके ट्रस्टी और लाभार्थी रहेंगे, जिससे संपत्ति पर आपका पूर्ण नियंत्रण बना रहेगा। आपकी मृत्यु के बाद संपत्ति का इस्तेमाल किस प्रकार और किन शर्तों के साथ हो, यह भी आप पहले से तय कर सकते हैं, जैसे-बच्चों को शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यवसाय या केवल विशेष उद्देश्यों के लिए ही फंड मिले।

फैमिली ट्रस्ट क्यों है बेहतर?

- डॉ. दीपक जैन बताते हैं कि प्राइवेट फैमिली ट्रस्ट आपकी और आपके उत्तराधिकारियों की संपत्ति को ऋणदाताओं के दावों से भी बचा सकता है, क्योंकि ट्रस्ट में रखी गई संपत्ति व्यक्तिगत स्वामित्व में नहीं मानी जाती। वसीयत को अदालत में चुनौती दी जा सकती है, पर ट्रस्ट को चुनौती देना लगभग असंभव होता है, क्योंकि आपने जीवित रहते सारी संपत्ति ट्रस्ट को ट्रांसफर कर दी होती है। इस तरह वसीयत, गिफ्ट डीड या फैमिली सेटलमेंट एग्रीमेंट में आने वाली ज्यादातर कानूनी और पारिवारिक दिक्कतों से बचाव संभव है।

ये भी ध्यान रखें

- एग्रीमेंट जल्द बनवा लेना चाहिए और उसमें स्पष्ट कर दें, किसे कौन-सी संपत्ति, किस अनुपात में मिलेगी, लेकिन यह प्रभावी उनकी मृत्यु के बाद हो। वसीयत में 'नो-कॉन्टेस्ट क्लॉज' डाल सकते हैं। इसका मतलब है कि कोई वसीयत को चुनौती देगा, तो उसे संपत्ति नहीं मिलेगी।

*जिंदगी की **दूसरी पारी** बहुत महत्वपूर्ण होती है। हर शुक्रवार इस पर आपको नया पढ़ने को मिलेगा। आप अपने विचार, अनुभव या समस्याएं **edit@amarujala.com** पर भेज सकते हैं, विशेषज्ञों की मदद से हम कोशिश करेंगे कि संवाद का पुल बन सके।*

हिन्दुस्तान
1936
सत्य • सार्थक • सदैव

स्वर्ण का बढ़ता भाव

स्वर्ण की कीमत अक्सर चिंता में डाल देती है। इधर, करीब छह महीने से स्वर्ण के भाव में कमोबेश तेजी बनी हुई है। खासकर 19 सितंबर से 23 सितंबर के बीच स्वर्ण की कीमत में जो तेजी देखी जा रही थी, अगर बढ़त का यही क्रम आगे जारी रहे, तो भारतीय मध्यवर्ग के लिए स्वर्ण खरीदना मुश्किल हो जाएगा। जिस देश में करीब 90 प्रतिशत लोगों की वार्षिक आय चार लाख रुपये से ज्यादा नहीं हो, वहां अगर प्रति दस ग्राम स्वर्ण की कीमत एक लाख रुपये के पार रहे, तो परेशानी का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। जाहिर है कि भारत में किसी भी संस्कार, आयोजन में स्वर्ण की जरूरत पड़ती है। इस जरूरत को खत्म नहीं किया जा सकता। यह ठीक बात है कि अमेरिकी अर्थव्यवस्था के प्रभाव से स्वर्ण की कीमत कुछ घटी है, पर अभी आश्वस्त नहीं हुआ जा सकता। यह त्योहारी समय है और इसमें स्वर्ण की बिक्री बढ़ जाती है। शायद दिवाली के समय तक कीमतों में बढ़त रहेगी और उसके बाद जब शादियों का मौसम पड़ेगा, तब फिर तेजी आएगी।

फिलहाल कुछ घटने के बावजूद 24 कैरेट के 10 ग्राम स्वर्ण की कीमत एक लाख पंद्रह हजार रुपये से भी ज्यादा है। आमतौर पर भारत में 22 कैरेट के सोने से ही जेवर बनाए जाते हैं और इस कैरेट वर्ग के सोने का भाव प्रति दस ग्राम एक लाख पांच हजार रुपये से ज्यादा है। कुल मिलाकर, यह बात अब स्थापित हो चुकी है कि स्वर्ण की कीमत एक लाख के पार पहुंचकर चढ़ती जा रही है। यह बढ़त कहां तक जारी रहेगी, कोई नहीं जानता। अब भारतीय सर्राफा बाजार के इतिहास में यह दर्ज हो चुका है कि 19 सितंबर से 23 सितंबर के बीच 24 कैरेट के 100 ग्राम सोने की कीमतों में 45,200 रुपये की बढ़ोतरी देखी गई। इस पर अनेक विशेषज्ञों ने जोर देकर कहा है कि बहुमूल्य पीली धातु बेचने का यह सही समय नहीं है, क्योंकि कीमतों में और बढ़ोतरी की संभावना है। दुनिया में लोग ही नहीं, बल्कि अनेक केंद्रीय बैंक भी कुछ समय से सोना खरीदने में लगे हैं। जिन्होंने सोना खरीद रखा है, उनको सलाह दी जा रही है कि यह सोना बेचकर मुनाफा कमाने का समय नहीं है। मतलब, सोने के भाव में अनिश्चितता बनी रहेगी।

जिस देश में ज्यादातर लोगों की वार्षिक आय चार लाख रुपये से कम हो, वहां प्रति दस ग्राम स्वर्ण की कीमत एक लाख रुपये के पार रहे, तो यह परेशानी की बात है।

यह स्वाभाविक बात है कि जब दुनिया में अनिश्चितता बढ़ रही है, तब स्वर्ण की कीमतों में रह-रहकर तेजी आएगी। विशेष रूप से आर्थिक मोर्चे पर अमेरिकी फैसलों का असर स्वर्ण बाजार पर पड़ेगा। अतः यह उम्मीद करनी चाहिए, दुनिया में युद्ध थमें और अमन-चैन बहाल हो। जब अशांति होती है, तब लोग अपना पैसा स्वर्ण खरीदने में लगाने लगते हैं। अशांति के समय शेयर बाजार व रियल स्टेट की बढ़त प्रभावित होती है, तो स्वर्ण में निवेश बढ़ जाता है। उपाय क्या है? अर्थव्यवस्था के दूसरे क्षेत्रों में ज्यादा काम की जरूरत है, ताकि स्वर्ण में निवेश के प्रति लोगों का रुझान कम हो। यहां कंपनियों और कारपोरेट प्रबंधकों की भूमिका बहुत बढ़ जाती है। जब किसी अर्थव्यवस्था में धन का कुप्रबंधन होता है, तब भी स्वर्ण के भाव में तेजी आती है। यह बस उम्मीद ही जा सकती है कि निवेशक संतुलन बनाकर चलेंगे। गौर करने की बात है कि आज से सौ साल पहले सोने का भाव मात्र 19 रुपये था। साल 1960 और 1980 के बीच सोना 111 रुपये से बढ़कर 1300 रुपये के पार पहुंच गया। इधर के वर्षों में अगर देखें, तो साल 2015 में सोना 25 हजार रुपये से नीचे था, पर अब एक लाख रुपये के पार पहुंच गया है। इस बहुमूल्य धातु की कीमतों में संतुलन के लिए जरूरी है कि अर्थव्यवस्था को समग्रता में शक्ति और स्थिरता प्रदान की जाए।

हिन्दुस्तान Hindustan | 75 साल पहले
26 सितम्बर, 1950

नोबल शान्ति पुरस्कार

नोबल शान्ति पुरस्कार के संस्थापक स्वयं एक शस्त्रास्त्र निर्माता थे। वह स्वीडन के रहने वाले थे और उनका नाम अलफ्रेड नोबल था। इसलिए इस पुरस्कार को नोबल शान्ति पुरस्कार कहा जाता है। अलफ्रेड नोबल ने शस्त्रास्त्रों का निर्माण करके खूब धन कमाया, किन्तु अन्त में वह शान्तिवादी बन गये थे। उन्होंने करीब चार करोड़ रुपये का एक कोष स्थापित किया, जिससे प्रतिवर्ष लगभग एक लाख 80 हजार रुपये पुरस्कारों के रूप में वितरित किये जाते हैं। शान्ति के अलावा साहित्य, भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र, शरीर विज्ञान और चिकित्सा शास्त्र के क्षेत्र में उल्लेखनीय काम करने वालों को भी प्रतिवर्ष पुरस्कार दिये जाते हैं।

अलफ्रेड नोबल ने एक तेज विस्फोटक पदार्थ की खोज की थी। इस शोध ने युद्ध में संहार-कार्य को तीव्र बनाया, वहीं उसकी सहायता से पहाड़ों को काटकर नजदीकी मार्ग भी निकाले जा सके। वह उपयोगकर्ताओं पर निर्भर करता है कि वह किसी आविष्कार का उपयोग संहार के लिए करते हैं अथवा निर्माण के लिए। अणु-शक्ति के लिए भी यही कहा जा रहा है कि उसका उपयोग मानव की सुख-सुविधाओं को बढ़ाने में किया जा सकता है, किन्तु अभी तो संसार ने उसके संहारक रूप का ही परिचय पाया है। अणु-बमों का संग्रह संसार की शान्ति के लिए महान खतरा बन गया है। अलफ्रेड नोबल भी विस्फोटक पदार्थ का शायद आविष्कार न करते, यदि उन्हें पता होता कि उसका इतना दुरुपयोग होगा। सन् 1950 में शान्ति पुरस्कार प्राप्त करने का सौभाग्य डॉ. राल्फ बंच को मिला है। डॉ. बंच ने हब्शी कुल में जन्म लिया है और उनके दादा गुलामी का जीवन बिता चुके हैं। डॉ. बंच अमरीकी नागरिक हैं, जहां विधान द्वारा न सही, व्यवहार में गोरों और हब्शियों के बीच काफी भेदभाव है। किन्तु डॉ. बंच ने अपनी योग्यता और कार्य द्वारा यह सिद्ध कर दिया कि परमात्मा ने प्रतिभा किसी एक वर्ण के लोगों के लिए सुरक्षित नहीं की है। फिलस्तीन में अरबों और यहूदियों के बीच समझौता करवाने का प्रयास करते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रतिनिधि काउण्ट बर्नाडोट को अपने प्राणों की आहुति देनी पड़ी थी। वह हत्यारों की गोली के शिकार हुए थे। इससे पता चल गया कि मध्यस्थता करना कोई हंसी-खेल नहीं, सिर हथेली पर रखकर चलना है।

मिग-21 विमान को मिल गया विराम

मिग-21 लड़ाकू विमान आज अपनी आखिरी उड़ान पर है। तमाम कमियों के बावजूद यह ऐसा विमान रहा, जो जंगों में आगे रहा, जिसने हजारों बेहतरीन पायलट गढ़े।

यहां स्कैन करें

बी के मुरली | एयर वाइस मार्शल (रिटायर्ड)

भारतीय वायु सेना का मिग-21 लड़ाकू विमान आज (26 सितंबर) अपनी आखिरी उड़ान भरने जा रहा है। अब यह हमारे सुरक्षा बेड़े का नहीं, संग्रहालय का हिस्सा होगा। मेरे लिए यह भावुक कर देने वाला पल है, क्योंकि वर्ष 1975 में जब मैं भारतीय वायु सेना में शामिल हुआ था, तब मुझे सबसे पहले मिग-21 स्क्वाड्रन में ही भेजा गया था। 'स्क्वाड्रन' से जो परिचित नहीं हैं, उन्हें बता दूं कि एक स्क्वाड्रन 18 विमानों से तैयार होता है, जिनमें से 16 फाइटर और दो अभ्यास कराने वाले विमान होते हैं।

मुझे वह दिन आज भी याद है। एक अलग ही उत्साह था हममें। यह देश का पहला सुपरसोनिक विमान था, इसलिए इसकी मांग काफी ज्यादा थी। 'इंटरसेप्शन' में इसका इस्तेमाल होता था, यानी हवाई मार्ग से कोई हमारी सीमा में घुसने की कोशिश करता, तो उसे मार गिराने की महती जिम्मेदारी इसके कंधों पर थी। मगर इस विमान के आकर्षण की एक बड़ी वजह इसकी गति थी। यह 300 किलोमीटर से भी अधिक की रफ्तार से रनवे पर उतरता, जो उस समय सर्वाधिक मानी जाती थी। इसी कारण उन पायलटों को ही इसकी जिम्मेदारी सौंपी जाती, जिनमें कौशल होता था। यह धारणा आज भी कायम है कि जिसने मिग-21 उड़ा लिए, वह देश का बेहतरीन पायलट है।

इसे रूस से लाया गया था। मार्च-अप्रैल, 1963 में सबसे पहले चंडीगढ़ में इसे उतारा गया। दिलचस्प है कि आज इसकी आधिकारिक विदाई भी वहीं से हो रही है। हमारे सुरक्षा बेड़े का यह कितना अहम हिस्सा था, इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि 1965 से लेकर 1999 के कारगिल युद्ध और हाल-फिलहाल ऑपरेशन सिंदूर तक यह हमारी सुरक्षा पंक्ति में सबसे आगे रहा। बालाकोट हमले के बाद जब दुश्मन देश का एफ-16 विमान हमारी सीमा में घुस आया था, तो विंग कमांडर अभिनंदन वर्धमान ने उसे मिग-21 बाइसन से ही मार गिराया था।

मिग-21 को एक अन्य भूमिका के लिए भी याद रखा जाएगा। दरअसल, हमारे बेड़े में 874 मिग-21 विमान हैं, जिनमें से 660 हिन्दुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल) के नासिक और कोरापुट केंद्र में तैयार किए गए हैं। इसके कारण वहां हजारों एयरोनॉटिकल इंजीनियरों को रोजगार मिला। इसके कल-पुर्जों के छोटे-छोटे उद्योग विकसित हुए। कहना गलत नहीं होगा कि भारतीय विमानन क्षेत्र को इसने नई उड़ान दी है।

भारत में इस विमान की कई श्रेणियां विकसित की गईं, जिनमें सबसे आधुनिक 'बाइसन' है। विश्व के 60 से ज्यादा देश इसका इस्तेमाल कर चुके हैं, जिनमें सिर्फ भारत अब तक इसकी सेवाएं ले रहा था। आंकड़े बताते हैं, रूस ने 11,000 से अधिक मिग-21 विमान बनाए, जिस कारण विश्व में सबसे अधिक उत्पादित होने वाले विमान का खिताब इसे ही हासिल है।

हालांकि, 1963 में इसके आगमन के साथ ही दुर्घटनाएं भी शुरू हो गई थीं। उसी साल हमने दो विमान गंवाए थे, जिसके बाद हरेक वर्ष एक या दो जहाज हादसों के शिकार होते गए। अब तक 400 से अधिक मिग-21 विमान दुर्घटना के शिकार हुए हैं, जिनमें हमने 170 होनहार पायलट खो दिए। इन हादसों में 40 आम नागरिकों की भी जान गई है। इन सबके कारण इसको 'उड़ता ताबूत' कहा जाने लगा था। मैंने अपने दो करीबी मित्रों को दो अलग-अलग मिग-21 हादसों में खो दिया। उनकी यादें मुझे आज भी परेशान करती हैं। वे दोनों दुर्घटनाएं एक ही साल में हुई थीं। तब हम तेजपुर में फ्लाइंग ऑफिसर थे। अगल-बगल की मेस में रहा करते, सो हर शाम हमारा मिलना होता। रोज क्रिकेट खेला करते। मगर हमने उन्हें खो दिया। ब्रह्मपुत्र में उनके विमानों का मलबा गिरा था और मुझे ही उनके पार्थिव शरीर को लाने भेजा गया।

बाद में, जांच से पता चला कि तकनीकी दिक्कतों की वजह से ये हादसे हो रहे हैं। वर्ष 1982 से लेकर 2006 तक चार कमेटियां हादसों की जांच के लिए बनाई गईं और सभी ने इंजन में गड़बड़ी की बात कहते हुए इसको हटाने की सिफारिश की थी, पर उन सलाहों पर अमल नहीं किया जा सका।

यह स्थिति तब थी, जब खुद रूस का कहना था कि इस विमान की 'टोटल टेक्निकल लाइफ' 40 साल है। इसका अर्थ है कि हमें दो दशक पहले ही इसे रिटायर कर देना चाहिए था, लेकिन हमने इसके सुधार पर जोर दिया और अब तक इसका इस्तेमाल करते रहे। हां, जब इसके हादसे बढ़ गए, तो उड़ान घंटों को 150 से घटाकर 125 घंटा प्रतिमाह जरूर कर दिया था।

सुखद यह रहा कि साल 2006 में सरकार ने एचएएल का साथ मिलकर 40 तेजस बनाने का फैसला किया, लेकिन दो दशक बाद 38 विमानों की ही आपूर्ति हो सकी है। जबकि, इस विमान को मिग-21 का विकल्प माना ही नहीं गया है। अब 83 एलसीए मार्क 1ए विमान का ऑर्डर दिया गया है, जिसमें से पांच की आपूर्ति जून 2026 तक होने की उम्मीद है। अपनी सुरक्षा के लिए हमें 42 स्क्वाड्रन की जरूरत है, लेकिन अभी 31 स्क्वाड्रन ही हमारे पास रहे हैं। मिग-21 की विदाई के बाद अब दो स्क्वाड्रन की और कमी होने जा रही है। इस अंतर को हमें जल्द पाटना होगा, खासकर दुश्मन देशों के मिजाज को देखते हुए।

मिग-21 शृंखला का सबसे ज्यादा स्थिर व शानदार विमान 'बिस' माना गया था। बढ़ती जरूरतों को देखते हुए 1980 के दशक में हमने इसको उन्नत बनाने का फैसला किया और रूस से जब यह लौटा, तो इसका नामकरण 'बाइसन' किया गया। इसमें 'आर 27' और 'आर 73' मिसाइल प्रणालियां लगाई गई थीं। हालांकि, तब भी इसके इंजन में कोई बदलाव नहीं किया गया, जबकि इसकी मूल समस्या यही थी। यह भी कम दिलचस्प नहीं है कि एयर कमोडोर सुरेंद्र सिंह त्यागी के नाम सबसे अधिक समय तक मिग-21 उड़ाने का विश्व रिकॉर्ड है। उन्होंने करीब 6,000 बार यह विमान उड़ाया है और लगभग 4,500 घंटे इसके कॉकपिट में बिताए हैं। पिछले दिनों उनको रूस बुलाकर सम्मानित भी किया गया था।

बहरहाल, तमाम कमियों के बावजूद मिग-21 ऐसा विमान रहा, जिसने हजारों बेहतरीन पायलट गढ़े। हमें आज भी इस पर गर्व है। निस्संदेह, आज इसकी विदाई हो रही है, लेकिन यह हम जैसे उन हजारों एयरोनॉटिकल इंजीनियरों की यादों में रहेगा, जिन्होंने मिग-21 के साथ आसमान को नापा है।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

भर्ती परीक्षाओं पर नौजवानों का कायम रहे भरोसा

यहां स्कैन करें

मोहन भंडारी | पूर्व अध्यक्ष, उत्तराखंड लोक सेवा आयोग

उत्तराखंड में एक बार फिर नकल माफिया ने युवाओं के भविष्य को दांव पर लगा दिया है। यह अत्यंत दुखद और चिंताजनक है कि उत्तराखंड अधीनस्थ सेवा चयन आयोग (यूके ट्रिपल एससी) की स्नातक स्तरीय परीक्षा का पेपर पुनः लीक हो गया। इस प्रकरण की गंभीरता को देखते हुए पुलिस को जांच सौंपी गई है और कुछ लोगों को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है। यह दूसरी बार है, जब उत्तराखंड में कठोर नकल विरोधी कानून लागू होने के बावजूद ऐसी घटना सामने आई है।

उत्तराखंड एक युवा-प्रधान पर्वतीय राज्य है, जहां लाखों युवा भर्ती परीक्षाओं के माध्यम से अपने भविष्य को संवारने का सपना देखते हैं। पेपर लीक होने की वजह से युवाओं का समय, मेहनत और धन, तीनों बर्बाद होते हैं, जिससे उनका भविष्य अंधकारमय हो रहा है। उत्तराखंड की इस घटना ने न केवल प्रशासनिक, बल्कि राजनीतिक रंग भी ले लिया है। विभिन्न विभागों में इस मुद्दे को लेकर गहमागहमी है और उच्च स्तर पर चर्चाएं चल रही हैं। सवाल उठ रहे हैं कि आखिर भर्ती परीक्षा में यह गड़बड़ी कैसे हुई? पेपर लीक का यह षड्यंत्र कैसे रचा गया और इसमें किन-किन लोगों की मिलीभगत है? कुछ लोग इस मामले में पुलिस जांच के अतिरिक्त न्यायिक जांच की भी मांग कर रहे हैं, ताकि इस घोटाले की जड़ तक पहुंचा जा सके और भविष्य में ऐसी घटनाएं रोकी जा सकें।

केरल में अधीनस्थ सेवा चयन आयोग नहीं है, फिर भी उसकी भर्ती प्रक्रिया पारदर्शी व प्रभावी है। उत्तराखंड इससे सबक क्यों नहीं लेता?

उत्तराखंड अधीनस्थ सेवा चयन आयोग 2014 में अपने गठन के बाद से ही विवादों में घिरा रहा है। खासकर 2021 और 2022 में स्नातक स्तरीय परीक्षा के पेपर लीक होने के बाद इसकी कार्यप्रणाली पर गंभीर सवाल उठे। इन घटनाओं ने आयोग की कमजोरियों को उजागर किया। इस दौरान कई अधिकारियों और बाहरी एजेंटों की गिरफ्तारियां हुईं। इसके बाद आयोग की सभी भर्ती प्रक्रियाएं निलंबित कर दी गईं और कार्यभार उत्तराखंड लोक सेवा आयोग (यूके पीएससी) को सौंप दिया गया। कई परीक्षाएं रद्द करके दोबारा आयोजित की गईं, जिससे नौजवानों को समय, उम्र के साथ धन का नुकसान भी उठाना पड़ा। वर्तमान में यूके ट्रिपल एससी की भर्तियां सीमित हैं और परीक्षा संचालन का कार्य हरिद्वार स्थित यूके पीएससी की निगरानी में हो रहा है।

सवाल उठ रहे हैं कि आखिर केवल 13 जिलों वाले उत्तराखंड जैसे छोटे पर्वतीय राज्य में अलग से यूके ट्रिपल एससी का गठन ही क्यों किया गया? अगर जवाब कार्यभार को कम करने का है, तो यह समझ से परे है। क्योंकि राज्य के मुख्य आयोग- यूके पीएससी- के पास बहुत संसाधन हैं और वह इस कार्य को बखूबी कर सकता है। दूसरी बात यह है कि अधीनस्थ आयोग में ऐसे विशेषज्ञ नहीं हैं, जो विषयों पर विस्तृत शोध और अध्ययन कर सकें। किसी भर्ती संबंधी तुरंत निर्णय लेने के लिए अधीनस्थ आयोग बनाने की आवश्यकता होती है। इसके अलावा अधीनस्थ आयोग बनाने का एक और कारण क्षेत्र विशेष को प्रमुखता देना हो सकता है। लेकिन उत्तराखंड जैसे छोटे से राज्य में ये सभी तर्क कमजोर पड़ते हैं। यूके पीएससी में ही दो-तीन अतिरिक्त सदस्य नियुक्त करके तमाम भर्ती प्रक्रियाएं आसानी से संभाली जा सकती हैं।

भारत के 28 राज्यों और आठ केंद्र शासित प्रदेशों के पास अपने-अपने लोक सेवा आयोग हैं, जो संविधान के अनुच्छेद 316(1) के तहत कार्य करते हैं। इन आयोगों के अध्यक्ष और सदस्यों की नियुक्ति राज्यपाल द्वारा की जाती है। उदाहरण के लिए, केरल जैसे छोटे, मगर शिक्षित राज्य में लोक सेवा आयोग 18 सदस्यों के साथ ग्रुप ए, बी, सी और डी की सभी भर्तियां संभालता है। केरल में कोई अलग से अधीनस्थ सेवा चयन आयोग नहीं है, फिर भी उनकी भर्ती प्रक्रिया पारदर्शी और प्रभावी है। इसलिए, उत्तराखंड जैसे छोटे राज्य में अधीनस्थ सेवा चयन आयोग की आवश्यकता संदिग्ध है।

यूके ट्रिपल एससी में पेपर लीक की घटनाएं न केवल तकनीकी खामियों को दर्शाती हैं, बल्कि पूरे तंत्र की अक्षमता को उजागर करती हैं। प्रश्न उठता है कि प्रश्नपत्रों की तस्वीरें खींचकर बाहर भेजने जैसी घटनाएं कैसे संभव हो जाती हैं? सीधे-सीधे यह तंत्र में पारदर्शिता और जवाबदेही की कमी है। सरकार को इस मुद्दे पर गंभीरता से विचार करना चाहिए।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

मनसा वाचा कर्मणा

संतुलन साधना ही धर्म

इस संसार में दो तरह के रुग्ण व्यक्ति रहते हैं- दूसरों को सताकर सुख लेने वाले और स्वयं को कष्ट देकर सुख पाने वाले! 'सैडिस्ट' या परपीड़क वे लोग हैं, जिन्हें सुख और आनंद दूसरों को सताने में मिलता है, और 'मैसोचिस्ट' यानी आत्मपीड़क वे लोग हैं, जिन्हें खुद को सताने से सुख मिलता है। लेकिन है यह एक जैसी ही हिंसा। परपीड़क चूंकि दूसरों पर हिंसा फेंकते हैं, इसलिए देर-सवेर लोग इसके विरुद्ध विद्रोह करेंगे। लेकिन आत्मदमन के विरुद्ध विद्रोह के लिए कोई होता ही नहीं।

वास्तव में, सभी क्रांतिकारी जब सत्ता में आते हैं, तो धीरे-धीरे अपना सम्मान खोने लगते हैं। वे देर-सवेर कुर्सियों से उतार दिए जाते हैं, उनकी सत्ता और शक्ति नष्ट हो जाती है और उन्हें अपराधी समझा जाने लगता है। पूरा इतिहास इन्हीं अपराधियों से बना है। यह मनुष्यता का इतिहास नहीं है, क्योंकि इसमें मानवोचित सहृदयता नहीं है। यह मानवीय सहृदयता का इतिहास न होकर सिर्फ राजनीति, राजनीतिक टकरावों, संघर्षों और युद्धों का इतिहास है। जिनके पास जब तक शक्ति और सत्ता है, वे देवताओं की तरह पूजे जाते हैं। लेकिन देर-सवेर उनकी सत्ता समाप्त होती ही है। फिर एक दिन ऐसा आता है, जब हिटलर सम्मानित नहीं रह जाता, उसका नाम गंदा और कुरूप बन जाता है। एक दिन वह आता है, जब स्टालिन भी आदरणीय नहीं रह जाता। ठीक उल्टा हो जाता है।

लेकिन जो कल्पित कथाओं की धार्मिक परिकल्पना है, या स्वयं को सताने वाले संन्यासियों की वास्तविकता है, लोग उसे कभी नहीं जान पाते, क्योंकि वे कभी किसी अन्य व्यक्ति को नहीं सताते। वे अपने आप को ही सताते हैं। और लोग उन्हें सम्मान दिए चले जाते हैं। लोग उनका बहुत अधिक आदर करते हैं, क्योंकि वे स्वयं के अतिरिक्त किसी भी व्यक्ति के लिए हानिकारक नहीं हैं। लेकिन ऐसा संन्यास एक तरह की मानसिक रुग्णता है; यह किसी भी तरह सामान्य नहीं है।

बहुत अधिक भोजन करना भी असामान्य असाधारणता है। ठीक मात्रा में भोजन करना ही सामान्य होता है। मध्य में बने रहना ही सामान्य बनता है। ठीक मध्य में बने रहना ही, स्वस्थ, समग्र और धार्मिक बनना है। यदि तुम एक पराकाष्ठा या अति पर जाते हो, तो राजनीतिक बन जाते हो। यदि तुम दूसरी अति पर जाते हो, तो एक कट्टर धार्मिक संन्यासी बन जाते हो। दोनों ने ही संतुलन खो दिया है।

मध्य में बने रहना ही, स्वस्थ, समग्र और धार्मिक बनना है। यदि तुम एक अति पर जाते हो, तो राजनीतिक बन जाते हो और दूसरी अति पर कट्टर धार्मिक संन्यासी बन जाते हो।

इसलिए जिस धर्म का हम यहां आह्वान कर रहे हैं, वह न तो स्वपीड़क है और न दूसरों को सताने वाला। वह सामान्य है। वह मध्य में है। और मध्य में बने रहने का मार्ग क्या है? मध्य में बने रहने का मार्ग है- इस संसार में तो रहना, लेकिन उसका बनकर या होकर नहीं।

ओशो

एंटोनियो गुटेरस | संयुक्त राष्ट्र महासचिव

यूक्रेन पर रूसी हमले ने इस क्षेत्र में व्यापक अस्थिरता और मानव त्रासदी पैदा की है। यह युद्ध जितना लंबा खिंचेगा, इसके नतीजे उतने ही विनाशकारी होंगे। मैं स्थायी युद्ध-विराम की अपील दोहरा रहा हूं, जो यूएन चार्टर के अनुरूप शांति लाए।

अनुलोम-विलोम
लद्दाख हिंसा

यह हिंसा लोकतंत्र के लिए गंभीर खतरा

लद्दाख को अलग राज्य का दर्जा देने और क्षेत्र को संविधान की छठी अनुसूची में शामिल करने की मांग को लेकर चला शांतिपूर्ण आंदोलन जिस तरह अचानक हिंसक हो उठा, उसने पूरे देश को चिंता में डाल दिया है। यह आंदोलन लेह एपेक्स बॉडी और कारगिल डेमोक्रेटिक अलायंस के नेतृत्व में भले ही हो रहा था, लेकिन इसकी कमान मुख्य रूप से पर्यावरणविद् सोनम वांगचुक के हाथ में थी। उनकी मंशा शांति बनाए रखने की रही होगी, किंतु यह स्पष्ट है कि वह आंदोलन में शामिल राजनीतिक कार्यकर्ताओं और उग्र तत्वों पर नियंत्रण नहीं रख पाए।

हिंसा के दौरान भाजपा कार्यालय को आग के हवाले करना, लद्दाख स्वायत्त पर्वतीय विकास परिषद को नुकसान पहुंचाना और सुरक्षा बलों के वाहनों पर हमला करना यह संकेत देता है कि आंदोलन में असामाजिक तत्व घुस आए थे। यह और भी दुर्भाग्यपूर्ण है कि जब गृह मंत्रालय ने 6 अक्तूबर को प्रतिनिधिमंडल से बातचीत का समय तय कर दिया था, तब भी हिंसा भड़क उठी। भाजपा सांसद व प्रवक्ता संबित पात्रा का आरोप है कि इस उग्र प्रदर्शन के पीछे कांग्रेस का हाथ था, जिसने इसे जेन-जी आंदोलन बनाने की कोशिश की। कांग्रेस नेता मनीष तिवारी ने केंद्र सरकार पर स्थिति को संभालने में देरी का आरोप लगाया है। उमर अब्दुल्ला ने कहा कि लद्दाख की अशांति जम्मू-कश्मीर को राज्य के दर्जे से इनकार करने पर व्यापक असंतोष का नतीजा है। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने लद्दाख के मौजूदा हालात के लिए सोनम वांगचुक के भड़काऊ भाषणों को जिम्मेदार ठहराया है।

लद्दाख की मांगों का इतिहास भी कम रोचक नहीं है। जब यह जम्मू-कश्मीर का हिस्सा था, तब केंद्रशासित प्रदेश का दर्जा मांगा जाता रहा। अनुच्छेद- 370 हटने के बाद यह दर्जा मिल गया, लेकिन अब अलग राज्य की मांग तेज हो गई है। इसके पक्ष में तर्क दिए जा सकते हैं, परंतु उन पर जोर देने के लिए हिंसा का रास्ता अपनाना न केवल लोकतांत्रिक मर्यादाओं का उल्लंघन है, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए भी खतरा है। यह भी ध्यान देने योग्य है कि आज लद्दाख में वे सभी सुविधाएं उपलब्ध हैं, जो पहले दुर्लभ थीं। ऐसे में, युवाओं को भड़काना और जनजीवन को बाधित करना किसी साजिश का हिस्सा लगता है।

इस परिस्थिति में सरकार को कठोरता और संयम, दोनों का सहारा लेना होगा। हिंसा फैलाने वालों की पहचान कर उन्हें सख्त सजा मिले, ताकि भविष्य में कोई भी अराजकता फैलाने की हिम्मत न कर सके। समाज और युवाओं को भी यह समझना होगा कि लोकतंत्र की असली ताकत संवाद में है, टकराव में नहीं।

विभूति बुपक्या, टिप्पणीकार

वादाखिलाफी के खिलाफ फूटा गुस्सा

लद्दाख को केंद्र शासित प्रदेश का दर्जा देने की मांग को लेकर 1980 के दशक के उत्तरार्ध में एक बहुत बड़ा जन-आंदोलन शुरू हुआ। अगस्त 2019 में संसद ने एक पुनर्गठन अधिनियम पारित कर 31 अक्तूबर, 2019 से लद्दाख को जम्मू-कश्मीर से अलग एक केंद्र शासित प्रदेश के रूप में पुनर्गठित कर दिया। साथ ही केंद्र सरकार ने वहां के लोगों को आगे बढ़ने के सब्जबाग भी दिखाए। इससे वहां के लोगों की आकांक्षाएं बलवती हो गईं कि वे जल्द से जल्द पूर्ण राज्य बनेंगे।

इन्हीं आकांक्षाओं को हकीकत में बदलने के लिए लद्दाख के लोग पिछले पांच साल से पूर्ण राज्य का दर्जा पाने का आंदोलन चला रहे हैं। उनकी मांग है कि कारगिल और लेह को अलग-अलग लोकसभा सीट बनाया जाए, सरकारी नौकरियों में स्थानीय लोगों की भर्ती हो। आंदोलनकारी लद्दाख में छठी अनुसूची लागू करने की भी मांग कर रहे हैं। इसी के साथ लद्दाख में विधानसभा के गठन की भी मांग हो रही है। वहां के लोग सरकार से ठोस आश्वासन चाहते हैं। इसीलिए, वहां के सामाजिक कार्यकर्ता सोनम वांगचुक की अध्यक्षता में 35 दिनों का अनशन फिर शुरू किया गया था। इस अनशन को देखते हुए केंद्र और लद्दाख के प्रतिनिधियों (जिनमें लेह एपेक्स बॉडी और कारगिल डेमोक्रेटिक अलायंस के सदस्य शामिल हैं।) के बीच 6 अक्तूबर को बातचीत का एक नया दौर निर्धारित किया गया था। इससे पहले 26 सितंबर को बातचीत होनी थी। केंद्र ने इस बातचीत का दौर एकतरफा घोषित कर दिया। उधर, अनशन चल ही रहा था कि इसमें शामिल दो लोगों की तबियत अचानक बिगड़ गई। युवा पहले से ही केंद्र की इस एकतरफा बातचीत की घोषणा से खार खाए बैठे थे। दो अनशनकारियों की सेहत बिगड़ने से वे और भड़क गए। इन दोनों कारणों ने आग में घी का काम किया और 24 सितंबर को अचानक वहां हिंसा भड़क उठी। इस हिंसा में चार लोग मारे गए।

इसमें भाजपा का यह आरोप निराधार है कि कांग्रेस भारत में नेपाल जैसे हालात पैदा करना चाहती है। लद्दाख के एक्टिविस्ट सोनम वांगचुक का दावा है कि लेह लद्दाख में कांग्रेस में इतना दम ही नहीं है कि वह यह सब करवा पाए। वांगचुक ने हिंसा की निंदा की है, लेकिन साथ-साथ उन्होंने लोगों के गुस्से को जायज ठहराया है। असल में लेह की हिंसा केंद्र सरकार की वादाखिलाफी का नतीजा है। लद्दाख की जनता पिछले पांच साल से शांतिपूर्ण तरीके से अपनी मांगों के लिए आंदोलन चला रही है। पर उनसे किए वादों व उनकी आकांक्षाओं के अनुरूप जब कोई सुनवाई नहीं हुई, तो लोगों का गुस्सा भड़क उठा।

लता भारती, छात्रा

दैनिक जागरण

विवेक की नैया ही विपत्ति में बेड़ा पार लगाती है

रक्षा तैयारी में तेजी

देश में पहली बार ट्रेन से अग्नि-प्राइम मिसाइल दागने का सफल परीक्षण इसका सूचक है कि भारत अपनी रक्षा तैयारियों को लेकर सजग है। अग्नि-प्राइम न्यूक्लियर बैलिस्टिक मिसाइल है और यह दो हजार किमी से अधिक मार कर सकती है और तीन हजार किलोग्राम तक विस्फोटक वहन कर सकती है। इस मिसाइल को ट्रेन से लांच करने में महारत हासिल करने का मतलब है कि भारत अब कहीं से भी परमाणु हथियारों से लैस मिसाइलें दाग सकता है। ऐसी क्षमता दुनिया के चंद देशों के पास ही है। भारत ने ट्रेन से दागी जाने वाली मिसाइल के सफल परीक्षण के साथ एक बार फिर अपनी सामरिक और तकनीकी श्रेष्ठता सिद्ध की। भारत किस तरह रक्षा के हर मोर्चे को मजबूत करने में लगा हुआ है, इसका परिचायक रक्षा मंत्रालय की ओर से हिंदुस्तान एयरोनाटिक्स लिमिटेड यानी एचएएल के साथ किया गया 62 हजार करोड़ रुपये का करार भी है। इस समझौते के तहत वायुसेना को 97 तेजस लड़ाकू विमान मिलेंगे। ये उन मिग-21 लड़ाकू विमानों का स्थान लेंगे, जिन्हें वायुसेना से विदा किया जा रहा है। इससे बेहतर और कुछ नहीं कि विदेशी लड़ाकू विमानों का स्थान स्वदेशी लड़ाकू विमान लें। रक्षा मंत्रालय और एचएएल के बीच हुए समझौते के अनुसार वायुसेना को तेजस लड़ाकू विमानों की आपूर्ति 2027-28 में शुरू होगी। चूंकि एचएएल सरकार के स्वामित्व वाली कंपनी है, इसलिए उसे यह देखना होगा कि आपूर्ति तय समय पर हो। उसे यह इसलिए सुनिश्चित करना होगा, क्योंकि अतीत में तेजस विमानों की समय पर आपूर्ति को लेकर सवाल उठ चुके हैं। ये सवाल स्वयं वर्तमान वायुसेना प्रमुख उठा चुके हैं।

तेजस लड़ाकू विमानों को समय पर तैयार करने में एक बड़ी बाधा उसके इंजन हैं। हालांकि तेजस स्वदेशी लड़ाकू विमान है, लेकिन वह अपने इंजन और कुछ अन्य उपकरणों के लिए दूसरे देशों पर निर्भर है। यह निर्भरता एक समस्या है। इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि तेजस लड़ाकू विमानों के लिए अमेरिका से पर्याप्त संख्या में इंजन मिलने में देरी हो रही है। भारत का अगला लक्ष्य लड़ाकू विमानों के इंजन खुद बनाना होना चाहिए। चूंकि तेजस चौथी पीढ़ी का लड़ाकू विमान है और अमेरिका, रूस, चीन आदि पांचवीं पीढ़ी के लड़ाकू विमानों के बाद छठी पीढ़ी के विमान बनाने की कोशिश में हैं, इसलिए भारत को भी तेजी दिखानी होगी। यह अच्छा है कि भारत निजी कंपनियों के सहयोग से पांचवीं पीढ़ी के लड़ाकू विमानों को तैयार करने में जुट गया है, लेकिन वह इससे अनभिज्ञ नहीं हो सकता कि चीन छठी पीढ़ी के लड़ाकू विमान का परीक्षण कर चुका है। अब जब भारत आत्मनिर्भरता पर जोर दे रहा है, तब फिर उसे अपनी जरूरत की रक्षा सामग्री भी खुद बनाने के लिए कमर कसनी चाहिए।

उलटी गिनती शुरू

झारखंड में माओवाद अब अपने अंतिम चरण में है। पलामू, गढ़वा, लातेहार, बोकारो, गिरिडीह और हजारीबाग जैसे जिले, जो कभी माओवादियों के सुरक्षित गढ़ माने जाते थे, अब सुरक्षा बलों की लगातार कार्रवाई से कमजोर हो चुके हैं। झुमरा से पारसनाथ तक का क्षेत्र उनके प्रभाव में था, लेकिन अब स्थिति बदल चुकी है। इस वर्ष के पहले नौ महीनों में 32 माओवादी मुठभेड़ में मारे गए, 200 से अधिक गिरफ्तार हुए और कई ने आत्मसमर्पण किया। हाल ही में गुमला जिले में जेजेएमपी के तीन कमांडरों को सुरक्षा बलों ने मार गिराया, जबकि हजारीबाग में एक करोड़ रुपये के इनामी माओवादी का सफाया किया गया। राज्य के डीजीपी का कहना है कि झारखंड के माओवादी 2026 का सूर्योदय नहीं देखेंगे। अब केवल सारंडा क्षेत्र में बचे गिने-चुने माओवादी ही चुनौती बने हुए हैं। माओवाद प्रभावित जिलों में विकास और सामाजिक कल्याण पर भी ध्यान दिया जा रहा है। लोहरदगा, गुमला और गिरिडीह जैसे क्षेत्रों को विशेष केंद्रीय सहायता के तहत 15 करोड़ रुपये दिए गए हैं, ताकि उग्रवाद से उत्पन्न चुनौतियों का समाधान किया जा सके। झारखंड में सुरक्षा बलों की सटीक रणनीति और विकास पहलों का संयोजन माओवादी खतरे को समाप्त करने की दिशा में निर्णायक कदम साबित हो रहा है। लाल गलियारा अब मिटने की कगार पर है और स्थानीय प्रशासन के प्रयासों से यहां स्थायी शांति और विकास की उम्मीद जग रही है।

बंदूक की धमक ढलान पर है और विकास की राह पर नया झारखंड चल पड़ा है

प्रगति के नए इंजन बनते जीसीसी

आदित्य सिन्हा

इस दशक के अंत तक जीसीसी 2.5 करोड़ नई नौकरियां सृजित करने के साथ नवाचार को नई उड़ान दे सकते हैं

अवधेश राजपूत

पिछले कुछ समय से भारत ग्लोबल कैपिबिलिटी सेंटर्स यानी वैश्विक क्षमता केंद्रों के मानचित्र पर मजबूती से उभरा है। जीसीसी कहे जाने वाले ये केंद्र विकास के नए इंजन बनते हुए दिख रहे हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप द्वारा एच1बी वीजा पर की जा रही मनमानी के बाद भारत के लिए जीसीसी के मोर्चे पर बन रहे अवसरों का दायरा और भी बढ़ सकता है। बदली हुई परिस्थितियों में निवेश को लुभाने और प्रतिभाओं को खपाने की कहीं अधिक गुंजाइश बनेगी। एक तरह से एच1 बी वीजा प्रतिबंध देश में रोजगार विस्तार और नवाचार को गति देने का माध्यम भी बन सकते हैं।

जीसीसी बहुराष्ट्रीय कंपनी द्वारा किसी अन्य देश में स्थापित कार्यस्थल होता है। इसकी स्थापना का उद्देश्य साफ्टवेयर विकास, अनुसंधान, डेटा विश्लेषण, ग्राहक सहायता या वित्तीय प्रबंधन जैसे व्यवसाय के महत्वपूर्ण पहलुओं को संभालना है। एक समय देश में काल सेंटर कामकाज की संस्कृति विकसित हुई थी, पर ये जीसीसी उनसे कहीं बढ़कर हैं। ये नए उत्पादों का डिजाइन करते हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस यानी एआइ से जुडे उपकरण बनाते हैं। वैश्विक बैंकिंग संचालन संभालते हैं और यहां तक कि अपनी मूल कंपनियों के लिए उच्चस्तरीय शोध भी करते हैं। भारत में 1,800 से अधिक जीसीसी सक्रिय हैं, जो 21.6 लाख से अधिक लोगों को रोजगार देते हैं। भारत में प्रतिभाओं के बड़े वर्ग, अपेक्षाकृत कम लागत और वीजा सहूलियत जैसे प्रमुख पहलू वैश्विक दिग्गजों को यहां जीसीसी स्थापना के लिए प्रेरित करते हैं। देखा जाए तो भारतीय जीसीसी इकोसिस्टम दुनिया भर की दिग्गज कंनियों के लिए कम पैसों में अधिक नवाचार का आधार बनता जा रहा है, जिसमें भारतीय प्रतिभाओं को भी लाभ मिल रहा है।

'कैटालाइजिंग वैल्यू क्रिएशन इन इंडियन ग्लोबल कैपिबिलिटी सेंटर्स' शीर्षक से प्रकाशित पीडब्ल्यूसी की एक हालिया रिपोर्ट वैश्विक कंपनियों और भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए जीसीसी के महत्व पर प्रकाश डालती है। जीसीसी द्वारा अपनी मूल कंपनियों के कामकाज का बहुत छोटा सा हिस्सा संभालने के बावजूद बावजूद वित्त वर्ष 2020 से 2024 के बीच इन्होंने अपनी मूल कंपनियों के लिए सालाना 10 से 11 प्रतिशत की वैल्यू बढ़ाने का काम किया है। बोस्टन कंसल्टेंसी ग्रुप (बीसीजी) एक रिपोर्ट यह बताती है कि भारत न केवल जीसीसी का सबसे बड़ा केंद्र है, बल्कि प्रदर्शन के मामले में भी सबसे संतुलित है। भारत में 30 प्रतिशत जीसीसी बेहतरीन प्रदर्शन करने वाले हैं, जबकि छह प्रतिशत ही ऐसे हैं जो अन्य देशों से कमतर प्रदर्शन कर रहे हैं। यह पहलू बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि भारतीय जीसीसी अब एआइ, क्लाउड कंप्यूटिंग, साइबर सुरक्षा, डाटा एनालिटिक्स और उपयोगकर्ता अनुभव डिजाइन जैसे आधुनिक एवं उन्नत क्षेत्रों में विस्तार कर रहे हैं। वे जोखिम और अनुपालन, आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन, ग्राहक सेवा वितरण और संचालन के स्तर पर डिजिटल कायाकल्प की प्रक्रिया से भी जुड़े हैं। इस दौर में जब एआइ और जेनएआइ अपने आरंभिक चरण में है, तब भारतीय जीसीसी लागत-बचत और वितरण भूमिकाओं से नवाचार केंद्रों में बदल रहे हैं, जो वैश्विक कंपनियों की प्रतिस्पर्धा क्षमताएं बढ़ाने और उनकी प्रगति में सहायक बन रहे हैं।

केंद्र सरकार भी जीसीसी को प्रोत्साहन देने में लगी है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कुछ दिन पहले ही विशाखापत्तनम में आयोजित एक सम्मेलन में कहा कि केंद्र राज्यों के साथ मिलकर भारत को जीसीसी का सबसे आकर्षक केंद्र बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। उनका आशय था कि बेंगलुरु, हैदराबाद और गुरुग्राम जैसे महानगर आज इस मुहिम में आगे हैं, लेकिन इसके विकास की अगली बयार टीयर-2 और टीयर-3 शहरों में बहनी चाहिए। इसके लिए बुनियादी ढांचे, डिजिटल कनेक्टिविटी और कौशल विकास पर ध्यान देना होगा। केंद्र सरकार पूंजीगत व्यय में वृद्धि से इस मोर्चे पर प्रयासों को परवान चढ़ाने में भी लगी है। इसके चलते देश भर में हवाई अड्डों, रेलवे, मेट्रो, बंदरगाहों और राजमार्गों का विस्तार हो रहा है।

उद्योग संगठन सीआइआइ ने भी जीसीसी इकोसिस्टम को और मजबूत बनाने के लिए कुछ उपाय सुझाए हैं। उसने सुझाया है कि केंद्र, राज्यों और वैश्विक निवेशकों के बीच समन्वय के लिए एक राष्ट्रीय जीसीसी परिषद गठित की जाए। एआइ, अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी और क्वांटम एनालिटिक्स जैसे उन्नत क्षेत्रों के लिए विश्वस्तरीय बुनियादी ढांचे के साथ डिजिटल आर्थिक क्षेत्र यानी डीईएजेड विकसित किए जाएं। साइबर सुरक्षा, इंजीनियरिंग शोध एवं विकास और उत्पाद नवाचार जैसे क्षेत्रों में उत्कृष्टता केंद्रों के माध्यम से उद्योग-शिक्षा साझेदारी को मजबूत करने पर भी उसने जोर दिया है।

जीसीसी के अगले चरण के विस्तार में महानगरों से परे उनका दायरा बढ़ाने के लिए एक सिंगल विंडो अनुमति प्रणाली अपनानी होगी, ताकि वैश्विक कंपनियों को भूमि अधिग्रहण, डाटा केंद्र और अनुपालन संबंधी अनुमति त्वरित गति से प्राप्त हो सके। दूसरा, उच्च-मूल्य से जुड़े कार्यों के लिए लक्षित प्रोत्साहनों का डिजाइन भी उतना ही महत्वपूर्ण है, जो जीसीसी को शोध एवं विकास, उत्पाद डिजाइन और साइबर सुरक्षा जैसे परिदृश्य में आगे बढ़ाएं। तीसरा, छोटे शहरों में बुनियादी ढांचे और उससे जुड़े अन्य अनेक पहलुओं को दुरुस्त करना। चौथा, कौशल के स्तर पर खाई को पाटने के लिए भविष्योन्मुख क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर कौशल विकास एवं प्रमाणन कार्यक्रम शुरू करने की आवश्यकता है, जो उद्योग-शिक्षा साझेदारी पर आधारित हों। इस दिशा में संतुलित और समावेशी विकास सुनिश्चित करने के लिए राज्य स्तर की जीसीसी नीतियों का राष्ट्रीय ढांचे से उचित तालमेल भी उतना ही आवश्यक होगा। स्थानीय स्तर पर भूमि और बिजली सब्सिडी और लक्षित कौशल विकास कार्यक्रम को लेकर भी सक्रियता दिखानी होगी। यदि इन बिंदुओं पर ध्यान दिया गया तो इस दशक के अंत तक जीसीसी 2.5 करोड़ नई नौकरियां सृजित करने के साथ नवाचार को नई उड़ान दे सकते हैं।

(लेखक लोक-नीति विश्लेषक हैं)

response@jagran.com

आधारभूत ढांचे को लीलती अतिवृष्टि

मान सिंह

यह ठीक नहीं होगा कि मानसून के विदा होते ही बाढ़ और जलजमाव जनित परेशानियों को भुला दिया जाए

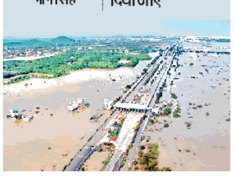

सुनिश्चित हो बुनियादी ढांचे का उचित रखरखाव। फाइल

इस मानसून ने यह दर्शाया कि वर्षा का स्वरूप पूरी तरह बदल चुका है। मानसून की विदाई के बीच देश के अनेक हिस्सों में भारी बारिश देखने को मिली। पिछले दशकों के अनुभवों पर गौर करें तो बाढ़ का प्रकोप मुख्यतः पूर्वी और उत्तर-पूर्वी राज्यों जैसे असम, पश्चिम बंगाल, बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश में देखने को मिलता था, लेकिन इस वर्ष का परिदृश्य बिल्कुल भिन्न है। जम्मू-कश्मीर, हिमाचल, उत्तराखंड के साथ-साथ गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली और पंजाब तक में बाढ़ का विकराल रूप सामने आया। पंजाब और हरियाणा, जो देश के लिए प्रमुख खाद्यान्न उत्पादक क्षेत्र माने जाते हैं, वहां बाढ़ के कारण लाखों हेक्टेयर में खड़ी फसलें नष्ट हो गईं। बादल फटने के कारण पहाड़ी राज्यों जैसे उत्तराखंड, हिमाचल, जम्मू-कश्मीर के विभिन्न स्थानों पर जन-धन की भारी हानि हुई। इसे केवल दुर्योग नहीं समझा जाना चाहिए। अब यह साफ है कि जलवायु परिवर्तन के कारण तूफान, चक्रवात, अतिवृष्टि, बादल फटने और भूस्खलन जैसी प्राकृतिक आपदाएं अधिक होंगी। इससे देश भर में सभी प्रकार की फसलों की हानि के साथ-साथ मौजूदा बुनियादी ढांचे जैसे रेल, सड़क, बिजली, बड़े पुल, दूरसंचार नेटवर्क आदि को भी क्षति होगी। इसके परिणामस्वरूप राष्ट्र को चौतरफा हानि झेलनी पड़ेगी। इस समस्या का टिकाऊ और दीर्घकालिक समाधान क्या हो सकता है, इस पर गंभीर चिंतन होना चाहिए और इसमें देर नहीं की जानी चाहिए। यह ठीक नहीं होगा कि मानसून विदा होते ही बाढ़ और जलजमाव जनित परेशानियों को भुला दिया जाए।

अनेक वैज्ञानिक अध्ययन बताते हैं कि आने वाले वर्षों में बादल फटने की आवृत्ति बढ़ सकती है और जलवृष्टि की तीव्रता भी अनिश्चित रहेगी। कब, कहां और कितनी वर्षा होगी, इसका पूर्वानुमान भी कठिन होगा। अभी तक विश्व में मौसम विज्ञान से संबंधित कोई उपग्रह और उपकरण बादल फटने की भविष्यवाणी करने में सक्षम नहीं हुए हैं और न ही निकट भविष्य में इसकी संभावना है। इसलिए जल से संबंधित बुनियादी ढांचे की बार-बार हानि को सहने के बजाय, एक साथ राष्ट्रव्यापी सुदृढ़ इन्फ्रास्ट्रक्चर का निर्माण किया जाना चाहिए। भारत की विकास यात्रा में सड़क, रेल, हवाई मार्ग, नागरिक विमानन, बिजली, दूरसंचार और मोबाइल आदि का एक व्यापक नेटवर्क स्थापित किया गया है। इन क्षेत्रों में अभी पर्याप्त निवेश का सिलसिला कायम है। इसी के चलते आज भारत एक बड़ी अर्थव्यवस्था बनकर उभरा है। पिछले 50 वर्षों में जल इन्फ्रास्ट्रक्चर को सुदृढ़ करने के लिए भी प्रयास किए गए हैं, लेकिन वे आज पर्याप्त नहीं दिखते।

नदियों को आपस में जोड़ने की योजनाओं पर 1972 से विचार चल रहा है, लेकिन केवल एक-दो उदाहरण ही सामने आए हैं। जल शक्ति मंत्रालय के गठन की प्रासंगिकता को और भी बल मिलेगा, यदि सभी प्रकार के जल संसाधनों का उपयोग कर जल शक्ति अभियान के अंतर्गत आने वाले दो मुख्य उद्देश्यों 'हर घर को नल से जल' और 'हर खेत को जल' को पाइपलाइन या खुली नहरों के नेटवर्क के माध्यम से प्राप्त किया जाए। हमारे देश में जल संबंधी बुनियादी ढांचे को स्थापित करने से समुचित राजस्व की प्राप्ति नहीं हो पाती। इसके परिणामस्वरूप जो भी ढांचा बनता है, उसके रख-रखाव के लिए आवश्यक जन-धन संसाधन बहुत कम आवंटित होते हैं। अन्य क्षेत्रों जैसे रेल, सड़क, हवाई मार्ग, मोबाइल नेटवर्क आदि में निवेश से संबंधित संगठनों को राजस्व और अन्य अनेक लाभ प्राप्त होते हैं। ऐसे में जल अवसंरचना के निर्माण में निजी कंपनियां आने से हिचकती हैं और निवेश करने से कतराती हैं।

वर्तमान सरकार का लक्ष्य आत्मनिर्भर और विकसित भारत है। यह लक्ष्य प्राप्त करना तब संभव होगा, जब भारत जल के क्षेत्र में सुरक्षित होगा, क्योंकि कृषि की सुरक्षा जल सुरक्षा पर निर्भर करती है। भविष्य में जलवायु परिवर्तन के दुष्परिणाम शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में और विकराल होंगे। इसके परिणामस्वरूप देश में बड़े संकट खड़े होंगे। अतिवृष्टि जनित जल संकट का स्वरूप क्या होगा, यह केवल प्रकृति ही जानती है। सबसे अधिक जनसंख्या वाला भारत आपदा प्रबंधन और निवारण की तैयारी हमेशा करता रहता है। अब उसे हर स्तर पर जल निकासी के लिए सक्षम ढांचे को भी तैयार करने की आवश्यकता है। अच्छा हो कि नदियों को जोड़ने वाली परियोजनाओं के साथ इसे जोड़ा जाए, ताकि एक स्थान के बाढ़ का पानी दूसरे स्थान का संरक्षित जल संसाधन बने, न कि समुद्र में मिल जाए। जल अवसंरचना के निर्माण की गति में वृद्धि और सार्वजनिक निवेश को बढ़ाने में और देरी नहीं होनी चाहिए। वर्ष 2019-2020 की परिकल्पना के अनुसार भारत में जल इन्फ्रास्ट्रक्चर निर्माण में 15 वर्षों तक 270 अरब डालर का निवेश होना था। इस परिकल्पना पर पुनर्विचार की आवश्यकता है। यह समय की मांग है कि जल निकासी के लिए पाइपलाइन या नहरों का ऐसा नेटवर्क स्थापित किया जाए कि क्षेत्रों का आपस में जल संतुलन स्थापित हो सके। सुदृढ़ राष्ट्रव्यापी जल अवसंरचना के निर्माण में चीन की भांति भारी निवेश करके ही भारत आत्मनिर्भर और 2047 तक विकसित राष्ट्र बन सकता है।

(लेखक आइसीएआर-आइएआरआइ के जल प्रौद्योगिकी केंद्र के पूर्व परियोजना निदेशक हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

मां भारती

मां शक्ति स्वरूपा है। इसीलिए मातृशक्ति को पूजनीय माना गया है। हर सुख-दुख में माता का आह्वान किया जाता है, जिससे समस्त विघ्न प्रभावहीन होते हैं। मां की उपस्थिति सौभाग्य की सूचक है। मानव मात्र के लिए माता आराध्य एवं स्तुत्य हैं। भगवती के स्वरूप में देवी मां जीवन की सफलता और उद्धार का हेतु है। शक्तिहीन व्यक्ति, शक्तिहीन समाज या शक्तिहीन राष्ट्र अधिक समय तक जीवित नहीं रहते। शक्ति के बिना शरीर मिट जाता है। इसलिए शक्तिरूप में विद्यमान माता के श्रीचरणों का आश्रय लिया जाए। जो मानव माता की महत्ता से दूर है, वह अभागा इस धरा पर जड़वत है। माता की प्रसन्नता पुत्र का भाग्योदय करने में सक्षम है। भारत माता के सपूत शक्ति के रूप में उनकी आराधना उत्पत्ति काल से करते हैं।

भारत माता स्थूल रूप में एक दिव्य शक्ति हैं, जो देवलोक से उतरकर पृथ्वी माता की गोद में विराजमान हैं। पृथ्वी माता भी गौ माता, तुलसी माता, गायत्री माता और वेदमाता की तरह लोक कल्याण के लिए अवतरित हैं। पृथ्वी माता की पुत्री हैं, मां भारती। एक समय में भारत का प्रभुत्व संपूर्ण पृथ्वी पर व्याप्त था। मां भारती के अस्तित्व को आज भी सभी पुरानी सभ्यताएं स्वीकार करती हैं। भारत माता की शक्ति को अनेक महान देश पहचानते हैं। विश्वभर के विद्वान इससे भिज्ञ हैं। विज्ञानियों और दार्शनिकों को तथ्यों का ज्ञान है। भारत में शक्ति का केंद्र आदिकाल से है, जिसकी धुरी पर भूमंडल टिका हुआ है। मां के रूप में विराजमान देवी की शक्ति हर बालिका में उपस्थित है, इसमें संदेह नहीं। इसलिए मां भारती का स्वरूप भगवती के सान्निध्य में प्रकाशवान है। सभी देवियों ने मिलकर भारती की उत्पत्ति की, और कहा-भारती तीनों लोकों में अपनी कीर्ति से मानवता को विशाल आकार प्रदान करेगी। प्रत्येक नवरात्र के पावन अवसर पर देवी भवानी स्वरूपा मां भारती की स्तुति परंपरागत है।

डा. राघवेंद्र शुक्ल

बच्चों के लिए रचनात्मक हो होमवर्क की राह

ममता कुशवाहा

सीबीएसई ने शिक्षकों से आग्रह किया है कि वे बच्चों को ऐसा होमवर्क दें, जिससे उनकी रुचि जागृत हो और वे नीरसता में न डूबें

विद्यालय वह स्थल है जहां केवल पाठ्यक्रम नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला, सोचने-समझने की क्षमता और भविष्य की रूपरेखा भी गढ़ी जाती है। अब शिक्षा व्यवस्था में यह विचार प्रमुखता से सामने आया है कि बच्चों को रटने के बजाय सीखने पर जोर दिया जाए, ताकि उनका सर्वांगीण विकास हो सके। होमवर्क का उद्देश्य कभी भी बच्चों को थकाना या उनका समय बर्बाद करना नहीं था। यह तो कक्षा में सीखी गई बातों को पुख्ता करने और आत्म-अध्ययन की आदत डालने का साधन था। किंतु धीरे-धीरे यह एक भारी-भरकम बोझ में तब्दील हो गया। बच्चे घंटों किताबों और कापियों में उलझे रहते हैं, और खेलकूद, परिवार से बातचीत या अपनी रुचियों को विकसित करने के लिए समय ही नहीं बचता।

2018 की ग्लोबल एजुकेशन मानिटरिंग रिपोर्ट में यह प्रमाणित हुआ है कि हमारे देश में बच्चों पर होमवर्क का बोझ अत्यधिक है। इसमें बताया गया कि शहरी क्षेत्रों के लगभग 74 प्रतिशत बच्चों को रोज भारी-भरकम होमवर्क मिलता है, जिसमें उनका तीन से चार घंटे का समय खप जाता है। यह स्थिति बच्चों की मानसिक और शारीरिक सेहत दोनों के लिए हानिकारक है। अमेरिका जैसे देशों ने शिक्षा व्यवस्था को समयानुकूल बनाते हुए होमवर्क की सीमा तय कर दी है। वहां '10 मिनट नियम' लागू किया गया है, जिसके तहत पहली कक्षा के बच्चों को केवल 10 मिनट का होमवर्क दिया जाता है और बारहवीं कक्षा तक पहुंचते-पहुंचते यह सीमा अधिकतम 120 मिनट तक ही रहती है। भारतीय संदर्भ में भी अब बदलाव की बयार बह रही है। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) ने हाल में शिक्षकों से यह आग्रह किया है कि वे बच्चों को ऐसा होमवर्क दें, जिससे उनकी रुचि जागृत हो और वे नीरसता में न डूबें। विद्यालय अब प्रयास कर रहे हैं कि बच्चों को घर पर ऐसे काम दिए जाएं, जो उनके अनुभव संसार को समृद्ध करें और उनके भीतर प्रश्न पूछने, खोजने और प्रयोग करने की जिज्ञासा जगाएं।

आज अधिकांश स्कूल प्रोजेक्ट आधारित शिक्षा की ओर बढ़ रहे हैं। बच्चों को केवल प्रश्न हल करने या रटना ही नहीं पड़ता, बल्कि उन्हें किसी विषय पर प्रस्तुति तैयार करनी होती है, चित्र बनाना होता है, माडल बनाना होता है या फिर समूह गतिविधियों में भाग लेना होता है। इस प्रकार की शिक्षा उन्हें केवल किताबों तक सीमित नहीं रखती, बल्कि वास्तविक जीवन की परिस्थितियों से जोड़ती है। जब बच्चा किसी विषय को खुद खोजता, देखता और अनुभव करता है, तभी वह उसे जीवन भर याद रखता है। केवल रटना अल्पकालिक स्मृति देता है, लेकिन सीखने की प्रक्रिया दीर्घकालिक प्रभाव छोड़ती है। यह कहा जा सकता है कि बच्चों के होमवर्क में रटने की जगह सीखने पर ज़ोर देना एक स्वागतयोग्य पहल है।

(लेखिका शिक्षिका हैं)

मेलबाक्स

हिंसा से कमजोर होगा लोकतंत्र

'हिंसा की चपेट में लेह' शीर्षक से प्रकाशित संपादकीय पढ़ा। लद्दाख को अलग राज्य का दर्जा और संविधान की छठी अनुसूची में शामिल करने की मांग के लिए लेह में जारी आंदोलन हिंसक हुआ, जिसमें चार लोगों की मौत हो गई। अब वहां शांति स्थापना जरूरी है, क्योंकि यह सीमावर्ती क्षेत्र चीन और पाकिस्तान से जुड़ा है। अहिंसक प्रदर्शन का इस तरह अचानक हिंसक प्रदर्शन में बदलना कहीं न कहीं साजिश का हिस्सा हो सकता है, जिसका उद्देश्य मांगें मनवाने के लिए प्रतीक्षा करने के बजाय सीमावर्ती क्षेत्र को अशांत करके सरकार के लिए मुसीबत खड़ी करना बन गया। सरकार ने लेह की समस्या के समाधान पर चर्चा के लिए आंदोलनकारियों को पहले ही समय दे रखा था, परंतु उससे पहले ऐसा हिंसक प्रदर्शन होना यह दर्शाता है कि कुछ लोग आंदोलनकारियों की आड़ लेकर अपना हित साध रहे हैं। कहीं नागरिकों को प्रदत्त शांतिपूर्ण प्रदर्शन करने का अधिकार का ऐसा दुरुपयोग, भविष्य में किसी अनहोनी का संकेत तो नहीं है। भीड़तंत्र को हिंसा के लिए भड़काने और उकसाने वाले व्यक्ति के खिलाफ गैर-इरादतन हत्या और रासुका लगाना चाहिए। इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि यह घटना केवल लद्दाख ही नहीं, बल्कि देश के खिलाफ सोची-समझी साजिश भी हो सकती है। इस पूरे घटनाक्रम में अपनी जान गंवाने वाले नागरिकों के प्रति गहन शोक-संवेदना व्यक्त करते हुए यथाशीघ्र शांति की स्थापना के साथ ही यह विचार और चिंतन किया जाना चाहिए कि अराजक और हिंसक भीड़ के नियंत्रण और प्रबंधन में क्या-क्या सुधार अपेक्षित हैं? भीड़तंत्र का प्रबंधन कानून व्यवस्था और शांति बनाए रखने हेतु जरूरी है।

sonimohit895@gmail.com

क्रांतिकारी उपलब्धि

भारत ने रक्षा प्रौद्योगिकी में एक क्रांतिकारी उपलब्धि हासिल की है, जो उसकी सामरिक शक्ति को अभेद्य बनाती है। डीआरडीओ और त्रि-सेवा सामरिक बल कमांड (एसएफसी) ने रेल-आधारित मोबाइल लांचर से 2,000 किमी रेंज वाली 'अग्नि-प्राइम' मिसाइल का सफल परीक्षण किया। यह मिसाइल अचूक सटीकता, विनाशकारी शक्ति और अद्वितीय गतिशीलता के साथ आधुनिक युद्ध की जटिलताओं का जवाब देती है। रेल-आधारित प्रणाली इसे दुश्मन के लिए लगभग अचूक बनाती है, जिससे भारत उन विशिष्ट देशों की श्रेणी में शामिल हो गया, जो ऐसी उन्नत तकनीक रखते हैं। 'अग्नि-प्राइम' अत्याधुनिक प्रणोदन प्रणाली, समग्र राकेट मोटर और उन्नत नेविगेशन से युक्त है। इसकी कैनिस्टर-लांच सुविधा त्वरित प्रक्षेपण, सुरक्षित भंडारण और तेज स्थानांतरण सक्षम करती है। यह मिसाइल 'अग्नि-1' को प्रतिस्थापित कर भारत के सामरिक शस्त्रागार को और प्रभावी बनाएगी। डीआरडीओ के अनुसार, यह पहला प्री-इंडक्शन नाइट लांच था, जो परमाणु शस्त्रागार की विश्वसनीयता को सुदृढ़ करता है। क्षेत्रीय खतरों, विशेषकर पड़ोसी देशों से उत्पन्न चुनौतियों के खिलाफ 'अग्नि-प्राइम' एक शक्तिशाली हथियार है। 'पृथ्वी-2', 'अग्नि-2', 'अग्नि-3', 'अग्नि-4' और 'अग्नि-5' के साथ यह भारत की बैलिस्टिक मिसाइल क्षमता को नई ऊंचाइयों तक ले जाती है।

प्रो. आरके जैन, बड़वानी (मप्र)

पर्यावरणीय संतुलन की चुनौती

एआइ विशेष रूप से जेनरेटिव एआइ हमारे समय की सबसे प्रभावशाली और परिवर्तनकारी तकनीक बन चुकी है। यह तकनीक स्वास्थ्य, शिक्षा, उद्योग, शोध और संचार जैसे क्षेत्रों में नए अवसर खोल रही है। दवा खोज से लेकर रचनात्मक सामग्री निर्माण और व्यावसायिक निर्णय लेने तक, एआइ अद्वितीय गति से समाज और अर्थव्यवस्था को रूपांतरित कर रही है। लेकिन इसका दूसरा पहलू भी उतना ही गंभीर है, पर्यावरण पर बढ़ता बोझ। बड़े एआइ माडल को प्रशिक्षित करने में अत्यधिक ऊर्जा की आवश्यकता होती है। यही नहीं, एआइ संचालन के लिए विशाल मात्रा में पानी की खपत भी होती है। एआइ के वैश्विक उपयोग से प्रतिदिन लगभग 25 करोड़ लीटर पानी खर्च होता है। budawanwalas55@gmail.com

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।

अपने पत्र इस पते पर भेजें :
दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल: response@jagran.com

संस्थापक- स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक- स्व. नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन- महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक- संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई/रेल शुल्क ₹-2 अतिरिक्त।

****

विवेक की नैया ही विपत्ति में बेड़ा पार लगाती है

रक्षा तैयारी में तेजी

देश में पहली बार ट्रेन से अग्नि-प्राइम मिसाइल दागने का सफल परीक्षण इसका सूचक है कि भारत अपनी रक्षा तैयारियों को लेकर सजग है। अग्नि-प्राइम न्यूक्लियर बैलिस्टिक मिसाइल है और यह दो हजार किमी से अधिक मार कर सकती है और तीन हजार किलोग्राम तक विस्फोटक वहन कर सकती है। इस मिसाइल को ट्रेन से लांच करने में महारत हासिल करने का मतलब है कि भारत अब कहीं से भी परमाणु हथियारों से लैस मिसाइलें दाग सकता है। ऐसी क्षमता दुनिया के चंद देशों के पास ही है। भारत ने ट्रेन से दागी जाने वाली मिसाइल के सफल परीक्षण के साथ एक बार फिर अपनी सामरिक और तकनीकी श्रेष्ठता सिद्ध की। भारत किस तरह रक्षा के हर मोर्चे को मजबूत करने में लगा हुआ है, इसका परिचायक रक्षा मंत्रालय की ओर से हिंदुस्तान एयरोनाटिक्स लिमिटेड यानी एचएएल के साथ किया गया 62 हजार करोड़ रुपये का करार भी है। इस समझौते के तहत वायुसेना को 97 तेजस लड़ाकू विमान मिलेंगे। ये उन मिग-21 लड़ाकू विमानों का स्थान लेंगे, जिन्हें वायुसेना से विदा किया जा रहा है। इससे बेहतर और कुछ नहीं कि विदेशी लड़ाकू विमानों का स्थान स्वदेशी लड़ाकू विमान लें। रक्षा मंत्रालय और एचएएल के बीच हुए समझौते के अनुसार वायुसेना को तेजस लड़ाकू विमानों की आपूर्ति 2027-28 में शुरू होगी। चूंकि एचएएल सरकार के स्वामित्व वाली कंपनी है, इसलिए उसे यह देखना होगा कि आपूर्ति तय समय पर हो। उसे यह इसलिए सुनिश्चित करना होगा, क्योंकि अतीत में तेजस विमानों की समय पर आपूर्ति को लेकर सवाल उठ चुके हैं। ये सवाल स्वयं वर्तमान वायुसेना प्रमुख उठा चुके हैं। तेजस लड़ाकू विमानों को समय पर तैयार करने में एक बड़ी बाधा उसके इंजन हैं। हालांकि तेजस स्वदेशी लड़ाकू विमान है, लेकिन वह अपने इंजन और कुछ अन्य उपकरणों के लिए दूसरे देशों पर निर्भर है। यह निर्भरता एक समस्या है। इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि तेजस लड़ाकू विमानों के लिए अमेरिका से पर्याप्त संख्या में इंजन मिलने में देरी हो रही है। भारत का अगला लक्ष्य लड़ाकू विमानों के इंजन खुद बनाना होना चाहिए। चूंकि तेजस चौथी पीढ़ी का लड़ाकू विमान है और अमेरिका, रूस, चीन आदि पांचवीं पीढ़ी के लड़ाकू विमानों के बाद छठी पीढ़ी के विमान बनाने की कोशिश में हैं, इसलिए भारत को भी तेजी दिखानी होगी। यह अच्छा है कि भारत निजी कंपनियों के सहयोग से पांचवीं पीढ़ी के लड़ाकू विमानों को तैयार करने में जुट गया है, लेकिन वह इससे अनभिज्ञ नहीं हो सकता कि चीन छठी पीढ़ी के लड़ाकू विमान का परीक्षण कर चुका है। अब जब भारत आत्मनिर्भरता पर जोर दे रहा है, तब फिर उसे अपनी जरूरत की रक्षा सामग्री भी खुद बनाने के लिए कमर कसनी चाहिए।

जरूरी है सावधानी

गया जिले के खिजरसराय में पांच किशोरों की डूबने से मौत हो गई। यह दुखदायी घटना तब हुई, जब वे फल्गु नदी में स्नान कर रहे थे। इस बीच एक गहरे पानी में डूबने लगा, जिसे बचाने के चक्कर में साथी किशोर भी डूब गए। स्थानीय ग्रामीणों का कहना है कि वे स्नान के दौरान रील भी बना रहे थे, इसी बीच बालू खनन के कारण बने गहरे गड्ढे में फंस जाने के कारण एक किशोर डूबने लगा। मृत बच्चों में कुछ छात्र भी थे, जो परीक्षा देकर लौट रहे थे। घर जाने की बजाय वे स्नान के लिए नदी में उतर गए। इससे पहले भी ऐसी कई घटनाएं हुईं हैं, जिनमें बालू या मिट्टी खनन के कारण बने गड्ढे में डूबने से लोगों की जान गई है। ऐसा नहीं है कि इन घटनाओं के बाद स्थानीय प्रशासन उचित कार्रवाई नहीं करता। लेकिन, यह भी सच है कि अवैध तरीके से किए गए खनन की जानकारी भी प्रशासन तक कम ही पहुंच पाती है। आमजन को इस संबंध में आगे बढ़कर स्थानीय पुलिस-प्रशासन को सूचित करना होगा। जिससे उन जगहों पर सुरक्षा के इंतजाम किए जा सकें। अभिभावकों को भी इस संदर्भ में सजग रहने की जरूरत है। अगर बच्चे स्कूल गए हैं और नियत समय तक घर नहीं लौटें तो इसकी निगरानी की जानी चाहिए। इंटरनेट मीडिया के दौर में रील बनाना आम बात है, किंतु यह ध्यान रखना भी जरूरी है कि इसके चक्कर में वे कहीं परेशानी में न पड़ जाएं।

रील बनाने के चक्कर में लोग किशोर व युवा अक्सर जान तक गवां बैठते हैं। अभिभावकों को सावधानी के प्रति उन्हें जागरूक करने की जरूरत है।

कह के रहेंगे — माधव जोशी

जागरण जनमत — कल का परिणाम

क्या लेह में विरोध प्रदर्शन के दौरान हिंसा एक सुनियोजित साजिश है?

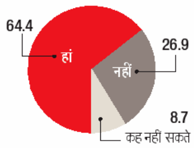

आज का सवाल
क्या सोनम वांगचुक के बयान भी लद्दाख में हिंसा भड़कने की वजह बने?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है। सभी आंकड़े प्रतिशत में।

प्रगति के नए इंजन बनते जीसीसी

आदित्य सिन्हा

इस दशक के अंत तक जीसीसी 2.5 करोड़ नई नौकरियां सृजित करने के साथ नवाचार को नई उड़ान दे सकते हैं

अवधेश राजपूत

पिछले कुछ समय से भारत ग्लोबल कैपिबिलिटी सेंटर्स यानी वैश्विक क्षमता केंद्रों के मानचित्र पर मजबूती से उभरा है। जीसीसी कहे जाने वाले ये केंद्र विकास के नए इंजन बनते हुए दिख रहे हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप द्वारा एच1बी वीजा पर की जा रही मनमानी के बाद भारत के लिए जीसीसी के मोर्चे पर बन रहे अवसरों का दायरा और भी बढ़ सकता है। बदली हुई परिस्थितियों में निवेश को लुभाने और प्रतिभाओं को खपाने की कहीं अधिक गुंजाइश बनेगी। एक तरह से एच1 बी वीजा प्रतिबंध देश में रोजगार विस्तार और नवाचार को गति देने का माध्यम भी बन सकते हैं।

जीसीसी बहुराष्ट्रीय कंपनी द्वारा किसी अन्य देश में स्थापित कार्यस्थल होता है। इसकी स्थापना का उद्देश्य साफ्टवेयर विकास, अनुसंधान, डेटा विश्लेषण, ग्राहक सहायता या वित्तीय प्रबंधन जैसे व्यवसाय के महत्वपूर्ण पहलुओं को संभालना है। एक समय देश में काल सेंटर कामकाज की संस्कृति विकसित हुई थी, पर ये जीसीसी उनसे कहीं बढ़कर हैं। ये नए उत्पादों का डिजाइन करते हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस यानी एआइ से जुडे उपकरण बनाते हैं। वैश्विक बैंकिंग संचालन संभालते हैं और यहां तक कि अपनी मूल कंपनियों के लिए उच्चस्तरीय शोध भी करते हैं। भारत में 1,800 से अधिक जीसीसी सक्रिय हैं, जो 21.6 लाख से अधिक लोगों को रोजगार देते हैं। भारत में प्रतिभाओं के बड़े वर्ग, अपेक्षाकृत कम लागत और वीजा सहूलियत जैसे प्रमुख पहलू वैश्विक दिग्गजों को यहां जीसीसी स्थापना के लिए प्रेरित करते हैं। देखा जाए तो भारतीय जीसीसी इकोसिस्टम दुनिया भर की दिग्गज कंनियों के लिए कम पैसों में अधिक नवाचार का आधार बनता जा रहा है, जिसमें भारतीय प्रतिभाओं को भी लाभ मिल रहा है।

'कैटालाइजिंग वैल्यू क्रिएशन इन इंडियन ग्लोबल कैपिबिलिटी सेंटर्स' शीर्षक से प्रकाशित पीडब्ल्यूसी की एक हालिया रिपोर्ट वैश्विक कंपनियों और भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए जीसीसी के महत्व पर प्रकाश डालती है। जीसीसी द्वारा अपनी मूल कंपनियों के कामकाज का बहुत छोटा सा हिस्सा संभालने के बावजूद बावजूद वित्त वर्ष 2020 से 2024 के बीच इन्होंने अपनी मूल कंपनियों के लिए सालाना 10 से 11 प्रतिशत की वैल्यू बढ़ाने का काम किया है। बोस्टन कंसल्टेंसी ग्रुप (बीसीजी) एक रिपोर्ट यह बताती है कि भारत न केवल जीसीसी का सबसे बड़ा केंद्र है, बल्कि प्रदर्शन के मामले में भी सबसे संतुलित है। भारत में 30 प्रतिशत जीसीसी बेहतरीन प्रदर्शन करने वाले हैं, जबकि छह प्रतिशत ही ऐसे हैं जो अन्य देशों से कमतर प्रदर्शन कर रहे हैं। यह पहलू बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि भारतीय जीसीसी अब एआइ, क्लाउड कंप्यूटिंग, साइबर सुरक्षा, डाटा एनालिटिक्स और उपयोगकर्ता अनुभव डिजाइन जैसे आधुनिक एवं उन्नत क्षेत्रों में विस्तार कर रहे हैं। वे जोखिम और अनुपालन, आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन, ग्राहक सेवा वितरण और संचालन के स्तर पर डिजिटल कायाकल्प की प्रक्रिया से भी जुड़े हैं। इस दौर में जब एआइ और जेनएआइ अपने आरंभिक चरण में है, तब भारतीय जीसीसी लागत-बचत और वितरण भूमिकाओं से नवाचार केंद्रों में बदल रहे हैं, जो वैश्विक कंपनियों की प्रतिस्पर्धा क्षमताएं बढ़ाने और उनकी प्रगति में सहायक बन रहे हैं।

केंद्र सरकार भी जीसीसी को प्रोत्साहन देने में लगी है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कुछ दिन पहले ही विशाखापत्तनम में आयोजित एक सम्मेलन में कहा कि केंद्र राज्यों के साथ मिलकर भारत को जीसीसी का सबसे आकर्षक केंद्र बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। उनका आशय था कि बेंगलुरु, हैदराबाद और गुरुग्राम जैसे महानगर आज इस मुहिम में आगे हैं, लेकिन इसके विकास की अगली बयार टीयर-2 और टीयर-3 शहरों में बहनी चाहिए। इसके लिए बुनियादी ढांचे, डिजिटल कनेक्टिविटी और कौशल विकास पर ध्यान देना होगा। केंद्र सरकार पूंजीगत व्यय में वृद्धि से इस मोर्चे पर प्रयासों को परवान चढ़ाने में भी लगी है। वित्त वर्ष 2014 में जो पूंजीगत व्यय जीडीपी का 1.7 प्रतिशत था, वह वित्त वर्ष 2025 में बढ़कर 3.2 प्रतिशत हो गया। इसके चलते देश भर में हवाई अड्डों, रेलवे, मेट्रो, बंदरगाहों और राजमार्गों का विस्तार हो रहा है।

उद्योग संगठन सीआइआइ ने भी जीसीसी इकोसिस्टम को और मजबूत बनाने के लिए कुछ उपाय सुझाए हैं। उसने सुझाया है कि केंद्र, राज्यों और वैश्विक निवेशकों के बीच समन्वय के लिए एक राष्ट्रीय जीसीसी परिषद गठित की जाए। एआइ, अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी और क्वांटम एनालिटिक्स जैसे उन्नत क्षेत्रों के लिए विश्वस्तरीय बुनियादी ढांचे के साथ डिजिटल आर्थिक क्षेत्र यानी डीईएजेड विकसित किए जाएं। साइबर सुरक्षा, इंजीनियरिंग शोध एवं विकास और उत्पाद नवाचार जैसे क्षेत्रों में उत्कृष्टता केंद्रों के माध्यम से उद्योग-शिक्षा साझेदारी को मजबूत करने पर भी उसने जोर दिया है।

जीसीसी के अगले चरण के विस्तार में महानगरों से परे उनका दायरा बढ़ाने के लिए एक सिंगल विंडो अनुमति प्रणाली अपनानी होगी, ताकि वैश्विक कंपनियों को भूमि अधिग्रहण, डाटा केंद्र और अनुपालन संबंधी अनुमति त्वरित गति से प्राप्त हो सके। दूसरा, उच्च-मूल्य से जुड़े कार्यों के लिए लक्षित प्रोत्साहनों का डिजाइन भी उतना ही महत्वपूर्ण है, जो जीसीसी को शोध एवं विकास, उत्पाद डिजाइन और साइबर सुरक्षा जैसे परिदृश्य में आगे बढ़ाएं। तीसरा, छोटे शहरों में बुनियादी ढांचे और उससे जुड़े अन्य अनेक पहलुओं को दुरुस्त करना। चौथा, कौशल के स्तर पर खाई को पाटने के लिए भविष्योन्मुख क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर कौशल विकास एवं प्रमाणन कार्यक्रम शुरू करने की आवश्यकता है, जो उद्योग-शिक्षा साझेदारी पर आधारित हों। इस दिशा में संतुलित और समावेशी विकास सुनिश्चित करने के लिए राज्य स्तर की जीसीसी नीतियों का राष्ट्रीय ढांचे से उचित तालमेल भी उतना ही आवश्यक होगा। स्थानीय स्तर पर भूमि और बिजली सब्सिडी और लक्षित कौशल विकास कार्यक्रम को लेकर भी सक्रियता दिखानी होगी। यदि इन बिंदुओं पर ध्यान दिया गया तो इस दशक के अंत तक जीसीसी 2.5 करोड़ नई नौकरियां सृजित करने के साथ नवाचार को नई उड़ान दे सकते हैं।

(लेखक लोक-नीति विश्लेषक हैं)
response@jagran.com

आधारभूत ढांचे को लीलती अतिवृष्टि

मान सिंह

यह ठीक नहीं होगा कि मानसून के विदा होते ही बाढ़ और जलजमाव जनित परेशानियों को भुला दिया जाए

इस मानसून ने यह दर्शाया कि वर्षा का स्वरूप पूरी तरह बदल चुका है। मानसून की विदाई के बीच देश के अनेक हिस्सों में भारी बारिश देखने को मिली। पिछले दशकों के अनुभवों पर गौर करें तो बाढ़ का प्रकोप मुख्यतः पूर्वी और उत्तर-पूर्वी राज्यों जैसे असम, पश्चिम बंगाल, बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश में देखने को मिलता था, लेकिन इस वर्ष का परिदृश्य बिल्कुल भिन्न है। जम्मू-कश्मीर, हिमाचल, उत्तराखंड के साथ-साथ गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली और पंजाब तक में बाढ़ का विकराल रूप सामने आया। पंजाब और हरियाणा, जो देश के लिए प्रमुख खाद्यान्न उत्पादक क्षेत्र माने जाते हैं, वहां बाढ़ के कारण लाखों हेक्टेयर में खड़ी फसलें नष्ट हो गईं। बादल फटने के कारण पहाड़ी राज्यों जैसे उत्तराखंड, हिमाचल, जम्मू-कश्मीर के विभिन्न स्थानों पर जन-धन की भारी हानि हुई। इसे केवल दुर्योग नहीं समझा जाना चाहिए। अब यह साफ है कि जलवायु परिवर्तन के कारण तूफान, चक्रवात, अतिवृष्टि, बादल फटने और भूस्खलन जैसी प्राकृतिक आपदाएं अधिक होंगी। इससे देश भर में सभी प्रकार की फसलों की हानि के साथ-साथ मौजूदा बुनियादी ढांचे जैसे रेल, सड़क, बिजली, बड़े पुल, दूरसंचार नेटवर्क आदि को भी क्षति होगी। इसके परिणामस्वरूप राष्ट्र को चौतरफा हानि झेलनी पड़ेगी। इस समस्या का टिकाऊ और दीर्घकालिक समाधान क्या हो सकता है, इस पर गंभीर चिंतन होना चाहिए और इसमें देर नहीं की जानी चाहिए। यह ठीक नहीं होगा कि मानसून विदा होते ही बाढ़ और जलजमाव जनित परेशानियों को भुला दिया जाए।

अनेक वैज्ञानिक अध्ययन बताते हैं कि आने वाले वर्षों में बादल फटने की आवृत्ति बढ़ सकती है और जलवृष्टि की तीव्रता भी अनिश्चित रहेगी। कब, कहां और कितनी वर्षा होगी, इसका पूर्वानुमान भी कठिन होगा। अभी तक विश्व में मौसम विज्ञान से संबंधित कोई उपग्रह और उपकरण बादल फटने की भविष्यवाणी करने में सक्षम नहीं हुए हैं और न ही निकट भविष्य में इसकी संभावना है। इसलिए जल से संबंधित बुनियादी ढांचे की बार-बार हानि को सहने के बजाय, एक साथ राष्ट्रव्यापी सुदृढ़ इन्फ्रास्ट्रक्चर का निर्माण किया जाना चाहिए। भारत की विकास यात्रा में सड़क, रेल, हवाई मार्ग, नागरिक विमानन, बिजली, दूरसंचार और मोबाइल आदि का एक व्यापक नेटवर्क स्थापित किया गया है। इन क्षेत्रों में अभी पर्याप्त निवेश का सिलसिला कायम है। इसी के चलते आज भारत एक बड़ी अर्थव्यवस्था बनकर उभरा है। पिछले 50 वर्षों में जल इन्फ्रास्ट्रक्चर को सुदृढ़ करने के लिए भी प्रयास किए गए हैं, लेकिन वे आज पर्याप्त नहीं दिखते।

सुनिश्चित हो बुनियादी ढांचे का उचित रखरखाव ● फाइल

नदियों को आपस में जोड़ने की योजनाओं पर 1972 से विचार चल रहा है, लेकिन केवल एक-दो उदाहरण ही सामने आए हैं। जल शक्ति मंत्रालय के गठन की प्रासंगिकता को और भी बल मिलेगा, यदि सभी प्रकार के जल संसाधनों का उपयोग कर जल शक्ति अभियान के अंतर्गत आने वाले दो मुख्य उद्देश्यों 'हर घर को नल से जल' और 'हर खेत को जल' को पाइपलाइन या खुली नहरों के नेटवर्क के माध्यम से प्राप्त किया जाए। हमारे देश में जल संबंधी बुनियादी ढांचे को स्थापित करने से समुचित राजस्व की प्राप्ति नहीं हो पाती। इसके परिणामस्वरूप जो भी ढांचा बनता है, उसके रख-रखाव के लिए आवश्यक जन-धन संसाधन बहुत कम आवंटित होते हैं। अन्य क्षेत्रों जैसे रेल, सड़क, हवाई मार्ग, मोबाइल नेटवर्क आदि में निवेश से संबंधित संगठनों को राजस्व और अन्य अनेक लाभ प्राप्त होते हैं। ऐसे में जल अवसंरचना के निर्माण में निजी कंपनियां आने से हिचकती हैं और निवेश करने से कतराती हैं।

वर्तमान सरकार का लक्ष्य आत्मनिर्भर और विकसित भारत है। यह लक्ष्य प्राप्त करना तब संभव होगा, जब भारत जल के क्षेत्र में सुरक्षित होगा, क्योंकि कृषि की सुरक्षा जल सुरक्षा पर निर्भर करती है। भविष्य में जलवायु परिवर्तन के दुष्परिणाम शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में और विकराल होंगे। इसके परिणामस्वरूप देश में बड़े संकट खड़े होंगे। अतिवृष्टि जनित जल संकट का स्वरूप क्या होगा, यह केवल प्रकृति ही जानती है। सबसे अधिक जनसंख्या वाला भारत आपदा प्रबंधन और निवारण की तैयारी हमेशा करता रहता है। अब उसे हर स्तर पर जल निकासी के लिए सक्षम ढांचे को भी तैयार करने की आवश्यकता है। अच्छा हो कि नदियों को जोड़ने वाली परियोजनाओं के साथ इसे जोड़ा जाए, ताकि एक स्थान के बाढ़ का पानी दूसरे स्थान का संरक्षित जल संसाधन बने, न कि समुद्र में मिल जाए। जल अवसंरचना के निर्माण की गति में वृद्धि और सार्वजनिक निवेश को बढ़ाने में और देरी नहीं होनी चाहिए। वर्ष 2019-2020 की परिकल्पना के अनुसार भारत में जल इन्फ्रास्ट्रक्चर निर्माण में 15 वर्षों तक 270 अरब डालर का निवेश होना था। इस परिकल्पना पर पुनर्विचार की आवश्यकता है। यह समय की मांग है कि जल निकासी के लिए पाइपलाइन या नहरों का ऐसा नेटवर्क स्थापित किया जाए कि क्षेत्रों का आपस में जल संतुलन स्थापित हो सके। सुदृढ़ राष्ट्रव्यापी जल अवसंरचना के निर्माण में चीन की भांति भारी निवेश करके ही भारत आत्मनिर्भर और 2047 तक विकसित राष्ट्र बन सकता है।

(लेखक आइसीएआर-आइएआरआइ के जल प्रौद्योगिकी केंद्र के पूर्व परियोजना निदेशक हैं)
response@jagran.com

ऊर्जा

मां भारती

मां शक्ति स्वरूपा है। इसीलिए मातृशक्ति को पूजनीय माना गया है। हर सुख-दुख में माता का आह्वान किया जाता है, जिससे समस्त विघ्न प्रभावहीन होते हैं। मां की उपस्थिति कल्याण और सौभाग्य की सूचक है। मानव मात्र के लिए माता आराध्य एवं स्तुत्य हैं। भगवती के स्वरूप में देवी मां जीवन की सफलता और उद्धार का हेतु है। शक्तिहीन व्यक्ति, शक्तिहीन समाज या शक्तिहीन राष्ट्र अधिक समय तक जीवित नहीं रहते। शक्ति के बिना शरीर मिट जाता है। इसलिए शक्तिरूप में विद्यमान माता के श्रीचरणों का आश्रय लिया जाए। जो मानव माता की महत्ता से दूर है, वह अभागा इस धरा पर जड़वत है। माता की प्रसन्नता पुत्र का भाग्योदय करने में सक्षम है। भारत माता के सपूत शक्ति के रूप में उनकी आराधना उत्पत्ति काल से करते हैं।

भारत माता स्थूल रूप में एक दिव्य शक्ति हैं, जो देवलोक से उतरकर पृथ्वी माता की गोद में विराजमान हैं। पृथ्वी माता भी गौ माता, तुलसी माता, गायत्री माता और वेदमाता की तरह लोक कल्याण के लिए अवतरित हैं। पृथ्वी माता की पुत्री हैं, मां भारती। एक समय में भारत का प्रभुत्व संपूर्ण पृथ्वी पर व्याप्त था। मां भारती के अस्तित्व को आज भी सभी पुरानी सभ्यताएं स्वीकार करती हैं। भारत माता की शक्ति को अनेक महान देश पहचानते हैं। विश्वभर के विद्वान इससे भिज्ञ हैं। विज्ञानियों और दार्शनिकों को तथ्यों का ज्ञान है। भारत में शक्ति का केंद्र आदिकाल से है, जिसकी धुरी पर भूमंडल टिका हुआ है। मां के रूप में विराजमान देवी की शक्ति हर बालिका में उपस्थित है, इसमें संदेह नहीं। इसलिए मां भारती का स्वरूप भगवती के सान्निध्य में प्रकाशवान है। सभी देवियों ने मिलकर भारती की उत्पत्ति की, और कहा-भारती तीनों लोकों में अपनी कीर्ति से मानवता को विशाल आकार प्रदान करेगी। प्रत्येक नवरात्र के पावन अवसर पर देवी भवानी स्वरूपा मां भारती की स्तुति परंपरागत है।

डा. राघवेंद्र शुक्ल

पाठकनामा
pathaknama@pat.jagran.com

हिंसा से कमजोर होगा लोकतंत्र

'हिंसा की चपेट में लेह' शीर्षक से प्रकाशित संपादकीय पढ़ा। लद्दाख को अलग राज्य का दर्जा और संविधान की छठी अनुसूची में शामिल करने की मांग के लिए लेह में जारी आंदोलन हिंसक हुआ, जिसमें चार लोगों की मौत हो गई। अब वहां शांति स्थापना जरूरी है, क्योंकि यह सीमावर्ती क्षेत्र चीन और पाकिस्तान से जुड़ा है। अहिंसक प्रदर्शन का इस तरह अचानक हिंसक प्रदर्शन में बदलना कहीं न कहीं साजिश का हिस्सा हो सकता है, जिसका उद्देश्य मांगें मनवाने के लिए प्रतीक्षा करने के बजाय सीमावर्ती क्षेत्र को अशांत करके सरकार के लिए मुसीबत खड़ी करना बन गया। सरकार ने लेह की समस्या के समाधान पर चर्चा के लिए आंदोलनकारियों को पहले ही समय दे रखा था, परंतु उससे पहले ऐसा हिंसक प्रदर्शन होना यह दर्शाता है कि कुछ लोग आंदोलनकारियों की आड़ लेकर अपना हित साध रहे हैं। कहीं नागरिकों को प्रदत्त शांतिपूर्ण प्रदर्शन करने का अधिकार का ऐसा दुरुपयोग, भविष्य में किसी अनहोनी का संकेत तो नहीं है। भीड़तंत्र को हिंसा के लिए भड़काने और उकसाने वाले व्यक्ति के खिलाफ गैर-इरादतन हत्या और रासुका लगाना चाहिए। इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि यह घटना केवल लद्दाख ही नहीं, बल्कि देश के खिलाफ सोची-समझी साजिश भी हो सकती है। इस पूरे घटनाक्रम में अपनी जान गंवाने वाले नागरिकों के प्रति गहन शोक-संवेदना व्यक्त करते हुए यथाशीघ्र शांति की स्थापना के साथ ही यह विचार और चिंतन किया जाना चाहिए कि अराजक और हिंसक भीड़ के नियंत्रण और प्रबंधन में क्या-क्या सुधार अपेक्षित हैं? भीड़तंत्र का प्रबंधन कानून व्यवस्था और शांति बनाए रखने हेतु जरूरी है।

sonimohit895@gmail.com

महिलाओं के जीवन की गुणवत्ता

बढ़ती आबादी को नियंत्रित करने एवं युवाओं में गर्भनिरोधकों और गर्भनिरोधक तरीकों के बारे में जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष 26 सितंबर को विश्व गर्भनिरोधक दिवस मनाया जाता है। भारत जैसे जनसंख्या बहुल देश में गर्भनिरोधक साधनों की उपलब्धता और सही जानकारी बेहद महत्वपूर्ण है। जागरूकता की कमी, सामाजिक संकोच और रूढ़िवादी दृष्टिकोण के कारण आज भी अनेक लोग अनचाहे गर्भ, मातृ-शिशु मृत्यु दर और अस्वस्थ पारिवारिक स्थिति का सामना करते हैं। एक सर्वे के अनुसार भारत में 94.5 प्रतिशत महिलाओं को गर्भ निरोध के साधनों के बारे में जानकारी है, लेकिन केवल पचास प्रतिशत विवाहिताएं ही इनका इस्तेमाल करती हैं। गर्भनिरोधक साधनों का प्रयोग जनसंख्या नियंत्रण के साथ महिलाओं की गरिमा, स्वास्थ्य और जीवन की गुणवत्ता से जुड़ा विषय है। ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी अनेक महिलाओं को गर्भ निरोध के विषय में जानकारी नही है, एवं उन क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच नहीं है। सरकार को ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य केंद्रों की स्थिति में सुधार लाना चाहिए।

ई हिमांशु शेखर, केसपा, गयाजी।

शांतिप्रिय लद्दाख में हिंसा

संपादकीय आलेख 'हिंसा की चपेट में लेह' में हिंसा होना दुर्भाग्यपूर्ण बताया गया है। लद्दाख को अशांत करने के नेपथ्य में विदेशी ताकतों से इन्कार नहीं किया जा सकता। लद्दाख शुरू से शांतिप्रिय रहा है। यहां के लोग आज भी छल-कपट से कोसो दूर हैं। यहां हिंसा की चिंगारी उठने पर स्थानीय निवासियों के बीच चिंता जताई जा रही है। लोगों का कहना है कि लद्दाख में पहले कभी ऐसी हिंसा नहीं देखी गई। अनुच्छेद 370 हटने के बाद केंद्रशासित प्रदेश का दर्जा मिलने के बाद यहां सरकार ने काफी काम किए। यहां के विकास को देखकर पड़ोसी पाकिस्तान और चीन के सीने पर सांप लोटने लगा है। लेह में आंदोलन कर रहे लेह एपेक्स बाडी और कारगिल डेमोक्रेटिक अलायंस के नेता सोनम वांगचुक फरवरी में पाकिस्तान में आयोजित एक कार्यक्रम में शामिल हुए थे। इसके बाद सितंबर से लद्दाख में सरकार के विरोध में प्रदर्शन शुरू हो गए। लेह में इसने हिंसक रूप ले लिया। लद्दाख दोनों देशों की सीमा को जोड़ने वाला एक महत्वपूर्ण सेतु है। साल 1999 में लद्दाख के कारगिल की ऊंची चोटियों को कब्जा करने के लिए पाकिस्तानी सेना ने हरसंभव प्रयास किया था। भारतीय सेना ने उनके छक्के छुड़ा दिए थे। लद्दाख को राज्य का दर्जा देने को लेकर भड़की हिंसा के लिए सरकार ने वांगचुक के भड़काऊ बयानों को बड़ा कारण माना है।

युगल किशोर राही, छपरा, बिहार।

पोस्ट

लद्दाख में सतर्क रहिए। लद्दाख को लेकर सतर्क रहिए। इस घाव को रिसने मत दीजिए। घात लगाए बैठे शातिर 'चीनी बिल्ले' के लिए तनिक भी गुंजाइश मत बनाइए कि वह वहां कोई दांव चले।
राहुल पंडिता@rahulpandita

सोनम वांगचुक समर्थक कह रहे हैं कि नौकरियां न होने से लद्दाख के लोग छले गए हैं, जबकि वांगचुक ही यह डर फैलाते आए हैं कि यहां विदेशी कंपनियां आ गईं तो वे हमारी जमीनें हड़प लेंगी। मतलब इन्हें लद्दाख में कोई कंपनी भी नहीं चाहिए और नौकरियों के लिए भी रोना है। ये दोनों स्थितियां कैसे संभव हैं?
अनुपम के. सिंह@anupamnawada

तुर्किये के राष्ट्रपति एर्दोगन कश्मीर को लेकर अनावश्यक प्रलाप कर रहे हैं। क्या वह भारतीय क्षेत्र में मुस्लिम ब्रदरहुड की पैठ बढ़ाना चाहते हैं। अगर हमने संयुक्त राष्ट्र के मंच पर उत्तरी साइप्रस और सीरियाई इलाके पर तुर्किये के अवैध कब्जे और कुर्दों के निर्ममता से किए जा रहे दमन जैसे मुद्दे नहीं उठाए तो हम एक बड़ा अवसर गंवा देंगे।
कंवल सिब्बल@KanwalSibal

जनपथ

साजिश गहरी हो रही चेतो रे सरकार,
बचें अराजक तत्व ना बस इतनी दरकार।
बस इतनी दरकार प्यार से भी समझाओ,
ना समझें तो चार चपत पुरजोर लगाओ।
एक हाथ पेट्रोल एक में लेकर माचिस,
देश जलाने हेतु हो रही गहरी साजिश!

– ओमप्रकाश तिवारी

संस्थापक-स्व.पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान सम्पादक- स्व. नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन- महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान सम्पादक -संजय गुप्त
जागरण प्रकाशन लिमिटेड के लिये आनन्द त्रिपाठी द्वारा दैनिक जागरण प्रेस C-5, C-6 & 15 इंडस्ट्रियल एरिया, पाटलिपुत्रा, पटना - 800013 से प्रकाशित एवं मुद्रित, सम्पादक (बिहार/प. बंगाल)-विष्णु प्रकाश त्रिपाठी, स्थानीय सम्पादक - आलोक मिश्रा * दूरभाष : 0612-2277071, 2277072, 2277073
E.mail : patna@pat.jagran.com, R.N.I. NO. BIHHIN/2000/03097* इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर वी.एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी पटना जीपीओ रजि.नं. R-10/NP-18/14-16 समस्त विवाद पटना न्यायालय के अधीन ही होंगे। वर्ष 26 अंक 165

****

कल्पमेधा

लोग तुम्हारी स्तुति करें या निंदा, लक्ष्मी तुम्हारे ऊपर कृपालु हो या न हो, तुम्हारा देहांत आज हो या एक युग में, तुम न्याय-पथ से कभी विचलित न होना।
– **स्वामी विवेकानंद**

सावधानी का तकाजा

किसी भी विरोध प्रदर्शन में अगर लोकतांत्रिक तरीके से अपनी मांगें सामने रखी जाएं, तो उसके अंजाम तक पहुंचने और सर्वमान्य हल निकलने की उम्मीद की जा सकती है। विडंबना यह है कि कई बार मुद्दे सुलगते रहते हैं और सरकार को वक्त पर उसका समाधान निकालने की जरूरत महसूस नहीं होती। वहीं लंबे वक्त तक टालमटोल या कोताही आखिरकार असंतोष की स्थिति पैदा करती है। फिर जब प्रतिक्रिया का स्वरूप अनियंत्रित और अराजक होता है, तब कई बार उसे संभालना मुश्किल हो जाता है। लेह में बुधवार को हुई हिंसा इन्हीं स्थितियों का नतीजा लगती है। गौरतलब है कि लद्दाख को पूर्ण राज्य का दर्जा देने और संविधान के अनुच्छेद 244 के तहत छठी अनुसूची में शामिल करने की मांग को लेकर लेह में लोग आंदोलन पर उतरे हुए थे। पर्यावरण कार्यकर्ता सोनम वांगचुक भी दो हफ्ते से भूख हड़ताल पर थे। मगर बुधवार को यह प्रदर्शन हिंसक हो उठा और लोगों ने भाजपा कार्यालय को भी आग के हवाले कर दिया। इसके बाद पुलिसकर्मियों के साथ हुई झड़पों के दौरान कई की जान चली गई और काफी लोग घायल हो गए।

सवाल है कि अपनी मांगों के साथ कई दिनों से शांतिपूर्ण तरीके से आंदोलन कर रहे लोगों के सामने आखिर कैसी स्थिति पैदा हुई कि उन्होंने हिंसक रास्ता अख्तियार कर लिया। पिछले कई दिनों से वहां जैसे शांतिपूर्ण हालात थे, उसमें अराजकता को अचानक उपजी किसी स्थिति का नतीजा मानना थोड़ा मुश्किल लगता है। खासतौर पर जब पूर्ण राज्य का दर्जा और छठी अनुसूची में शामिल करने का सवाल नया नहीं हो। इसके अलावा, लेह और करगिल के लिए अलग-अलग लोकसभा सीटें तय करने और रोजगार में आरक्षण की मांग भी अहम मुद्दे हैं। दरअसल, अनुच्छेद 370 खत्म होने के बाद केंद्र सरकार की ओर यह आश्वासन दिया गया था कि लद्दाख को राज्य का दर्जा दिया जाएगा। इस बात को करीब पांच वर्ष हो गए, लेकिन अब भी इस पर स्थानीय समूहों- लद्दाख एपेक्स बाडी और करगिल लोकतांत्रिक गठबंधन के साथ सिर्फ बातचीत ही चल रही है। आखिर केंद्र सरकार की घोषणाओं के समांतर लद्दाख के लोगों की स्पष्ट मांगों के बावजूद सबसे संवेदनशील और जरूरी मुद्दों पर बातचीत के जरिए शांतिपूर्ण तरीके से हल निकालने को लेकर सहमति बनाने को प्राथमिकता क्यों नहीं दी गई?

सच यह है कि जब प्रमुख मांगों को पूरा करने या समस्या का सर्वमान्य हल निकालने को लेकर कोताही बरती जाती है और टालमटोल किया जाता है, तो उससे जुड़े अन्य मुद्दे भी अपना असर डालने लगते हैं। पिछले पांच वर्षों के दौरान वहां बेरोजगारी एक जटिल समस्या बन कर उभरी है। ऐसी शिकायतों ने वहां तूल पकड़ा है कि अलग-अलग बहाने बना कर स्थानीय लोगों को नौकरियों से बाहर रखा जा रहा है और लद्दाख को संरक्षण भी नहीं दिया जा रहा। ऐसे में स्थानीय लोगों, खासकर रोजगार की उम्मीद में वक्त काटते युवाओं के बीच स्वाभाविक रूप से असंतोष ने जड़ें जमाना शुरू किया। इस तरह की संवेदनशील स्थितियों से अगर समय पर नहीं निपटा जाए, तो कुछ समय बाद उन्हें संभालना मुश्किल होता है। लेह में भड़की हिंसा की तुलना कुछ लोगों ने नेपाल के 'जेन-जी' से करने की कोशिश की है। बेहतर हो कि हमारे देश में अराजकता की स्थिति न उपजे। इसलिए जरूरत इस बात की है कि सरकार बिना देर किए आंदोलनकारियों की मुख्य मांगों और समस्या के मूल बिंदुओं पर विचार करके एक ठोस और सर्वमान्य हल तक पहुंचे, ताकि अवांछित तत्त्वों की किसी साजिश को पांव जमाने का मौका न मिले।

भरोसे पर घात

शैक्षिक संस्थानों को आमतौर पर छात्राओं के लिए सुरक्षित परिसर माना जाता है। मगर ऐसी किसी जगह पर जब उनकी गरिमा को ठेस पहुंचाई जाती है और धमका कर यौन उत्पीड़न किया जाता है, तो यह एक व्यापक चिंता का विषय बनता है। दिल्ली में वसंत कुंज स्थित एक प्रबंधन संस्थान में खुद उसके संचालक ने छात्राओं से जैसा बर्ताव किया, उसने संस्थान पर भरोसे को तार-तार कर दिया है। गौरतलब है कि इस मामले का मुख्य आरोपी एक कथित स्वयंभू धर्मगुरु या बाबा है, जो संस्थान का एक संचालक भी था। आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लिए छात्रवृत्ति के तहत पढ़ाई कर रही कई छात्राओं को वह काफी समय से अलग-अलग रूप से प्रताड़ित कर रहा था। हैरानी की बात यह है कि इतनी संवेदनशील शिकायत पर संस्थान के अधिकारियों ने तब सुध ली, जब विवाद ने तूल पकड़ लिया। एक शर्मनाक पहलू यह भी है संस्थान की महिला कर्मी पीड़ित छात्राओं पर आरोपी की बात मानने के लिए दबाव डालती थीं। संस्थान में अपने प्रभाव के कारण आरोपी न केवल अभद्रता करता रहा, बल्कि किसी भी कार्रवाई से बचता रहा। दूसरी ओर, भविष्य तबाह कर देने की धमकी से डरी छात्राएं खामोश रहीं।

इस पूरे मामले में न केवल संबंधित संस्थान, बल्कि कानून व्यवस्था की भी बड़ी नाकामी है। एक ऐसा व्यक्ति जिसका पुराना आपराधिक अतीत रहा हो, वह राजधानी के नामी प्रबंधन संस्थान का संचालक कैसे बन जाता है या बना रहता है? संस्थान के परिसर से इस कथित स्वयंभू बाबा की महंगी कार भी बरामद हुई है, जिस पर राजनयिक नंबर वाली जाली प्लेट लगी थी। आरोपी की आपराधिक गतिविधियां सामने आने के बाद संस्थान ने उससे सभी संबंध जरूर समाप्त करने की बात कही, लेकिन सवाल है कि यौन उत्पीड़न संबंधी गंभीर शिकायतों के बावजूद लंबे समय तक उसे प्रबंध समिति का सदस्य और पदाधिकारी कैसे बनाए रखा गया। जबकि धोखाधड़ी और छेड़खानी के मामले उस पर पहले से दर्ज थे। कमजोर तबकों के परिवारों और उनकी बच्चियों ने एक भरोसे के साथ पढ़ाई के लिए उस संस्थान को चुना होगा। मगर वहां उनके भरोसे से जैसा खिलवाड़ किया गया, इसकी जिम्मेदारी आखिर किसकी होगी!

चुनौतियों के बीच अर्थव्यवस्था की राह

अमेरिका को निर्यात होने वाली भारतीय वस्तुओं पर पचास फीसद शुल्क से फिलहाल जो भी नुकसान होगा, उसका आकलन बाद में आएगा और उपाय भी निकलेंगे। मगर पूर्व निवारक उपाय के रूप में देश के कृषि एवं सेवा क्षेत्र के उत्तम प्रदर्शन के बल पर सकल घरेलू उत्पाद में तीव्र वृद्धि लगभग तय है।

विकेश कुमार बडोला

कुछ समय पहले आंकड़े आए कि इस वित्त वर्ष की अप्रैल-जून तिमाही में भारत का आर्थिक वृद्धि मूल्य उम्मीद से अधिक 7.8 फीसद तक चला गया। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा मनमाने तरीके से भारत पर पचास फीसद शुल्क लगाए जाने के क्रम में दिए गए उनके वक्तव्यों में से एक यह भी था कि भारत की अर्थव्यवस्था एक असफल अर्थव्यवस्था है। इसका भारत ने विरोध किया। मगर यह विडंबना ही है कि अमेरिकी मूल की जिन विभिन्न वैश्विक मूल्यांकन एजंसियों ने अप्रैल-जून तिमाही में दुनिया के सभी देशों की तुलना में भारतीय अर्थव्यवस्था का वृद्धि मूल्य सर्वाधिक होने का पूर्वानुमान लगाया था, उसी देश के राष्ट्रपति ने भारत को नाकाम अर्थव्यवस्था कह दिया। मगर यथार्थ के धरातल पर भारत की अर्थव्यवस्था संतुलित, अनुकूल और प्रगतिशील बनी हुई है।

अमेरिका को निर्यात होने वाली भारतीय वस्तुओं तथा कुछ सामग्रियों पर पचास फीसद शुल्क लगाने से फिलहाल जो भी नुकसान होगा, उसका आकलन बाद में आएगा और उपाय भी निकलेंगे। मगर पूर्व निवारक उपाय के रूप में देश के कृषि एवं सेवा क्षेत्र के उत्तम प्रदर्शन के बल पर सकल घरेलू उत्पाद में तीव्र वृद्धि लगभग तय है। हमारी अर्थव्यवस्था दूसरे देशों के मुकाबले अधिक संतुलित है। जिन क्षेत्रों के कारण आर्थिक मूल्य में वृद्धि हुई है, उनमें प्रमुख रूप में कृषि, होटल, वित्तीय एवं जमीन-जायदाद कारोबार जैसी व्यवसायगत सेवाएं सहायक रही हैं। दुनिया के सभी देशों को पीछे कर भारत अभी भी सर्वाधिक तेजी से प्रगति करने वाली अर्थव्यवस्था बना हुआ है। वर्तमान वित्तीय वर्ष के अप्रैल-जून की तिमाही में दुनिया के दूसरे संपन्न देश चीन की जीडीपी में 5.2 फीसद की आर्थिक वृद्धि हुई है, जो भारत से 2.6 फीसद कम है।

भारतीय रिजर्व बैंक ने अगस्त के आरंभ में वर्ष 2025-26 की वास्तविक जीडीपी वृद्धि का अनुमान 6.5 फीसद लगाया था। इसके अनुसार, भारतीय जीडीपी प्रथम तिमाही में 6.5, द्वितीय तिमाही में 6.7, तृतीय तिमाही में 6.6 तथा चतुर्थ तिमाही में 6.3 फीसद तक बनी रह सकती है। जीडीपी यानी सकल घरेलू उत्पाद से अभिप्राय एक निश्चित अवधि में देश की भौगोलिक सीमा के अंदर उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं के कुल मूल्य अंकन से है। भारत के संदर्भ में वर्तमान तिमाही अवधि से पहले जीडीपी में जो उच्चतम वृद्धि हुई थी, वह वर्ष 2024 की अंतिम तिमाही जनवरी-मार्च में 8.4 फीसद थी। उस दौरान भारत पर अमेरिका की ओर से शुल्क संबंधी तथा अन्य भू-राजनीतिक दबाव विचार स्तर पर ही थे और वास्तविक रूप से लागू नहीं हुए थे, तब 8.4 फीसद का आर्थिक वृद्धि मूल्य था, लेकिन अभी की तिमाही में तो अमेरिका से लेकर यूरोपीय देशों तक ने रूस से कच्चा तेल खरीदने के मामले में भारत से आर्थिक भेदभाव किया। यही नहीं, अर्थव्यवस्था से संबंधित अन्य प्रतिबंध तक लगाए जाने लगे। इन वैश्विक झंझावातों, उपेक्षा और तमाम कठिनाइयों में भी अब यदि भारतीय अर्थव्यवस्था में वृद्धि मूल्य 7.8 फीसद है, तो यह आर्थिक उन्नयन का ही एक उदाहरण है। ऐसी आर्थिक वृद्धि अर्थशास्त्रियों और विशेषज्ञों के लिए विचार, परीक्षण तथा शोध का विषय है।

राष्ट्रीय सांख्यिकीय संगठन (एनएसओ) के आंकड़ों के अनुसार, जीडीपी की 7.8 फीसद मूल्य वृद्धि में सर्वाधिक भूमिका 3.7 फीसद के साथ कृषि क्षेत्र की है, जो वित्त वर्ष 2024-25 की अप्रैल-जून तिमाही में 1.5 फीसद थी। वित्त वर्ष 2025-26 की प्रथम तिमाही में विनिर्माण क्षेत्र का वृद्धि मूल्य बढ़ कर 7.7 फीसद हो गया है, जबकि एक वर्ष पहले इसी तिमाही में इस क्षेत्र का वृद्धि मूल्य 7.6 फीसद था। वर्तमान वित्त वर्ष की प्रस्तुत तिमाही ही नहीं, बल्कि आगामी तिमाहियों में भी घरेलू मांग बढ़ने के कारण अर्थव्यवस्था में तेजी से वृद्धि होने की संभावना है, क्योंकि एक ओर वर्षा ऋतु में अधिक बारिश कृषि क्षेत्र को फायदा पहुंचाएगी, वहीं त्योहारी महीने में बाजारों में उपभोक्ताओं के आने से कारोबार चमकेगा, जिससे राजस्व में वृद्धि होगी।

> **भारत पर अमेरिकी शुल्क के प्रभाव का व्यापक आकलन नवंबर 2025 के बाद ही संभव है। तब तक ब्रिटेन के साथ किए गए मुक्त व्यापार समझौते के धरातल पर आने के बाद परिणाम आने की संभावना है। यह भारतीय अर्थव्यवस्था में होने वाले विचलन, ठहराव और असंतुलन को न्यूनतम सीमा तक थाम सकेगा। मुक्त व्यापार के क्रियान्वयन के लिए भारत ने अन्य देशों के साथ जो समझौते किए हैं, वे भी किसी सीमा तक भारतीय अर्थव्यवस्था की सहायता अवश्य करेंगे। जापान की ओर से किया जाने वाला निवेश भी भारतीय आर्थिकी के लिए लाभदायी होगा।**

भारत पर अमेरिकी शुल्क के प्रभाव का व्यापक आकलन नवंबर 2025 के बाद ही संभव है। तब तक ब्रिटेन के साथ किए गए मुक्त व्यापार समझौते के धरातल पर आने के बाद परिणाम आने की संभावना है। यह भारतीय अर्थव्यवस्था में होने वाले विचलन, ठहराव और असंतुलन को न्यूनतम सीमा तक थाम सकेगा। मुक्त व्यापार के क्रियान्वयन के लिए भारत ने अन्य देशों के साथ जो समझौते किए हैं, वे भी किसी सीमा तक भारतीय अर्थव्यवस्था की सहायता अवश्य करेंगे। जापान की ओर से किया जाने वाला निवेश भी भारतीय आर्थिकी के लिए लाभदायी होगा। यदि चीन के साथ भारत के भू-राजनीतिक संबंधों में दीर्घकालीन संतुलन स्थापित होता है तथा यह निरंतर बना रहता है, तो निश्चित रूप में दोनों देशों की परस्पर व्यापारिक सहभागिता बढ़ेगी। इसके जरिए न केवल भारत, बल्कि चीन के लिए भी आर्थिक प्रगति के नए अवसर पैदा होंगे। दोनों ही देशों की अर्थव्यवस्था अप्रत्याशित रूप में सशक्त हो सकेगी।

चीन तथा भारत यदि साथ मिल कर वैश्विक अर्थव्यवस्था चलाएंगे, तो अमेरिका की ओर झुका हुआ वैश्विक शक्ति का पलड़ा दक्षिण एशियाई क्षेत्र की ओर अवश्य घूमेगा। इस दिशा में शासकीय अर्थव्यवस्था संभालने वाले वित्त मंत्रालय सहित सभी वित्तीय प्रतिष्ठानों को कई नए उपाय करने के साथ ठोस कदम उठाने होंगे। इसकी कवायद शुरू करनी होगी।

वर्तमान तिमाही में कृषि एवं विनिर्माण जैसे जिन दो क्षेत्रों में अधिक जीडीपी बढ़ी है, उन क्षेत्रों से संबंधित नवीनतम, व्यापक और दीर्घकालिक नीतियों को पूरे आत्मविश्वास तथा संकल्प के साथ लागू करना होगा। इसके लिए केंद्र तथा राज्यों को विनिर्माण इकाइयों के रूप में भारी उद्योगों, उत्पादन इकाइयों के रूप में सभी प्रकार के उद्योगों, वितरण इकाइयों के रूप में सेवा क्षेत्र की सभी शाखाओं तथा उपभोग इकाई के रूप में नागरिकों को प्रोत्साहित करना होगा। सूक्ष्म, मध्यम और लघु उद्यमों की सभी छोटी-बड़ी आवश्यकताएं पूरी करनी होंगी। उनकी समस्याओं और कठिनाइयों को भी समझना होगा। आवश्यकता के मुताबिक उनका त्वरित निदान करने की कार्य संस्कृति विकसित करनी होगी। इस संस्कृति का पूरी निष्ठा और समर्पण भावना के साथ पालन करना होगा। अर्थव्यवस्था में निरंतर उच्च वृद्धि के लिए शासन से लेकर जनसाधारण तक, सभी में राष्ट्रीय भावना, कर्त्तव्य तथा दायित्वों के प्रति अपेक्षित समर्पण अनिवार्य है। इस संगति के बिना आर्थिक समृद्धि की लक्षित और निर्धारित उपलब्धियां प्राप्त नहीं हो सकती हैं।

भारत को अमेरिकी चुनौतियों तथा वैश्विक अस्थिरता के बीच अर्थव्यवस्था के स्वदेशी तथा विदेशी, दोनों प्रकार के कारकों का ध्यान रखना होगा। आर्थिक रूप में निरंतर शक्ति संपन्न बनने की दिशा में कार्य करना होगा। यदि आर्थिक प्रगति के आधार पर भारत कभी चीन और अमेरिका से आगे बढ़ कर प्रथम पंक्ति में खड़ा होगा, तो इसका वैश्विक अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव नहीं होगा। भारतीय अर्थतंत्र जितना अधिक मजबूत होगा, विश्व की अर्थव्यवस्था उतनी ही सुगठित और स्वस्थ होगी।

असीमित भूख

दुनिया मेरे आगे

राजेंद्र बज

यह मनुष्य का स्वभाव है कि उसके लिए पद, पैसा और प्रतिष्ठा प्राप्त करने की चाहत का अंतिम छोर कहीं नहीं होता। आमतौर पर जमाने भर की उठापटक इसी सोच के तहत चलती रहती है कि जो कुछ प्राप्त है, वह अपर्याप्त है। दरअसल, 'जितना मिल सका है, उससे और ज्यादा' के चक्र में आदमी कभी-कभी इस कदर उलझ जाता है कि फिर उसके लिए नैतिक और अनैतिक में भेद करना जरूरी नहीं रह जाता। मन की चाहत के अनुरूप सब कुछ हासिल करने का ही भाव मन में बना रहता है। चाहे इसके एवज में मान-सम्मान ही दांव पर क्यों न लग जाए। इस संदर्भ में यह उल्लेख करना भी जरूरी है कि कहीं-कहीं ऐसी मानसिकता के भी दर्शन होते हैं कि पद है, पैसा है, तो प्रतिष्ठा तो उसके संग दौड़ी-दौड़ी चली आएगी।

दरअसल, हम अपने आसपास के परिवेश पर ही दृष्टिपात करें, तो काफी हद तक ऐसी मानसिकता के उदाहरण देखने को मिल सकते हैं। आमतौर पर ऐसी शख्सियत राजनीतिक, व्यावसायिक या सामाजिक कवच धारण किए हुए होती है। यही कारण है कि फिर इनके सामने कभी-कभी कानून की पकड़ भी ढीली पड़ जाती है। यह वर्ग बदनामी में भी 'नाम' को लेकर आश्वस्त हो सकता है। अलग-अलग क्षेत्र के विभिन्न माफियाओं की ताकत का अंदाजा लगभग सभी को है। वास्तव में पद और पैसे की प्राप्ति राजनीतिक या सामाजिक पहुंच के आधार पर होने लगी है। धन कुबेर व्यापारिक वर्ग भी तमाम तरह की व्यवस्थाओं को अपनी अंगुली पर नचाने का माद्दा रखने लगा है।

> **आज के परिदृश्य में आखिरकार क्या सही है और क्या गलत, इसके निर्धारण की कसौटी खोटी सिद्ध होने लगी है। ऐसी स्थिति में अंतरात्मा के सुकून के लिए इंसान कहां जाए, क्या करे? इस संदर्भ में सोचते और विचारते हुए संसार की वास्तविक स्थिति का आकलन करना आसान नहीं है।**

देखते ही देखते राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्थाएं भी तीव्र गति से अर्थ प्रधान होती चली जा रही है। हालांकि धर्म, ध्यान के प्रति समर्पित भाव भी उफान पर दिखाई देता है। विभिन्न धार्मिक समागम में बड़ी संख्या में भक्तों का जमावड़ा भी देखा जा सकता है, धर्म के मर्म को समझ कर उसके अनुरूप आचरण और व्यवहार अपेक्षाकृत कम ही दिखाई देता है। सब कुछ बाहरी तौर पर ही संपन्न होता दिख रहा है। तमाम तरह के आडंबर और 'शक्ति परीक्षण' के दृश्य दिखाई देने लगे हैं। परमात्मा के प्रति अगाध भक्तिभाव के प्रदर्शन का पैमाना भी काफी हद तक आर्थिक होने लगा है। इसके चलते धर्म जगत में भी 'वीआइपी कल्चर' यानी अति-महत्त्वपूर्ण लोगों को तरजीह देने का चलन देखने को मिल सकता है।

सामाजिक परिवेश में देखते ही देखते तमाम तरह के अपराधों की लगातार बाढ़-सी आती जा रही है। कानून की पकड़ को कानून से कमजोर करने का सिलसिला भी लगातार परवान चढ़ता जा रहा है। हर तरफ तथाकथित तरक्की की दौड़ में लगभग हर कोई शामिल है। जैसे-जैसे इंसान अपनी जिंदगी के किनारे लगता जाता है, वैसे-वैसे मन की चाहत का सिलसिला भी लगातार विस्तार पाता जाता है। वैसे यह जरूर है कि हर क्षेत्र में तरक्की की कामना सभी को होती है, लेकिन एक तथ्य यह भी है कि हर आती-जाती सांस हमारे जीवन का क्षरण करती जा रही है। विडंबना है कि हम इस दिशा में जानकर भी अनजान बनते हैं। एक प्रकार से बहुत ही भ्रम की स्थिति में हम खड़े हैं।

एक जमाने में 'आंख में शर्म' कुछ इस कदर होती थी कि जहां कहीं कोई विवाद तूल पकड़ लेता, हिंसक उपद्रव होने लगता, भारी मात्रा में हथियारों का उपयोग कर प्रतिस्पर्धी को ठिकाने लगाने की तैयारी होती, ऐसे माहौल में अगर कोई संभ्रांत शख्सियत सड़क पर उतर आती, तो कई बार देखते ही देखते केवल आंख में शर्म के चलते बहुत सारे उपद्रवी एकदम शांत हो जाते। प्रतिष्ठित लोगों को अपना पंच बनाकर बड़े से बड़े विवाद सुलझाया जा सकता था। दरअसल, एक दौर में प्रतिष्ठित लोग वास्तव में प्रतिष्ठित होते थे। जन-जन के अंतर्मन में प्रतिष्ठित व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा को लेकर गहरा सम्मान हुआ करता था। कई बार 'शर्म और लिहाज' से ही बिगड़ी कानून और व्यवस्था नियंत्रित हो जाती थी।

आज के परिदृश्य में आखिरकार क्या सही है और क्या गलत, इसके निर्धारण की कसौटी ही खोटी सिद्ध होने लगी है। ऐसी स्थिति में अंतरात्मा के सुकून के लिए आखिर आदमी कहां जाए, क्या करे? इस संदर्भ में सोचते और विचारते हुए संसार की वास्तविक स्थिति का आकलन करना आसान नहीं है। निश्चित रूप से हम अंतरात्मा में सुकून की दिव्य अनुभूति करना चाहते हैं, तो हमें पद, पैसे और प्रतिष्ठा की चाहत के भाव को तिलांजलि देनी होगी। वैसे भी सच्चे सुख की तलाश में कहीं और भटकने की कहीं कोई आवश्यकता नहीं होती है। आखिर हमें जीवन में कितना कुछ चाहिए होता है? संसार में जो भी आया है, खाली हाथ आया है और खाली हाथ जाना है। फिर परिग्रह के प्रति ऐसा अदम्य आग्रह क्यों? आजकल तो यह प्रवृत्ति और ज्यादा बढ़ती जा रही है कि जिसके पास ज्यादा धन है, वह उसमें तेज रफ्तार से बढ़ोतरी करने के लिए हर तरह के उचित-अनुचित तरीके अपनाने में नहीं हिचकता। ऐसा लगता है कि उसे धन या संपत्ति के किसी खास स्तर को प्राप्त करना है और उसके बाद उसके जीवन को अभयदान मिल जाएगा। सवाल है कि इस होड़ में क्या समाज और दुनिया का बहुत बड़ा तबका पीछे नहीं छूट रहा है, जिसके जीवन की सुरक्षा और सहजता को लेकर कहीं भी फिक्र नहीं देखी जा रही है।

समावेशी साक्षरता

भारत में साक्षरता का फीसद आजादी के बाद से काफी बढ़ा है। पहले संयुक्त परिवारों में चार-पांच बच्चों का होना सामान्य बात मानी जाती थी। उनमें से भी एक या दो बेटे ही पढ़-लिख कर नौकरी कर कर पाते थे, बाकी पिता के साथ खेती-बाड़ी कर घर के काम में हाथ बंटाते थे। उस समय साक्षरता उतनी मायने नहीं रखती थी, पर अब जमाना बदल गया है। आज न केवल साक्षरता की महत्ता बढ़ गई है, बल्कि खेती-किसानी छोड़ कर नौकरी करने वालों की भी संख्या बढ़ी है। आज देश में साक्षरों की संख्या लगातार बढ़ रही है। इसमें देश की महिलाएं भी पीछे नहीं हैं। विशेषकर लड़कियां तो बिल्कुल भी पीछे नहीं रहना चाहती हैं। एक जमाना था, जब छोटी उम्र में ब्याह कर दिया जाता था। माता-पिता लड़कियों की पढ़ाई पर बिल्कुल ध्यान नहीं देते थे। तब परिस्थितियां विपरीत होने पर उन्हें काफी कष्ट उठाना पड़ता था। मगर आज परिस्थितियां काफी बदली हैं। माता-पिता बेटी की पढ़ाई पर काफी ध्यान देते हैं। यही कारण है कि आजकल घरों में ज्यादातर बेटियां पढ़ी-लिखी मिल जाती हैं। वे कठिन समय आने पर नौकरी या कोई काम करके अपना और अपने परिवार का पालन-पोषण कर सकती हैं।

– *मनमोहन राजावत 'राज', शाजापुर*

विचित्र प्राथमिकता

'बाजार की संवेदना' (संपादकीय, 22 सितंबर) पढ़ा। आज के हालात में प्रासंगिक टिप्पणी है। भारत में उपभोक्तावाद और बेरोजगारी का यह विरोधाभास चौंकाने वाला है। जिस दिन हजारों युवा एक चर्चित विदेशी कंपनी का मोबाइल फोन खरीदने के लिए लंबी कतार में लगे थे. उसी दिन बड़ी संख्या में शिक्षित युवा चपरासी की नौकरी की परीक्षा दे रहे थे। यह तस्वीर बताती है कि बाजार युवाओं को किस तरह आकर्षित कर रहा है। जबकि वास्तविक चुनौतियों यानी रोजगार, शिक्षा और असमानता की ओर सरकार का ध्यान बिल्कुल नहीं है। उपभोक्ता मानसिकता ऐसी हो गई है कि कर्ज लेकर भी ब्रांड वाली महंगी वस्तुएं खरीदना सामान्य हो गया है। यह प्रवृत्ति केवल आर्थिक असमानता ही नहीं, बल्कि समाज में संवेदनाओं और सरोकारों की दूरी भी बढ़ा रही है। जरूरत है कि युवा वर्ग आत्ममंथन करे और उपभोग आधारित संस्कृति के बजाय रोजगार, शिक्षा और समाज-हित को प्राथमिकता दे।

– *अमृतलाल मारू 'रवि', इंदौर*

प्रदूषण के जोखिम

आज दुनिया भर में प्रदूषण विकराल रूप ले चुका है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, वायु प्रदूषण के कारण हर साल लगभग सत्तर लाख लोगों की समय से पहले मृत्यु हो जाती है। वायु में मौजूद सूक्ष्म कण श्वसन और हृदय संबंधी गंभीर बीमारियों का कारण बनते हैं। वहीं संयुक्त राष्ट्र की एक रपट के अनुसार, दुनिया भर में 80 फीसद से अधिक अपशिष्ट जल को बिना उपचारित किए सीधे नदियों और महासागरों में बहा दिया जाता है। हर साल लगभग एक करोड़ बीस लाख टन प्लास्टिक महासागरों में चला जाता है, जिससे समुद्री जीव-जंतुओं का जीवन खतरे में है। माइक्रोप्लास्टिक जीवन के लिए घातक है। 'वर्ल्ड वाइड फंड फार नेचर' की एक रपट के मुताबिक, पिछले पचास वर्षों में वन्यजीवों की आबादी में उनहत्तर फीसद की कमी आई है। जंगल काटे जाने, प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन के कारण कई प्रजातियां विलुप्त होने की कगार पर हैं।

– *प्रसिद्ध यादव, फुलवारी, पटना*

इलाज का दायरा

आयुर्वेदिक चिकित्सा दुनिया में सबसे पुरानी पद्धति है। यह सफल और सुरक्षित है। प्राचीन काल में सभी तरह के रोगों की चिकित्सा आयुर्वेद से होती थी। मगर कई वजहों से आज एलोपैथी अधिक लोकप्रिय है। आजादी के बाद सरकारी उपेक्षा की वजह से आयुर्वेद अपने ही देश में पराया हो गया। धीरे-धीरे लोग आयुर्वेद से दूर होते चले गए और एलोपैथ से जुड़ते चले गए। हालांकि कोरोना काल में पूरी दुनिया ने आयुर्वेद की ताकत को महसूस किया। विश्व के अन्य देशों की तुलना में भारत में कोरोना महामारी से मानव क्षरण कम हुआ था। इसकी वजह भारतीयों की मजबूत रोग प्रतिरोधक क्षमता है। हमारे यहां हर घर में मसाले के रूप में हल्दी, काली मिर्च, सौंफ, अदरक, शहद आदि का इस्तेमाल किया जाता है। कुछ रोगों का तो इसी से उपचार हो जाता है। समय आ गया है कि आयुर्वेद को बढ़ावा दिया जाए।

– *हिमांशु शेखर, गयाजी*

हमें लिखें, हमारा पता : edit.jansatta@expressindia.com | chaupal.jansatta@expressindia.com

{ संपादकीय }

नई दिल्ली, शुक्रवार 26 सितम्बर 2025
संस्थापक-सम्पादक : स्व. मायाराम सुरजन

परीक्षा घोटाले में फिर फंसी भाजपा

भाजपा शासन में एक बार फिर परीक्षाओं में धांधली से परेशान छात्र सड़कों पर उतरे हैं। हमेशा की तरह इस बार भी सरकार अपनी जिम्मेदारी निभाने की जगह बहानेबाजी कर रही है। बल्कि इस बार तो पेपर लीक की आड़ में सांप्रदायिक नफरत फैलाने का काम सरकार कर रही है। मामला उत्तराखंड का है, जहां अधीनस्थ सेवा चयन आयोग (यूकेएसएसएससी) की भर्ती परीक्षा में पेपर लीक के आरोप को लेकर छात्र सड़कों पर उतर आए हैं। वोट चोर गद्दी छोड़ के नारों की तर्ज पर यहां पेपर चोर गद्दी छोड़ के नारे लग रहे हैं, जिनसे जाहिर है कि छात्र सरकार से खासे नाराज हैं।

दरअसल पिछले रविवार सुबह 11 बजे से दोपहर 1 बजे तक यूकेएसएसएससी की परीक्षा आयोजित हुई थी। विभिन्न सरकारी विभागों के अधीन समूह 'ग' और 'घ' के पदों पर भर्ती के लिए अभ्यर्थी परीक्षा में शामिल हुए थे। लेकिन परीक्षा के एक दिन बाद ही तीन पन्नों का प्रश्न पत्र ऑनलाइन वायरल हो गया, जिसके बाद बेरोजगार संगठनों और युवाओं ने विरोध प्रदर्शन शुरू कर दिए। छात्र सड़कों पर उतर आए हैं और सरकार के विरोध में नारेबाजी करने के साथ बैनर-पोस्टर लहराए जा रहे हैं। प्रदर्शनकारियों का दावा है कि नया कानून भी नकल को रोकने में नाकाम साबित हुआ है। सरकार ने जांच तेज करने का भरोसा दिया है, लेकिन प्रदर्शन थमने के संकेत नहीं दिख रहे।

वैसे पुलिस पेपर लीक की जिम्मेदारी छात्रों पर डाल रही है। पुलिस का आरोप है कि परीक्षा केंद्र हरिद्वार के आदर्श बाल सादन इंटर कॉलेज में कैंडिडेट खालिद मलिक ने कथित तौर पर परीक्षा हॉल से तीन फोटो अपनी बहन साबिया को भेजीं। पुलिस के अनुसार, साबिया ने इन्हें खालिद के दोस्त सुमन को फॉरवर्ड किया, जो टिहरी के एक कॉलेज में प्रोफेसर हैं। सुमन ने सवालों को हल करने की कोशिश की, लेकिन जवाब नहीं भेजे और युवा नेता बॉबी पंवार को इसकी जानकारी दी। पंवार ने इसकी जानकारी सोशल मीडिया पर फोटो शेयर कर दी है। अब पुलिस ने खालिद और साबिया को गिरफ्तार कर लिया है। वहीं मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने इसे 'नकल जिहाद' कहा है। श्री धामी ने कहा, 'युवाओं का भविष्य बर्बाद करने के लिए वे गैंग बनाकर साजिश रचते हैं। कोचिंग माफिया और नकल माफिया मिलकर राज्य में नकल जिहाद चला रहे हैं... क्षेत्र में अराजकता फैलाने की कोशिश कर रहे हैं। उन माफियाओं और जिहादियों को चेतावनी है कि जब तक माफिया का खात्मा न हो, हम चैन से नहीं बैठेंगे।'

भाजपा सरकार के मुख्यमंत्री जिस तरह की भाषा का इस्तेमाल कर रहे हैं, उस पर अब आश्चर्य भी नहीं होता, क्योंकि केंद्र से लेकर राज्यों तक भाजपा में उच्चपदों पर बैठे लोग इसी तरह अपनी जिम्मेदारियों से पल्ला झाड़ने के लिए खोखले शब्दों का सहारा लेते हैं। पहलगाम के आतंकियों को प्रधानमंत्री मोदी धरती के आखिरी कोने से पकड़ कर लाने की बातें कर रहे थे, लेकिन अब तक वे शायद कोनों की तलाश ही कर रहे हैं। भ्रष्टाचार, आतंकवाद, सांप्रदायिक नफरत हर बुराई पर जीरो टॉलरेंस की बात कही जाती है, लेकिन अभी यही समझ नहीं आ रहा कि भाजपा की सहनशक्ति की परिभाषा क्या है। क्योंकि पेपर लीक की घटना पहली बार नहीं हुई है। नीट, यूजीसी नेट, बिहार में पीएससी, व्यापमं ऐसे न जाने कितने परीक्षा घोटाले भाजपा के शासन काल में हुए हैं। पिछले चुनावों में जब कांग्रेस ने इसे मुद्दा बनाया था, तो सत्ता में आने के बाद मोदी सरकार पेपर लीक पर कड़ा कानून लेकर आ गई। इसे 'लोक परीक्षा कानून 2024' (पब्लिक एग्जामिनेशन एक्ट 2024) नाम दिया गया। इसमें प्रतियोगी परीक्षाओं में अनुचित साधनों के इस्तेमाल पर तीन से पांच साल की सजा और 10 लाख रुपये तक के जुर्माने का प्रावधान किया गया है। संगठित रूप से इस तरह का अपराध करने पर 1 करोड़ रुपये तक के जुर्माने का प्रावधान है। सरकार ने कहा कि प्रतियोगी परीक्षाओं के पेपर लीक को रोकना इस कानून का मकसद है।

हालांकि अब लग रहा है कि इस कानून का मकसद केवल ध्यान भटकाना या बहानेबाजी करना था। क्योंकि जिस तरह पुष्कर धामी ने पेपर लीक के गंभीर मामले को नकल जिहाद जैसा शातिराना नाम दिया है, उससे जाहिर है कि सरकार की मंशा किसी भी तरह सांप्रदायिक तनाव बढ़ाने की है। मान लें पुलिस खालिद मलिक की जगह किसी अन्य को गिरफ्तार करती, जिसका धर्म हिंदू होता, क्या तब पुष्कर धामी इसे नकल जिहाद कहने की हिमाकत करते।

वैसे ध्यान देने वाली बात यह है कि जिस परीक्षा केंद्र से खालिद को गिरफ्तार किया गया, उसके प्रिंसिपल धर्मेंद्र चौहान हैं, जो भाजपा के हरिद्वार मीडिया प्रभारी भी हैं। श्री चौहान ने बताया कि, '18 कक्षाओं में अभ्यर्थी थे, लेकिन केवल 15 में जैमर लगे थे। खालिद का हॉल जैमर से खाली था।' उन्होंने बताया कि हमने कमीशन को इसकी जानकारी दी थी। अब पुलिस का कहना है कि केंद्र की प्रशासनिक लापरवाही की जांच यूकेएसएससी करेगा। परीक्षा से एक दिन पहले भी स्पेशल टास्क फोर्स और देहरादून पुलिस ने पंकज गौर और हाकम सिंह नाम के दो लोगों को गिरफ्तार किया था, जो अभ्यर्थियों से 12-15 लाख रुपये लेकर परीक्षा में सफलता का वादा कर रहे थे। हाकम सिंह पर 2021 के लीक मामले में भी केस दर्ज है। एक मुस्लिम आरोपी और दो हिंदू आरोपियों के होने को भी क्या पुष्कर धामी नकल जिहाद से जोड़ेंगे या अपनी प्रशासनिक अक्षमता स्वीकार कर छात्रों के साथ न्याय करेंगे, यह देखना होगा।

कितने कारगर हैं लोकतंत्र, मार्क्सवाद और धर्म ?

नेपाल में हाल में जो घटनाक्रम हुआ उससे लगता है कि लोकतंत्र भी आम लोगों की समस्याओं को हल करने में सफल नहीं है। यदि हम मानवता का इतिहास देखें तो एक समय ऐसा था जब पूरे समाज में अराजकता थी- मेरी लाठी, मेरी भैंस। उसके बाद धीरे-धीरे यह व्यवस्था खत्म हो गई और सत्ता राजा के हाथ में आ गई। ऐसी राजसत्ता पूरी दुनिया में थी। इंग्लैंड, फ्रांस, इटली जैसे देशों के राजाओं का जाल पूरी दुनिया में फैला था। इंग्लैंड के बारे में कहा जाता था कि उसके साम्राज्य में सूरज नहीं डूबता।

कई स्थानों पर सम्राज्यवादी देशों के विरुद्ध आंदोलन हुए। इंग्लैंड में भी आंदोलन हुआ जहां की साम्राज्यवादी सत्ता को उखाड़ने में भारत का भी योगदान था। भारत में आज़ादी का जबरदस्त आंदोलन हुआ। कुछ लोगों ने हिंसक तरीके अपनाए, परंतु बहुत बड़ा आंदोलन गांधीजी के नेतृत्व में अहिंसक था। जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में एक अंतरिम सरकार बनी। बाद में नेहरू जी के प्रधानमंत्रित्व में हमारे देश ने आजादी की सांस ली।

धीरे-धीरे सारी दुनिया में लोकतंत्र फैल गया, लेकिन एक और विचारधारा भी उत्पन्न हुई जिसे मार्क्सवाद कहा गया। मार्क्सवाद में एक सिद्धांत निरूपित किया गया, जिसमें यह कहा गया कि सारी दुनिया में राज करने का अधिकार जनता को होगा। तब के सोवियत यूनियन में मार्क्सवादी सरकार बनी। यह सरकार 1917 में बनी, परंतु एक शताब्दी भी नहीं टिक पाई और उसकी जड़ें उखड़ गईं। इससे महसूस हुआ कि मार्क्सवाद को भी समाप्त किया जा सकता है।

अनेक देशों में मार्क्सवादी सरकारें बनीं और धीरे-धीरे उनकी भी जड़ें उखड़ गईं। आज भी कुछ देशों में मार्क्सवादी सरकारें हैं। क्यूबा जैसे देशों में, जहां मार्क्सवादी सरकारें हैं वहां की जनता को दैनिक सुविधाएं भी प्रदान नहीं की जा सकी हैं। अखबारों में छप रहा है कि पूरा क्यूबा अंधकार में डूबा हुआ है। क्यूबा की सरकार जनता को बिजली भी नहीं दे पा रही, बाकी साधन तो छोड़िए।

चीन में कम्युनिस्ट सरकार बनी, पर थोड़े ही दिनों में उसका तख्ता पलट गया और ऐसा लगने लगा कि जैसे पूंजीवादी सरकार हो। वियतनाम में भी कम्युनिस्ट सरकार बनी, पर उसका तख्ता भी पलट गया। उत्तर कोरिया में इस समय कम्युनिस्ट सरकार है, लेकिन वहां के राष्ट्राध्यक्ष की तुलना बुरे-से-बुरे तानाशाह से की जाती है। उसका पिता भी उत्तर कोरिया में तानाशाह रहा था, लेकिन उसने मार्क्सवाद का चेहरा इस तरह पेश किया कि उसकी भी लोकप्रियता खत्म हो गई। दुनिया के अनेक राष्ट्रों में मार्क्सवादी संगठन बने, परंतु वे सत्ता हासिल नहीं कर पाए और उनका भी अधोपतन ऐसा हुआ जिसकी उनको कल्पना भी नहीं थी।

केरल में पहली कम्युनिस्ट सरकार बनी, परंतु थोड़े ही दिनों में कांग्रेस ने उसका तख्ता पलट दिया। एक चुनाव में फिर से कम्युनिस्ट आए। संयोग से इस समय केरल में

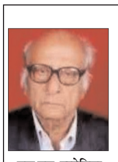

एल.एस. हरदेनिया

म्यांमार में तो बरसों से फौज का राज है। वहां की सबसे प्रभावशाली नेता और 'नोबल पुरस्कार' विजेता आंग सान सू की को, आम चुनाव जीतने के बावजूद हिरासत में रखा गया है। हिन्दुस्तान में भी लोकतंत्र की जड़ें बहुत मजबूत नहीं हैं। जवाहरलाल नेहरू ने जिन आधारों पर यहां लोकतंत्र स्थापित किया था कुछ लोग उसकी बुराई करते हैं, परंतु मेरी राय में जो जड़ें नेहरू ने डाली थीं वे आज भी मजबूत हैं और उन्हीं पर चलना चाहिए।

कम्युनिस्ट सरकार है जो अच्छा काम कर रही है। इसका मतलब है कि केरल में जब भी कम्युनिस्ट सरकार बनती है तो सभी क्षेत्रों में, खासकर स्वास्थ्य के क्षेत्र में बड़ी प्रगति होती है। इस समय पूरे देश में केरल ही एक राज्य है जहां कम्युनिस्ट पार्टी का शासन है।

दुर्भाग्य से भारत की कम्युनिस्ट पार्टियां दो भागों में बंट गई हैं। एक 'मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी' (सीपीएम) कहलाती है और दूसरी 'भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी' (सीपीआई)। इनका बंटवारा क्यों हुआ ? किस सिद्धांत पर हुआ ? यह आज तक मेरी समझ में नहीं आया। मैं अविभाजित कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य था, पर जब उसका विभाजन हो गया तो मैंने सदस्यता से त्यागपत्र दे दिया। आज भी जब ये दोनों पार्टियां एक हो जाएंगी उस दिन मैं अपनी सदस्यता पुनर्जीवित कर लूंगा।

लगता है कि लोकतंत्र आम जनता की समस्याओं को हल नहीं कर पा रहा है। अमेरिका में 300 साल से लोकतंत्र है, पर सुना जाता है कि आज भी वहां 20 प्रतिशत लोग सड़कों पर सोते हैं। ब्रिटेन में भी यही स्थिति है। हमारे देश में भी लोकतंत्र है, परंतु बड़ी संख्या में लोग सड़कों पर सोते हैं। मतलब यह कि आज भारत बड़ी संख्या में गरीब लोगों को सहायता नहीं पहुंचा पा रहा है। इसका कारण यही है कि लोकतंत्र के माध्यम से लोगों को लूटा जा रहा है। बड़ी संख्या में धनी लोग उस राशन तक को लूट रहे हैं जो गरीबों के लिए है। भारत में करीब 81 करोड़ लोगों के लिए राशन दिया जा रहा है ताकि वे अपना जीवनयापन कर सकें।

कई देशों में लोकतंत्र संतुलित नहीं है। फ्रांस में तो हर चंद महीनों में प्रधानमंत्री बदलते हैं। जापान में भी प्रधानमंत्री थोड़े समय में बदलते रहते हैं। हमारे देश में भी कांग्रेस कह रही है कि सत्ताधारी दल वोट-चोर है। राहुल गांधी का आरोप है कि महाराष्ट्र, हरियाणा, मध्यप्रदेश और कर्नाटक में ऐसा हुआ है। इसमें कितना दम है, कहा नहीं जा सकता, परंतु यह स्पष्ट है कि लोकतंत्र आम लोगों की समस्याओं को हल नहीं कर पा रहा है।

अनेक देश आज धर्म पर आधारित शासन चला रहे हैं। इस तरह के देशों में इस्लाम मानने वाले देश हैं। सऊदी अरब के पास बहुत धन है, पर उनका शासन इस्लामी है। पाकिस्तान का शासन भी इस्लाम पर आधारित है। हमारे देश में इस बात का प्रयास है कि धर्म आधारित राज्य की स्थापना हो। एक पार्टी ऐसी है जो भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाना चाहती है।

नेपाल में भी हिन्दू राजा था जिसने आम लोगों पर बहुत जुल्म किए थे। वहां की कम्युनिस्ट पार्टी ने राजशाही का तख्ता पलट दिया और हिन्दू साम्राज्य खत्म हुआ। लोकतांत्रिक सरकार बनी, परंतु वहां भी वही हुआ। वहां के आम लोगों ने मंत्रियों और सत्ताधारियों पर अय्याशी का आरोप लगाया और यह आरोप धीरे-धीरे इतना बढ़ गया कि यकायक वहां के युवकों ने हिंसा को हाथ में ले लिया।

बांग्लादेश में भी यही हुआ। वहां की प्रधानमंत्री शेख हसीना थीं। वहां के सबसे बड़े नेता मुजीबुर्रहमान ने पाकिस्तान से अलग होकर लोकतांत्रिक सरकार की स्थापना की। कुछ वर्षों तक तो लोकतंत्र चला, परन्तु उनकी पुत्री शेख हसीना ने लोकतंत्र की जड़ों को खोदना प्रारंभ किया। इससे भी वहां पर हिंसा भड़की, यहां तक कि शेख हसीना को हिन्दुस्तान में शरण लेनी पड़ी।

पाकिस्तान और श्रीलंका में भी लोकतंत्र मजबूत नहीं है। म्यांमार में तो बरसों से फौज का राज है। वहां की सबसे प्रभावशाली नेता और 'नोबल पुरस्कार' विजेता आंग सान सू की को, आम चुनाव जीतने के बावजूद हिरासत में रखा गया है। हिन्दुस्तान में भी लोकतंत्र की जड़ें बहुत मजबूत नहीं हैं। जवाहरलाल नेहरू ने जिन आधारों पर यहां लोकतंत्र स्थापित किया था कुछ लोग उसकी बुराई करते हैं, परंतु मेरी राय में जो जड़ें नेहरू ने डाली थीं वे आज भी मजबूत हैं और उन्हीं पर चलना चाहिए। नेहरू जी इस देश को साम्प्रदायिकता से दूर रखना चाहते थे। वे इसके विरूद्ध आवाज उठाते थे।

भारत में मिली-जुली आबादी है। हिन्दू हैं, मुसलमान हैं, सिक्ख हैं, ईसाई हैं, बौद्ध, जैन भी हैं। इन सबकी रक्षा तब ही हो सकेगी जब हमारे देश का शासन सेक्युलर होगा, परंतु यह भी सत्य है कि सेक्युलरिज्म की जड़ें कमजोर हो रही हैं। ऐसे में हमको शायद कोई नई विचारधारा लाना होगी। अकेला लोकतंत्र दुनिया के अरबों गरीबों की समस्याओं को हल नहीं कर सकता। नई विचारधारा कौन-सी हो, यह कहना मुश्किल है, परंतु ऐसी विचारधारा को खोजना, उसे मजबूत बनाना, आज की आवश्यकता है।

(लेखक मानव अधिकार कार्यकर्ता और वरिष्ठ पत्रकार हैं।)

उच्च जीएसटी भारत के खनिज तेल अन्वेषण को नुकसान पहुंचाएगा

■ नन्तू बनर्जी

इस बात से बहुत कम लोग असहमत होंगे कि भारत को तटीय और अपतटीय दोनों तरह के तेल खोज में पर्याप्त निवेश जारी रखना चाहिए क्योंकि देश अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कच्चे तेल के आयात पर तेज़ी से निर्भर होता जा रहा है। वर्तमान में, भारत की लगभग 86 प्रतिशत वार्षिक कच्चे तेल की ज़रूरतें आयात के माध्यम से पूरी की जा रही हैं।

असम की अपनी हालिया यात्रा के दौरान, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस बात पर चिंता व्यक्त की कि दुनिया की सबसे तेज़ी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक, यह देश कच्चे तेल और गैस के लिए विदेशी देशों पर बहुत अधिक निर्भर है। उन्होंने कहा कि देश अपनी हरित ऊर्जा क्षमताओं को बढ़ाते हुए कच्चे तेल और गैस के नए भंडारों की खोज के लिए कड़े प्रयास कर रहा है।

दुर्भाग्य से, तेल और गैस अन्वेषण पर वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) में 50 प्रतिशत की वृद्धि करने की सरकार की नवीनतम कार्रवाई एक बिल्कुल विरोधाभासी संदेश देती है। उच्च जीएसटी दर से देश में जीवाश्म ईंधन की खोज धीमी पड़ सकती है। हैरानी की बात है कि तेल और गैस अन्वेषण और ड्रिलिंग सेवाओं पर नया जीएसटी- जिसे 12 प्रतिशत से बढ़ाकर 18 प्रतिशत किया गया है- 22 सितंबर से लागू हो गया है, प्रधानमंत्री द्वारा देश में तेल और गैस की खोज को बढ़ाने की आवश्यकता के बारे में बात करने के एक हफ्ते बाद ही। जीएसटी दर में इतनी अधिक वृद्धि से भूकंपीय सर्वेक्षण, ड्रिलिंग संचालन और अपतटीय सहायक जहाजों जैसी सेवाओं को कवर करने वाली तेल और गैस अन्वेषण कंपनियों की लागत बढ़ना तय है।

तेल एवं गैस अन्वेषण पर जीएसटी दर में अचानक भारी वृद्धि का निर्णय काफी आश्चर्यजनक है और गलत संकेत देता है। इसका तत्काल प्राथमिक प्रभाव तेल एवं गैस कंपनियों के परिचालन व्यय में वृद्धि होगी। बढ़ी हुई लागत घरेलू तेल और गैस अन्वेषण और उत्पादन गतिविधियों में निवेश को सीमित करने की क्षमता को लेकर चिंताएं पैदा करती है।

हालांकि इन सेवाओं के लिए इनपुट टैक्स क्रेडिट (आईटीसी) उपलब्ध है, लेकिन कच्चे तेल और प्राकृतिक गैस को जीएसटी से बाहर रखने का मतलब है कि उत्पादकों को कुल मिलाकर अधिक लागत और संभावित रूप से कम लाभप्रदता का सामना करना पड़ेगा। यह देश की जीवाश्म ईंधन खोज पहलों को हतोत्साहित कर सकता है, विशेष रूप से पारंपरिक वाइल्डकैट कुओं के लिए खराब वैश्विक अन्वेषण सफलता दर के संदर्भ में, जो किसी नए क्षेत्र में खोदे गए पहले कुएं होते हैं। सफलता दर लगभग लगातार गिरती जा रही है, जो 2020 में 10.6 प्रतिशत के निचले स्तर पर पहुंच गई।

वास्तव में, उच्च परिचालन लागत और संभावित रूप से गिरती वैश्विक कच्चे तेल और गैस की कीमतों के संयोजन से भारत में तेल अन्वेषण कंपनियों का लाभ मार्जिन और कम हो सकता है। बढ़ती लागत का बोझ घरेलू तेल और गैस अन्वेषण और उत्पादन गतिविधियों में निवेश को प्रतिबंधित करने वाले ऐसे उपायों की संभावना को लेकर चिंताएं पैदा करता है। तेल अन्वेषण उद्योग के साथ-साथ बाजार ने भी सरकार के इस फैसले पर कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त की है क्योंकि ओएनजीसी और ऑयल इंडिया सहित प्रमुख तेल और गैस कंपनियों के शेयरों की कीमतों में भारी गिरावट आई है। विश्लेषकों ने चेतावनी दी है कि तेल और गैस अन्वेषण पर जीएसटी में अचानक भारी वृद्धि और गिरती अंतरराष्ट्रीय कीमतों ने इस क्षेत्र के लिए एक कठिन परिदृश्य प्रस्तुत किया है। ऐसी परिस्थितियों में अन्वेषण और उत्पादन में 218,475 करोड़ रुपये (25 अरब अमेरिकी डॉलर) के निवेश को आकर्षित करने की उद्योग की उम्मीद पूरी होने की संभावना कम ही दिखती है।

उच्च जीएसटी दर वास्तव में प्रधानमंत्री के अन्वेषण पर नवीनतम फोकस के विपरीत है। ऐसा लगता है कि सरकार का एक वर्ग अनिश्चित घरेलू तेल खोज पर खर्च करने की तुलना में तेल आयात करने में अधिक खुश है। कच्चे तेल और गैस की अधिक स्थानीय आपूर्ति के अभाव में, देश आयातित हाइड्रोकार्बन पर और भी अधिक निर्भर हो जाएगा। हमें 1971 के बांग्लादेश मुक्ति संग्राम के अपने अनुभव को नहीं भूलना चाहिए, जब तत्कालीन पाकिस्तान समर्थक अमेरिकी सरकार ने बांग्लादेश मुक्ति सेना को सक्रिय समर्थन देने के लिए भारत में तेल आपूर्ति को रोकने की कोशिश की थी। देश के रणनीतिक हित में यह उचित है कि देश कम सफलता दर के बावजूद महंगे घरेलू तेल और गैस अन्वेषण प्रयासों को सक्रियता से आगे बढ़ाए।

हाल ही में, ओएनजीसी और ओआईएल द्वारा अंडमान सागर में भारत की तेल खोजें काफी उत्साहजनक रही हैं। गहरे पानी में ड्रिलिंग से प्राप्त प्रारंभिक निष्कर्ष एक सक्रिय पेट्रोलियम प्रणाली का संकेत देते हैं, जो म्यांमार और सुमात्रा के सफल क्षेत्रों के बराबर है। ओएनजीसी द्वारा उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल में तटवर्ती तेल खोजों ने भी उत्साहजनक परिणाम दिए हैं। नवीनतम रिपोर्टों से पता चलता है कि ओएनजीसी की कच्चे तेल की खोजों में उत्तर प्रदेश के बलिया में एक संभावित बड़ा भंडार शामिल है, जहां 3,000 मीटर की गहराई पर ड्रिलिंग शुरू हो चुकी है। पश्चिम बंगाल में, ओएनजीसी ने उत्तर 24 परगना जिले के अशोक नगर में भी कई खोजें की हैं। ओएनजीसी और ओआईएल दोनों समुद्री क्षेत्रों में सर्वेक्षण बढ़ा रहे हैं। 2023-24 में, कुल मिलाकर 741 कुओं की खुदाई की गई, और नामांकन एवं संविदात्मक क्षेत्रों में 12 खोजें की गईं।

ऐसी परिस्थितियों में, तेल एवं गैस अन्वेषण पर जीएसटी दर में अचानक भारी वृद्धि का निर्णय काफी आश्चर्यजनक है और गलत संकेत देता है। इसका तत्काल प्राथमिक प्रभाव तेल एवं गैस कंपनियों के परिचालन व्यय में वृद्धि होगी। बढ़ी हुई लागत घरेलू तेल और गैस अन्वेषण और उत्पादन गतिविधियों में निवेश को सीमित करने की क्षमता को लेकर चिंताएं पैदा करती है। उद्योग विश्लेषकों ने चेतावनी दी है कि करों में यह वृद्धि, गिरती अंतरराष्ट्रीय कीमतों के साथ, घरेलू तेल अन्वेषण क्षेत्र के लिए एक कठिन परिदृश्य प्रस्तुत करती है। यह आश्चर्य की बात है कि क्या प्रधानमंत्री, जिन्होंने हाल ही में असम में तेल आयात में कटौती के लिए घरेलू तेल अन्वेषण पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता पर एक कड़ा बयान दिया था, को वित्त मंत्री या केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा तेल खोज कार्यों पर जीएसटी दर में नवीनतम वृद्धि और इस अप्रत्याशित कदम के पीछे के कारणों के बारे में ठीक से जानकारी दी गई थी।

आपके पत्र

कई राज्यों में बाढ़, भूस्खलन और बादल फटने की घटनाओं से हालात बेकाबू

प्राकृतिक आपदाओं से जनजीवन प्रभावित हुआ है वहीं बादल फटने और बारिश का पानी घरों में घुसने से लोगों पर आफत के बाद छाये हैं। कोलकाता में भारी बारिश से कई मौतें हुई है। प्रकृति बेकाबू होती है,तब मनुष्य के अनेक जतन के बावजूद भी कहर बरपा कर ही शांत होती है। हिमाचल प्रदेश में जुलाई में बादल फटने और बाढ़ से अलग-अलग घटनाओं में करीब 11 मौतें हुई थी। उत्तराखंड में धराली में बादल फटने से आई बाढ़ और बाद में होटल और मकान ताश की तरह ढह गए। दरअसल,कुदरत के इस रौद्ररूप को लोगों ने नजदीक से देखा। मनुष्य कुदरत के सामने लाचार है। उत्तरकाशी में पीड़ितों की मौत और घायल हुए लोगों की स्थानीय प्रशासन एवं आसपास के क्षेत्रों के लोगों ने बचाव और मदद के लिए हाथ बढ़ाया। कुदरत की आफत अचानक ही आती है। इन आफत से कोई भी व्यक्ति सम्भल भी नहीं पाता है कि मानसून में हिमालय राज्यों में अक्सर बादल फटने की घटना होती है। ऐसी घटनाओं का पूर्वानुमान भी नहीं लगाया जा सकता। उपरोक्त आफत प्रकृति के साथ खिलवाड़ का ही नतीजा है कि कुदरत बदला ले रही है। प्रकृति अपने कर्मों का हिसाब चुकता करती है। 2025 में जरूरत से ज्यादा बारिश हुई है। दरअसल,आगामी दिनों में अनेक राज्य में दीपावली तक बारिश होने का पूर्वानुमान मौसम विभाग ने लगाया है। कुदरत की घटनाओं को विस्मृत नहीं करना चाहिए। जिन घटनाओं से जनजीवन पर आफत आती है उसके बाद लोग इतिश्री समझकर हाथ पर हाथ धर कर बैठ जाते हैं। 2025 की घटना के पूर्व 2024 में भी कुदरत का कहर बरपा था। केरल के वायनाड में बादल फटने और भारी बारिश से करीब 300 लोगों की जान चली गई थी। यह आपदा केरल के इतिहास में सबसे भीषण आपदा में से एक थी। मनुष्य कुदरत के समक्ष कर भी क्या कर सकता है। यह विनाश के गुप्त संकेत है जिससे पूर्व में प्रकृति लोगों को जागरूक करने के लिए इशारा करती है। ऐसी दु:खद और जानलेवा घटना के बाद भी प्रकृति की धारा शांत नहीं हुई। बहरहाल,इस घटना में 559 व्यक्ति घायल हुए और लगातार तीन दिन तक बारिश का कहर रहा। 31 जुलाई शिमला,कुल्लू और मनाली में बादल फटने की इस घटना में22 लोगों की मौत हो गई और 33 लोग लापता हुए। ये घटना प्रकृतिजन्य होने के कारण किसी पर दोषारोपण भी नहीं किया जा सकता है। यह प्रशासन के चिंता का विषय रहा है। ये प्रकृतिजन्य घटनाएं नहीं होती तो सरकार की जवाबदेही कम आंकी जाती। लिहाजा,28 जुलाई 2021 में जम्मू-कश्मीर की इस घटना में हुंजार गांव में बादल फटने से 26 लोगों की मौत हो गई। उत्तर भारत में इस साल भारी बारिश से जनजीवन प्रभावित हुआ है। हिमाचल,जम्मू-कश्मीर और उत्तराखण्ड में भारी बारिश से काफी नुकसान सहन करना पड़ा है। हजारों हैक्टेयर फसल बर्बाद हुई, वहीं पंजाब की हालत गम्भीर बनी हुई है।

कुछ दिनों पूर्व मोदीजी ने हवाई निरीक्षण कर बाढ़ का जायजा लिया। पंजाब में 43 लोगों की मौत हुई। राजस्थान में कई जिले ऐसे हैं,जहां कम बारिश होती है,लेकिन इस साल 2025 में बारिश का कहर बरपा। नतीजतन,जनहानि सहित खड़ी फसलों को नुकसान हुआ है। पंजाब में 1,948 गांव जलमग्न हो गए जबकि हिमाचल और उत्तराखंड की स्थिति गम्भीर बनी हुई थी कि पंजाब में ब्रिज सड़कें बन गई। कुदरत के सामने लाचार मानव कुछ नहीं कर सकता है। अन्नदाता कहे जाने वाले पंजाब के किसानों की स्थिति बहुत दयनीय बनी हुई थी वहीं लोगों का आशियाना तक उजड़ गया। इस पर स्थानीय प्रशासन की मदद और केंद्र सरकार के अनुदान के बाद पंजाब में लोगों की जिंदगी पटरी पर लौट रही है। बारिश का कहर अभी भी अनेक राज्यों में थम नहीं रहा है। कोलकाता में नींद से लोग जागे तो चारों तरफ पानी ही पानी था। कोलकाता में दुर्गा पूजा पंडालों में पानी घुस गया। ट्रैफिक ठप्प हो गया और फ्लाइट का आवागमन भी बाधित हुआ। 37 सालों बाद सबसे भारी बारिश से कोलकाता में सात लोगों की मौत हुई है। अस्पतालों में पानी भर जाने से लोगों का हाल बेहाल है।

पहाड़ी क्षेत्रों में जल निकासी व्यवस्थित होनी चाहिए। मौसम विभाग और सरकारी निर्देश को नजरअंदाज नहीं करे। लोगों को ढलान और नदी के तटों पर घर बनाने से बचना होगा। यह बात अलग है कि मनुष्य मात्र को कुदरती घटनाओं का आभास नहीं होता। बादल फटने की घटनाओं को हल्के में नहीं लेना चाहिए। कई मौतें तो लापरवाही के कारण होती है। कई जगह दीपावली तक बारिश होने के संकेत मौसम विभाग ने दिए हैं। ऐसे में लोगों को सावधानी रखनी आवश्यक है। कोलकाता में आगामी दिनों में भारी बारिश की चेतावनी मौसम विभाग ने दी है। बचाव ही उपाय है।

-कांतिलाल मांडोत, सूरत

ललित सुरजन की कलम से

इजिप्त : बिगड़ते हालात

'मुस्लिम ब्रदरहुड मुर्सी की रिहाई और बहाली के लिए उग्र आंदोलन छेड़े हुए है तो सेना बंदूक की गोलियों से उसका मुकाबला करने में लगी है। ऐसे में सेना का यह दावा निरर्थक हो जाता है कि वह जनतंत्र की बहाली करना चाहता है। इस सैनिक शासन में अलबरदेई ने उपराष्ट्रपति पद संभाल लिया था, लेकिन सेना के साथ मुठभेड़ में बड़े पैमाने पर हुई मौतों के बाद उन्होंने न सिर्फ पद त्याग कर दिया, बल्कि देश छोड़कर भी चले गए।'

'अभी आगे कोई रास्ता दिखाई नहीं दे रहा है, लेकिन मेरा सोचना यही है कि इजिप्त के उदारवादी तबके को हिम्मत के साथ सामने आकर नेतृत्वकारी भूमिका का परिचय देना चाहिए तभी देश के ऊपर छाया अंधेरा दूर होगा। इसके साथ यह याद रख लेना भी उचित होगा कि सोशल मीडिया से सच्ची क्रांति नहीं होती।'

(देशबन्धु में 22 अगस्त 2013 को प्रकाशित)

https://lalitsurjan.blogspot.com/2013/08/blog-post_21.html

पावन प्रसंग

जीव सेवा शिव सेवा

स्वामी विवेकानंद ने बहुत ही सुंदर कहा है- इतनी तपस्या के बाद मैंने इस सत्य को समझा है कि ईश्वर प्रत्येक जीव के अंदर का हाल जानते हैं। जो जीव की सेवा करता है, वह वास्तव में भगवान की सेवा करता है। जो भगवान को सिर्फ मूर्तियों में, छवियों में देखता है उसकी पूजा प्रारंभिक है, पर जो ईश्वन को हर जीव में, हर प्राणी में देखता है और जीव की शिव भाव से सेवा करता है, वह वास्तव में अपने ईश्वर की सबसे अच्छी पूजा कर रहा है। इस संसार में निष्काम भाव से किसी भी प्राणी की सेवा करना, पशु पक्षियों की सेवा, वृक्ष, वनस्पतियों की सेवा, असहायों, निर्बलों की सहायता करना ही ईश्वर की सर्वोत्तम पूजा है। जिस प्रकार भगवान का नित्य निरंतर ध्यान करने, स्तुति करने से भक्त का मन निर्मल होता जाता है, वैसे ही जीव की सेवा करने से भी चित्त शुद्धि होती है, मन निर्मल होता जाता है जो अंतत: भगवत्प्राप्ति और शाश्वत सुख का कारण बनता है। ईश्वर उपासना के साथ-साथ हर प्राणी, समाज की सेवा भी करते रहना है। हम एक शिक्षक, अध्यापक, अभियंता, चिकित्सक, वैज्ञानिक, किसान, उद्योगपति, व्यवसायी, नेता-अभिनेता और एक सामान्य मनुष्य के रूप में यदि अपना कर्तव्यपालन बड़ी ईमानदारी और निष्ठा के साथ कर रहे हैं तो यह भगवान की ही पूजा है, सेवा है।

हम अपनी प्रतिभा, समय, श्रम साधन, धन आदि से किसी की सेवा-सहायता करते हैं, किसी असहाय अथवा जरूरतमंद की मदद करते हैं तो यह भगवान की ही पूजा है। जैसे हम भगवान की मूर्ति को जल, गंध, अक्षत धूप-दीप नैवेद्य आदि अर्पित करते हैं, वैसे ही हम व्यक्ति, समाज की धन,श्रम, समय आदि से सेवा करके विश्वरूप भगवान की ही सेवा करते हैं। नाम, प्रशंसा आदि पाने की इच्छा से किसी की सेवा, सहायता करना भगवान की पूजा नहीं बल्कि निष्काम भाव से सहायता करना चाहिए। निष्काम भाव से भगवान की इस प्रकार की पूजा वही कर पाता है जिसका मन भगवान का नित्य ध्यान, भजन, स्मरण, स्तुति उपासना करते हुए निर्मल और निश्छल हो चुका है। मन के निर्मल और निश्छल होने पर ही व्यक्ति सर्वप्रथम अपनी आत्मा में परमात्मा की अनुभूति कर पाता है। तब जाकर वह भगवान को यत्र तत्र सर्वत्र हर जीव में, हर प्राणी में और सृष्टि के कण-कण में देख पाता है। उसका हृदय करुणा, प्रेम, संवेदना से सराबोर हो उठता है। वह स्वयं को देखने में समर्थ हो जाता है। वह सब में अपनी ही आत्मा का विस्तार देखता है और शिव भाव से जीव की सेवा करने को व्याकुल हो उठता है। सेवारूपी पूजा, शाश्वत सुख व भगवत्प्राप्ति का अचूक व अमोघ उपाय है। सेवा ही अध्यात्म का प्रतिफल है, पूजा का प्रसाद है। सेवा ही परम धर्म है, सेवाभावी ही सच्चा अध्यात्म प्रेमी है, भगवत्प्रेमी है। सेवाभावी ही भगवान का सच्चा उपासक और आराधक है। अत: हम भी क्यों न विश्वरूप भगवान की सेवा करके सच्चे उपासक-आराधक बनें।

-अखंड ज्योति

प्रकाशक, मुद्रक : राजीव रंजन श्रीवास्तव द्वारा पत्रकार प्रकाशन प्रा. लि. के लिए 506, आई.एन.एस. बिल्डिंग, 9, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित एवं बीएफएल इंफोटेक लि., सी 9, सेक्टर-3, नोएडा से मुद्रित। सम्पादक : राजीव रंजन श्रीवास्तव, (पी.आर.बी. एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार)। आर.एन.आई. नं. DELHIN/2008/24216. दिल्ली कार्यालय :फोन: 011-23718195,23357784, फैक्स: 011-43581404, नोएडा कार्यालय: फोन: 0120-4114404 फैक्स: 0120-4273770
ई-मेल: deshbandhudelhi@gmail.com वेब: www.deshbandhu.co.in

चिंतन

स्वदेशी तेजस से मजबूत होगा देश का सुरक्षा तंत्र

महज एक दिन पहले ही अखबारों में सुर्खियां थी कि छह दशक से देश की सुरक्षा प्रणाली का स्तंभ 26 सितंबर को सेवानिवृत्त हो जाएगा। इसके लिए बाकायदा एक समारोह का आयोजन भी होगा जिसमें मिग-21 को विधिवत विदाई दी जाएगी। 1963 में सोवियत यूनियन (अब रूस) से मुम्बई उतरे मिग-21 ने देश की सुरक्षा में अहम भूमिका निभाई। साल 1965 और 1971 में पाकिस्तानी हमलों को मुंह तोड़ जवाब देने वाले मिग-21 ने कारगिल युद्ध में विजय दिलाने में खूब योगदान दिया। मिग-21 की सेवानिवृत्ति पर सबसे बड़ा सवाल यही था कि अब उसका स्थान कौन लेगा। वैसे तो देश की वायुसेना के पास एक मिग 29, फ्रांसीसी मिराज और ब्रिटिश जगुआर विमान शामिल हैं। इस बेड़े का अधिकांश हिस्सा विरासत एंटोनोव एएन-32 , डोर्नियर 228 और हॉकर सिडली एचएस 748 विमानों से बना है। इसके बावजूद मुख्य विकल्प को लेकर साफ-साफ कहा जा रहा था कि स्वदेशी तकनीक से बना तेजस ही मिग-21 का उत्तराधिकारी बनेगा। मिग-21 का मुख्य और प्रत्यक्ष विकल्प भारतीय वायुसेना के लिए स्वदेशी लाइट कॉम्बैट एयरक्राफ्ट तेजस एमके1ए लड़ाकू विमान है, जिसे हाल ही में वायुसेना में शामिल करने की मंजूरी मिली है। तेजस, अपने आधुनिक एईएसए रडार, अस्त्र मिसाइल और 65 फीसदी स्वदेशी सामग्री के साथ, मिग-21 से कहीं अधिक सुरक्षित और बहुमुखी है। इसके अलावा, भारतीय वायुसेना के पास राफेल और सुखोई जैसे अन्य उन्नत विमान भी हैं जो मिग-21 से कहीं ज्यादा उन्नत हैं। अब रक्षा मंत्रालय ने मिग-21 की विदाई से पहले ही रक्षा तंत्र को मजबूत करते हुए 62,370 करोड़ रुपये की लागत से 97 तेजस मार्क-1ए हल्के लड़ाकू विमानों की सप्लाई करने के लिए हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड के साथ एक बड़े सौदे को औपचारिक रूप दिया है। यह स्वदेशी लड़ाकू विमान प्लेटफॉर्म के लिए अब तक का सबसे बड़ा ऑर्डर है। वहीं, दुनिया में अमेरिका, रूस, फ्रांस, इजरायल और चीन के पास पांचवीं पीढ़ी के विमान हैं। चीन तो छठी पीढ़ी के जेट भी बनाने का दावा कर रहा है। पांचवीं पीढ़ी की तकनीक सिर्फ अमेरिका, रूस और चीन के पास है। भारतीय वायु सेना को मजबूत करने के लिए एडवांस मीडियम कॉम्बैट एयरक्राफ्ट के मॉडल को भी मंजूरी दे दी है। इस प्रोजेक्ट की जिम्मेदारी एयरोनॉटिकल डेवलपमेंट एजेंसी को दी गई है। एजेंसी प्राइवेट कंपनियों के साथ मिलकर काम करेगी। इस कॉन्ट्रैक्ट को भारत के लड़ाकू बेड़े के लिए महत्वपूर्ण माना जा रहा है, जो पुराने विमानों के कई फेज में रिटायरमेंट से पैदा हुई खामियों को दूर करेगा। वैसे भी एचएएल ने 13वें सीरीज प्रोडक्शन तेजस एमके-11 की पहली उड़ान सफलतापूर्वक पूरी कर ली है। यह उड़ान अमेरिकी कंपनी जनरल इलेक्ट्रिक के कैटेगरी-बी एफ-404 इंजनों से की गई थी। असली एफ-404-आईएन-20 इंजन अभी आने बाकी हैं। बीते दिनों वायुसेना चीफ एपी सिंह ने कहा था कि एक भी सिंगल प्रोजेक्ट टाइम पर पूरा नहीं हो पाया है। इसी को देखते हुए सरकार ने तुरंत सौदे को मंजूरी दे दी है ताकि किसी तरह की देरी न हो। एचएएल का दावा है कि वह अक्टूबर में 83 तेजस जेट विमानों में से पहले दो की डिलीवरी कर देगा। साफ है कि वायुसेना को तेजस मिलने के बाद देश की सुरक्षा अभेद होगी। एक और पाकिस्तान चीन से जे-35ए की खरीद कर रहा है, वहीं दूसरी ओर हम उससे कहीं उन्नत स्वेदशी का निर्माण कर रहे हैं। इससे न केवल हम अपनी सुरक्षा को मजबूत करेंगे बल्कि आत्मिनर्भर भारत का सपना भी पूर्ण होगा।

राष्ट्र-चिंतन
आचार्य श्रीहरि

> अरब-मुस्लिम नाटो गठन का सपना अधूरा रह गया। पाकिस्तान, तुर्की और हमास का प्रयास विफल हो गया। कतर खुद पीछे हट गया। इस्लामिक सहयोग संगठन की गोलबंदी भी कोई काम नहीं आई। नाटो जैसा कोई भी अरब-मुस्लिम नाटो सैनिक फोर्स का खड़ा होना मुश्किल है। फिर इजरायल के पक्ष में सैनिक गठबंधन बनेगा, फिर भारत, दक्षिण कोरिया जैसे देश भी अपनी सुरक्षा के लिए इजरायल के साथ सैनिक गठबंधन के लिए मजबूर होंगे। नाटो और अमेरिका भी ऐसी कोई सेना को अपने विरुद्ध मानेगा। फिर पाकिस्तान-तुर्की और हमास जैसी शक्तियां अरब-मुस्लिम नाटों का सपना देखते रहें, यह सपना सच होने वाला नहीं है।

अरब-मुस्लिम नाटो गठन की विफलता

अरब-मुस्लिम नाटो गठन का सपना अधूरा रह गया। पाकिस्तान, तुर्की और हमास का प्रयास विफल हो गया। कतर खुद पीछे हट गया। इस्लामिक सहयोग संगठन की गोलबंदी भी कोई काम नहीं आई। अरब लीग और इस्लामिक सहयोग संगठन क्या सिर्फ हाथी के दांत हैं, गुब्बारे की हवा हैं, मंच पर सिर्फ बैठकर शेखी बघारने वाले संगठन हैं, इनमें शक्ति नहीं हैं, इनमें निर्णय लेने की क्षमता नहीं हैं? क्या ये यूरोपीय देशों की तरह मुस्लिम देशों का अपना कोई सैनिक शक्ति का निर्माण नहीं कर सकते हैं? क्या ये नाटो का विकल्प नहीं बना सकते हैं? इनके पास संगठन हैं, इनके पास दुनिया की सबसे बड़ी आबादी यानी मुस्लिमों का समर्थन है, ये सिर्फ भीखमंगे नहीं हैं, ये सिर्फ गरीब नहीं हैं, ये सिर्फ अर्थव्यवस्थाहीन नहीं हैं, ये सिर्फ अनिर्यातक नहीं हैं, बल्कि ये अमीर हैं, ये शक्तिशाली भी हैं, ये समर्थ भी हैं, इनके पास धन की कोई कमी नहीं है, इनके पास खनिज संपदाओं की कोई कमी नहीं हैं, ये तेल और गैस के निर्यातक भी हैं, संयुक्त राष्ट्रसंघ की भूमिकाओं के नियंत्रक भी हैं।

इतना ही नहीं बल्कि दुनिया के सभी लोकतांत्रिक नियामकों में इनकी संख्या और सक्रियता भी हैं शक्तिशाली हैं। फिर ये मुस्लिम अधिकारों को लेकर एकजुटता दिखाने में कमजोर क्यों और कैसे साबित हो जाते हैं? इजरायल के खिलाफ इनकी एकजुटता क्यों नहीं पनप पाती है, अमेरिका के खिलाफ इनकी बोलती क्यों बंद रहती हैं, यूरोपीय देशों के खिलाफ भी ये अपनी भूमिका सर्वश्रेष्ठ और निर्णायक क्यों नहीं बना पाते हैं? क्या अरब लीग और इस्लामिक सहयोग संगठन भविष्य मे मुस्लिमों के अधिकार और भलाई के लिए मजबूत होने के लिए तैयार हैं? ख्याल यह रखना चाहिए कि दुनिया उसी की बात सुनती है, उसी के सामने सिर झुकाती है, उसी की अस्मिता और संप्रभुत्ता का सम्मान करती है जिसके पास शक्ति होती है, जिसके पास मजबूत संगठन होते हैं, जिसकी आबादी अपने अधिकारों के प्रति सक्रिय होती है और शक्ति का प्रयोग करती है। अमेरिका इसी कसौटी को आधार बनाकर दुनिया पर राज करता है। रूस इसी कसौटी पर यूक्रेन की संप्रभुता को रौंद रहा है। संदर्भ इजरायल बनाम अरब लीग और इस्लामिक सहयोग संगठन है। इजरायल ने छह मुस्लिम देशों पर मिसाइलें दांगी थी और लड़ाकू विमानों से हमले किए थे। खासकर कतर पर उसने बम बरसाये थे। इजरायल का आरोप है कि कतर सहित अन्य मुस्लिम देश हमास के नेताओं का संरक्षन देते हैं, पोषक की भूमिका निभाते हैं और संहारक भी बनाते हैं। जहां तक कतर की इस कसौटी पर संलिप्तता की बात है तो इसमें अनिवार्य तौर पर तथ्य शामिल हैं। कतर सभी मुस्लिम आतंकवादी संगठनों का संरक्षणकर्ता है और पालनहार है। आपको याद दिला दें कि हमास ही नहीं बल्कि तालिबान और अलकायदा का भी कतर संरक्षणकर्ता रहा है। तालिबान के बड़े नेता कतर में ही रहते थे और वहीं से अमेरिका के खिलाफ हिंसा की नीति को आगे बढ़ाते थे। अमेरिका और तालिबान के बीच में शांति समझौते को लेकर हुई बातचीत भी कतर में हुई थी। हमास के बड़े नेता कतर में संरक्षण पाए हुए हैं और कतर से ही इजरायल के खिलाफ अभियान जारी रखे हुए हैं। इजरायल का एक्शन हमास को समाप्त करने को लेकर जारी है। इजरायल कहता है

कि जब तक हमास का अस्तित्व नहीं मिटता है, उसका संहार नहीं होता है तब तक उनकी मिसाइलें और लड़ाकू विमानें उड़ती रहेंगी। हमारी मिसाइलें वहीं गिरेंगी जहां पर हमास के हिंसक आतंकवादी संरक्षण पाए हुए हैं। इसी दृष्टिकोण से इजरायल ने छह मुस्लिम देशों के स्थित हमास के ठिकानो पर हमला किया था। ईरान तो अब चुप हो गया है और ईरान की हमास के पक्ष में भड़काऊ बयानबाजी थम गई। ईरान को मालूम है कि हमास के पक्ष मे जितना ज्यादा बोलेगा, उतना ही उस पर इजरायल की मिसाइलें गिरेगी।

इजरायल के हमले के बाद मुस्लिम देश नाटो की तरह एक सुरक्षा कवच बनाना चाहते थे। इसी दृष्टिकोण से जुटे हुए थे। इस्लामिक सहयोग संगठन मुस्लिम देशों की एक साक्षा सुरक्षा कवच बनाने के लिए प्रतिबद्ध था और अपना इरादा भी जाहिर किया था। खासकर पाकिस्तान और तुर्की बहुत ज्यादा उत्साहित थे। पाकिस्तान इस मामले में बहुत ही उतावला था और आगे बढ़कर हिंसक रूप से समर्थन कर रहा था। पाकिस्तान की जल्दबाजी इतनी थी कि तुरंत ही नाटो की तरह हमारा रक्षा संगठन खड़ा होना चाहिए। इस प्रसंग में पाकिस्तान अपना हित देख रहा था और अपने हित की कसौटी पर मुस्लिम देशों को उकसा रहा था। पाकिस्तान भविष्य की दृष्टि से अपने आप को देख रहा था। हाल ही में पाकिस्तान पर भारत का हमला हुआ था और भारत ने उसकी संप्रभुत्ता को रौंदा था। पाकिस्तान अपने बल पर भारत का सामना नहीं कर पाया था। पाकिस्तान की दूरदृष्टि थी कि भारत के साथ संघर्ष में अरब-मुस्लिम नाटो उसका साथ देगा और भारत का संहार करेगा। तुर्की भी अरब मुस्लिम दुनिया का चौधरी बनने के लिए तत्पर था। लेकिन अन्य मुस्लिम देश भविष्य के खतरे और संकट को भांप गये। पाकिस्तान खुद कंगाल है, कटौरे लेकर भीख मांगता है और आतंकवाद की फैक्टरी लगाकर दुनिया को संकट में डालता है। पाकिस्तान के लोग मुस्लिम देश में जाते हैं तो फिर वहां पर विखंडन और मजहबी कुरीतियों की आग लगा देते हैं, इस कारण अरब के कई मुस्लिम देशों में पाकिस्तानी मुसलमानों को नापसंद किया जा रहा है। अरब-मुस्लिम नाटो संगठन खड़ा करने के पीछे नेतृत्व की समस्या थी, पैसे की समस्या थी। अरब-मुस्लिम नाटो का केन्द्रीय कार्यालय कहां बनेगा, किस देश में बनेगा और उसका प्रमुख कौन होगा? अरब मुस्लिम नाटो संगठन के गठन पर अरबो-खरबों डॉलर खर्च होगा, सिर्फ इतना ही नहीं बल्कि हर साल इसकी सक्रियता पर करोड़ों और अरबों डॉलर खर्च होंगे। सबसे बडी बात यह है कि ऐसी सैनिक फोर्स किसके प्रति जिम्मेदार होगी, इस्लाम के प्रति जिम्मेदार होगी तो फिर किसी देश का नियंत्रण ऐसी फौज स्वीकार ही नहीं करेगी। इस कसौटी पर ऐसी कोई सेना खुद भस्मासुर की प्रतीक बन जाएगी।

हमास को लेकर खुद मुस्लिम देश एकमत नहीं है। हमास एक आतंकवादी संगठन है और उसकी हिंसक करतूतों ने मानवता के प्रति घिनौना उदाहरण प्रस्तुत किया है। नाटो जैसा कोई भी अरब-मुस्लिम नाटो सैनिक फोर्स का खड़ा होना मुश्किल है। हथियार कहां से आएगा? तकनीक कहां से मिलेगी? तकनीक और हथियार तो अमेरिका और यूरोप से मिलेंगे। चीन और रूस हथियार भी देंगे तो उसकी कीमत खूब वसूलेंगे। फिर इजरायल के पक्ष में सैनिक गठबंधन बनेगा, फिर भारत, दक्षिण कोरिया जैसे देश भी अपनी सुरक्षा के लिए इजरायल के साथ सैनिक गठबंधन के लिए मजबूर होंगे। नाटो और अमेरिका भी ऐसी कोई सेना को अपने विरुद्ध मानेगा। फिर पाकिस्तान-तुर्की और हमास जैसी शक्तियां अरब-मुस्लिम नाटों का सपना देखते रहें, यह सपना सच होने वाला नहीं है।

(ये स्वतंत्र लेखक के अपने विचार हैं।)

लेख पर अपनी प्रतिक्रिया haribhoomi@gmail.com पर दे सकते हैं।

कयास

संतोष कुमार भार्गव

मणिपुर में शांति और विकास फिर लौटेगा

निस्संदेह, पिछले दो वर्षों से अधिक समय से हिंसाग्रस्त मणिपुर का संकट लाइलाज-सा नजर आता रहा है। अब केंद्र सरकार और राज्य के दो प्रमुख कुकी-जो समूहों के बीच बीते गुरुवार को हस्ताक्षरित ऑपरेशन निलंबन समझौते से अशांत मणिपुर में शांति बहाली तथा सामान्य स्थिति बनाए रखने के प्रयासों को बल मिलने की उम्मीद जगी है। उम्मीद है कि इस प्रयास से राज्य की क्षेत्रीय अखंडता सुनिश्चित की जा सकेगी। समझौते के बाद निर्दिष्ट शिविरों को संवेदनशील क्षेत्रों से स्थानांतरित करने और राज्य में दीर्घकालिक शांति तथा स्थिरता सुनिश्चित करने की दिशा में भी सहमति बनी है। वहीं, यह घटनाक्रम इस कारण से भी महत्वपूर्ण हो जाता है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बीते दिनों मणिपुर का दौरा कर चुके हैं। विपक्ष लंबे समय से मांग करता रहा है कि प्रधानमंत्री मणिपुर क्यों नहीं जाते। अब विपक्ष का मुंह पीएम मोदी ने बंद कर दिया है। मई, 2023 में मैतेई और कुकी समुदाय के बीच जातीय हिंसा भड़कने के बाद प्रधानमंत्री की इस संवेदनशील राज्य की यह पहली यात्रा थी। विगत में विपक्ष लगातार आरोप लगाता रहा है कि केंद्र ने मणिपुर को उसके हाल पर छोड़ दिया। विपक्ष ने राज्य में डबल इंजन सरकार के दौरान कुशासन का आरोप भी लगातार लगाया है। विरोधी जो भी कहें, यह नहीं भूलना चाहिए कि संघर्ष आरंभ होने के शुरुआती दिनों में ही गृहमंत्री अमित शाह ने राज्य का दौरा किया था। उसके पहले से गृह मंत्रालय के अनेक अधिकारियों ने वहां डेरा डाला था। आशा है कि समझौते के मुताबिक कुकी विद्रोहियों के खिलाफ एक साल तक सैन्य अभियान रोकने पर बनी सहमति कायम रहेगी। यह समझौता पहले भी था, लेकिन हथियारबंद समूहों द्वारा हिंसा जारी रखने के कारण इसे निलंबित करना पड़ा। समझौते में कुछ नई शर्तें भी जोड़ी गई हैं, जिनमें कड़ी निगरानी के साथ उल्लंघन की स्थिति में समीक्षा शामिल है। इसका अर्थ हुआ कि सरकार ने न्यायसंगत मांगों को स्वीकार किया है, लेकिन हिंसा बिल्कुल बर्दाश्त नहीं की जाएगी। हाल के महीनों में अपेक्षाकृत शांति का एक मुख्य कारण यह भी है कि कई आतंकवादियों ने राज्य के अधिकारियों की अपील के जवाब में लूटे गए हथियार कानून प्रवर्तन एजेंसियों को लौटाए हैं। निश्चित रूप से हाल ही में हुआ समझौता लंबे समय से अशांत चल रहे मणिपुर के हित में एक स्वागत योग्य कदम ही कहा जाएगा। इसके बावजूद कुछ पेचीदा मुद्दे अभी भी सुलझाने बाकी हैं। इस मुहिम में विभिन्न हितधारकों को शामिल करने की जरूरत है। राज्य में एक प्रभावशाली नागरिक समाज समूह, कुकी-जो काउंसिल ने स्पष्ट किया है कि वह मैतेई और कुकी-जो क्षेत्रों के बीच बफर जोन में अप्रतिबंधित या मुक्त आवाजाही के पक्ष में नहीं। यह भी कि मणिपुर के नागाओं के शीर्ष निकाय ने मुक्त आवागमन व्यवस्था को समाप्त करने और भारत-म्यांमार सीमा पर बाड़ लगाने का विरोध किया है। इसके अलावा विरोध में राज्य में समुदाय वाले सभी क्षेत्रों में व्यापार प्रतिबंध लागू करने की चेतावनी भी दी है। उल्लेखनीय है कि राज्य में जातीय संघर्ष की मूल वजह बहुसंख्यक मैतेई समुदाय की अनुसूचित जनजाति का दर्जा हासिल करने की मांग रही है। इस मांग पर उपजे टकराव को दूर करने तथा कुकी और नागाओं का विश्वास फिर से हासिल करने के प्रयास प्राथमिकता के आधार पर किए जाने की जरूरत है। वर्तमान समझौते में मणिपुर की क्षेत्रीय अखंडता बनाए रखने की प्रतिबद्धता शामिल है। यह कुकी समूहों की अलग प्रशासन की मांग में बदलाव का संकेत है। मैतेई इस मांग का विरोध करते रहे हैं। हालांकि सभी कुकी समूहों को इससे सहमत कराना कठिन है। समझौते पर हस्ताक्षर होने के कुछ ही समय बाद, सिविल सोसायटी समूह कुकी-जो काउंसिल ने भारतीय संविधान के तहत अलग प्रशासन के लिए राजनीतिक बातचीत की आशा का वक्तव्य दिया। ऐसा कहने वाले मिल जाएंगे कि जब तक वित्त और प्रशासन का नियंत्रण घाटी के लोगों के पास रहेगा, पहाड़ी जिलों के विकास की अनदेखी होगी। लेकिन सामूहिक आकांक्षाओं के मुताबिक विकास योजनाओं पर अमल हो तो यह सोच भी बदल जाएगी। पीएम मोदी ने अपनी हालिया यात्रा में कहा, 'मणिपुर आशा और आकांक्षाओं की भूमि है। लेकिन दुर्भाग्य से यह हिंसा की चपेट में आ गया है। मैं आने वाले दिनों में राज्य के लिए आशा और विश्वास की एक नई सुबह देख रहा हूं।' मोदी ने संघर्ष से विस्थापित लगभग 60,000 लोगों के उचित पुनर्वास और राज्य में स्थायी शांति लाने का आश्वासन दिया। उम्मीद की जानी चाहिए कि दोनों पक्ष शांति का माहौल कायम रखने में अपनी अपनी भूमिका ईमानदारी से निभाएं, जिससे मणिपुर पुनः विकास के मार्ग पर तेजी से आगे बढ़ सके।

(लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

जीवन ऊर्जा पर करें मन को केंद्रित

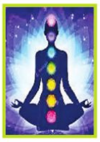

संकलित
दर्शन

बुद्धिमान व्यक्ति इस ब्रह्मांड, इस संसार से परे चले जाते हैं और अमरत्व को प्राप्त कर लेते हैं। लेकिन कैसे? वस्तुतः हमारे भीतर कुछ ऐसा होता है, जो कभी नहीं मरता, जो कभी बूढ़ा नहीं होता। इस बारे में प्रत्येक व्यक्ति अपने ढंग से सोचता है। अगर आप देखें तो छोटे बच्चे बड़े हो रहे हैं और स्थितियां भी बदल रही हैं, लेकिन कई बार आप महसूस करते हैं कि आप नहीं बदल रहे हैं। कुछ लोग कहते हैं- मैं तो बूढ़ा हुआ ही नहीं/हुई ही नहीं। भीतर से आपको महसूस होता है कि सिर्फ समय बीता है, आपमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। यह सच भी है, क्योंकि आपके भीतर एक ऐसा अंश है, जो न तो बदलता है और न ही मरता है। यही एक दूसरी दुनिया है, जहां अमरत्व है। मृत्युलोक वह है, जहां सब कुछ बदल जाता है। मृत्यु का अर्थ है परिवर्तन या क्षय। आप इस नाशवान संसार से अमरत्व, अपरिवर्तनशील संसार, शाश्वत-आत्मा की ओर मुड़ जाते हैं, जो आपके भीतर है। आपके मन के पीछे है। आत्मा वह नहीं है, जिसे आप देख सकें, बल्कि वह है, जिसे आप अपने भीतर महसूस करते हैं। यह प्राणों का प्राण है। जब प्राण उच्च स्तर में होता है, तब आप हर परिस्थिति में मुस्कुरा सकते हैं। आप अपनी दैनिक गतिविधियों में प्राण ऊर्जा को खर्च करते हैं। यदि आप प्राण की कमी को पूरा किए बिना प्राण को खर्च करते रहते हैं, तब आपको अवसाद घेर लेता है। जीवन विरोधी चिह्न शरीर में उत्पन्न होने लगते हैं और सौंदर्य नष्ट होने लगता है। अपने प्राण, अपने श्वास का निरीक्षण करें।

श्रमरहित पराश्रित जीवन विकास के द्वार बंद करता है!

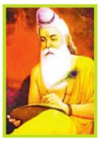

संकलित
प्रेरणा

महर्षि वेदव्यास ने एक कीड़े को तेजी से भागते हुए देखा। उन्होंने उससे पूछा- हे क्षुद्र जंतु, तुम इतनी तेजी से कहाँ जा रहे हो? उनके प्रश्न ने कीड़े को चोट पहुंचाई और वह बोला- हे महर्षि, आप तो इतने ज्ञानी हैं। यहां क्षुद्र कौन है और महान कौन? क्या इस प्रश्न और उसके उत्तर की सही-सही परिभाषा संभव है? कीड़े की बात ने महर्षि को निरुत्तर कर दिया। फिर भी उन्होंने उससे पूछाः अच्छा यह बताओ कि तुम इतनी तेजी से कहाँ जा रहे हो? कीड़े ने कहा- मैं तो अपनी जान बचाने के लिए भाग रहा हूँ। देख नहीं रहे, पीछे से कितनी तेजी से बैलगाड़ी चली आ रही है। कीड़े के उत्तर ने महर्षि को चौंकाया। वे बोले, तुम तो इस कीट योनि में पड़े हो। यदि मर गए तो तुम्हें दूसरा और बेहतर शरीर मिलेगा। इस पर कीड़ा बोलाः महर्षि, मैं तो इस कीट योनि में रहकर कीड़े का आचरण कर रहा हूं, परंतु ऐसे प्राणी असंख्य हैं, जिन्हें विधाता ने शरीर तो मनुष्य का दिया है, पर वे मुझसे भी गया-गुजरा आचरण कर रहे हैं। कीड़े की बातों में महर्षि को सत्यता नजर आई। वे सोचने लगे कि वाकई जो मानव जीवन पाकर भी देहासक्ति और अहंकार से बंधा है, जो ज्ञान पाने की क्षमता पाकर भी ज्ञान से विमुख है, वह कीड़े से भी बदतर है। महर्षि ने कीड़े से कहा- नन्हें जीव, चलो हम तुम्हारी सहायता कर देते हैं। कीड़ा बोला- किंतु मुनिवर श्रमरहित पराश्रित जीवन विकास के द्वार बंद कर देता है। कीड़े के कथन ने महर्षि को ज्ञान का नया संदेश दिया।

अंतर्मन

आज की पाती

किसानों के लिए आफत बनती बारिश

कभी सूखे के कारण तो कभी बेमौसमी बारिश देश की कृषि के लिए आफत बनती है। कुछ राज्यों में पिछले कुछ दिनों से भारी बारिश हो रही है, जबकि इस समय तक बरसात के मौसम का अलविदा कहने का समय है। यह बारिश धान और अन्य मौसमी फसलों के लिए बहुत हानिकारक सिद्ध हो रही है। यह बारिश मात्र फसलों के लिए ही हानिकारक नहीं है, बल्कि प्राणी जाति के लिए भी बहुत ज्यादा हानिकारक है। इससे फसल चक्र का सिस्टम तो बिगड़ ही रहा है, जिससे फसलों की पैदावार प्रभावित हो रही है, साथ ही यह हमें बीमारियों की तरफ भी धकेल रही है। लेकिन सवाल तो यह है कि बेमौसमी बारिश का आखिर क्या कारण है। ऐसे में, प्रकृति का संरक्षण ही एकमात्र समाधान नजर आता है।

- मनोज शुक्ला, बेमेतरा

करंट अफेयर

तटीय क्षेत्र मजबूत करने भारत- सिंगापुर में करार

सिंगापुर की सीट्रियम ऑफशोर टेक्नोलॉजी प्राइवेट लिमिटेड (एसओटी) ने एशिया भर में तटीय क्षेत्र में सहयोग को मजबूत करने के लिए भारत की सबसे बड़ी जहाज निर्माता और जहाज मरम्मत कंपनी कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड (सीएसएल) के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं। एमओयू के तहत दोनों कंपनियां अपनी पूरक शक्तियों - एसओटी की इंजीनियरिंग उत्कृष्टता, विशेष उपकरण और तटीय समाधान एवं सीएसएल के व्यापक बुनियादी ढांचे, निर्माण सुविधाओं और जहाज मरम्मत विशेषज्ञता को व्यावसायिक अवसरों का लाभ उठाने के लिए इस्तेमाल करेंगी। एसओटी ने बृहस्पतिवार को कहा कि यह साझेदारी एशिया में ग्राहकों के लिए

रखरखाव, मरम्मत और ओवरहॉल परियोजनाओं पर केंद्रित होगी। एसओटी ने कहा कि एमओयू पर डिजिटल तरीके से हस्ताक्षर किए गए, जो पूरे एशिया में तटीय इंजीनियरिंग में एक महत्वपूर्ण सहयोग को दर्शाता है। दोनों कंपनियां इस क्षेत्र के अन्य प्रमुख तटीय बाजारों में विस्तार के अवसरों का भी पता लगाएंगी। एसओटी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष और प्रमुख विंस्टन चेंग ने कहा, ''यह समझौता ज्ञापन, एशिया भर में अपनी वैश्विक उपस्थिति बढ़ाने के सीट्रियम के प्रयासों में एक रणनीतिक मील का पत्थर है।

ऑफ बीट

मोटापा लोगों को गहराई तक प्रभावित करता है

ज्यादा वजन वाले लोग एक ऐसे कलंक में जी रहे होते हैं, जो व्यापक है और इन लोगों को कहीं गहराई तक प्रभावित करता है। इसे भेदभाव के

अंतिम स्वीकार्य रूपों में से एक के रूप में वर्णित किया गया है। कुछ शोधकर्ता सोचते हैं कि 'मोटापा' शब्द ही समस्या का हिस्सा है, और कलंक को कम करने के लिए नाम बदलने की मांग कर रहे हैं। उनका सुझाव है कि इसका नाम 'वसा-आधारित पुरानी बीमारी' रख दिया जाए। बड़े शरीर में रहने वाले 42 प्रतिशत वयस्कों को अपने वजन को लेकर शर्मिंदगी का अनुभव होता है। ऐसा तब होता है जब दूसरों की उनके प्रति नकारात्मक मान्यताएं, दृष्टिकोण, धारणाएं और निर्णय होते हैं, उन्हें गलत तरीके से आलसी समझा जाता है और यह माना जाता है कि उनमें इच्छाशक्ति या आत्म-अनुशासन की कमी होती है। बड़े शरीर वाले लोग कार्यस्थल, अंतरंग और पारिवारिक संबंधों, शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और मीडिया सहित कई क्षेत्रों में भेदभाव का अनुभव करते हैं। वजन को लेकर शर्मिंदगी महसूस करना बढ़े हुए कोर्टिसोल स्तर (शरीर में मुख्य तनाव हार्मोन), शरीर की नकारात्मक छवि और खराब मानसिक स्वास्थ्य सहित कई नुकसान से जुड़ा हुआ है।

ट्रेंड

विकास कार्यों का उद्घाटन

डबल इंजन सरकार के नेतृत्व में राजस्थान लगातार नई ऊंचाइयों को छू रहा है। आज बांसवाड़ा से हजारों करोड़ रुपये के विकास कार्यों का उद्घाटन और शिलान्यास प्रदेश की प्रगति की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

-नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

शुभांशु शुक्ला को बधाई

मुंबई कॉन्क्लेव 2025 में ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला से मुलाकात की, जहाँ अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन जाने वाले भारत के पहले अंतरिक्ष यात्री को सम्मानित किया गया। उन्हें 1.4 अरब दिलों के सपनों को समेटे, पूरे देश में साहस, समर्पण और असीम महत्वाकांक्षा को प्रेरित करने वाली यात्रा सफलतापूर्वक पूरी करने पर बधाई दी।

-देवेंद्र फडणवीस, सीएम, महाराष्ट्र

सेवा पखवाड़ा

सेवा पखवाड़ा दिल्लीवासियों के लिए हर दिन नई सौगातें लेकर आ रहा है। आज दिल्ली सचिवालय से शुरू हुई ये स्वास्थ्य सुविधाएं इलाज को और सरल व सुलभ बनाएंगी और हर नागरिक के जीवन में सुरक्षा और विश्वास का नया संबल जोड़ेंगी।

-रेखा गुप्ता, सीएम, नई दिल्ली

चिकित्सा की उपेक्षा

सरकार 'मरीज और डॉक्टर' का अनुपात बताए मतलब वर्तमान में कितने मरीजों के लिए कितने डॉक्टर उपलब्ध हैं। स्वास्थ्य और चिकित्सा की उपेक्षा देश के मानव संसाधन की उपेक्षा है।

- अखिलेश यादव, सांसद, सपा

अपने विचार

हरिभूमि कार्यालय

टिकरापारा, रायपुर में पत्र के माध्यम से या फैक्स : 0771-4242222, 23 पर या सीधे मेल से hbcgpati@gmail.com पर भेज सकते हैं।

स्वयंभू शांतिदूत

ट्रंप के खोखले बयान

किसी ने ठीक ही कहा है, 'सत्य कठिन होता है, प्रचार सस्ता होता है।' यह एक सच्चाई है, भले ही यह संयुक्त राष्ट्र महासभा के सर्वोच्च मंच से कही गई हो। आजकल, विश्व नेता आत्म-प्रचार में मग्न हैं और आत्म-प्रचार के लिए किसी भी मंच का उपयोग करने से नहीं हिचकिचाते। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने संयुक्त राष्ट्र में ठीक यही बात कहीः आत्म-प्रचार का एक उत्कृष्ट उदाहरण, भले ही यह तथ्यों और विचित्र तर्कों की कीमत पर आया हो। यह भाषण पाखंड और दोमुँहेपन से भरा था।

दुनिया के सामने खड़े होकर, उन्होंने खुद को एक ऐसे शांतिदूत के रूप में चित्रित किया जिसने सात अंतहीन युद्धों को समाप्त किया, लेकिन उनके शब्द उनके उन कार्यों की पृष्ठभूमि में खोखले साबित हुए जो संघर्ष को बढ़ावा देते हैं, हमलावरों को बढ़ावा देते हैं और वैश्विक व्यवस्था को कमजोर करते हैं। ट्रंप ने शेखी बघारी कि उन्होंने कंबोडिया और थाईलैंड से लेकर आर्मेनिया और अजरबैजान तक के संघर्षों को समाप्त कर दिया, यहां तक कि भारत-पाकिस्तान विवाद को सुलझाने का दावा भी किया। यह और बात है कि भारत ने उनके इस दावे का पुरजोर खंडन किया है। ऐसे दावे इतिहास और तथ्यों के प्रति उनकी अनादर को दशार्ते हैं। इससे भी ज्यादा खलने वाली बात उनकी चुनिंदा नाराजगी है।

ट्रंप ने संयुक्त राष्ट्र पर वास्तविक कार्रवाई के बजाय खोखले शब्द और कड़े शब्दों वाले पत्र लिखने का आरोप लगाया। यह पाखंड की पराकाष्ठा है। वह उन गिने-चुने विश्व नेताओं में से एक हैं जिन्होंने हर मौके पर संयुक्त राष्ट्र को दरकिनार करने और उसे ध्वस्त करने की कोशिश की है। वही व्यक्ति जो दूसरों की निष्क्रियता का उपहास करता है, एक ऐसी विदेश नीति का नेतृत्व कर रहा है जिसने इजराइल को गाजा को तबाह करने की खुली छूट दे दी है।

ईरान पर उनके बयानों ने उनके विरोधाभासों को और उजागर कर दिया। ट्रम्प ने तेहरान के प्रति शत्रुता को बढ़ाते हुए शांति को बढ़ावा देने की बात की, वास्तविक बातचीत की बजाय टकराव की आग को हवा दी। एक संप्रभु राज्य के साथ तनाव बढ़ाते हुए, और साथ ही गाजा में इजराइल की दंडमुक्ति की रक्षा करते हुए, कोई वैश्विक शांति की अपील कैसे कर सकता है?

यूक्रेन में भी, ट्रम्प के दोहरे मापदंड स्पष्ट दिखाई दिए। उन्होंने भारत और चीन पर रूसी तेल खरीदकर युद्ध को वित्तपोषित करने का आरोप लगाया, और इस तरह अमेरिका के हस्तक्षेप, हथियारों की आपूर्ति और छद्म युद्धों के अपने लंबे इतिहास को नजरअंदाज कर दिया, जिसने पूरे क्षेत्र को अस्थिर कर दिया है। दिलचस्प बात यह है कि वह रूस को पूरी तरह से निंदा से बचा रहे थे और दोष नई दिल्ली और बीजिंग पर मढ़ रहे थे। शांति का उनका संस्करण युद्धविराम समझौते पर बातचीत करने में अपनी विफलता को छिपाने के लिए एक भटकाव के अलावा और कुछ नहीं है, भले ही युद्ध पूरी तरह से समाप्त न हो।

एक सच्चा शांतिदूत विश्वास पैदा करता है, शक्ति संतुलन बनाता है और दुखों को रोकता है। ट्रम्प झूठे दावे करते रहते हैं, अपनी भूमिका को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करते हैं, और अपनी बढ़त बनाए रखने के लिए चुनिंदा लोगों का पक्ष लेते हैं। वह युद्ध समाप्त करने का दावा करते हैं लेकिन सैन्य वृद्धि का समर्थन करते हैं; वह संयुक्त राष्ट्र का मजाक उड़ाते हैं लेकिन बहुपक्षवाद को बाधित करने में सफल होते हैं; वह खुद को शांतिदूत बताते हैं जबकि गाजा में नरसंहार को बढ़ावा देने वाली नीतियों का नेतृत्व करते हैं।

ट्रम्प के शब्दों का खोखलापन उनके विश्वदृष्टिकोण के गहरे खोखलेपन को दशार्ता है। शांति संयुक्त राष्ट्र के मंच पर दोहराया जाने वाला नारा नहीं है; यह एक ज़िम्मेदारी है जिसका पालन निरंतरता, निष्पक्षता और मानवता के साथ किया जाना चाहिए।

योगी ने लिखी राजकोषीय बदलाव की पटकथा

उत्तर प्रदेश ने देश में बहुआयामी गरीबी में सबसे तेज कमी हासिल की है, 2015-16 और 2019-21 के बीच 5.9 करोड़ से अधिक लोगों को अभाव से बाहर निकाला है। राज्य की गरीबी दर 37.68 प्रतिशत से घटकर 17.40 प्रतिशत हो गई, जो व्यापक कल्याणकारी कार्यक्रमों के कारण उपलब्ध राजकोषीय गुंजाइश का प्रत्यक्ष परिणाम है।

महेंद्र कुमार सिंह
लेखक, राजनीतिक टिप्पणीकार हैं।

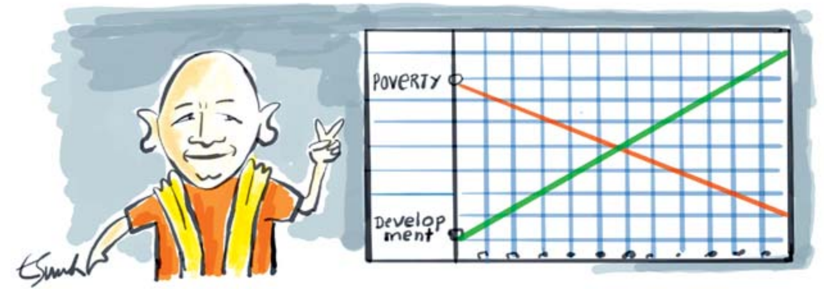

सार्वजनिक वित्त की सूक्ष्म दुनिया में, आंकड़े अक्सर उस समय बड़बड़ाते हैं जब उन्हें बोलना चाहिए। लेकिन कभी-कभी, कोई आँकड़ा वज्रपात की तरह जोर से सामने आता है। नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (उअऋ) के हालिया दशकीय अध्ययन ने ठीक ऐसा ही एक क्षण प्रस्तुत किया। वित्त वर्ष 2022-23 में राजस्व अधिशेष दर्ज करने वाले सोलह राज्यों में, एक राज्य ने न केवल भाग लिया, बल्कि उसका दबदबा भी रहा। 1.50 लाख करोड़ रुपये से अधिक के अधिशेष के साथ, उत्तर प्रदेश ने अन्य राज्यों को बहुत पीछे छोड़ दिया और अपनी अलग पहचान बनाई - एक ऐसी राजकोषीय जीत जो न केवल ध्यान देने की, बल्कि राज्य के आर्थिक प्रक्षेपवक्र के गहन पुनर्मूल्यांकन की भी माँग करती है। दशकों तक, उत्तर प्रदेश बीमारू सिंड्रोम का सबसे स्पष्ट उदाहरण रहा है। एक ऐसा शब्द जो आर्थिक कमजोरी और अविकसितता के एक अटूट चक्र की छवियाँ प्रस्तुत करता है।

अब इसे राजकोषीय अनुशासन में देश का नेतृत्व करते देखना एक उलटी कहानी को देखने जैसा है। यह कोई क्रमिक प्रगति नहीं है; यह एक आदर्श बदलाव है। और इसके सूत्रधार, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, ने अपने कार्यकाल की संभवतः सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक उपलब्धि का सूत्रपात किया है। 2017 में उनके पदभार ग्रहण करने पर जो संशय था, वह स्वाभाविक था। श्री गोरक्षनाथ मंदिर के मुख्य पुजारी – गोरखपुर के एक तेजतर्रार आध्यात्मिक व्यक्तित्व, जिनका प्रशासन में कोई अनुभव नहीं है – को भारत के सबसे अधिक आबादी वाले राज्य का नेतृत्व करने का कार्यभार सौंपा गया था।

यह अनुमान लगाया गया था कि उनका शासन विभाजनकारी बयानबाजी से परिभाषित होगा जबकि अर्थव्यवस्था सुस्त रहेगी, जैसा कि पिछली सरकारों के कार्यकाल में हुआ था। मायावती और अखिलेश यादव की सरकारें, अपनी तमाम राजनीतिक ताकतों के बावजूद, अक्सर राजकोषीय कमजोरी और राष्ट्रीय औसत से लगातार पिछड़ती विकास दर से चिह्नित थीं। सात साल बाद, संघीय लेखा परीक्षक का बहीखाता उन शुरूआती संशयवादों का एक शक्तिशाली, आँकड़ों पर आधारित खंडन प्रस्तुत करता है। इस बदलाव का पैमाना भूकंपीय है। राजकोषीय सतर्कता से विवश पिछली सरकारों के विपरीत, योगी सरकार ने एक बुनियादी सुधार के साथ एक बुनियादी पुनर्गठन कियाः एक कठोर कानून-व्यवस्था तंत्र लागू करना।

अपराध और जबरन वसूली के नेटवर्क को ध्वस्त करके, इसने आर्थिक गतिविधियों के लिए आवश्यक पूवार्नुमानशीलता का निर्माण किया। इस बेहतर माहौल का उच्च-स्तरीय वैश्विक निवेशक शिखर सम्मेलनों के माध्यम से आक्रामक रूप से विपणन किया गया, जिससे नीतियों को लाखों करोड़ रुपये की ठोस परियोजना प्रतिबद्धताओं में परिवर्तित किया गया। अनुभवजन्य साक्ष्य सम्मोहक हैं। किसी भी राज्य की जीवनरेखा पर विचार करेंः उसका अपना कर राजस्व। पिछली सरकार के अंतिम वर्ष (2016-17) में, वाणिज्यिक कर, उत्पाद शुल्क और खनन जैसे प्रमुख मदों से राजस्व लगभग 86,000 करोड़ डॉलर था। दो वर्षों के भीतर, यह आंकड़ा 1.17 लाख करोड डॉलर से अधिक हो गया - एक आश्चर्यजनक 36 प्रतिशत की वृद्धि। खनन राजस्व, जो प्रवर्तन और औपचारिकता का एक स्पष्ट बैरोमीटर है, दोगुने से भी अधिक हो गया। यह केवल संग्रह नहीं है; यह पहले की अनौपचारिक और रिसती हुई अर्थव्यवस्था पर विजय है जिसने पिछली सरकारों को चुनौती दी थी। यह राजस्व पुनर्जागरण एक व्यापक आर्थिक पुनरुत्थान का इंजन रहा है। इस कार्यकाल के दौरान उत्तर प्रदेश का सकल राज्य घरेलू उत्पाद (जीएसडीपी) नाममात्र के हिसाब से लगभग दोगुना हो गया है, जो पिछले वर्षों की तुलना में स्पष्ट रूप से तेजी दशार्ता है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रति व्यक्ति आय जो व्यक्तिगत कल्याण का सबसे महत्वपूर्ण संकेतक है झ में नाटकीय वृद्धि देखी गई है। 2016-17 में मात्र 55,398 डॉलर से बढ़कर, यह 2023-24 में अनुमानित 1,37,665 डॉलर हो गई है, और 2025-26 तक 1.8 लाख तक पहुंचने का अनुमान है।

महत्वपूर्ण रूप से, इस व्यापक आर्थिक विकास ने ऐतिहासिक पैमाने पर गरीबी में ठोस कमी ला दी है। नीति आयोग के अनुसार, उत्तर प्रदेश ने देश में बहुआयामी गरीबी में सबसे तेज कमी हासिल की है, 2015-16 और 2019-21 के बीच 5.9 करोड़ से अधिक लोगों को अभाव से बाहर निकाला है। राज्य की गरीबी दर 37.68 प्रतिशत से घटकर 17.40 प्रतिशत हो गई, जो व्यापक कल्याणकारी कार्यक्रमों के कारण उपलब्ध राजकोषीय गुंजाइश का प्रत्यक्ष परिणाम है। गरीबी में यह नाटकीय कमी दशार्ती है कि विकास के लाभ जमीनी स्तर तक पहुँच रहे हैं, जिससे उत्तर प्रदेश एक स्वस्थ रोगी के रूप में नहीं, बल्कि भारत के विकास के प्रमुख इंजन के रूप में स्थापित हो रहा है।

इस जमीनी बदलाव का सबसे स्पष्ट संकेत प्रवासन के पैटर्न में बदलाव है। औद्योगिक गलियारों और ৼएक ज़िला, एक उत्पादৼ जैसी योजनाओं के माध्यम से स्थानीय अवसरों का सृजन यह दशार्ता है कि राज्य की सीमाओं के भीतर आर्थिक गरिमा बहाल हो रही है - एक ठोस परिणाम जो पिछली सरकारों को नहीं मिला। यह बदलाव न तो आकस्मिक है और न ही आकस्मिक। यह एक रणनीतिक त्रयी का जानबूझकर किया गया परिणाम है - बेहतर कानून-व्यवस्था, व्यापक बुनियादी ढाँचे को बढ़ावा, और एक केंद्रित निवेश रणनीति - जिसे एक ऐसी निरंतरता के साथ अपनाया गया है जो इसे अतीत के खराब रिकॉर्ड से अलग करती है।

एक्सप्रेसवे के निर्माण, हवाई अड्डों के पुनरुद्धार और स्वदेशी उद्योगों के सावधानीपूर्वक संरक्षण ने न केवल तत्काल आर्थिक गतिविधि को जन्म दिया है, बल्कि राज्य की मौलिक रूप से नई पहचान भी दिलाई है। उत्तर प्रदेश ने अपनी ৼनिवेश-अयोग्यৼ छवि को त्याग दिया है और एक महत्वाकांक्षी आर्थिक महाशक्ति के रूप में उभरा है, जिसकी महत्वाकांक्षाएँ 1 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने की हैं।

फिर भी, राजस्व अधिशेष क्षमता का प्रमाण है, न कि पूर्णता का प्रमाण। यह आवश्यक जाँच-पड़ताल को आमंत्रित करता है। अपनी बेहतर राजकोषीय स्थिति के बावजूद, उत्तर प्रदेश के मानव विकास संकेतक, हालाँकि उल्लेखनीय रूप से बेहतर हुए हैं, फिर भी राष्ट्रीय औसत से पीछे हैं। सरकार की असली परीक्षा उसका अगला कदम होगाः क्या वह अब इस राजकोषीय गुंजाइश का उपयोग मानव पूंजी में निवेश को गति देने के लिए कर सकती है? क्या अधिशेष को बेहतर स्कूलों, मजबूत स्वास्थ्य सेवा और उच्च-गुणवत्ता वाले रोजगार में बदला जा सकता है - जो एक ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था का सच्चा आधार है?

हालाँकि, फिलहाल, राजकोषीय परिवर्तन को नकारा नहीं जा सकता। उत्तर प्रदेश के बहीखाते अतीत से अलग नहीं हैं। अक्सर बयानबाजी से भरे राजनीतिक परिदृश्य में, योगी आदित्यनाथ ने एक जबरदस्त बढ़त हासिल की हैः ठोस, मात्रात्मक सफलता की एक कहानी। उन्होंने यह प्रदर्शित किया है कि राजनीतिक इच्छाशक्ति और प्रशासनिक एकाग्रता से, शासन की सबसे कठिन चुनौतियों का भी सामना किया जा सकता है।

ৼबीमारूৼ से प्रकाश स्तंभ तक का सफर अच्छी तरह से चल रहा है। यदि इस राजकोषीय अनुशासन को अब मानव विकास के मिशन से जोड़ा जा सके, तो उत्तर प्रदेश न केवल अपनी कहानी फिर से लिख लेगा, बल्कि खुद को भारत के भविष्य के निर्विवाद इंजन के रूप में स्थापित कर लेगा। विरोधाभास का समाधान हो गया हैः तेजतर्रार पुजारी राज्य के सबसे प्रभावी आर्थिक प्रबंधक के रूप में उभरे हैं, जिन्होंने राजकोषीय निराशा को शासन के चमत्कार में बदल दिया है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय को श्रद्धांजलि

पंडित उपाध्याय ने एक ऐसे राष्ट्र के निर्माण की कल्पना की थी, जहां विकास अंतिम पंक्ति के व्यक्ति तक पहुंचे। वह वर्गहीन, जातिहीन और संघर्षमुक्त सामाजिक व्यवस्था के समर्थक थे।

पूरन डावर
लेखक, चिंतक एवं विश्लेषक हैं।

अंत्योदय एवं एकात्म मानववाद की अवधारणा के प्रणेता जनसंघ के अध्यक्ष रहे स्वर्गीय पंडित दीनदयाल उपाध्याय...जब तक पंक्ति में खड़े अंतिम व्यक्ति तक सेवा नहीं पहुंचती तब तक देश विकसित नहीं कहला सकता... इस सोच के साथ जिस चिंतक ने राजनीति में शुचिता की कल्पना की... देश का दुर्भाग्य उन्हें हमने समय से पहले खो दिया। एक ऐसा व्यक्ति जिसने आज ही के दिन यानी 25 सितंबर को

1916 हमें पंडित दीनदयाल उपाध्याय के रूप में एक दार्शनिक, समाजशास्त्री, अर्थशास्त्री एवं कुशल राजनीतिज्ञ मिले थे। पंडित उपाध्याय ने एक ऐसे राष्ट्र के निर्माण की कल्पना की थी, जहां विकास अंतिम पंक्ति के व्यक्ति तक पहुंचे। वह वर्गहीन, जातिहीन और संघर्षमुक्त सामाजिक व्यवस्था के समर्थक थे। इस दिशा में निस्संदेह काफी प्रयास किए गए हैं, लेकिन फिर भी काफी कुछ किया जाना शेष है। ये कहना गलत नहीं होगा कि वर्तमान समय में दुनिया जिस मोड़ पर खड़ी है वहां पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों को आत्मसात करना अति आवश्यक हो गया है। पूंजीवादी एवं समाजवादी विचारधाराएं हमें आगे होने का बोध तो करा रही हैं,

लेकिन इस बोध में एक खोखलापन है। पंडित उपाध्याय को इस खोखलेपन का भान था, इसलिए वे कहते थे कि पूंजीवादी एवं समाजवादी विचारधाराएं केवल हमारे

शरीर एवं मन की आवश्यकताओं पर विचार करती हैं, और इसलिए वे भौतिकवादी उद्देश्य पर आधारित हैं, जबकि संपूर्ण मानव विकास के लिए इनके साथ ही आत्मिक विकास भी आवश्यक है। दीनदयाल उपाध्याय जितने अच्छे राजनेता थे, उतने ही उच्च कोटि के चिंतक, विचारक और लेखक भी थे। वह केवल समस्या पर ध्यान आकर्षित नहीं करते थे बल्कि उसका समाधान बताने में भी विश्वास रखते थे।

उन्होंने दुनिया को अंत्योदय से परिचित कराया। एक ऐसा विचार, जो सबसे पहले और सबसे अधिक सहायता उस व्यक्ति को उपलब्ध कराने पर जोर देता है, जिसकी जरूरत सबसे अधिक है। सरल शब्दों में कहें तो जरुरतमंदों में से एक ऐसे व्यक्ति का चुनाव करना, जिसे सहायता की आवश्यकता सबसे अधिक हो और फिर उसी से शुरूआत करते हुए प्रत्येक व्यक्ति तक सहायता पहुंचाना। पंडित उपाध्याय मानते थे कि जिस झोंपड़ी में पहले से ही दीया जल रहा है, वहां बल्ब लगाने से बेहतर होगा पहले उस घर को रोशन किया जाए जो अंधकार में डूबा है। अंधेरे में जलाया गया एक छोटा सा दीपक भी उम्मीदों के उजाले का प्रतीक बन सकता है। पंडित दीनदयाल के चिंतन को मुख्यतः अंत्योदय के रूप में याद किया जाता है, लेकिन एकात्म मानववाद भी उनकी दूरदृष्टि को दशार्ता है। उनके द्वारा स्थापित एकात्म मानववाद की परिभाषा वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अधिक सामयिक है। दीनदयाल उपाध्याय कहते थे कि जिस प्रकार मनुष्य का शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा के ठीक रहने पर वह चरम सुख और वैभव की प्राप्ति कर सकता है, ठीक उसी तरह यदि समाज के प्रत्येक वर्ग पर ध्यान दिया जाए तो भारत को आदर्श राष्ट्र बनने से कोई नहीं रोक सकता। एकात्म मानववाद का उद्देश्य एक ऐसा स्वदेशी सामाजिक-आर्थिक माडल विकसित

करना था, जिसमें विकास के केंद्र में मानव हो। यानी व्यक्ति एवं समाज की आवश्यकता को संतुलित करते हुए प्रत्येक व्यक्ति को गरिमापूर्ण जीवन प्रदान करना। यह व्यक्ति वाद का खंडन करता है और एक पूर्ण समाज के निर्माण के लिए परिवार तथा मानवता के महत्व को प्रोत्साहित करता है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने कई दशक पहले ही आज की समस्या और उसके समाधान को रेखांकित कर दिया था। वे दूरदृष्टा थे, उन्हें पता था कि आजादी के बाद जिस तरह से पश्चिमी संस्कृति, विचारधारा को अपनाने की इच्छाएं जन्म ले रही हैं, वो आगे चलकर एक नई समस्या को जन्म देंगी। विकास की दौड़ में वह व्यक्ति सबसे पीछे छूट जाएगा जिसके विकास के नाम पर सब कुछ किया जा रहा है। पंडित उपाध्याय के दर्शन, विचारों को पढ़कर ऐसा प्रतीत होता है,

जैसे मौजूदा परिस्थितियों, समस्याओं को देखकर, उनका आंकलन करके ही उन्होंने उन्हें लिखा है। आज यदि पंडित दीनदयाल उपाध्याय हमारे बीच होते तो अपनी कृतियों के लिए उन्हें नोबल पुरस्कार मिलना तय था।

11 फरवरी, 1968 को वे हम सबको छोड़कर दुनिया से विदा गए। उनका निधन आज तक पहेली बना हुआ है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय लखनऊ से पटना जा रहे थे, इसी दौरान उनका शव मुगलसराय रेलवे यार्ड में पाया गया। उनकी मौत की गुत्थी सुलझाने के लिए सीबीआई से भी जांच कराई गई, मगर कुछ हासिल नहीं हुआ। आज मुगलसराय स्टेशन का नाम दीनदयाल नगर रखकर उनकी स्मृति को संजोया गया है। वर्तमान मोदी सरकार दीनदयाल जी की अंत्योदय से प्रेरित कार्य कर रही है। अंतिम व्यक्ति तक मात्र सेवा नहीं, अंतिम पंक्ति में खड़ा व्यक्ति देश का राष्ट्रपति भी हो सकता है-यह करके दिखा दिया।

जिस तेजी से हम विकासशील से विकसित की ओर बढ़ रहे हैं... अंत्योदय की परिकल्पना सार्थक रूप लेगी। पंडित दीनदयाल उपाध्याय की अंत्योदय की अवधारणा से प्रेरित होकर ही अंत्योदय अन्नपूर्णा सेवा शुरू की गई।

उनके अवतरण दिवस पर उनकी स्मृति को पुनश्च नमन।

आप की बात

पहले और अब भी वोट फार मी

पहले चुनाव पूर्व राजनीतिक पार्टियां "वोट फॉर मी" के लिए गरीब बस्तियों और एकमुश्त वोट गारंटी वालों से संपर्क कर उन्हें अप्रत्यक्ष लालच दिया करती थी. और वोटिंग के कुछ दिन पहले रात के अँधेरे में "लालच भरी केम्पियन भी. जिसे अवैध माना जाकर छापे भी डाले जाते थे और लालचभरी आर्थिक/अनार्थिक सामग्रियाँ भी जप्त की जाती थी। किन्तु अब काफी समय से वोट फॉर मी के केम्पियन का तरीका बदल गया. अब खुले आम चुनाव की तारीख डिक्लेयर होने से पूर्व ही घोषणाएं हो जाती है किसानों, महिलाओं, गरीबों आदि को जिन पार्टी की जहाँ स्थापित सरकार है उसके द्वारा विभिन्न तरह के आर्थिक/अनार्थिक फायदे पहुँचाने की योजना घोषित करके और पिछली योजनाओं को शीघ्र लागू करके लाभ भी पहुंचा दिया जाता है. दूसरे विपक्षियों द्वारा अगर हमारी सरकार आई तो सरकारी योजनाओं के मद्देनजर उसपर नहले पर दहला लगाकर अतिरिक्त सुविधाएं देने के पूर्ण आशान्वित वादे किये जाते हैं. भले ही खजाने में धन हो या न हो अथवा होगा या नही होगा पर "वोट फॉर मी' को सफल बनाने के लिए मतदाताओं को आकर्षित करने के भरसक प्रयास उनके द्वारा किये ही जाते हैं. सुप्रीम कोर्ट ने राजनीतिक दलों को संज्ञान में लेते हुए लोगों को आर्थिक मदद की बजाय काम के बदले लाभ देने, लोगों को आलस्य से दूर रखने और जनधन की बबार्दी रोकने हेतु अपनी बात स्पष्ट रूप से रखी है।

- **शकुंतला महेश नेनावा**, इंदौर

लद्दाख में हिंसा

लेह-लद्दाख में जिस तरह से हिंसा फैली तथा आगजनी की गई, किसी भी दृष्टि से जायज नहीं ठहराया जा सकता। हिंसा व आगजनी किसी भी समस्या का समाधान नहीं है। हिंसा से राष्ट्र व स्वंय का ही नुकसान होता है। पर्यावरणविद् व सामाजिक कार्यकर्ता सोनम वांगचुक,जो लेह-लद्दाख को पूर्ण राज्य का दर्जा देने सहित विभिन्न मांगों के लिए, अनशन व आन्दोलन कर रहे थे, उन्होंने इस हिंसा व आगजनी की कड़ी निंदा की तथा अपना आन्दोलन समाप्त कर दिया। विभिन्न मांगों को लेकर वहां लंबे समय से शांति पूर्ण आन्दोलन किया जा रहा है। लेकिन आंदोलनकारियों से लंबे समय तक बातचीत नहीं करना भी, हिंसा का कारण बताया जा रहा है। केंद्र सरकार को ऐसे मसलों पर तो प्राथमिकता के साथ बातचीत करना चाहिए। अब भी कोई देर नहीं हुई है। लेह में शांति स्थापित हो, इसके लिए केंद्र सरकार को एक जाजम पर बैठकर बातचीत कर समस्या का उचित व संतोषजनक हितकारी समाधान समय रहते निकालना होगा। सबसे ज्यादा चिंता यह भी होना चाहिए कि लेह-लद्दाख के पड़ोसी शातिर चीन व पाकिस्तान है। ये खतरनाक इरादे वाले पड़ोसी भारत के विरुद्ध मौके की तलाश में रहते हैं। जो शांति में अशांति फैलाने हेतु किसी भी निम्नतम स्तर पर जाकर आग में घी डालने का काम कर सकते हैं। इस मसले को गंभीरता से लेते हुए, खूबसूरत लेह-लद्दाख में शांति बनाए रखने का दायित्व केंद्र सरकार का है।

– **हेमा हरि उपाध्याय**,'अक्षत', खाचरोद, उज्जैन

सवाल बेटियों की सुरक्षा का

दुर्गा उत्सव के दौरान हमें भक्ति भाव एवं पूजा पाठ के साथ-साथ इस बात पर भी विचार करना चाहिए कि हमारे भारत की आधी आबादी महिलाओं एवं लड़कियों को हम गरिमा के साथ उन्हें निरापद जीवन यापन का माहौल कब उपलब्ध कराने में सफल हो पाएंगे। विंता का विषय है कि आज के दौर में बेटियों के लिए नित नयी चुनौतियां पेश आ रही हैं। सामाजिक स्तर पर बेटियों के प्रति हमारा समाज उदार हुआ है। लेकिन बेटियों की सलामती के लिए उन्हें सही सीख देने की आवश्यकता है। अपना यह मूलभूत दायित्व परिवार, समाज और सरकार को निभाना होगा। तभी हम उनके उज्जवल भविष्य का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। उन्हें इतना सक्षम बनाना होगा कि अराजक तत्व उनका बेजा फायदा ना उठा सकें। बेटियों को आत्मनिर्भरता और आत्मरक्षा के गुर सिखाना आज के दौर की महती आवश्यकता है। बेटी है तो कल है, इस नारे की सार्थकता इस बात में निहित है की बेटियों की सर्वांगीण सुरक्षा के लिए हमारी सरकार और समाज कितने सचेत हैं। सामाजिक एवं व्यवसायिक स्तर पर लिंग के आधार पर भेदभाव वाली मानसिकता पूरी तरह समाप्त होना चाहिए तभी बेटियों के लिए आने वाला कल पूरी तरह से उन्हें फलने फूलने का अवसर प्रदान कर सकेगा।

ललित महालकरी, इंदौर

कब मिलेगा पीओके

भारतीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने एक बार फिर यह कहा है कि पाकिस्तानी कब्जे वाला कश्मीर यानी पीओके भारत में बिना किसी लड़ाई या हमले के खुद ब खुद ही भारत से मिल जाएगा। पीओके के लोग खुद ही वहां पाकिस्तान से अपनी आजादी की मांग कर रहे हैं। रक्षा मंत्री कहते हैं कि पीओके में आजादी की मांग काफी समय से लगातार उठ रही है एवं इसके लिए वहां जुलूस प्रदर्शन कर वहां की जनता पाकिस्तान से अपनी आजादी की मांग लगातार कर रही है। अतः तब हम आज यही कहेंगे कि रक्षा मंत्री जी यही बात आपने लगभग पांच वर्ष पूर्व भी कश्मीर में जाकर सेना के सामने कहीं थी परंतु अब तक तो ऐसा बिल्कुल भी नहीं हुआ है बल्कि उसके बाद से हि लगातार पीओके में वहां बने शिविरों में आंतकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा एवं जैश मोहम्मद अपने आतंकियों को प्रशिक्षित कर रहे हैं,जो फिर बाद में भारतीय सीमा में घुसकर कश्मीर घाटी में आतंकी वारदात कर रहे हैं। पहलगाम में हुआ आतंकी हमला करने वाले तीन आंतकी भी पीओके में बने शिविरों से ही आए थे,अतः लगता यही है कि आज भी पाकिस्तान का पीओके पर सम्पूर्ण नियंत्रण कायम है एवं आज भी वहां आतंकी संगठन सक्रिय हैं।

– **मनमोहन राजावतराज**, शाजापुर

पाठकगण अपने विचार responsemail.hindipioneer@gmail.com पर भेज सकते हैं।

Support me by joining my private channel

AND GET EARLIEST AND RELIABLE SOURCE TO READ NEWSPAPERS DAILY.

Click below to

Join

1) Times of India
2) Hindustan Times
3) Business line
4) The Indian Express
5) Economic Times
6) The Hindu
7) Live Mint
8) Financial Express
9) Business standard
+All Editorial PDFs